द्वितीय
महासमर-परिचय
"भूगोल"
प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय
इलाहाबाद

विषय-सूची

—:o:—

प्रथम खण्ड

द्वितीय खण्ड

तृतीय खण्ड

[शेष कवर के तीसरे पृष्ठ पर देखिये]

'भूगोल'

वर्ष १५] आषाढ़ सं० १९९९, जुलाई १९४२ [संख्या १-३

पोलैंड-विच्छेद

मार्च १९३९ ई० मे जब हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया को जर्मन साम्राज्य में मिलाया तो पोलैण्ड पर भी सङ्कट आ गया। उसकी उत्तरी पश्चिमी और दक्षिणी सीमाएँ जर्मन आक्रमण के लिये खुल गईं। इङ्गलैण्ड और फ्रांस ने जो आश्वासन और रक्षा भार उठाया वह केवल नैतिक समर्थन मात्र था। पोलैण्ड को सैनिक सहायता पहुँचनी असम्भव थी इसलिये उसे योरुप की सब से अधिक शक्तिशाली सेना का अकेले ही सामना करना पड़ा।

पोलैण्ड की सीमा १७०० मील लम्बी थी। इतनी लम्बी सीमा की रक्षा की आशा ही पोलैण्ड से रखना निरर्थक था। दूसरी रक्षित सीमा जिसका उत्तरी स्थान ग्रोडनो था वह नोरव नदी होकर वार्सा होती हुई कोल्से और क्रेकाओ नगर को जाती थी यह सीमा प्रथम सीमा से ८०० मील कम थी। इस सीमा में कार्पेथियन प्रान्त पड़ता था जो पोलैण्ड का एक मात्र पहाड़ी जिला है। इस जिले ने रक्षा का एक बहुत बड़ा कार्य किया। इस पर्वतीय प्रदेश द्वारा और अधिक सहायता की आशा थी परन्तु जर्मनों की चतुरता के कारण पोल सिपाही इस प्रदेश में घुस ही नहीं सके। जर्मन सेना मोटरों, टैङ्कों और विमानों द्वारा आक्रमण कर रही थी इसलिये उसकी फुर्ती पोलसेना से कहीं अधिक थी। जर्मन सेना में पोल सेना से संख्या में बहुत अधिक विमान थे।

मोटर वाली सेना के आक्रमण का सर्वप्रथम प्रयोग स्पेन मे किया गया था। परन्तु उसकी कुशलता पोलैण्ड मे की गई। यह मोटरें भीतर पोल लाइनों में प्रवेश कर जाती थीं। कभी कभी यह एक दिन में ५० मील से भी अधिक प्रदेश पार कर जाती थीं। इनके साथ ही साथ जर्मन हवाई सेना पुलों और रेलवे जंक्शनों का सत्यानाश करती थी और रणक्षेत्र के पीछे १५० मील तक के खुले नगरों पर इस बहाने बम्ब वर्षा करती थी कि वहाँ सैनिक भोजन सामग्री अथवा लड़ाई के अस्त्र-शस्त्रों के केन्द्र हैं। अपनी बर्बादी और भय-प्रकोप के कारण जर्मन सेना ने पोल नागरिकों को

भयभीत कर बेहाल कर दिया था। जर्मन सेना पास उसकी अद्भुत खुफिया संस्था भी काम कर रही थी। इस संस्था के लोगों के पास छोटे बेतार के तार द्वारा समाचार देने वाले यंत्र थे जिनमें वह पोल सेना की सैनिक पोल शीघ्रताशीघ्र खोलते रहते थे। पोल सेना जैसे जैसे अपना कार्यक्षेत्र निर्माण करती थी वैसे वैसे शीघ्रता-पूर्वक उसका भेद जर्मन सेना को पहुँचा दिया जाता था।
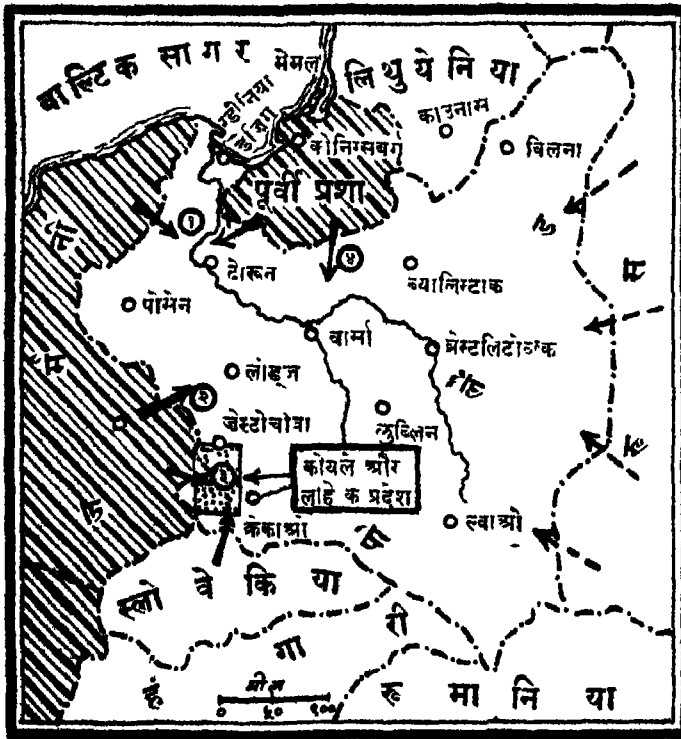
पोलैंड का आक्रमण

युद्ध आरम्भ होने के १० दिन के भीतर ही पोलैण्ड के आने जाने तथा समाचार पहुँचाने के सभी साधन (टेलीफोन और तार आदि) इस प्रकार नष्ट कर दिये गये कि पोलैण्ड के उच्च पदाधिकारी अपनी लड़ने वाली सेनाओं से बिल्कुल अलग कर दिये गये। जहाँ कहीं पोल-सेना खड़ी रहती थी वहीं उसे लड़ना पड़ता था जिससे उसने वीरता के साथ निभाया। परन्तु आधुनिक युद्ध में साधारण सैनिक की असाधारण वीरता शत्रु के यन्त्रों के सामने निष्फल थी।

अच्छा मौसिम होने के कारण जर्मन सेना को और अधिक लाभ पहुँचा। जब तक जर्मन सेनाएँ बढ़ती रहीं वर्षा नहीं हुई। पोलैण्ड में अच्छी सड़कें नहीं हैं। यदि वर्षा हो जाती तो सड़कों पर कीचड़ हो जाती और फिर टैङ्कों, तोपों तथा मोटरों की सेना का बढ़ना रुक जाता। वर्षा न होने के कारण पोलिश तोप-सेना को बिखरी हुई जर्मन सेना पर धावा मारने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। कारीडर में जो पोल सेना थी उसने कुँटो क्षेत्र में मजबूती के साथ सामना किया परन्तु वह दोनों ओर से घिर गई। उसे लड़ते लड़ते भीषण हानि के साथ वापस आना पड़ा। इस समय जर्मन सेना उत्तर की ओर बियालिस्टोव्स्क में केन्द्रीय भाग में वार्सा और राडोम के सामने और दक्षिण की ओर ल्वाओ तक पहुँच चुकी थी। इस प्रकार उसने रूमानिया की प्रधान रेलवे लाइन को काट कर अलग कर दिया था।

इतना होने पर भी पोल जाति निराश न हुई। समस्त देश में शत्रु सेना दौड़ चुकी थी परन्तु उसका अधिकार नहीं जमा था। बिखरी हुई पोल सेना फिर भी सफलता पूर्वक युद्ध करती रही। उसके पास भोजन-सामग्री तथा अस्त्र-शस्त्र काफी थे और वर्षा आरम्भ हो जाने के कारण वह कुछ सप्ताह तक शत्रु सेना का सामना कर सकती थी और यदि जर्मनी पर पश्चिम की ओर से एँग्लो फ्रेंच आक्रमण होता तो शायद वह शीतकाल तक बराबर लड़ती रहती। १७ दिसम्बर १९३९ ई० को पोलैण्ड का पतन हुआ। उस दिन सोवियत सेना ने पूर्वी पोलैण्ड पर धावा कर दिया। शायद हिटलर के लूट के माल में स्टैलिन भी भाग बंटा कर अपनी पश्चिमी सीमा मजबूत करना चाहता था।

रूसी सेनाओं के प्रवेश करते ही जर्मन सेनाओं का आगे बढ़ना रुक गया। आपसी समझौते के कारण जर्मन सेनाओं को जीती हुई भूमि रूसियों को देनी पड़ी। नाजी सेनाएँ लोम्जा-ब्रेस्टलिटोव्स्क-

प्रेजेमिस्ल लाइन को लौट आईं। रूसी सेनायें आगे बढ़ीं और कार्पेथियन्स के समीप स्नोक पर अधिकार जमाया। उन्होंने रूमानी, हंगेरियन और आधी ज़ेकोस्लाकियानी सीमा को बन्द कर दिया। पोलैण्ड के राजनैतिक और सैनिक नेता पोलैण्ड छोड़ कर पहले ही चले गये थे और रूमानिया में जाकर उन्होंने शरण ली थी। शेष बचे हुये ४०० पोल विमान सेर्नौती नामक तटस्थ स्थान को चले गये। जो बची हुई पोल सेना लड़ रही थी वह वार्सा नगर के चारों ओर एकत्रित हो गई और २९ सितम्बर तक लड़ती रही। उसी समय युद्ध का अन्त हो गया और राजनैतिक प्रश्न पुनः सामने उत्पन्न हो गये।

पोलैण्ड पर हिटलर का आक्रमण तीन कारणों से हुआ। १—दक्षिणी-पूर्वी योरुप पर जर्मन आक्रमण होने में पोलैंड बाधक तथा खतरनाक सिद्ध होता। २—चेकोस्लोवाकिया के मिलाने से बड़ी बड़ी सैनिक सामग्री तयार करने वाले कारखाने हिटलर के हाथ लगे। अब उसे भोजन सामग्री की आवश्यकता थी। आर्थिक स्थिति बिगड़ने से स्थित जटिल हो रही थी। पोलैंड एक कृषक देश है। उसकी ७५ प्रतिशत प्रजा किसान है। गेहूँ, राई, जौ और चुकन्दर वहाँ की प्रधान उपज है। साधारण वर्षों में ७८० लाख मन अनाज वहाँ बच जाता है जो विदेश चला जाता है। १९३७ ई० मे वहाँ १ करोड़ ५ लाख पशु थे जिसमे सुअर ७७ लाख और भेड़े ३२ लाख थीं। वहाँ के अधिकाँश सुअर, मक्खन, अंडा और शक्कर जर्मनी जाती थी। मांस आदि कुछ सामान इङ्गलैंड जाता था। पोलैंड मे वन बहुत हैं और वहाँ से लकड़ी बहुत अधिक निर्यात होती है। ३—बोरिस्लाव, ड्रोहोबीक्ज के तेल के कुएँ जिन पर हिटलर की आँखें लगी थीं।

यह बात निस्सन्देह सत्य है कि हिटलर ने स्टैलिन को बीच में कूदने के लिये आमन्त्रित नहीं किया था। सोवियत् ने जो सीमा निर्धारित की उससे हिटलर को बड़ा भारी दुःख हुआ होगा। उसे अपनी आशाओं पर पानी फिरता दिखाई पड़ा होगा। परन्तु उस समय राजनैतिक परिस्थिति ऐसी थी कि उसे सोवियत् शर्तें स्वीकार करनी पड़ीं और वह अपनी पूर्वी सीमा पर शान्ति स्थापित रखने के लिये सब कुछ करने को तयार था। इसी कारण हिटलर ने

पोलैंड का बटवारा
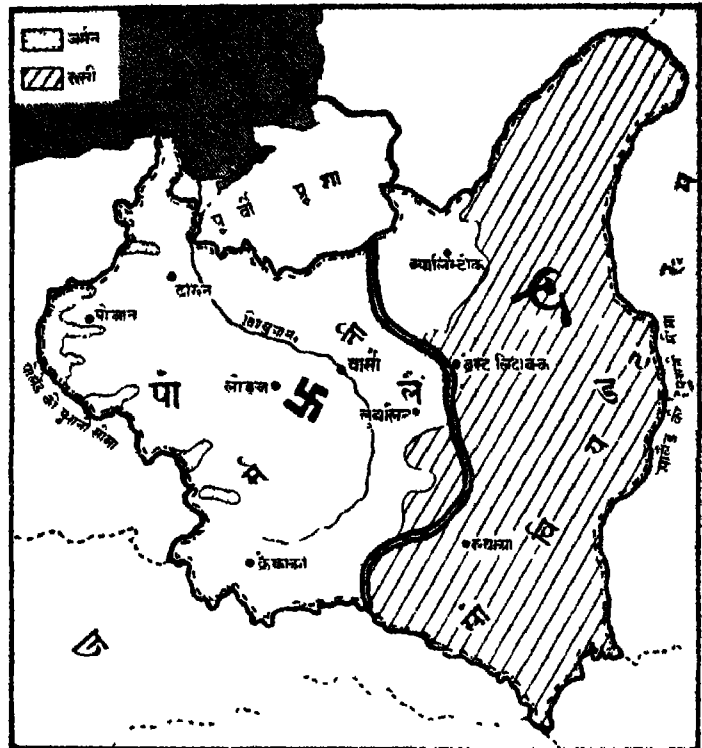
समस्त पोलैंड पर अधिकार करने वाली हार्दिक कामना प्रकट नहीं की और जहर के घूँट पीकर बैठ गया।

रूसी सेना की प्रगति से हिटलर का दक्षिणी-पूर्वी योरुप की ओर बढ़ना रुक गया। हिटलर दक्षिणी पूर्वी योरुप की ओर बढ़ना चाहता था इसी कारण जर्मन बम्ब वर्षकों ने ल्वाओ-सेर्नौती रेलवे लाइन पर बम्ब वर्षा नहीं की थी। जिससे रूमानियन सेनाएँ जा सकें और वहाँ से तेल लाया जा सके। रूसी

सेना के कारण वह द्वार बन्द हो गया था। साथ ही साथ रूसी सेना के भय और पोल तथा चेक लोगों को भी दबाये रखने के कारण उसे पूर्वी सीमा पर अपनी एक बड़ी सेना रखनी पड़ी। इस लिये जर्मनी की पूर्वी सीमा पोलैंड के पतन के बाद भी कठिन और खतरनाक बनी रही जिसे हटाने के लिये २२ जून १९४१ ई० को जर्मन सेना ने रूस पर आक्रमण कर दिया।

पोलैंड का इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्रूशा रूस तथा आस्ट्रिया ने १७७२, १७८३ और १७९१ ई० में पोलैंड का बँटवारा किया। उसके बाद नवम्बर १९१८ ई० में आस्ट्रिया जर्मनी और रूस के राजघरानों के अंत होने पर पोलैंड राज्य के स्वतंत्र होने की घोषणा की गई थी।

आधुनिक पोलैण्ड का निर्माता पिल्सुदस्की

पोल जाति स्वतन्त्रता की पुजारी है। वह विदेशी शासकों के आधीन नहीं रह सकती। इसलिये रूस या जर्मनी का शासन वहाँ पर अधिक समय तक चलना कठिन है।

डेनमार्क-प्रवेश

डेनमार्क का देश जर्मनी के पश्चिमी कोण पर स्थित है। इसका क्षेत्रफल १६५०० वर्गमील और जन-संख्या ३८ लाख है। फेरो द्वीप (उत्तरी सागर) आइसलैंड तथा ग्रीनलैंड भी डेनमार्क साम्राज्य में सम्मिलित थे।

आधुनिक महासमर के आरम्भ में डेनमार्क ने तटस्थ नीति का अनुसरण किया परन्तु जब पश्चिमी योरुप पर जर्मनी के विशाल आक्रमण का समय आया तो उसकी स्थिति संकटमय हो गई। डेनमार्क में पहले से ही जर्मन पञ्चम सेना के लोग काम कर रहे थे। ८ अप्रैल १९४० ई० को रात्रि में जर्मन सेनाओं ने डेनमार्क में प्रवेश किया और जर्मन लड़ाका जहाजों ने उसके बन्दरगाहों पर अधिकार कर लिया। डेनमार्क की सरकार ने जर्मन आक्रमण का नैतिक विरोध अवश्य किया परन्तु शीघ्र ही आत्म समर्पण कर दिया।

किङ्गक्रिश्चियन डेनमार्क के राजा। आपने जर्मन आक्रमण होने पर जर्मन छत्र-छाया में रहना स्वीकार कर लिया है।

डेनमार्क शान्ति-प्रिय होने के कारण अपनी सीमाओं की किले-बन्दी आदि की ओर कभी भी ध्यान नहीं दिया। वह अपनी सुन्दर सड़कों और रेलों के बनाने में लगा रहा। यह एक कृषक तथा रोजगारी देश है। रोजगार की उन्नति के लिये ही वहां की सरकार ने बड़ी सुन्दर २ सड़कें बनवाई हैं। जब उस पर अचानक हमला हुआ तो वह सामना नहीं कर सका। उसकी सुन्दर सड़कें तथा रेलें नाजी जर्मनी के काम आईं।

डेनमार्क पर जर्मन अधिकार हो जाने से उसके साम्राज्य की विचित्र दशा हो गई। फेरो द्वीप में पतन होते ही स्वतंत्रता की घोषणा कर दी गई। आइसलैंड तो पहले से ही स्वाधीन था। केवल डेनमार्क का राजा वहां का राजा माना जाता था। आइसलैंड पर ब्रिटिश जल-सेना ने अपना अधिकार जमा लिया। ग्रीनलैंड पर कनाडा और संयुक्त-राष्ट्र अमरीका की सरकार ने अपना अधिकार जमा लिया। इस प्रकार डेनमार्क साम्राज्य का अन्त हो गया और वहाँ जर्मनी का अधिकार स्थापित हो गया।

नॉर्वे विजय

नार्वे का क्षेत्रफल १ लाख २५ हजार वर्ग मील और जन-संख्या ३० लाख है। १९०५ ई० में नार्वे स्कैण्डीनेविया से अलग होकर स्वतंत्र राज्य बना यह एक शान्ति-प्रिय देश है। इसी कारण नार्वे अपने को युद्ध से अलग रखना चाहता था। परन्तु इंगलैंड और जर्मनी उसे युद्ध में घसीटना चाहते थे इंगलैंड और जर्मनी दोनों नार्वे तथा उसके सागरों पर अधिकार प्राप्त करना चाहते थे जिससे

किङ्ग हाकोन नार्वे के राजा। आपने जर्मन आक्रमण होने पर नाज़ी सेना का सामना किया और और पतन होने पर लन्दन चले गये।

जब आधुनिक महासमर का आरम्भ हुआ तो नार्वे ने अपने तटस्थ होने की घोषणा की। जब फिनलैंड पर रूसी आक्रमण हुआ तो नार्वे ने फिनलैंड के प्रति सहानुभूति प्रगट की और नार्वे से स्वयं सेवक फिनलैंड लड़ने गये परन्तु जब ब्रिटिश सेना ने अपने लिये फिनलैंड जाने को मार्ग-याचना की तो नार्वे की सरकार ने इंकार कर दिया। नार्वे को भय था कि यदि वह ब्रिटिश तथा फ्रान्सीसी सेनाओं को मार्ग देता है तो फिर जर्मनी क्रुद्ध होकर उस पर अवश्य आक्रमण कर बैठेगा।
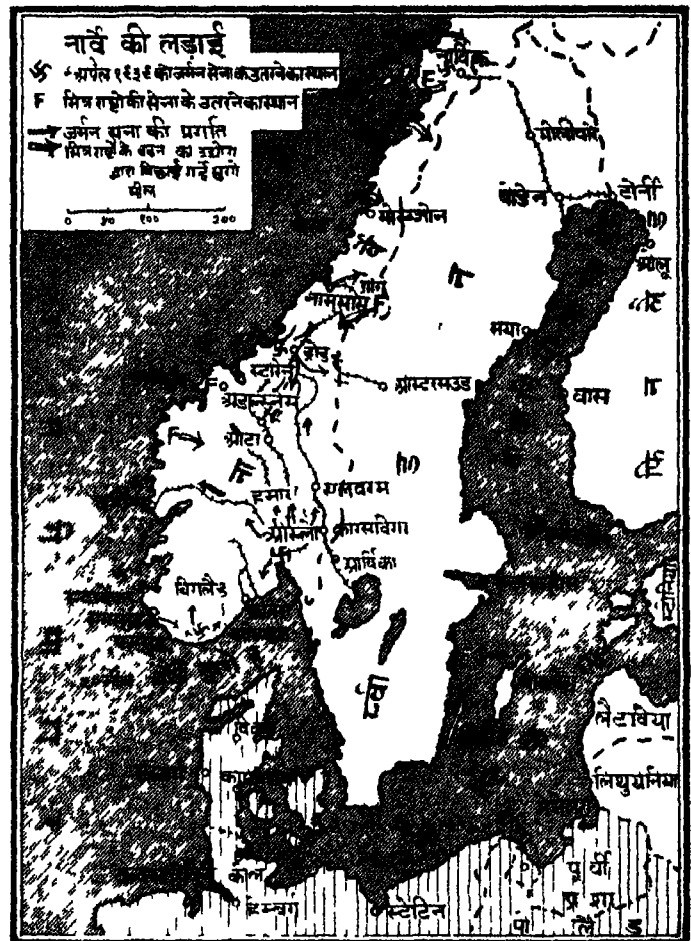
अटलांटिक सागरीय युद्ध में सहायता मिले। अप्रैल मास में स्थिति एकाएक बदल गई और अल्टमार्क नामक जर्मन जहाज से ब्रिटिश जहाजों ने अपने कैदी छीन लिये। जर्मनी को मौका मिल गया और उसने कहा नार्वे अब उदासीन रहने में असमर्थ है

अतः उस पर जर्मन छत्र छाया की आवश्यकता है नहीं तो ब्रिटेन उस पर अधिकार कर लेगा।

ब्रिटेन ने नार्विक और बर्गेन के मध्य समुद्र में सुरंगें बिछा दी थीं। युद्ध चेतावनी के पहले ही जर्मनी ने गुप्त रूप से नार्वे में सैनिक भेजने आरम्भ कर दिये थे। ऊपर से देखने मे खाली जहाजों का तांता माल लादने का ढोंग बनाकर जाने लगा। इनके भीतर
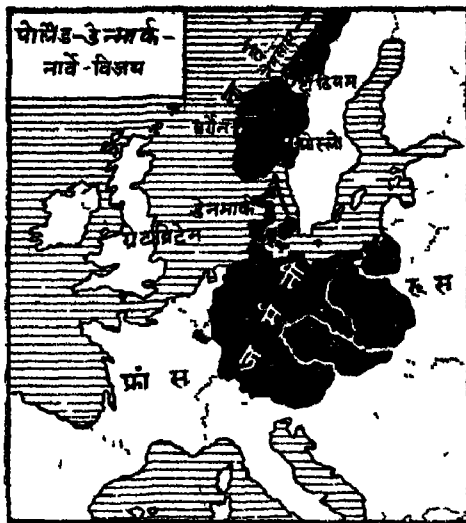
४

सुसज्जित सिपाही भरे थे। ८ अप्रैल को रातों रात जहाज गये और ९ अप्रैल को प्रातः काल नार्वे के ओसलो, बर्गेन ट्रांडियम बन्दरगाहों पर जर्मन जहाज पहुँच गये और सेना उतार दी। नार्वे के प्रधान बन्दरगाहो पर रक्षा के लिये पूरा प्रबन्ध था। परन्तु जब जर्मन जहाज ओसलो के समीप पहुँचे तो डाक्टर कोहाट (नार्वे के प्रधान सैनिक अफसर) के बनावटी हस्ताक्षर के साथ नार्वे के युद्ध पोतों के पास बिना तार का तार पहुँचा कि जर्मन जहाजों के साथ छेड़खानी न की जाय। बन्दरगाहों की सुरंगें भी बेकाम कर दी गईं जो बिजली द्वारा संचालित की जाती थीं। सैनिकों की प्रथम टोलियां बन्दरगाहों और नगरों के भीतर बैण्ड बजाती और गाती रहीं। नागरिक उनके गाने-बजाने में मुग्ध रहे। जब और अधिक सैनिक पहुँच गये तो जर्मन सेनाओं ने अचानक तार, रेडियो, पार्लियामेंट भवन आदि प्रधान स्थानों पर ८ बजे तक अधिकार कर लिया। ९ अप्रैल को ५ बजे प्रातः काल जर्मनी ने नार्वे की सरकार के सामने अंतिम शर्तें पेश कीं।

नार्वे की सरकार ने सतर्क होते ही अपने को शत्रु हाथों मे जकड़ा देखा। १५ अप्रैल को ब्रिटिश सेना भी नार्वे पहुँच गई। नार्विक बन्दरगाह पर ब्रिटिश जल सेना ने अधिकार कर लिया। जर्मन सेना और ब्रिटिश तथा नार्वे की कुछ सेना में लड़ाई होती रही। कुइस्लिंग की सहायता से जर्मनी ने नार्वे के बन्दरगाहों तथा हवाई-अड्डों पर अधिकार कर लिया था इस कारण दक्षिणी नार्वे में युद्ध नहीं हुआ। नार्विक बन्दरगाह पर जर्मनी तथा ब्रिटिश जल और स्थल सेना मे भीषण युद्ध हुआ। यह प्रथम समुद्री युद्ध था जिसमें ब्रिटेन को मुंहकी खानी पड़ी और बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी। ब्रिटिश सेनायें घिर गईं और उन्हें हथियार डाल देने पड़े। इस परास्त से चैम्बरलेन को शर्मिन्दा होना पड़ा। नार्वे की हार के कारण ही चैम्बरलैन को त्याग पत्र देना पड़ा और मि० चर्चिल प्रधान मन्त्री हुये। नार्विक तथा समस्त नार्वे पर जर्मनी का अधिकार हो गया। नार्वे की सरकार तथा वृद्ध राजा हाकोन इँगलैंड चले गये।

हालैंड और बेल्जियम की चढ़ाई

दस मई सन् १९४० ई० को जर्मनी ने प्रजातन्त्र राज्यों पर अपना आक्रमण प्रारम्भ किया। हालैंड पर उसने शीघ्र ही अधिकार जमा लिया। जब लक्सेम्बर्ग और बेल्जियम पर आक्रमण हुआ तो फ्रान्सीसी तथा ब्रिटिश मशीनों वाली सेना उत्तर-पूर्व की ओर शीघ्रतापूर्वक बढ़ी। इसका अधिकांश भाग बेल्जियम गया क्योंकि समाचार मिला कि शत्रु का जोर उस ओर अधिक है। बेल्जियम में जर्मन सेना ने मास्ट्रिख्ट स्थान पर म्यूज नदी को और हेसेल्ट के समीप अलबर्ट नहर को पार करके आक्रमण किया था। हवाई जहाजों की सहायता से एबेन का क़िला लिया गया और कुछ सेना बेल्जियम लाइन में भेजी गई। बेल्जियम की सेना ने शत्रु का सामना बड़ी वीरता से किया परन्तु जर्मन टैंकों तथा डुबकी लगाने वाले बम्ब वर्षकों के सामने उनकी एक न चली। उसके बाद मित्र सेना ने एन्टवर्प और ब्रूसेल्स नगरों को घेरती हुई सैनिक लाइन बनाई। इसी लाइन पर बेल्जियम सेना डटा दी गई। यह लाइन स्कॅल्ट नदी के मुहाने से एन्टवर्प के पूर्व होती हुई मैलाइन्स, लोवेन और जेम्बलौक्स नगरों से होकर नामूर तक बनाई गई थी। नामूर से म्यूज लाइन आरम्भ होती थी और मांटमेडी के समीप मैजिनो लाइन तक जाती थी। यही प्रधान रक्षक सीमा थी।

१४ मई को ज्ञात हुआ कि मास्ट्रिख्ट और लीज के मध्य वाला जर्मन आक्रमण वास्तव में प्रधान न था। यह बात सदैव से सत्य मानी गई है कि आर्डेनीस के बनैले प्रदेश की रक्षा और प्रदेशों की अपेक्षा सरलतापूर्वक हो सकती है इसी कारण उसकी रक्षा के लिये कम सैनिक प्रबन्ध किया गया था। इसी बनैले प्रदेश होकर शत्रु सेना पश्चिम की ओर बड़े वेग के साथ बढ़ी। इस प्रदेश में शत्रु सेना के अधिक से अधिक भारी तथा मध्यम श्रेणी के टैंक लगे हुये थे। १५ मई तक नामूर और सेदान के मध्य शत्रु सेना ने कई स्थानों पर म्यूज नदी को पार कर लिया और ब्रूसेल्स के सामने प्रस्तावित मित्र सेना की लाइन के बग़ली सेना के स्थान जा धमकी। इससे उस क्षेत्र की भी रक्षा न हो सकी जिसे शीतकाल में ब्रिटिश सेना ने फ्रांस और बेल्जियम की सीमा पर तयार किया था।

जर्मन सेना के इस वेगपूर्ण आक्रमण का बड़ा प्रभाव पड़ा। इसकी सफलता का प्रभाव समस्त युद्ध-क्षेत्र पर पड़ा। इसके कारण मित्र सेना टुकड़े टुकड़े हो गई और उसमें भगदड़ मच गई। फ्रांसीसी सेनापतियों में पुनर्संङ्गठन करना पड़ा। उस समय म्यूज नदी पर की फ्रांसीसी सेना में बुरी तरह भगदड़ मच गई थी और वह पीछे की ओर हट रही थी। मेज़ीर्स और सेदान के मध्य जर्मन भारी टैंको ने मैजिनो लाइन को तोड़ कर भीतर की ओर प्रवेश किया। इससे फ्रांसीसी सेना की विकलता तथा कठिनता और भी अधिक बढ़ गई।

इन सैनिक घटनाओं के फलस्वरूप एन्टवर्प-ब्रूसेल्स लाइन को तोड़ कर मित्र सेना को पश्चिम की ओर हटना पड़ा। १६-१७ मई को 'डेण्डे स्थान' में सैनिक लाइन संगठित की गई। यह अलोस्ट, आथ, मोन्स और मौब्यूग को घेरे हुई थी। इस स्थान पर जर्मन सेना ने जनरल जिराड की सेना को संकटपूर्ण स्थान की ओर ढकेल कर बड़ी कठिनता से अपनी रक्षक लाइन की रक्षा की। रक्षक लाइनों के बीच मार्ग बना कर शत्रु सेना के सैनिक जत्थे पंखे की भांति फैल गये और १९ मई तक मौब्यूग, मेज़ीरेंस, ले कैट्यू और सेंट क्वेंटिन आदि स्थानों को अड्डा बना कर जर्मन सैनिक जत्थे इधर उधर फैलने लगे। डेण्डे स्थान पर भी शत्रु सेना का दबाव बढ़ गया। २० मई को जर्मन जत्थे ऐस्ने नदी के रेथेल, ल ओन स्थानों तक फैल गये, उन पर अधिकार कर

लिया और फ्रांसीसी सेना की साधारण दशा बिगड़ कर शोचनीय हो गई।

२१ मई को शत्रु दल ने रक्षक लाइन को फिर तोड़ दिया और पेरोन तथा डोवाय के मध्य ३० मील सीमा से जर्मन भारी टैंक सीधी रेखा में आगे की ओर अग्रसर हुये। यह एक मित्र सेना को कुचल डालनेवाली घटना थी। यह टैंक भागती प्रजा को अपना परदा बनाते थे और जो सामान छीनते थे उसे अपनी खूराक बनाते थे इस प्रकार यह आगे बढ़ रहे थे। इन टैंकों ने मित्र लाइन के पीछे भीषण गड़बड़ी पैदा कर दी थी। एक ही दिन में अर्रास, अमीन्स और अबेविल्ले में जर्मन सेनायें प्रवेश कर गईं। जर्मन सेना समुद्रतट तक पहुँच गई और बेल्जियम तथा उत्तरी फ्रांस की सेनाएँ सोम और ऐस्ने की सेनाओं से अलग कर दी गईं।

५—हालैण्ड बेल्जियम का युद्ध

मित्र सेना की लाइन को बेधने के पश्चात् पंखे की भाँति फैलने वाली जर्मन सैनिक नीति शीघ्र ही मित्र सेना को मालूम हो गई इसलिये मित्र सेना चतुरतापूर्वक सीने और एस्ने नदी के दक्षिणी तट पर जमी रही। पर उत्तर की ओर जर्मन सेना ने बड़ी भीषण स्थिति उत्पन्न कर दी थी। उस ओर जर्मन सेना पेरिस की ओर बढ़ने के पूर्व ही मित्र सेना का सफाया कर देना चाहती थी। इसी नीति के अनुसार बेल्जियम सेना की स्केल्ट नदी की लाइन पर जर्मन सेना का दबाव बढ़ने लगा और औडेनार्डे के पुल पर अधिकार कर लिया गया। साथ ही साथ शत्रु की जलसेना ने बलोन, कैले और सेंटओमेर पर आक्रमण किया। २६ मई को बेल्जियम सेना पर भीषण जर्मन आक्रमण आरम्भ हुआ। घेंट और कोर्टराय पर अधिकार करके लीस नदी को शत्रु सेना ने पार किया। इस प्रकार बेल्जियम, ब्रिटिश और फ्रांसीसी सेनाएँ चारों ओर से मृत्यु के गाल में फँस गईं। मित्र सेनाएँ ब्रीज्गे, ब्रगेस के चारों ओर मेनिन, रौबेक्स, लिल्ले और मेवलाइन्स में पड़ी हुई थीं।

२८ मई को उपरोक्त घटनाओं से भी अधिक सङ्कटमय घटना घटी और बेल्जियम सेना का अधिकांश भाग जो ल्यूपोल्ड राजा के आधीन युद्ध कर रहा था उसने अपने हथियार डाल दिये। इस पाँच लाख सेना की कमी हो जाने से मित्र सेना का दम और भी उखड़ गया। पश्चिम की ओर बोलोन पर जर्मन अधिकार हो चुका था और कैले अलग किया जा चुका था, पूर्व की ओर आस्टेंड नगर बेल्जियम सेना द्वारा छोड़ दिया गया। मित्र सेना तीन ओर से घेरी हुई थी केवल पश्चिम की ओर डङ्किर्क का बन्दरगाह शेष था जिससे होकर समुद्री मार्ग द्वारा सेना हटाई जा सकती थी। मित्र सेना पर उत्तर-दक्षिण और आकाश की ओर से आक्रमण हो रहा था। तटीय क्षेत्र की रक्षा फ्रांसीसी जहाजी बेड़ा ऐडमिरल अबरियल की संरक्षता में कर रहा था। फ्रांसीसी जलसैनिकों ने डंकिर्क को सैनिक कैम्प बना दिया। उसी समय मित्र सेना का पूर्वी अग्रसर जत्था न्यूपोर्ट की ओर हट गया। समस्त जल सेना की बागडोर जनरल ब्लांचर्ड के हाथ में थी जो जनरल प्रिऔक्स और जनरल गोर्ट की सहायता से युद्ध की अग्नि-ज्वाला का सहन कर रहा था।

मित्र बगाली सेना ने भूमि के एक बड़े भाग को जल से भर कर अपनी रक्षा की। जनरल प्रिऔक्स की जिस सेना ने २९ मई को लिल खाली किया वह संकरे कारीडार में अपना जौहर दिखाने लगी। इस सेना की वीरता के कारण दूसरी फ्रांसीसी तथा ब्रिटिश सेनाओं को पीछे हटने में बड़ी सहायता मिली। इसी बीच सेनाएँ जहाज़ों पर चढ़ाई जा रही थीं। जिस स्थान पर जहाज़ सेना को हटाने में लगे थे वहाँ का तट छिछला और बालूदार था और केवल एक घाट ऐसा था जहाँ बड़े जहाज़ खड़े हो सकते हैं।

शत्रु के विमान ऊपर से बम वर्षा कर रहे थे। सैनिक अग्नि वर्षा की बौछार में जहाज़ों पर विदीर्ण पग रख रहे थे। मित्र सेना के विमान अपनी शक्ति के अनुसार शत्रु-विमानों को आकाश से हटाये रखने में व्यस्त थे। इङ्गलैंड के छोटे जहाज़ों के बेड़े तथा कुछ बड़े जहाज़ सेना को हटाने के कार्य में लगे थे। डंकिर्क से सेना हटाने वाली घटना का पूर्ण रूप से वर्णन करना कठिन है। इसका कारण यह है कि सेना अगणित छोटी छोटी टुकड़ियों में बँट गई थी और प्रत्येक टुकड़ी स्वतंत्रता पूर्वक अपने निजी तथा स्थानीय सुविधा के अनुसार काम कर रही थी। जिस वीरता के साथ डंकिर्क से सेना बचाकर हटाई गई उसका उदाहरण प्राचीन इतिहास में तो है ही नहीं वरन् भविष्य में भी मिलना कठिन होगा।

दूसरी जून १९४० ई० तक ३ लाख ५० हज़ार ब्रिटिश और १ लाख २० हज़ार फ्रांसीसी सेना बचा कर हटाई गई। सेना की सभी सैनिक सामग्री तथा आधुनिक लड़ाई के अस्त्र-शस्त्र शत्रु के हाथ लगे।

इस प्रकार मित्र सेना की उत्तरी सेना का अन्त हुआ। जितनी युद्ध सामग्री की हानि हुई उसी से हम इसे मित्र सेना की हार समझ सकते हैं। बाद में जनरल वेगाण्ड ने पेरिस में जर्मन सेना के दक्षिणी आक्रमण को रोकने का प्रयत्न किया था। परन्तु उपरोक्त घटना ने शत्रु का हौसला बढ़ा दिया था और साथ ही शत्रु सेना की संख्या भी बढ़ गई थी। एक बड़े लम्बे युद्ध क्षेत्र में जर्मन जैसे विद्युत-युद्ध-कौशल सेना का सामना करना बहुत ही बड़ा कठिन कार्य है। मित्र सेना ने भरसक प्रयत्न किया था कि
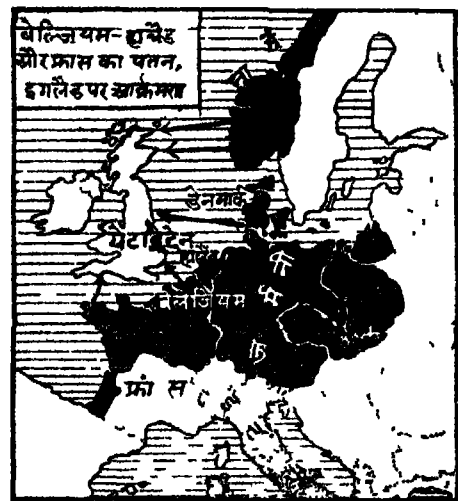
६

वह जर्मन विद्युत-युद्ध का सामना करे और प्रथम आक्रमण को रोकने में सफल हो परन्तु ऐसा न हो सका।

फ्लैण्डर्स के युद्ध में मित्र सेना को मुँह की खानी पड़ी। फ्लैंडर्स-युद्ध में सबसे महत्वपूर्ण घटना मैजिनो लाइन को वेधने वाली घटना थी। यह लाइन मित्र सेना ने अवेधनीय बना रक्खी थी। मित्र सेना ने जर्मनी की कलों की सेना टैंकों और डुबकी लगाने वाले जहाजों की पूर्ण शक्ति का अनुमान गलत लगाया था। मित्र सेना को स्वप्न में भी शत्रु की ऐसी प्रबल शक्ति की आशा न थी कि वह मैजिनो लाइन तोड़ देगी। फ्रांसीसी सेना की लड़ाका नीति एक स्थान पर डट कर युद्ध करने को थी। यह नीति घूम फिर कर युद्ध करने वाली नीति के सामने निकम्मी सिद्ध हुई। मित्र सेना ने टोटल वार (समस्त युद्ध) की समस्त कठिनता, निर्दयता और भयानकता का अनुमान ठीक रूप से नहीं लगाया था (यह अब भी ठीक रूप से नहीं अनुमान किया जा सका)। शत्रु ने हवाई जहाज से उतरने वाली छतरी वाली सेना, पञ्चम सेना और सेना वाहक विमानों का प्रयोग बहुत अधिक किया। यह बातें पहले कभी युद्ध में काम नहीं लाई गई थीं और बिलकुल आधुनिक थीं। शत्रु ने गलत समाचार फैलाने का प्रचार बेतार के तार द्वारा किया और छतरी की सेना द्वारा गलत समाचार फैलाने वाले दूत भागने वाली तथा हटने वाली प्रजा के मध्य उतारे जिससे प्रजा में बड़ी घबड़ाहट छा गई।

बन्दूकों से टैंकों का सामना नहीं किया जा सकता। ऐसा करने की आशा करना ही बेकार है। विमानों का उत्तर विमानों से और टैंकों का उत्तर और अधिक टैंकों से हो सकता है चाहे देश की सेना पीछे हट रही हो या आक्रमण हो रहा हो प्रजा को जहाँ कहीं हो वहीं साहस पूर्वक ठहरे रहना चाहिये। जो लोग सड़कों पर भागते हैं वह अपने साथ साथ बर्बादी और सर्वनाश के बीज लेकर चलते हैं। लाइन बनाकर लड़ने वाली नीति का परित्याग करके नवीन युद्ध-क्षेत्र सम्बन्धी नीति का सहारा लेना चाहिये। शत्रु पर आर्थिक दबाव भी अधिक से अधिक डाला जाना चाहिये।

फ्रांस का पतन

नार्वे की पराजय का इँगलैंड तथा फ्रान्स की सरकार पर गहरा प्रभाव पड़ा। इँगलैंड के प्रधान मन्त्री चैम्बरलैन ने त्याग पत्र दे दिया और मि० चर्चिल प्रधान मन्त्री बने। फ्रांसीसी मंत्री मंडल में भी खलबली मच गई थी। प्रधान मंत्री रेनाड फ्रांसीसी प्रधान सेनापति जनरल गैमलिन के मित्र थे अतः जब उनके हटाये जाने का प्रश्न फ्रान्सीसी मंत्री-मंडल के सामने उपस्थित हुआ तो डालेडियर ने त्याग पत्र देने की धमकी दी। ९ मई को फ्रान्सीसी मंत्री-मंडल में भीषण वाद विवाद होता रहा और लगभग आधी रात को बैठक स्थगित की गई दूसरे दिन नया मन्त्री-मंडल बनने को था। १० मई को जर्मन सेनाओं ने बेल्जियम, हालैंड और लक्सेमबर्ग पर प्रातः काल आक्रमण कर दिया। आक्रमण के कारण मन्त्री-मंडल बदल न सका। गैमलिन को अपने पद पर रहने का पूर्ण विश्वास न था अतः जल्दी में वह अपनी सेना का ठीक संगठन तथा विभाजन न कर सका। बेल्जियम और फ्रान्स से सहायता मांगी गई। प्रथम जर्मन आक्रमण के पश्चात् ही फ्रान्सीसी तथा ब्रिटिश सेनाएँ निदरलैंड्स पहुँच गईं।

मार्शल पेतां फ्रांस के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री तथा विची सरकार के प्रधान नेता।

एडमिरल डार्लन विचीसरकार के प्रधान नेता।

फ्रान्स ने अपनी रक्षा के लिये मैजिनों लाइन बनाई थी यह लाइन अवेधनीय थी परन्तु केवल पूर्वी भाग में थी। फ्रान्स पर जर्मन सेना ने लक्सेमबर्ग और बेल्जियम के मार्ग से धावा किया। बेल्जियम सीमा पर किले बन्दी अवश्य थी पर वह अधिक दृढ़ न थी। १४ मई को सेदान स्थान पर मैजिनो लाइन को शत्रु सेना ने तोड़ दिया और पंखे की भांति फैलकर भीतर फैलती हुई समुद्र तट की ओर बढ़ी। इससे मित्र सेना पर भीषण प्रभाव पड़ा। पाँच दिन घोर संग्राम करने के पश्चात् हालैंड ने अपने आत्म समर्पण कर दिये। जब यह समाचार पेरिस पहुँचा तो वहाँ बड़ी खलबली मच गई।

१५ मई को संध्या समय फ्रांस की सरकार ने एक घोषणा निकाल कर पेरिस को सैनिक क्षेत्र में मिला लिया नगर के द्वारों पर सैनिक पहरेदार लगा दिये गये और विदेशी नागरिक पकड़ लिये गये। उसी संध्या को मि० चर्चिल पेरिस गये और मिस्टर रेनाड, डालडियर तथा गैमलिन से बात चीत की।

१७ मई को फ्रान्स में जर्मन आक्रमण का सीमा क्षेत्र १० मील से बढ़ाकर ६० मील कर दिया गया। जर्मन सेनाओं ने लेकैटयू और लाचेपेल पर अधिकार कर लिया और रेथेल के उत्तर पहुँच गईं। रेथेल में १२ हजार फ्रान्सीसी सेना पकड़ी गई।

१८ मई को जर्मन सेना ऐस्ने नदी पर पहुँच गई और चैनल तट के बन्दरगाहों की ओर बढ़ी ताकि बेल्जियम में लड़ने वाली मित्र सेनाओं को फ्रान्स

उत्तरी फ्रान्स में जर्मन प्रगति

से अलग कर दे। यह शत्रु सेना पेरिस से ६० मील की दूरी पर थी। इस भाग में शत्रु की ८० डिवीजन पैदल सेना ११ डिवीजन मोटरों की सेना और ढाई तीन हजार टैंक थे (वायुयानों की संख्या अप्राप्त है) फ्रान्सीसी सेना जर्मन लहर को अपनी प्रसिद्ध ७५ एम. तोप को प्रयोग करके भी नहीं रोक सकी। जर्मन सफलता के कारण मि० रेनाड ने अपने मन्त्री-मंडल का फिर संगठन किया और मार्शल पेतां को उप सभापति बनाया। मिस्टर डाल्डियर विदेशी मन्त्री बनाये गये।

१९ मई को जर्मन आक्रमण रेखा साम्ब्रे ऐक्ने तक फैल गई और टैंकों का भीषण प्रयोग कर रही थी। २० मई को लओन नगर पर जर्मन सेना ने अधिकार कर लिया यह पेरिस से ७५ मील उत्तर-पूर्व है। जर्मन मोटर साइकिल तथा टैंक सेना पेरोन नगर के चारों ओर पहुँची और फ्रान्सीसी प्रजा को भयभीत बना दिया।

२१ मई को जर्मन सेना का अग्र भाग चैनल तट पर पहुँच गया और फ्रान्स तथा बेल्जियम की मित्र-सेनाएँ अलग कर दी गईं। पेरोन, एमिएन्स अबेविली बोलोन और अरास पर जर्मन सेना का अधिकार हो गया। २२ मई को चर्चिल फिर पेरिस गये और बातचीत की।

२२ मई को मित्र सेना द्वारा अरास नगर शत्रु हाथों से छीन लिया गया। २६ मई को पेरिस से लगातार समाचार प्राप्त हुये कि जर्मन सेना फ्रान्सीसी सेना का बुरी तरह संहार कर रही है और कैले पर जर्मन अधिकार हो गया है। डंकिर्क से मित्र सेना हटाई जाने का प्रबन्ध किया गया।

२७ मई को बेल्जियम के राजा ल्यूपोल्ड ने अपने मन्त्रियों के परामर्श बिना ही जर्मन हाई कमांड से क्षणिक संधि की मांग की और बेल्जियम की सेनाएँ मुख्य-मुख्य स्थानों से हटने लगीं। २८ और २९ मई

को फ्लैण्डर्स युद्ध समाप्त हो गया मित्र सेनाएँ डंकिर्क मार्ग से भागने लगीं। जर्मनी का हालैंड और बेल्जियम पर पूर्ण रूप से अधिकार हो गया।

पहली जून को एमियन्स नगर के पश्चिम सोम नदी पर जर्मन सेनाएँ आगे बढ़ीं। लिल्ल सीमा पर बाधाओं को तोड़ते हुये जर्मन सेनाओं ने आगे बढ़ कर २६००० मित्र सेना को पकड़ लिया। जर्मन वायुयानों ने मार्सेल्स और रोन घाटी के कारखानों पर बम्ब वर्षा की।

दूसरी जून को मासेल के पश्चिम मैजिनों लाइन पर नाज़ी तोपों ने गोले बारी की। ३ जून को लगभग २०० बम्ब वर्षकों ने पेरिस और उसके समीपवर्ती स्थानों पर बम्ब वर्षा की।

५ जून को चैनल से लआोन के मध्य १०० मील की लम्बाई में जर्मन सेना ने अपना दूसरा बड़ा आक्रमण आरम्भ किया। यह आक्रमण पेरिस पर अधिकार करने के लिये किया गया। यह सोम अथवा फ्रांस के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध किया गया है।

७ जून को जर्मन सेना ने सोम क्षेत्र में ३०० जर्मन टैंक घुस पड़े और वह ब्रेस्ले नदी को पार कर फोर्गेस-लेस-एआक्स पहुँच गये। यह रोवेन से ७० मील और पेरिस से ५० मील की दूरी पर है। फ्रान्सीसी सेना पर जर्मन सेना ने ऐसी मार-काट की कि उसे १५ या २० मील पीछे हटना पड़ा।

९ जून को जर्मन सेना ने रेथेल से अर्गोन तक के क्षेत्र में धावा मारा। फ्रांस तथा बेल्जियम में यह युद्ध सबसे बड़ा मशीनों और कलों वाला जर्मन आक्रमण था। इस आक्रमण के कारण मैजिनो लाइन की फ्रान्सीसी सेना का अग्र भाग भयभीत हो गया। पश्चिम की ओर जर्मन सेना मान की घाटी होकर पेरिस जाना चाहती थी। उस दिन पेरिस की दशा बड़ी शोचनीय हो गई। वहां फ्रांसीसी मन्त्री-मंडल की अंतिम बैठक हुई और नागरिक लोग नगर छोड़ कर भागने लगे।

पश्चिम ओर (जर्मन सैनिक मोटरें सेन नदी, जहां बीववैस होती जिसोर्स स्थान पर पहुँची) यह स्थान पेरिस से ३५ मील की दूरी पर है। मध्यवर्ती भाग में २० लाख जर्मन सेना लगी थी। यह सेना ऐस्ने नदी को पार करती स्वायसंस नदी के तटों पर पहुँची और पेरिस की ओर रुख किया।

१० जून को जर्मन सेनाएँ पेरिस के समीप पहुँच गईं। बीववैस से पेरिस केवल २५ मील ही है वहां भी जर्मन सेनाएँ पहुँच चुकी थीं। जर्मन सेना ने फ्रान्स की राजधानी पेरिस को अर्ध गोलार्द्ध बनाकर तीन ओर से घेर लिया था और तीनों ओर से नगर पर बढ़ रही थीं। बाईं ओर जर्मन सेना ने लोआर सेन नदी को कई स्थानों पर पार किया बीच वाली जर्मन

वर्तमान फ्रान्स

अधिकृत

अनधिकृत

सेना ने आयर्क घाटी पार किया और तीसरी सेना रीम्स नगर के पूर्व की ओर आगे बढ़ गई।

१० जून को इटली ने भी फ्रान्स पर युद्ध घोषणा की।

फ्रान्सीसी सेना का केन्द्र स्वायर बना दिया गया और मन्त्री-मंडल टर्स चला गया। रेनाड ने अमरीका से शीघ्रातिशीघ्र सहायता पहुँचाने की अपील की। और कहा "शत्रु पेरिस द्वार पर आ गये हैं।"

फ्रांसीसी सेना पर शत्रु सेना का आकाश और स्थल दोनों मार्ग से भीषण प्रहार हो रहा था फ्रांसीसी सेना में त्राहि-त्राहि मची थी। जर्मन मोटर सेना एक मार्ग होकर नगर के पश्चिम जा डटी। पेरिस नगर पर फ्रान्सीसी सेना का अधिकार हो गया और प्रत्येक घर गली और कूचे से शत्रु सामना करने की तयारी की गई।

इँगलैंड के प्रधान मन्त्री चर्चिल इटेन और दूसरे प्रधान अफसर टर्स पहुँचे और रेनाड, वेगाँ तथा पेतां से परामर्श किया। टर्स नगर पर भी उसी दिन जर्मन बम्ब वर्षकों ने बम्ब वर्षा की।

१२ जून को फ्रांसीसी सेना को स्थिति बड़ी संकटमय हो गई। वीर सैनिकों के पैर भीषण अग्नि वर्षा के सामने उखड़ चुके थे। चेटो-डी-कैब्जे स्थान पर मन्त्रीमण्डल की बैठक हुई और जनरल वेगां ने कहा कि देश की रक्षा करना निराशापूर्ण है, यदि क्षणिक सन्धि नहीं की जाती तो देश में क्रान्ति हो जाने का भय है परन्तु २८ मार्च की सन्धि के अनुसार फ्रान्स इँगलैंड के परामर्श के बिना क्षणिक संधि न कर सकता था।

जब कि जर्मन सेनाएँ पेरिस को तीन ओर से घेरे थीं पेरिस के प्रधान सेनापति जनरल डेञ्ज की प्रार्थना से बुलिट नामक अमरीकन राजदूत ने जर्मन सरकार को समाचार दिया कि "पेरिस द्वार खोलने की घोषणा की जाती है और रक्षक सेनाओं को हटाया जा रहा है"। पब्लिक स्थानों पर पेरिस द्वार खोलने की नोटिसें लगा दी गईं।

१४ जून को ७ बजे के बाद मोटर साइकिल वाली जर्मन सेना ने पेरिस में प्रवेश किया उसके बाद जर्मन फोटो खींचने वाले गये और फिर सेना ने प्रवेश किया।

१७ जून को जनरल पेतां ने अपनी सरकार बनाई और क्षणिक संधि का निश्चय किया। पेताँ ने कहा "शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध युद्ध बन्द कर दिया गया है और संधि करने के लिये कहा गया है"। २२ जून को संध्या ६ बज कर ५० मिनट पर क्षणिक संधि पर दोनों ओर से हस्ताक्षर हुये। फ्रान्स की ओर से जनरल हेटजीगेर और जर्मनी की ओर से जनरल कीटेल ने हस्ताक्षर किये। २४ जून को इटली और फ्रान्स में भी क्षणिक संधि हो गई। पेताँ सरकार की राजधानी विची नगर बनाया गया। दक्षिणी फ्रांस
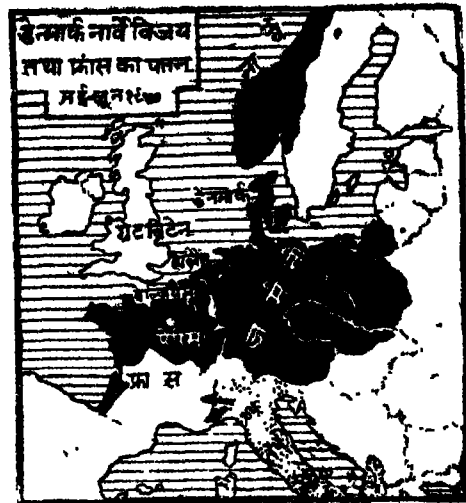
९

का भाग विची सरकार के आधीन है शेष पश्चिमी उत्तरी तथा पूर्वी भाग पर जर्मनी का अधिकार है। पेरिस जर्मनी के अधिकार में है।

फ्रांस की प्राकृतिक सम्पत्ति

अपनी प्राकृतिक दशा, उपजाऊ भूमि, जलवायु और प्राकृतिक साधनों के कारण फ्रान्स की आर्थिक दशा योरुपीय देशों में सबसे अच्छी है। वहाँ योरुप के उत्तम कृषि प्रदेश और कारखाने वाले प्रदेश स्थित हैं। फ्रान्स के मजदूर वर्ग का ३२ प्रतिशत रोजगार धंधों में और ३८ प्रतिशत खेती के काम में लगा है। वह अपने देश में अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिये भोजन सामग्री उत्पन्न कर लेता है। अपने राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति की शक्ति उसमें वर्तमान है। वह लोहा, सब्जी और बाक्साइट आदि बड़ी मात्रा निर्यात करता है। फ्रान्स में कच्चा लोहा और बाक्साइट योरुप के सभी राष्ट्रों से अधिक उत्पन्न होता है। पेट्रौल, कोयला और रूई उसे बाहर से मँगानी पड़ती है।

फ्रान्स की सब बड़ी न्यूनता यह है कि उसके उत्तरी-पूर्वी और पूर्वी सीमा पर अच्छे प्राकृतिक रोक के साधन नहीं हैं। इस ओर से सवा सौ वर्षों के भीतर पांच आक्रमण १८१४, १८१५, १८७०, १९१४ और १९४० ई० में उस पर हुये हैं। पूर्व की ओर बेल्फोर्ट के दर्रा होकर भीतर आने का मार्ग है। ओजेम निचली पहाड़ियों में कई एक नदियों की घाटियां हैं। वहां रोकने के साधन बड़े निर्बल हैं। वहीं पर बहुत अधिक लागत लगाकर मैजिनो लाइन तयार की गई थी। और अधिक उत्तर की ओर फ्रैंको-बेल्जियम सीमा पर मोएटमेडी और समुद्र के मध्य आक्रमण होना और भी अधिक सरल है। वहां मैदान और नीची पहाड़ियां स्थित हैं जिनमें होकर उत्तर पूर्व के धनी कृषि तथा कारखाने वाले प्रदेश और पेरिस तक शत्रु प्रवेश कर सकता है। बेल्जियम सीमा से पेरिस तक शत्रु प्रवेश कर सकता है। बेल्जियम सीमा से पेरिस की दूरी केवल १२० मील है। इस मार्ग को फ्रान्स ने अधिक दृढ़ नहीं बनाया था क्योंकि उसे बेल्जियम की तटस्थता पर विश्वास था। इसी खुले सरल मार्ग होकर जर्मन सेनाओं ने एक बार पुनः फ्रान्स में प्रवेश किया और विजय प्राप्त की।

इस मार्ग का चुनाव करने में जर्मनी के ध्यान में कुछ आर्थिक उद्देश्य भी थे। इसी सीमा पर फ्रान्स की बड़ी बड़ी कोयले की खानें और बड़े कारखाने वाले प्रदेश स्थित हैं। नोर्ड, पास-डे कैले की कोयले की खानें, दक्षिणी बेल्जियम की कोयले की खानों की श्रेणी और लिल्ल रौबे टौर्कोइँग तथा बालेसीनीस के बड़े कारखाने वाले केन्द्र सीमा से १० मील के भीतर ही स्थित हैं। इस प्रदेश में फ्रान्स के समस्त कोयले का दो तिहाई भाग रूई, सूती कारखानों का तीन चौथाई भाग और बहुत से रसायनिक कारखाने स्थित हैं। यह एक बड़ा कृषिक प्रदेश है। और फ्रान्स की चुकन्दर की शक्कर की उपज का ८० प्रतिशत भाग बहुत अधिक गेहूँ, आलू, सन और साग-तरकारी आदि इस प्रदेश में उत्पन्न होता है। इन सीमावर्ती जिलों के पीछे पेरिस का कारखाने वाला और खेतिहर प्रदेश स्थित है। ब्री और ब्यूस के प्रदेश मे बहुत अधिक गेहूँ उत्पन्न होता है। पेरिस के चारों ओर और सेन नदी के किनारे किनारे सूती कारखाने रसानिक तथा छोटे इंजीनियरिंग के कारखाने और फैशन-वाले सुन्दर वस्तुओं के कारखाने के केन्द्र स्थित हैं। इस भाग की आबादी भी बहुत घनी है। यहां रेलवे सड़कों और भीतरी जल मार्ग का एक बड़ा जाल सा बिछा हुआ है।

बासिल (बाल) तक सघन-आबादी की पेटी फ्रान्स की सीमा होकर बराबर चली गई है केवल आर्डेनीस के ऊँचे प्रदेश में आबादी कम है। लोरेन प्रान्त में कारखानों की बहुतायत पुनः हो जाती है। जहाँ फ्रान्स का १२ प्रतिशत कोयला, ९० प्रतिशत
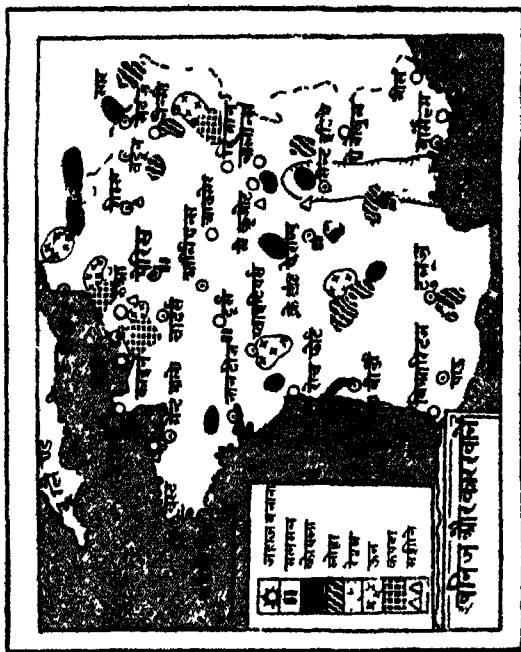
फ्रान्स

लोहा और ८० से ९० प्रतिशत तक कच्चा लोहा और फौलाद पाया जाता है। यह वस्तुएँ नैन्सी, मेज़ थियोन विल्ले के गिर्द में मिलती हैं। लोरेन में सूती कपड़े के भी कुछ कारखाने हैं। अलसेस में सूती कपड़े के बड़े बड़े कारखाने स्थित हैं और वहाँ फ्रान्स का समस्त पेट्रोल और सब्जी वर्तमान हैं। इसी प्रदेश की रक्षा के लिये मैजिनो लाइन का निर्माण हुआ था। यह बात विचारणीय है कि पेरिस के पतन के पश्चात् जर्मन सेनाओं का रुख इसी प्रदेश की ओर था।

गत महायुद्ध के बाद बहुत से फ्रान्सीसी कारखाने जर्मन और बेल्जियम सीमा से हटाकर दूर बन्दरगाहों और मध्यवर्ती पठार की छोटी-छोटी कोयले की खानों के समीप स्थापित किये गये थे। उदाहरण रूप से युद्ध सामग्री तयार करने का बड़ा कारखाना तथा केन्द्र ले क्यूसोट में स्थित है। अल्प्स प्रेनीस, और मध्यवर्ती पठार में कारखानों को चलाने के लिये हाइड्रो-एलैट्रिक शक्ति तयार की गई थी। फ्रान्स के बन्दरगाहों और जहाज बनाने वाले घाटों में भी काफी उन्नति की गई थी। जाहाज बनाने के लिये मार्सेल्स, बोर्डे और नैन्ट्स बन्दरगाहों की बड़ी उन्नति हुई जिसके कारण फ्रांस का व्यापार उसके उत्तरी अफ्रीका के उपनिवेशों और दूसरे देशों के साथ खूब बढ़ा।

इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से फ्रान्सीसियों को विश्वास था कि वह अपने कारखानों के सामान तयार करने वाली दुगनी-तिगुनी शक्ति फैलाव वाली कारखाने की योजना और भौगोलिक साधनों के कारण भीषण हवाई आक्रमण होते हुये भी बहुत अधिक समय तक शत्रु का सामना कर सकेंगे। परन्तु रण-क्षेत्र में फ्रान्स की स्थिति में भीषण परिवर्तन हो गया। जर्मनी ने समस्त कारखाने वाले केन्द्रों पर अधिकार कर लिया है। लोरेन की लोहे की खानों पर भी उसका अधिकार हो गया है।

जर्मनी ने अपने हवाई आक्रमण से फ्रांस के जिन कारखानों को नष्ट कर दिया है उनसे वह अधिक लाभ उस समय तक नहीं उठा सकता है जब तक कि वह उन्हें दुबारा ठीक न कर ले। कारखानों को ठीक करने में उसे काफी समय, धन और परिश्रम लगाना पड़ेगा तब कहीं जाकर वह उनसे लाभ उठा सकेगा।

शान्ति के समय जर्मन द्वारा अधिकार में न किये हुये फ्रान्स की जन संख्या ४ करोड़ २० लाख थी। उत्तरी फ्रान्स और बेल्जियम से भाग कर ५० या ६० लाख मनुष्य विची सरकार में आ बसे हैं। फ्रान्स में उसके लिये प्रत्येक भांति की भोजन सामग्री उत्पन्न होती थी। परन्तु जिस भाग पर जर्मनी ने अधिकार किया है वहां पर बहुत कम उपज होती है। वहां केवल शराब की अधिकता है जो वहां से बाहर जाती है। अधिकार किये हुये फ्रांस में ८० प्रतिशत कोयला, ८८ प्रतिशत लोहा, ६० प्रतिशत फौलाद, ८० प्रतिशत आटोमोबाइल कारखाने और ८५ प्रतिशत सूती कारखाने हैं। फ्रांस की समस्त सब्जी अधिकार किये हुये भाग में पाई जाती है। दक्षिणी भाग (विची) में बाक्साइट और हाइड्रो-विद्युत शक्ति अधिक है।

जर्मनी संघशासन से साम्राज्य

मध्य कालीन समय में जर्मनी योरुप का सबसे बड़ा शक्ति शाली राज्य था। इसके राजा होली (पवित्र) रोमन साम्राज्य के सम्राट बन गये थे और साधारण रूप से वे क्रिश्चियनडम के प्रधान थे। परन्तु वही उनकी निर्बलता थी। जर्मन सम्राट पोप के झगड़ों में पड़ कर अपना अधिकार इटली पर जमाना चाहते थे। इसकी पूर्ति करने में वह फँस गये और वह अपना शासन जर्मनी में न जमा सके जिसके फल स्वरूप जर्मनी ३६० छोटे छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभाजित हो गया। रिफार्मेशन के कारण यह फूट और भी भीषण रूप धारण कर गई और जर्मनी अपने पड़ोसी राज्यों और खास कर फ्रान्स का शिकार होने लगा। १६४८ ई० में तीस-वर्षीय युद्ध का अन्त वेस्टफोलिया की संधि से हुआ उस समय जर्मनी अपनी अवनति के शिखर पर पहुँच चुका था।

जर्मनी के दो मुख्य भाग हैं। सच्चा ट्यूटानिक जर्मनी एल्ब नदी और बोहेमियन पर्वतों के पश्चिम ओर है। यही भाग जर्मन काव्य, संगीत, व्यापार का घर और जर्मनी का सभ्य भाग है। एल्ब नदी के पूर्व का भाग जो प्राकृतिक सीमा द्वारा असीमित पोलेंड और रूस तक फैला हुआ है उसे गत सात या आठ शताब्दियों में स्लाव जाति ने जीता था। उस प्रदेश की जनता स्लैवानिक जाति की है। वहां अब भी एक प्रदेश है जहां स्लैवानिक भाषा बोली जाती है। वह सैनिक शासक वर्ग के आधीन है। और वहां के निवासी प्रूसन-जंकेर वर्ग के नाम से प्रसिद्ध हैं। वह एक प्रकार की किले-बन्दी में विश्वास करते थे। उन्होंने किले-बन्दी वाली अपनी प्रकृति तथा अपना मस्तिष्क भी वर्षों में बना लिया। और शैतानी चरखे चलाकर अपना अधिकार भी जमा लिया। उनके आक्रमण का प्रधान केन्द्र ब्रण्डनबर्ग था। जब ट्यूटानिक वीरों ने पूर्वी प्रूसा की विजय की तो १६२४ ई० में ब्रंडनबर्ग को मिलाकर प्रूसा का राज्य स्थापित किया गया।

जर्मन एकता का बीज इसी सैनिक (अधिकांश अजर्मन भाग) जाति से उत्पन्न हुआ। १६४८ और १७६३ ई० के मध्य प्रूसा का राज्य सैनिक धर्म, शैतानी शक्ति और धोकेबाज़ी द्वारा बढ़ाया गया। इस नीति का सबसे प्रसिद्ध संचालक फ्रेड्रिक बड़ा था १८०६ ई० में जीना के युद्ध में नैपोलियन ने प्रूसा की शक्ति को तोड़ दिया और राइन राज्यों का संयुक्त राष्ट्र स्थापित किया जिसमें सच्चे जर्मनी का समस्त भाग सम्मिलित था।

जब नैपोलियन की पराजय हुई तो प्रूसा ने राइन प्रान्तों को अपने में मिला लिया और सर्व प्रथम सच्चे जर्मनी के एक बड़े भाग का मालिक बन गया। उस समय राइन प्रान्त का संगठन प्रूसन ढंग पर किया गया। उसी समय समस्त जर्मनी का एक संयुक्त राष्ट्र बनाया गया जिसमें आस्ट्रिया और प्रूसा में नैत्रित्व के लिये बहुत दिनों तक झगड़ा होता रहा जब प्रूसा ने मोल्वेरीन अथवा व्यवसायी संगठन (जिसमें अधिकाँश भाग मिल गये) स्थापित किया तो उसकी शक्ति बढ़ गई। सच्चा जर्मनी प्रूसा की ओर से सदैव संदेह करता रहा और आस्ट्रिया का मित्र बना रहा।

उन्नीसवीं सदी के प्रथम अर्ध भाग में जर्मनी में नर्मदल के मत का जोर रहा। १८४८ ई० की क्रान्ति में जर्मनी में प्रजातांत्रिक संघ-शासन की स्थापना हुई। क्रान्ति के असफल होने पर नर्म दल वालों की प्रूसन पार्लियामेन्ट में राजकीय वर्ग पर विजय प्राप्त हुई। उसके बाद बिस्मार्क का समय आया उसने

पार्लियामेन्ट का कहना नहीं माना और कहा कि जर्मनी की एकता वाद-विवाद और प्रस्तावों द्वारा नहीं प्राप्त हो सकती वह प्रूसन ढंग से 'खून, और लोहे' से प्राप्त होगी। उसने डेनमार्क (१८६४), आस्ट्रिया (१८६६) और फ्रांस १८७० ई०) से युद्ध किया।

१८६६ ई० के युद्ध के पश्चात् आस्ट्रिया जर्मन संयुक्त राज्य से बाहर निकाल दिया गया। बिस्मार्क ने हेनोवर और उत्तरी जर्मन संयुक्त राष्ट्र स्थापित किया जिस पर प्रूसा का प्रभुत्व था। जब फ्रान्स के साथ युद्ध का अंत हुआ तो उसने दक्षिणी जर्मन राज्यों को जर्मन साम्राज्य में सम्मिलित होने के लिये प्रलोभन दिया। दक्षिणी राज्यों का फ्रान्स के साथ जो युद्ध हुआ था उसमें प्रूसा के साथ वह लड़े थे। इस साम्राज्य का सम्राट प्रूसा का राजा बनाया गया।

इस साम्राज्य का बिस्मार्क ने प्रजातांत्रिक विधान बनाया परन्तु विधान इतनी चतुरता से बनाया गया था कि सरकार राएस्टैग धारासभा) के आधीन न थी और वास्तविक शक्ति सैनिक वर्ग, जंकेर अफसर और उच्च वर्ग के हाथों में थी जो सम्राट के आधीन थे। धीरे धीरे दूसरे जर्मन राज्यों में प्रूसन सैनिक नीति फैलाई गई और जर्मन प्रान्तों के हृदय में प्रूसन सैनिक दृष्टि कोण भर दिया गया। इस प्रकार प्रूसा के सैनिक नीति और शैतानी शक्ति द्वारा जर्मनी का एकता हुई और जर्मनी योरुप का सबसे बड़ा शक्ति शाली राज्य हो गया परन्तु फिर भी जर्मनी में कुछ वर्ग ऐसे शेष रह गये थे जो शान्ति और न्याय को अधिक अच्छा समझते थे।

जर्मन संयुक्त राज्य से अलग होकर आस्ट्रिया ने आस्ट्रो-हङ्गरी साम्राज्य का संगठन किया। इसमें (जर्मन) आस्ट्रियन और मेगयर (माजार) जातियों के हाथ बागडोर थी। इन दोनों शासक जातियों के आधीन चेक, पोल, रूमानी, क्रोट और सर्ब जातियां थीं। जो असंतुष्ट तथा दुखी थीं। इस साम्राज्य के शासकों ने जर्मनी के साथ संधि कर ली और आनन्द पूर्वक राज्य करते रहे। यदि उपरोक्त जातियों का संगठन करके अलग अलग छोटे छोटे राज्य स्थापित न करके एक बड़ा संयुक्त राष्ट्र बना दिया गया होता तो वहाँ का इतिहास आज कुछ और ही होता।

गत १९१४-१८ ई० के महासमर के समय प्रूसन सैनिक नीति का शासन जर्मनी के हृदय पर जम गया और उस नीति के अनुसार आस्ट्रिया हँगी के राज्य आधीन राज्य बना दिये गये। उसके बाद प्राचीन रूप से योरुप पर विजय करने के लिये कदम उठाये गये। समस्त जाति युद्ध के लिये बड़ी निपुणता से तयार कर दी गई थी। जर्मनी विजय के द्वार तक पहुँच चुका था परन्तु उसे अंत में पराजय हो गई।

पराजय होने से नर्मदल को पुनः शक्ति ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हुआ। यदि उसे विजयी राष्ट्रों की सहायता मिलती तो शायद वह लड़ाका तथा विजय करने वाली जर्मन नीति पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेता परन्तु विजेताओं के अभाग्यवश विजयी राष्ट्रों ने उनका साथ न दिया। कुछ समय तक जर्मनी में अशान्ति, संकट, लड़ाई झगड़े और गरीबी को विकट समस्या प्रचलित रहीं। उसके बाद नाजीवाद का समय आया और नाजी दल ने समस्त जर्मन प्रजा को संगठन किया। हिटलर उसका प्रधान बना। नाजी मत के मात कर्णधार बने। उन्होंने पाठ पढ़ाया कि "समस्त जर्मन प्रजा एक शुद्ध जाति की है ईश्वर ने उसे संसार पर शासन करने के लिये उत्पन्न किया है"। समस्त जर्मन हृदय पर नाजीवाद का शासन पूर्णरूप से जड़ पकड़ गया। समस्त विरोधी वर्ग तलवार के घाट उतार दिये गये, दबा कर नष्ट कर दिये गये या जर्मनी से निकाल बाहर किये गये। इस प्रकार समूची जर्मन जाति को समस्त जर्मन राष्ट्र के प्रत्येक साधन को संगठित करके विजय प्राप्त करने के लिये अग्रसर किया गया जिसका फल आधुनिक महासमर है। आज सचमुच ही समस्त योरुप (इँगलैण्ड को छोड़कर) जर्मनी के आधीन है और रूस अपने अस्तित्व का संग्राम कर रहा है।

तृतीय राएच का उत्थान

१९३३ ई० में नाजी जर्मनी का हिटलर प्रधान नेता बना। उसी समय से जर्मनी योरुप के भय का कारण बन गया। उस समय योरुप के राष्ट्र आपसी झगड़ों के कारण जर्मन खतरे को वास्तविक रूप से न समझ सके। जर्मनी का कहना था कि वह अपने राजनैतिक तथा आर्थिक झगड़ों को तय करके अपने पड़ोसी राज्यों के साथ शान्ति पूवक समय व्यतीत करेगा। नाजी जर्मनी ने अपनी उन्नति के लिये तीन योजनायें तयार कीं। थीसेन-योजना आर्थिक उन्नति के लिये, रोजेनबर्ग-योजना जातीय के लिये और नवीन स्वलीफेन-याजना सैनिक उन्नति के लिये निर्माण की गई। इनमें मुख्य थीसेन (आर्थिक) योजना थी। शेष दो उसकी पूर्ति के लिये बनाई गई।

थीसेन, जर्मन स्टील ट्रस्ट का सभापति था। उसकी सहायता से हिटलर शक्तिशाली बना। जब जर्मनी पर राष्ट्रीय समाजवाद का प्रभुत्व हुआ और हिटलर उसका प्रधान बना तो थीसेस ने उस पर अपना अधिकार जमाया। थीसेस रूह प्रान्त का रोजगारी था। जर्मनी के फौलादी कारखाने और अधिकांश कोयले की खाने उसके आधीन थी। फ्रान्स और जर्मनी में कोयले वाले प्रदेश के सम्बन्ध में झगड़ा था। यह बात निश्चय थी कि उस झगड़े में जो विजयी होगा वह योरुपीय राष्ट्रों को फौलाद देने में प्रधान होगा और साथ ही साथ वही योरुप का सैनिक तथा रोजगारी नेता बनेगा।

थीसेस के रोजगारी साम्राज्यवाद पर ही जर्मनी की समस्त आर्थिक प्रथा अवलम्बित है। इसलिये जर्मनी की आर्थिक योजना के लिये कच्चे सामान तथा कारखाने के तयार सामान की खपत के लिये स्थान की आवश्यकता थी। इसी कारण हँगारी, बल्गेरिया, रूमानिया, यूगोस्लाविया, टर्की, ईरान, इराक, बल्कान में जर्मनी ने धीरे धीरे अपना प्रभुत्व जमाना चाहा। वह मिस्र और भारतवर्ष में भी अपने सामान की बिक्री चाहता है।

थीसेन के फौलादी ट्रस्ट की सहायता के लिये स्यूना, का मध्यवर्ती जर्मन रसायनिक समूह है। यह प्राकृतिक वस्तुओं की खोज करता है। इस कारखाने की खोज अधिक कोयले से प्राप्त होने वाली वस्तुओं के सम्बन्ध में होती है। इस कारखाने के कार्यकर्ता भी जर्मन व्यापार की वृद्धि चाहते हैं।

थीसेन ने हिटलर के द्वारा बेल्जियम, हालैंड और पोलैंड के कोयले, फ्रान्स और स्वीडन के लोहे बल्कान के तांबे और योरुपीय राष्ट्रों के भीतरी व्यापार पर अधिकार प्राप्त करने की योजना बनाई। वह योरुपीय राष्ट्रों के आर्थिक साधनों पर जर्मन अधिकार देखना चाहता था।

थीसेन की योजना की पूर्ति के लिये एक संगठित जाति की आवश्यकता थी जो समस्त योरुप पर अपना प्रभुत्व जमा ले और दूसरे जर्मन राष्ट्र उस जातीय साम्राज्य के आधीन हो जावें। वह राष्ट्र चाहे अपनी खुशी से मिलें या उन्हें जबर्दस्ती मिलाना पड़े। यही रोजेनबर्ग की जातीय योजना है।

१९२५ ई० में जर्मनी ने जनमत से सार जिले पर अधिकार किया। १९३६ ई० में राइन प्रान्त पर सैनिक अधिकार किया। उसके बाद आस्ट्रिया पर उसका अधिकार हुआ और ब्रेनर दर्रे पर प्रभुत्व हुआ इस प्रकार जर्मनी डैनूब घाटी के सिरे पर था और दक्षिण-पूर्व की ओर उसका मार्ग खुला था। वह चेकोस्लोवाकिया की दक्षिणी सीमा पर भी पहुँच चुका था।

म्यूनिक समझौते के बाद सुडेटन लैण्ड, चेकोस्लोवाकिया हिटलर के हाथ लगे। उसके बाद बोहेमिया और मोराविया पर जर्मनी ने अधिकार किया। मार्च

१९३९ ई० में मेमल पर जर्मनी ने अधिकार जमाया जिससे वह बाल्टिक राज्यों की ओर बढ़ सकता था। सितम्बर १९३९ ई० को डैञ्जिग पर अधिकार किया गया जिससे पोलिश कारीडर का मार्ग बन्द हो जावे और पूर्वी प्रूसा राएच से मिल जावे। उसके बाद पोलैंड पर जर्मन आक्रमण तथा अधिकार हुआ। यहां रूस ने जर्मन फैलाव में रोक उत्पन्न की। रूस ने पूर्वी पोलैंड और बाल्टिक राज्यों पर अधिकार जमा लिया।

फरवरी १९४० ई० तक त्रितीय राएच की सीमा ठीक रूप से निश्चित हो गई। मध्य योरुप में सभी जर्मन जाति के लोग नाजी अधिकार में हो गये। इस प्रकार रोजनबर्ग की योजना का प्रथम भाग पूर्ण हो गया। बीच बीच में जो दूसरी जाति के लोग बसे थे वह कुछ तो निकाल बाहर किये गये। कुछ मार डाले गये और कुछ पोलैंड में बसाये गये। उन लोगों के स्थान पर बाल्टिक राज्यों से जर्मन लोग लाकर बसाये गये।

आज जर्मनी युद्ध में भिड़ा है। थीसेन-योजना के अनुसार वह बढ़ रहा है। रोजेनबर्ग योजना के लिये एक बड़े उपनिवेश की आवश्यकता है। बड़ी पवित्र (जर्मन) जाति के लिये छोटी छोटी ग़ुलाम जातियां चाहिये। रूसी और पोलिश जाति का ही जर्मन जाति ग़ुलाम बनाना चाहती है।

काउण्ट स्वलीफेन ने योरुप पर विजय प्राप्त करने के लिये १९१४ ई० के युद्ध के लिये 'कनाए' योजना बनाई थी परन्तु १९१३ ई० में उसकी मृत्यु हो गई और मोल्टेक उसकी पूर्ति न कर सका। इस योजना के अनुसार जर्मन सैनिक विभाग एक स्थान पर अपनी समस्त शक्ति लगाकर आक्रमण करके विजय प्राप्त करना चाहता है। निर्णय कारी अस्त्रों से निर्णय कारी स्थान पर पूर्ण वेग तथा सेना के साथ निर्णय-कारी आक्रमण करके थोड़े समय में ही निर्णय करना जर्मन हमले की कुञ्जी है।

१९१४ ई० में जर्मनी का निर्णय कारी अस्त्र जर्मन तोपखाना और निर्णय कारी स्थान फ्रैंको-बेल्जियम वाली सीमा थी। गत महायुद्ध के पश्चात् फ्रान्स का विश्वास एक स्थान पर डट कर युद्ध करने वाली नीति के अनुसार मैजिनो लाइन पर था। यह दीवार फौलाद तथा कांक्रीट की बनी थी। जर्मनी ने एक स्थान पर डट कर युद्ध करने वाली नीति को चल-फिर कर युद्ध करने वाली नीति में बदल दिया है। नवीनस्वलीफेन योजना के अनुसार जहां कलों वाली (मशीनाइज्ड) सेना का प्रयोग नहीं हो सकता वहां हवाई युद्ध कौशल तथा शक्ति का प्रयोग किया जाता है। हवाई आक्रमण में जर्मनी का निर्णयकारी अस्त्र रसायनिक-गैस है। परन्तु इस कार्य के करते समय जर्मनी को अपने रुह प्रदेश के कारखानों की रक्षा करनी है। इसलिये उसकी रक्षा हेतु एक भीषण हवाई शक्ति उसने तयार की है जो मित्रराष्ट्रों के आक्रमण से उसकी रक्षा करता है। विजय प्राप्त करने वाले आक्रमण में टैंक और तोपों की भी सहायता उसे लेनी पड़ती है। शत्रु की सेना के मध्य मार्ग बनाना हवाई शस्त्रों का काम है। आक्रमण किये जाने वाले स्थान पर गैस फेंक कर सेना की चाल फेर बन्द कर दी जाती है उसके बाद प्रत्येक आने जाने तथा सामान पहुँचाने वाले मार्गों पर बम्ब वर्षा करके नष्ट कर दिया जाता है। यदि जर्मनी हवाई शक्ति में प्रधानता ग्रहण करने में सफल होता है तो फिर उसकी पराजय कठिन है।

जर्मनी के भीतरी जल तथा स्थल मार्ग

जर्मनी के सामान ले जाने के साधन रेलवे, मोटर-सड़कें और नदी नहर आदि भीतरी जल-मार्ग हैं। उसका समुद्री व्यापार अब केवल तटीय जहाजों द्वारा होता है। जर्मन विजय की वृद्धि के साथ ही जर्मन सामान ले जाने वाले साधनों की उपयोगिता और कठिनाई भी बढ़ती जाती है।

जर्मनी कारखाने वाला एक बड़ा ही उन्नतिशील देश है। इसी लिये वहाँ का रेलवे विभाग भी बहुत उन्नति कर गया है। वहां रेलवे लाइनों का एक बड़ा जाल बिछा है जिससे सेना के आने-जाने में बड़ी सरलता होती है। रेलों की उपयोगिता के विषय में फ्रांसीसी-जर्मन युद्ध के पूर्व ही वहां के सेना नायकों ने विचार किया था इसी कारण १८७१ ई० के विधान में जनरल स्टाफ को रेलों की वृद्धि तथा सुधार के लिये स्थाई शक्ति प्रदान कर दी गई थी। पहले प्रधान लाइनें बनाई गईं। उसके बाद सीमावर्त्ती जिलों को जाने वाली लाइनों तथा शाखा-लाइनों का निर्माण हुआ जो सैनिक दृष्टि से बड़ी लाभदायक थीं। १८८५ ई० से १८९५ ई० तक प्रशन रेलवे विभाग को प्रूशा की सरकार ने उन्नतिशील बनाने के लिये अपने हाथ में ले लिया था। प्रूशा की सरकार ने रायक की सहायता से रेलों का संगठन सैनिक दृष्टि से किया। सैनिक लाइनें दोहरी बनाई गईं और जंक्शनों पर अधिक भीड़ बचाने के ध्यान से शाखा लाइनें तयार की गईं जो प्रधान मार्गों को मिलाती थीं।

१९१४ ई० में जर्मनी के भीतरी भाग से पश्चिमी सीमा को जाने के लिये १३ स्वतंत्र प्रधान रेलवे लाइनें थीं और राइन नदी पर १५ रेल के पुल थे। चार लाइनें ऐसी भी थीं जिनसे बराज़ी सेना पश्चिमी सीमा पर आ-जा सकती थी। दूसरी चार लाइनें पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं को मिलाती थीं। १९१३ ई० में बेल्जियम और हालैंड की सीमाओं पर रेलवे लाइनें बनाई गई थीं। पूर्व की ओर पामेरेनिया के तट के समानान्तर पूर्वी प्रूशा और दक्षिण की ओर साइलेशिया में रेलवे लाइनें बनाई गई थीं। रूसी गेज विपरीत होने के कारण यह लाइनें सीमा पर समाप्त कर दी गई थीं और जर्मन सेना की प्रगति के साथ ही साथ साधारण मैदानी रेलवे लाइनों के बनाने की योजना भी की गई थी।

गत महायुद्ध के पश्चात् जर्मनी की रेलवे लाइनों का पुनर्सङ्गठन किया गया। १९३० ई० में नाज़ी संस्था ने सशस्त्र-योजना (Rearmament) आरम्भ की तो पश्चिमी जिलों की रेलों में और खासकर रूह्र प्रान्त में सुधार किये गये। उसके बाद अधिक मात्रा में सुधार किये गये। यह रेलवे लाइनें सैनिक और आर्थिक कार्यों के लिये समान रूप से उपयोगी हैं। कोलोन-डसेलडोर्फ-हैम रेलवे लाइन चार लाइनों की बनी है। मध्य जर्मनी के रेलवे स्टेशनों को बड़ा किया गया और नये कारखानों को जोड़ने के लिये नई शाखा लाइनें बनाई गईं। हाल से म्यूनिक जाने वाली रेलवे लाइन बिजली द्वारा चलाई जाने लगी। जर्मन रेलवे लाइनों के जाल का ५ प्रतिशत भाग बिजली से चलता है।

आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया के मिलाने से नई समस्याएँ उत्पन्न हो गईं। इसलिये इन दोनों देशों की लाइनों को दोहरी बनाया गया है।

जर्मन रेलवे की समस्त लम्बाई ७४००० किलोमीटर है। जर्मन रेलवे लाइनों के प्रधान जंकशन कोलोन, मैनहीम, हनोवर, बर्लिन, हाल, मैग्डेबर्ग लीपज़िग, म्यूनिक, नूरेम्बर्ग और वियना आदि हैं। रेलों के जाल के पीछे होने के कारण बम्ब वर्षा से शत्रु की रेलों को हानि तो अवश्य होती है परन्तु

अधिक शाखा लाइनों के कारण काम में रुकावट नहीं उत्पन्न हो पाती है।

मोटर वाली सड़कें

हिटलर ने सड़कों के निर्माण तथा संगठन की ओर अधिक ध्यान दिया है। बड़ी ट्रंक सड़कों के निर्माण के लिये योजना तयार की गई और विशाल जर्मनी में १३००० किलोमीटर लम्बी सड़कें बनाने का निश्चय हुआ। एक सड़क चेकोस्लोवाकिया होकर बनाई गई है। १९३८ ई० के अंत तक ३००० किलोमीटर लम्बी सड़कें तयार हो चुकी थीं। बर्लिन-हाल म्यूनिक-साल्जबर्ग, कर्ल्स-रूही, फ्रैंक-फर्ट कासेल, सार ब्रूकेन-मैनहीम, बर्लिन-ब्रेस्लायु-काटोविज और एल्बिंग-कोनिग्स्बर्ग सड़कें तयार हो चुकी थीं। यह सड़कें सैनिक कार्य के लिये बड़ी उपयोगी है। पेट्रोल की बचत करने के ध्यान से नागरिकों को मोटर चलाने की आज्ञा नहीं है।

नदियाँ और नहरें

जर्मनी में भीतरी जल-मर्गों का सदैव बड़ा भारी महत्व रहा है। राइन, एल्ब और ओडर आदि बड़ी नदियों में जहाज़ चल सकते हैं। डैनूब नदी में भी रेगेन्सबर्ग तक जहाज चलते हैं। डैनूब नदी से रूमानिया का तेल और बाल्कन प्रायद्वीप का नाज आता है। विस्चुला नदी में पोलैंड से डैंजिग तक जहाज चल सकते हैं। इन बड़ी नदियों को नहरों द्वारा मिलाना ज़रूरी था। इस प्रकार विशाल जर्मनी में भीतरी जल-मार्गों की लम्बाई ८००० किलामीटर से अधिक है। डोर्ट मराड-एम्स नहर रूहर को उत्तरी सागर से मिलाती है। जिसमें कोयले के निर्यात मे आसानी होती है। मिट्टलैण्ड नहर राइन-हर्ने नहर से मिल कर एल्ब नदी से मिलती है। इस नहर का बनना १९०५ ई० में आरम्भ हुआ था और १९३८ ई० में यह समाप्त हुई। मैग्डेबर्ग के समीप रोथेन्सी में जहाज उठाने के लिये स्थान बनाया गया है। इस प्रकार राइन और बर्लिन को तथा जर्मनी के पश्चिमी और पूर्वी भाग के जल-मार्गों को मिला दिया गया है मिट्टलैण्ड नहर में एक हज़ार टन का सामान लादकर, जहाज चल सकते हैं। पीपुल्सकारी फैक्ट्री और हर्मन गोरिंग कारखाने को जल-मार्गों से मिलाने के लिये नहरें बनाई गई हैं। एल्ब नदी को कई एक नहर बर्लिन और ओडेर से मिलाती हैं। इस प्रकार बर्लिन नगर पूर्व और पश्चिम दोनों से जल-मार्गों द्वारा मिला हुआ है। क्राशिचफाहस्टवेग (बड़ा जहाजी-मार्ग) बर्लिन स्टेटिन बन्दरगाह पर जाकर बाल्टिक सागर को बर्लिन से मिला देती है।

साइलेशिया में अडोल्फ हिटलर नहर ग्लीविज को मोराविया और वियना से मिलाती है। ओडर और नीपर नदी के मध्य नहर बनाने की योजना की गई है। सबसे बड़ी योजना राइन नदी को डैनूब नदी से मिलाने की बनाई गई है परन्तु यह नहर १९४५ ई० के पहले समाप्त होनी कठिन है।

डुइसबर्ग, बर्लिन और मैनहीम यह तीन भीतरी बड़े बन्दरगाह हैं। नहरों के कारण बम्ब वर्षा में सुविधा होती है। कील नहर बाल्टिक सागर को उत्तरी सागर से मिलाती है। यह नहर बाल्टिक सागर से उत्तरी सागर तक जर्मन जहाज़ी बेड़े के चलने फिरने के लिये बनाई गई है। इस नहर द्वारा जर्मन जहाजी बेड़ा तटस्थ सागर में पग नहीं रखता और उसे ब्रिटिश जहाजों का भय भी नहीं रहता है। इस जलमार्ग से बाल्टिक सागर के भीतरी प्रदेश का सामान हैम्बर्ग और पश्चिमी जर्मनी को जाता है।

तटीय व्यापारिक मार्ग

शान्ति के समय में हैम्बर्ग और ब्रीमेन जर्मनी के निर्यात केन्द्र थे। अब जर्मनी केवल नार्वे, बेल्जियम हालैंड और फ्रांस के साथ तटीय व्यापार कर सकता है। बाल्टिक सागर में जर्मन जहाज स्वेडन का लोहा फिनलैंड की लकड़ी जर्मनी ले जाते हैं। कील इस व्यापार और जर्मनी का प्रधान बन्दरगाह है और आगे स्टेटिन, डैन्ज़िग और कोनिग्सबर्ग के बन्दरगाह हैं।

जनरल वान स्टयेलप्रोगेल पेरिस के नाज़ी गवरनर ।

जनरल वान ब्राक रूस में नाज़ी सेना के सेनापति ।

जनरल वान रुँडस्टाट रूस में नाज़ी सेना के सेनापति ।

स्वीडन के राजा गस्टाव । आपने जर्मन शर्तों को स्वीकार कर के अपने देश को युद्ध से बचा लिया ।

रीनहार्ड हेड्रिच बोहेमिया और मोराविया के रक्षक । आप अपनी निर्दयता के लिये प्रसिद्ध थे आपकी हत्या कर दी गई ।

फील्ड मार्शल कार्ल गस्टाफ एमिलमैनरहीम फिनलैण्ड के प्रधान सेनापति ।
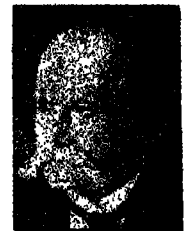
क्योस्टी कालीवो फिनलैण्ड के सभापति ।

रशीदअली इराक़ के प्रधान-मन्त्री जिन्हें ब्रिटिश सेना ने बग़दाद से निकाल दिया ।

सेवेस्टोपोल का ऐडमिरैलिटी भवन ।
यहीं से कालासागरीय रूसी जल सेना का नियन्त्रण होता है ।
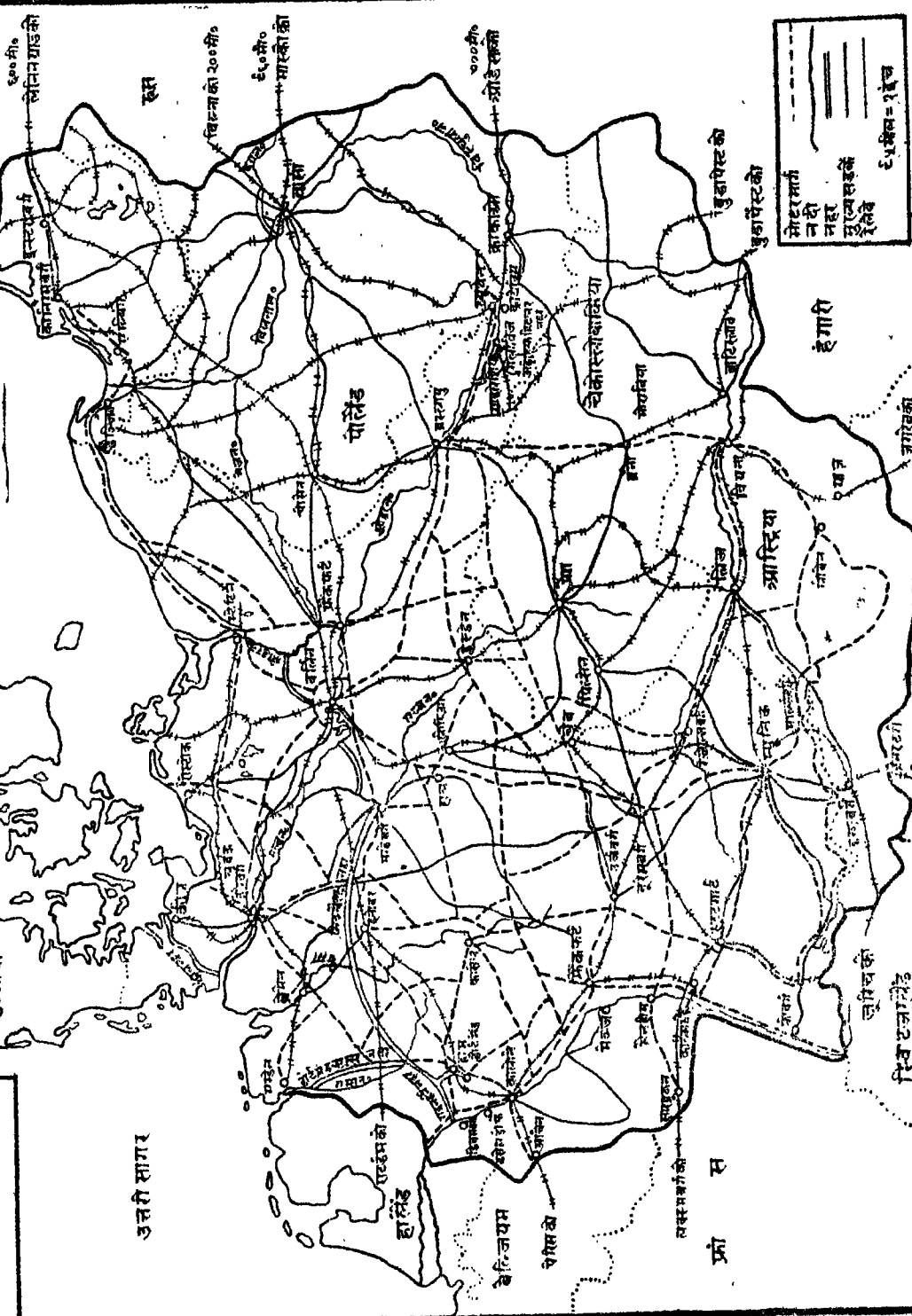
जर्मन उत्तरी सागर तट और जहाजी अड्डे

चार सितम्बर और २९ सितम्बर १९३९ ई० को ब्रिटिश विमानों ने कील नहर प्रदेश और विलियम्सहेविन के समीप जो आक्रमण किये उनसे यह भली भांति प्रतीत हो गया कि उसी प्रकार के आक्रमण ब्रिटेन पर शत्रु द्वारा किये जा सकते हैं। इसलिये उन आक्रमणों से ब्रिटेन की रक्षा करने की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ। इस साहसपूर्ण कार्य के लिये इन्फार्मेशन (समाचार सूचक) मन्त्री मंडल ने रायल एअरफोर्स को बधाई दी और कहा कि कील नहर ही केवल एक ऐसा मार्ग है जिससे बाल्टिक सागर से उत्तरी सागर में जहाज आ जा सकते हैं। इस मार्ग को जर्मन लोगों ने जल-सुरंगों द्वारा बन्द नहीं किया अतः उनके बाल्टिक सागर से बाहर आने और उसमें प्रवेश करने का केवल यही एक मार्ग है। इसी मार्ग में रायल (शाही) जल-सेना का प्रधान कार्य है।

१९३५ ई० में जर्मनी और ब्रिटेन में सामुद्रिक संधि हुई। इस संधि में जर्मनी ने इँगलैण्ड की तिहाई जल शक्ति रखने का वचन दिया। जर्मनी को सबमेरीन (पन डुब्बी) नावें बनाने की स्वतंत्रता दी गई और उस पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया। इसका मुख्य कारण यह था कि पनडुब्बी नावों के बनाने के काम पर रोक लगानी कठिन थी और दूसरे यह कि यह नावें किसी देश की रक्षा का कार्य करती हैं परन्तु सत्य बात तो यह है कि जर्मन पनडुब्बी नावें समुद्र में तीन मास तक रह सकती हैं और वह दूर दूर तक फैल कर आक्रमण कर सकती हैं। जर्मन सबमेरीनों ने ही करेजस ऐस बड़े व्यापारिक जहाजों को डुबा कर अपनी आक्रमण कारी शक्ति का परिचय दिया है।

१९१४-१८ ई० के गत महायुद्ध में जर्मनी ने पन डुब्बी नावों का जो युद्ध आरम्भ किया था उससे ब्रिटिश एडमिरैलिटी को बड़ी भारी हानि उठानी पड़ी थी और स्थिति बड़ी जटिल हो गई थी। जब पथ-रक्षक सेना का प्रबन्ध हुआ तो सबमेरीन के भय का अंत हुआ। उस समय भिन्न-भिन्न प्रकार के तीन हजार जहाज सबमेरीनों का शिकार करने के लिये समस्त संसार के समुद्रों में लगाये गये थे। उन पन-डुब्बी नावों ने १ करोड़ २० लाख टन के लगभग ५००० व्यापारिक जहाज डुबाये थे। समुद्री मार्ग पर लगी हुई पनडुब्बी नावों को प्रत्येक १५ दिन के पश्चात् सामान, कोयला, पानी, शस्त्रों और मरम्मत के लिये अपने अड्डों को वापस जाना पड़ता है। इसलिये उत्तरी सागर के इन तटीय अड्डों को नष्ट करने का उपाय किया गया और कील नहर के मार्ग को बन्द करने के लिये २३ अप्रैल १९१८ ई० को जीब्रूग और आस्टेंड पर समुद्री जहाजों द्वारा ब्रिटिश आक्रमण हुआ। आज की भाँति उस समय भी प्रधान शत्रु अड्डे फ्रीजियन नदी के मुहानों पर स्थित थे जहां पर वह बड़े सुरक्षित थे।

पूर्वी और उत्तरी फ्रीजियन तटों के समीप के द्वीप बालू तटों की भांति हैं। उनके चारों ओर पानी में डूबे हुये बालू के तट हैं जिन पर समुद्री जहाजों का आक्रमण नहीं हो सकता है। एल्ब और वेसर नदी के मुहानों के बन्दरगाहों पर सुरक्षित रूप से पानी के धरातल और पानी के नीचे काम करने वाले जहाज रह सकते हैं। इन बन्दरगाहों को जो जल मार्ग जाता है वह सुरंगों की पेटियों और कैटर जालों (Cator-nets) द्वारा बन्द कर दिये गये हैं। इस प्राकृतिक मोर्चे बन्दी (द्वीप समूह) में प्रत्येक भांति की युद्ध सामग्री शीघ्रता पूर्वक एकत्रित की जा सकती है। इन द्वीपों की रक्षा तोपों और सैनिकों द्वारा की

जा रही है। सिल्ट फोर (Fohr) नार्डेन और बोर्कुम आदि द्वीपों में हवाई स्टेशन बने हुये हैं। यह सुरक्षित प्रदेश राइन के कारखाने वाले प्रदेश के बहुत समीप हैं। जहाँ कोयला निकाला जाता है। और लोहा तथा फौलाद तयार किया जाता है मिट-लैण्ड नहर वेजर नदी को एम्स और एल्ब नदी से मिलाती हैं इसलिये कोयला, लोहा और फौलाद ब्रुन्स्बुट्टेल, कक्सहेवन, ब्रेमरहेवन, विलियम्स हेवन और एम्डेन आदि समुद्री अड्डों को सरलता पूर्वक पहुँचाया जा सकता है। अल्टोना, हैम्बर्ग और लूबेक के भीतरी बन्दरगाहों में युद्ध सामग्री तयार करने का काम होता है। अल्टोना और हैम्बर्ग के बन्दरगाह हेलीगोलैंड से ५० मील की दूरी पर हैं। लूबेक से कील नहर होकर हेलीगोलैण्ड की खाड़ी को मार्ग जाता है।

कील नहर

१८९५ ई० में कील नहर तयार की गई। १९०७ ई० से १९१४ ई० के मध्य वह और अधिक चौड़ी तथा गहरी बनाई गई यह नहर बाल्टिक और उत्तरी सागर को मिलाने वाला प्रधान मार्ग है। इस नहर द्वारा जर्मनी के भीतरी बन्दरगाहों से जहाज उसके उत्तरी पश्चिमी बन्दरगाहों पर शीघ्रताशीघ्र भेजे जा सकते हैं। यदि बाल्टिक सागर के डैनिश द्वीपों के दक्षिण और आस पास जल सुरंगें लगा दी जांय तो फिर जर्मनी का उत्तरी तट आक्रमण से बिलकुल सुरक्षित हो जाता है। इस नहर के पूर्वी कोण पर जर्मनी ने अपना कील का सबसे बड़ा जहाजी सैनिक अड्डा बना रक्खा है।

शत्रु के बन्दरगाहों के समस्त भेदों के मालूम हो जाने पर ४ और २९ सितम्बर के हवाई आक्रमण की महत्ता और भी अधिक बढ़ जाती है। विलियम्स हेवन बन्दरगाह नहर द्वारा एम्डेन बन्दरगाह से मिला है। यह जेड नदी के बाएँ तट पर स्थित है। वहां नदी और अधिक चौड़ी होकर खाड़ी की भांति हो जाती हैं वहाँ जर्मन जहाज बेपरवाही के साथ खड़े रहते हैं और स्वतंत्रता पूर्वक अपना सामान छोटे जहाजों की सहायता द्वारा लादा करते हैं। वहां बन्दरगाह में प्रेविग घाट हैं जिनमें विध्वंस कारक (डिस्ट्रायर) जहाज और बड़े बड़े तेल की टंकियों वाले जहाज जा सकते हैं। पनडुब्बी नावों को बाहर भेजने के ध्यान से इसकी स्थिति बड़ी सुगम है। कील नहर पर आस्टेरमूर का बन्दरगाह है वहां जहाजों पर तेल लादा तथा उतारा जाता है। ब्रुन्स्बूट्टेल के बन्दरगाह ने गत कुछ वर्षों में बहुत अधिक उन्नति की है। वह कील नहर के पश्चिमी कोण के समीप है। इस बन्दरगाह में झालों (लाकों) द्वारा जहाज प्रवेश करते हैं। जिनकी लम्बाई १ हजार फुट है। झालों के द्वारों की रक्षा बड़ी सावधानी से की जाती है। किसी भी समय भीतर प्रवेश करते और बाहर जाते समय जहाज देखा जा सकता है। इस प्रकार यदि जहाजों झालों या बन्दरगाहों को किसी प्रकार की हानि होती है तो उसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ेगा।

जर्मनी के कारखाने

जर्मनी के कारखाने समस्त जर्मनी और विजय किये हुये देशों में फैले हुये हैं। अस्त्र-शस्त्र तयार करने के लिये फौलाद और रसायनिक पदार्थ ही मुख्य हैं। जर्मनी के बड़े बड़े कोयले के प्रदेश के समीप और रसायनिक कारखाने भूरे कोयले के ज़िलों में स्थित हैं।

जर्मनी के मुख्य कोयले के प्रदेश रूहर, आचेन, सार, पश्चिमी जर्मनी, अपर साइलेशिया, सैक्सनी वाल्डेनबर्ग में स्थित हैं। चेकोस्लोवेकिया के मिलाने से वहां का कोयला भी जर्मनी के हाथ लग गया है। भूरा कोयला मध्य जर्मनी, एल्ब नदी के दाहिने और बांयें तट पर, कोलोन के समीप और सूडेटन क्षेत्र में पाया जाता है। लोहा सीगेरलैण्ड, साल्जगांटर, के समीप और बवेरिया में पाया जाता है। स्टीरिया के आस्ट्रियन प्रान्त में लोहा मिलता है जिससे आस्ट्रिया के फौलादी कारखानों का काम चलता है। स्वीडन का समस्त लोहा जर्मनी आता है।

जर्मनी और पोलिश अपर साइलेशिया में जस्ता की बड़ी बड़ी खानें हैं। अपर साइलेशिया में सीसा निकलता है। ईस्लेबेन में तांबा पाया जाता है। वायुयानों के लिये आल्मोनियम की जरूरत हैं। दक्षिणी-पूर्वी योरुप से जर्मनी को बाक्साइट मिलता है। मैंगनीज़ की प्राप्ति सज्जी से की जाती है। सज्जी बाडेन, अलसस, और आस्ट्रिया से प्राप्त होती है। आस्ट्रिया, अलसस, पोलैंड, हनोवर और रूमानिया में तेल के प्रदेश हैं।

रसायनिक पिट्रौल

सिंथैटिक (बनाया हुआ) पेट्रौल, कोयला और भूरे कोयले से तयार किया जाता है। इस प्रकार के पेट्रौल तयार करने के कारखाने गेल्सेनकिर्चेन, एसेन कास्ट्रो राक्सेल, कार्मेन, रीशोल्ज, स्टेर्करडे-होल्टेन और वेस्सेलिंग में है। मध्य जर्मनी में सबसे प्रसिद्ध कारखाना ल्यूना का है। दूसरे कारखाने बाहलेन, मग्डेबर्ग, डेस्साउ, जीट्ज और स्क्वार्जेहीडे में हैं। अपर साइलेशिया का कोयला इसी कार्य के लिये ब्लेशमेर और पोलिज के कारखाने में प्रयोग होता है। ब्रक्स के समीप सुडेटन प्रदेश में भी एक बड़ा कारखाना खोला गया है।

विद्युत-शक्ति के स्टेशन

विद्युत शक्ति कोयला, भूरा कोयला और पानी से प्राप्त की जाती है। इसके स्टेशन अधिकतर कोयले के कारखानों के समीप हैं। बर्लिन, रूहर, रेनिश, ज्चोर्नेविज़ोल्या, कैना, हार्के, मग्डेबर्ग, बोहलेन, ट्रांटेनडोर्फ, लौटा, फिनकेन-हियर्ड में स्थिय हैं रूहर (रीन फेल्डेन) और ब्लैक फारेस्ट (स्ल्लुक्सी) में हाइड्रो-एलेक्ट्रिक स्टेशन हैं। सबसे बड़ा जल-शक्ति का स्टेशन बवेरिया में वाल्चेन्सी है। आस्ट्रिया में ओरलबर्ग टीरोल में है। यह सभी स्टेशन एक दूसरे से तार द्वारा मिले हुये हैं जिससे यदि कोई कारखाना बिगड़ जावे तो भी वहां बिजली पहुँचती रहे। इन कारखानों से अब सुडेटन क्षेत्र के विद्युत-कारखाने भी मिला दिये गये हैं। नार्वे के विद्युत कारखानों को भी जर्मनी के कारखानों से मिलाने का प्रवन्ध हो रहा है।

रूहर प्रान्त—जर्मनी के बड़े कारखानों का प्रदेश

यहाँ सबसे अधिक फौलाद तयार होता है। इस प्रान्त में प्रतिवर्ष १२,१०,००,००० टन कोयला निकाला जाता है। युद्ध के पहले यहाँ १ करोड़ ५० लाख टन फौलाद तयार किया जाता था। डसेलडोर्फ, डविस्बर्ग, मूलहीम, आवेर हासेन, बोट्रोप, ग्लैडबेक, ब्वेर, रेक्लिं घासेन, गेल्सेनकिर्चेन, वाने, बोचूम, एसेन, डोर्टमंड, स्चवर्टे, और हैम इस प्रदेश के

बड़े कारखाने वाले नगर हैं। वेस्टफीलिया में मुन्सटेर (सूती) और बीलेफेल्ड (मशीन, गाड़ियाँ और पुर्जे) के कारखाने हैं। अपेर्टेल में रसायनिक कारखाना और सोलिंगेन तथा रेम्स्चडि में लोहा तथा फ़ौलाद तयार करने के कारखाने हैं। डुसेलडोर्फ और कोलोन के मध्य राइन नदी पर लेवेर्कूसेन का बड़ा रसायनिक कारखाना है। कोलोन में इञ्जीनियरिंग के प्रत्येक भांति के सामान तयार करने के कारखाने हैं। इसी से ब्रिटेन ने हाल में इस नगर पर सबसे अधिक बम्ब १०२० विमानों से गिराये।

डिवस्बर्ग और डसोलडोर्फ के मध्य राइन नदी के बाएँ तट पर क्रेफेल्ड है जहाँ गाड़ी के छकड़ों तथा सूती कारखाने हैं। ग्लाडबाच और रहेडट में बिजली के पुरजों के कारखाने और आचेन में धातु सम्बन्धी कारखाने हैं। आचेन में प्रतिवर्ष ८ लाख टन कोयला निकाला जाता है। कनाप्सैक में नाइट्रोजन गैस तयार करने का कारखाना है।

मध्यवर्ती जर्मनी—नवीन रसायनिक कारखाने

यहाँ भूरे कोयले के कारखाने हैं। भूरे कोयले का प्रदेश ब्रन्सविक से मग्डेबर्ग तक फैला हुआ है। डेस्साउ, हाल, मेर्सेबर्ग, लाइज़िग आल्टेनबर्ग और लौसिट्ज में भी भूरे कोयले के प्रदेश हैं। मध्य जर्मनी में कारखाने के अतिरिक्त उपजाऊ मैदान भी हैं।

मध्य जर्मनी के कारखानों की उन्नति १९३३ ई० और १९३८ ई० के मध्य हुई। १९२५ ई० में वहाँ की १७ प्रतिशत जनता खेती में लगी हुई थी। १९३८ ई० में केवल १२ प्रतिशत लोग खेती करने वाले शेष रह गये। राइनिश-वेस्टफीलियन ज़िलों की जनसंख्या में २१७००० मनुष्यों की कमी हो गई। जर्मनी ने अपने इस प्रान्त में विस्फोटक (धड़ाके वाले) पदार्थ को नाइट्रोजन से तयार किये। नाइट्रोजन से विस्फोटक पदार्थों के तयार करने की उन्नति यहूदी प्रोफेसर हार्बर ने की थी। यह ल्यूमा के बड़े कारखानों में में तयार किये जाते हैं। ल्यूमा के कारखानों का आरम्भ १९१६ ई० में हुआ था। ल्यूमा के कारखाने मेर्सेबर्ग के समीप स्थित है। गत महासमर के समय इस प्रदेश में कई एक नये कारखाने खोले गये थे। हाल के समीप लौता और बिटरफील्ड के आल्मोनियम के कारखानें हैं। प्रेम्निज और मग्डेबर्ग में रयोन (Rayon) के कारखाने हैं। वोल्फेन के कारखानों से युद्ध सम्बन्धी वस्तुएँ भी तयार होती हैं। नाज़ी सरकार ने उपर्युक्त कारखानों की वृद्धि की ओर दृष्टि की और सेन्थैटिक (रसायनिक) तेल बनाने के कारखाने खोले। सच्कोपायु में बूना (सेन्थैटिक या बनाया हुआ रबर) के कारखाने हैं यह मेर्सेबर्ग के समीप है।

मध्य जर्मनी में हाल के कारखानों में इञ्जीनियरिंग तथा वायुयान के सामान तयार होते हैं। मेर्सेबर्ग, संगेर हौसेन, नार्टौसन और लीपज़िग में इञ्जीनियरिंग और धातु सम्बन्धी कारखाने हैं। मग्डेबर्ग में बड़े बड़े कारखाने हैं जहाँ फौलाद, जहाज बनाने के सामान, लोकोमोटिव और कलपुर्जे तयार होते हैं। यहाँ का बड़ा कारखाना में ग्रूसन है जो क्रप्स कारखाने का सहायक कारखाना है। यहाँ जस्ता और तांबा तयार करने के कारखाने भी हैं।

डेस्साउ जंकर्स वायुयानों के तयार करने का मुख्य केन्द्र है। डेस्साउ कारखानों के सहायक कारखाने, बर्नबर्ग, कोथेन, स्चोनेबेक, हल्बर्स्टाट, ल्यूपोल्डशाल और लाइपज़िग में है।

स्टास्फर्ट, न्यूहाल्डेन्स्लेबेन और आस्चेर्सलेबेन में सज्जी से रसायनिक पदार्थ तयार किये जाते हैं। ईस्लेबेन के समीप मैन्सफील्ड में तांबा निकाला जाता है ब्रन्सविक में इञ्जीनियरिंग तथा विमानों के तयार करने के कारखाने हैं। ब्रन्सविक के दक्षिण साल्ज़गीटेर में लोहा पाया जाता है। यहाँ हर्मन गोरिंग कारखाने से सम्बन्धित एक कारखाना फौलाद तयार करने के लिये खोला गया है। थाले में एक दूसरा फौलादी कारखाना है। फालेर्सलेबेन में पीपिलसकार का कारखाना है जो युद्ध के लिये बड़ा उपयोगी है। मुख्य मध्यवर्ती प्रदेश के बाहर कासेल का कारखाना है जहाँ रेल के छकड़े तथा विमान बनते हैं। वेट्ज़लार में कलों और सीजेन में फौलाद तयार करने के कारखाने हैं।

थूरिंगिया के गोथा नगर में रेल के छकड़े और विमान के, ईसेनाच में विमान तथा इञ्जिन के, एर्फर्ट में इञ्जीनियरिंग के, चेम्निज में रेलके छकड़े, मोटर कार, सूती कपड़ा और कोयला के, बौटज़ेन में कलें और रेल के छकड़ों के कारखाने हैं। इनके अतिरिक्त

दीसा और फ्रोटाल में बिजली के ड्रेस्डेन में कल-पुर्जो के अग्रावर्ग में बिजली के कलपुर्जों के प्लावेन में सूती कपड़े, कल, गाड़ियों और लकड़ी को गैस से चलने वाली गाड़ियों के तयार करने के कारखाने हैं।

ब्रैण्डनबर्ग—बर्लिन प्रदेश

इस प्रदेश का बर्लिन ही केन्द्र है। बर्लिन के चारों ओर वायुयान के कारखाने बनाये गये हैं। बर्लिन के उत्तर की ओर हाइन्केल का बड़ा कारखाना है जहाँ युद्ध सम्बन्धी सामग्री, रसायनिक पदार्थ और विमान तयार किये जाते हैं। ब्रैण्डनबर्ग में मोटर कार, साइकिल ओपेल आटोमोबाइल के कारखाने हैं। राथेनोव बर्लिन के पश्चिम है यहाँ चश्म के ऐनक, दूरबीन, खुर्दबीन आदि सामान तयार करने के कारखाने हैं। बर्लिन के पूर्व फर्स्टेन्वाल्डे है। यहाँ प्रकाश के सामान तयार करने के लिये एक बड़ा कारखाना है। लौसिट्ज सूती कारखानों का केन्द्र है। लौटा के आल्मोनियम कारखाने, कोटबस के इंजीनियरिंग कारखाने और स्प्रेमवर्ग के ढलाई करने के कारखाने हैं। लौचहामेर के कारखानों में फौलाद, कलें और रेल के छकड़े तयार किये जाते हैं।

अपर साइलेसिया—पूर्वी कारखानों का प्रदेश।

यह जर्मनी का तीसरा कारखाने वाला प्रदेश है। यहां कोयला जस्ता और सीसा पाया जाता है। योरुप में सबसे अधिक जस्ता यहीं मिलता है। यहां का कोयला बाल्टिक राज्यों को भेजा जाता है। दक्षिणी पूर्वी योरुप और इटली को भी यहीं से कोयला जाता है। यहां के कोयला के कारखाने जर्मन युद्ध के लिये बड़े उपयोगी हैं क्योंकि यहां तक ब्रिटिश बम्ब वर्षक नहीं पहुँच सकते हैं। इसी प्रदेश में अपर साइलेसिया और चेकिश अम्ला प्रदेश भी सम्मिलित हैं। १९३८ ई० में इस प्रदेश में ५ करोड़ ५ लाख टन कोयला निकाला गया था। अब यहां के कोयले की उत्पत्ति और भी बढ़ गई होगी यहां के कारखानों में स्वीडन का लोहा लगाया जाता है।

इस प्रदेश के कारखाने ब्यूथेन से चेक सीमा तक फैले हुये हैं। यहां के प्रधान कारखाने ब्यूथेन, हिंडन बर्ग, ग्लीविट्ज और राती बोर हैं जो जर्मन साइलेशिया में हैं। पोलैंड सीमा की ओर टर्नोविस, क्रोलेव्स्का हुटा, रीब्निक प्लेस, ग्रोस्नोविस, और डोम्ब्रोवा मुख्य कारखाने हैं। ओल्सा जिले के कारखानों का केन्द्र बोहूमिन है।

ओडेर नदी में कोसल तक जहाज चल सकते है। इसी के तट पर ब्रेसलाओ नगर है। ब्रेसलाओ साइलेसिया के कारखानों का केन्द्र है। लोअर साइलेसिया में गोर्लिज लीगनिज, हिर्श्चबर्ग दूसरे बड़े कारखाने हैं। वाल्डेन बर्ग के समीप लोअर साइलेसिया की कोयले की खान है।

सार जिला

यह कोयले वाला जिला जर्मनी के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यहां कोयले की खानों के साथ ही साथ रुहर और साइलेसिया की भांति फौलाद के कारखाने भी हैं। १९३८ ई० में यहां १ करोड़ ४० लाख टन कोयला निकाला गया था। यहां के प्रधान कारखाने वाले नगर सारब्रुकेन न्यून किर्चेन हैं। सार जिले से मिला हुआ लोरेन प्रान्त है। यहां बड़े बड़े कारखाने और लोहे की खानें हैं। लुडविग्सहाफेन में रसायनिक कारखाने और स्पेयेर में हवाई जहाज तयार करने के कारखाने हैं। यहां के कारखाने गोरिंग और दूसरे जर्मन कारखानों से मिला कर खोले गये हैं। लोरेन से मिला हुआ राइन के बायें तट पर अल्सेस है। यहां सज्जी और मिट्टी का तेल मिलता है अल्सेस में सूती तथा इञ्जीनियरिंग के कारखाने हैं।

दक्षिणी जर्मनी के कारखाने

यह भाग मैन नदी से स्विस और आस्ट्रियन सीमा तक फैला हुआ है। लोअर मैन नदी पर फ्रैंकफर्ट का बड़ा कारखाना है। इसी के समीप ग्रोसहीम के बड़ा रसायनिक कारखाने हैं। इससे और दक्षिण की ओर ओपेल मोटर कार का कारखाना है। मैन और राइन के संगम पर मैञ्ज, विस्बाडेन और बीब्रिच के कारखाने हैं। फ्रैंक फर्ट के पूर्व ओफेनबाच और हनायु के कारखाने हैं। दक्षिण की ओर डार्म्स्टाट का रसायनिक तथा धातु सम्बन्धी वस्तुओं का कारखाना है।

मैनहीम जर्मनी का तीसरा भीतरी बन्दरगाह और रेलवे केन्द्र है। यहां इञ्जीनियरिंग, बिजली के आमेटम और कागज के कारखाने हैं। इसी के

समीप होडेलबर्ग का कारखाना है जहां कलें और रेल के छकड़े तयार किये जाते हैं। कार्ल्सरूही में अस्त्र शस्त्र बनाने का बड़ा कारखाना है। राइनफेल्डेन और वाल्डशट आलमोनियम तयार करने के कारखाने हैं। इन्हीं के समीप सिंग्जेन और फ्रीबर्ग में नाइट्रोजन और अल्मोनियम तयार करने के कारखाने हैं। फ्रीबर्ग में ब्लैक फारेस्ट की लकड़ी के कारखाने हैं। बाडेन और अटेमबर्ग में घड़ी तथा कुशल युद्ध मजदूरों के लिये अच्छे सुन्दर औजारों के बनाने के कारखाने हैं।

ऊटेनबर्ग में स्टटगार्ट, डैम्लेर बेन्ज, एस्लिंगेन रयूटलिंगेन, हील्ब्रोन, नेकार सुल्म, अल्म, रोटवील, बोबलिंगेन और फ्रीडरिचशाफेन के प्रसिद्ध कारखाने हैं। इन कारखानों में सूती कपड़ा, इञ्जीनियरिंग के सामान, मोटरकार, रसायनिक पदार्थ, हवाई इञ्जिन विस्फोटक पदार्थ, विमान के सामान और दूसरी युद्ध सामग्रियां तयार होती हैं।

बवेरिया में म्यूनिक, नूरेनबर्ग, आगसबर्ग कारखाने के प्रधान केन्द्र हैं। म्यूनिक में इञ्जिनियरिंग का सामान धातु सम्बन्धी सामग्री और हवाई इञ्जिन आदि तयार होते हैं। नूरनबर्ग के कारखाने में खिलौने से लेकर बड़ी बड़ी गाड़ियों के सामान तथा युद्ध सामग्री तयार करने की प्रत्येक भांति की कलें तयार होती हैं। नूरनबर्ग के समीप ही फर्थ, अर्लाञ्जेन, रोजगारी नगर हैं। आगसबर्ग में भारी भारी कल तथा गाड़ियां तयार होती हैं। यह मेसर्स चमिट के हवाई कारखाने का प्रधान केन्द्र है। अपर बवेरिया में वाल्चेन्सी विद्युत-शक्ति का स्टेशन है जो जर्मनी का सबसे बड़ा हाइड्रो-विद्युत कारखाना है। ट्रांस्ट बर्ग में शोरे से नमक तयार होता है और तेजाब बनाया जाता है। रेजेन्सबर्ग डैनूब का अंतिम बन्दरगाह है यहां रूमानिया के तेल साफ करने के कारखाने तथा हवाई जहाज बनाने के कारखाने हैं। एम्सबर्ग में अलमोनियम, एम्बर्ग में साइकिल का कारखाना और न्यूमार्केट में विस्फोटक पदार्थ और साइकिल बनाने के कारखाने हैं। उत्तरी बवेरिया में आश्चहाफेनबर्ग सूती कपड़े और कागज तयार करने के केन्द्र हैं। स्चवीनफर्ट बाल बियरिंग (bal-bearing) कारखने हैं।

उत्तरी-पश्चिमी जर्मनी

यह भाग राइन के वेस्टफीलिया जिले से बाल्टिक सागर के द्वार तक फैला हुआ है। उत्तरी सागर पर जर्मनी के दो उत्तरी बन्दरगाह हैम्बर्ग और ब्रीमेन विलियमस्हेवेन, का जहाजी जल-सैनिक अड्डा और एम्डेन का छोटा बन्दरगाह है। बाल्टिक सागर के द्वार पर कील है जो जर्मन जहाजों का प्रधान अड्डा है।

हैम्बर्ग जर्मनी का सबसे बड़ा बन्दरगाह तथा प्रसिद्ध कारखाने वाला नगर है। यहाँ बोम, वेस, ड्यूटचे वेर्फ्ट में जहाज बनाने के घाट तथा इञ्जीनियरिंग कारखाने हैं। शान्ति समय में पश्चिमी देशों से हैम्बर्ग मिट्टी का तेल जाता था इसलिये वहाँ मिट्टी का तेल, पेट्रौल एकत्रित करने तथा साफ करने के केन्द्र बने हैं। इसी बन्दरगाह से अलसी, सरसों, और दूसरे नाज तथा साग-पात का तेल आता था इसलिये इस जिले में भाँति भाँति के और कारखाने भी स्थित हैं। जानवरों की चर्बी से मक्खन तयार करने के कारखाने समस्त जिले में फैले है। हाम्बर्ग में जर्मनी के रबर तयार करने का सबसे बड़ा कारखाना है। वायुयान तयार करने के भी कारखाने इस जिले में है। ब्रीमेन मे हैम्बर्ग के बाद जहाज बनाने का दूसरा बड़ा कारखाना है। यह डयूटचे स्चिफ और मास्चिनेनबौ जहाज तयार करने वाली कम्पनियों का प्रधान केन्द्र है। ब्रेमर बल्कन मे जहाज वेजसैक मे यू बोट तथा पनडुब्बा नावें तयार की जाती हैं। यह फोकेउल्फ और वेसर वायुयान कम्पनियों का केन्द्र है और यहां इञ्जीनियरिङ्ग तथा ओटामोबाइल कारखाने हैं। इन कारखानों की सहायता के लिये जिले के भीतरी भाग में दूसरे सहायक कारखाने स्थित हैं। ब्रेमेन में सूती कारखाने बहुत हैं क्योंकि युद्ध के पहले इसी बन्दरगाह से कपास जर्मनी में आती थी। कील का प्रधान जहाजी घाट डयूटचेवर्के और ग्रसन प्लाट हैं। विद्युत-शक्ति तयार करने के लिये भी यहाँ कारखाने हैं।

उत्तरी भाग के भीतरी प्रदेश में कृषि अच्छी होती है। इस भाग की सड़कें, रेलवे लाइन और जल मार्ग पश्चिमी जर्मनी के आने जाने वाले मार्गों से मिले हैं पृष्ट प्रदेश (हिन्टरलैंड) का प्रधान कारखाने वाला नगर हनोवर है। हनोवर में रबर,

लोहा धातु और इञ्जीनियरिंग के सामान तयार करने के बड़े बड़े कारखाने हैं। हनोवर के उत्तर नीमहेजेन जर्मनी का सबसे बड़ा तेल-क्षेत्र है। इसी कारण हनोवर में तेल साफ करने के बड़े बड़े कारखाने हैं। हनोवर के समीप मिसबर्ग में लुब्रिकेटिंग तेल तयार किया जाता है। ओस्नाब्रूक धातु सम्बन्धी वस्तुओं और इञ्जीनियरिङ्ग का केन्द्र है। क्रोमरस्रोडेर कारखाने में गैस से चलने वाली गाड़ियों के लिये जनरेटर बनाये जाते हैं। वर्डेन और ल्वेनेबर्ग इस प्रदेश के दूसरे बड़े कारखाने वाले नगर हैं।

पूर्वी जर्मनी

पूर्वी जर्मनी या बाल्टिक सागर का हिंटरलैण्ड (भीतरी पृष्ट प्रदेश) ऐसा है जहाँ बहुत कम कारखाने हैं। बाल्टिक तट पर लूबेक नगर है जहाँ लोहा और अस्त्र-शस्त्र तयार करने का काम होता है। बिस्मार और रोस्टोक नगरों में समुद्री वायुयान (डारनीर बिस्मार में और रोस्टोक में हीङ्केल) तयार करने के बड़े कारखाने हैं।

आडेर नदी के तट पर स्टेटिन का बर्लिन का बन्दरगाह तथा कारखाने का केन्द्र है। यहां जहाज बनाने, इंजिनियरिंग के सामान तयार करने और रसानिक सामग्री तयार करने का रोजगार होता है। इसी के समीप ही पोलिज में नवीन सैन्थैटिक तेल का कारखाना है। डेंजिग के अधिकार किये हुये भाग में जहाज बनाने के घाट इँजीनियरिंग तथा लकड़ी के कारखाने हैं। गडिञ्जेन का पोलिश जल-सैनिक अड्डा भी यहीं है। पूर्वी प्रूशा के तट पर कोनिग्मबर्ग और एल्बिंग नगरों में जहाज बनाने तथा इंजीनियरिंग के सामान तयार करने के बड़े बड़े कारखाने हैं। स्टेटिन के दक्षिण की ओर बर्लिन का कारखाने वाला प्रदेश स्थित है। अधिक पूर्व की ओर ओडेर नदी पर फ्राङ्कफर्ट में कारखाने से भाँति भाँति की सामग्रियाँ तयार की जाती हैं। स्चनीडे मुह्ल, इन्स्टेरबर्ग और टिलिसत दूसरे कारखाने वाले नगर हैं।

आस्ट्रिया के कारखाने

आस्ट्रिया के कारखाने चेकोस्लोवाकिया और जर्मनी के कोयले पर निर्भर हैं। १९३७ ई० में आस्ट्रिया में ६७२,००० टन कच्चा लोहा निकाला गया था। वियना प्रधान कारखानों का केन्द्र है। इञ्जीनियरिंग लोकोमोटिव, आटोमोबाइल और दूसरे छोटे कारखाने वियना में स्थित हैं। यह नगर रेल और जल मार्ग से दक्षिणी-पूर्वी योरुप से मिला हुआ है वीनेर न्यूस्टार में इञ्जीनियरिंग फौलाद और हवाई जहाज तयार कारखाने हैं वेल्स और स्टेयेर में भी विमान तयार करने के कारखाने खोले गये हैं। लिञ्ज में हरमन गोरिंग कारखाने की ओर से फौलाद तयार करने का कारखाना खोला गया है। हिर्टेन बर्ग आस्ट्रिया का सबसे बड़े बड़े अस्त्र-शस्त्र बनाने वाला कारखाना है। एञ्जेरफेल्ड में शस्त्र तयार करने के कारखाने हैं। स्टीरिया में लोहा और मैगनीज तथा कारिंथिया में लोहे की खानें हैं। इन जिलों में ग्राज, ल्योबेन, क्लाजेनफर्ट प्रधान फौलादी कारखाने हैं। छोटे छोटे लोहे के कारखाने समस्त जिलों में फैले है। लेएन्ड, स्टीग में अलमोनियम के कारखाने हैं।

चेकोस्लोवाकिया

यहाँ के कारखानों ने अच्छी उन्नति की है। १९३७ ई० में यहाँ २३ लाख टन फौलाद तैयार किया गया था। १९३८ ई० में यहाँ १ करोड़ २० लाख टन कोयला निकाला गया था। उसी वर्ष यहाँ भूरा कोयला १ करोड़ ६० लाख टन निकाला गया था। आस्ट्रिया में लोहा भी पाया जाता है। ब्रुक्स के चारों ओर सुडेटनलैण्ड में भूरे कोयले की खानें स्थित हैं। यहाँ कोयला से तेल तयार करने का एक बड़ा कारखाना खोला गया है। आमिज में रसायनिक पदार्थ तयार करने का कारखाना है। एगेर में वायुयान तयार किये जाते हैं। प्रोटेक्टरेट में ओस्ट्रावा लोहे के कारखाने का प्रधान केन्द्र है। प्रेग नगर इञ्जीनियरिङ्ग और धातु सम्बन्धी कारखाने का केन्द्र है। पिल्सेन में स्कोडा का अस्त्र शस्त्र सम्बन्धी प्रधान कारखाना है जो मध्य योरुप का सबसे बड़ा अस्त्र-शस्त्र तयार करने का कारखाना है। ब्रनो में ब्रनो शस्त्र का कारखाना है। यहीं से ब्रन नामक तोप निकली थी। इसके अतिरिक्त चेकोस्लोवाकिया में सूती कपड़े, जूते और बूट तथा शीशे के सामान तैयार करने के कारखाने हैं।

पोलैण्ड

पोलैण्ड का प्रधान कारखाने वाला प्रान्त अपर साइलेसिया है जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। लोज में सूती कारखाने है। वहाँ रेशा तयार करने का एक नवीन कारखाना खोला गया है। पोजनान, टोरन और बीड्गोजेक्ज नगरों में इञ्जीनियरिङ्ग के कारखाने हैं क्रेकाओ में रसायनिक पदार्थ तैयार करने का काम होता है। रजेरजोव में हवाई इञ्जिन तथा मीलेक में वायुयान तैयार करने के कारखाने हैं। गडोम और लुब्लिन में बड़े-बड़े फौलादी कारखाने हैं। लीमागोरा जिला और डोम्ब्रोवा में लोहे की खानें हैं। १९३८ ई० में पोलैण्ड में २,७०,००० टन लोहा निकाला गया था।

जर्मनी ने समस्त योरुप पर अपना अधिकार जमा लिया है। प्रत्येक देश में भांति-भांति के बड़े-बड़े कारखानें हैं और उन सभी कारखानों का उपयोग जर्मनी कर रहा है वरन् स्थानाभाव होने के कारण यहाँ केवल आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया और पोलैण्ड का वर्णन किया गया है।

जर्मनी के फौलादी लोहे तथा इञ्जीनियरिङ्ग कारखानें सभी अस्त्र-शस्त्र और युद्ध सामग्री तैयार करने में लगा दिये गये हैं। लोकमोटिव और छकड़े बनाने वाले कारखानों में टैङ्क बनाये जा रहे हैं। वायुयान बनाने के कारखाने समस्त जर्मनी में फैले हुये हैं। उदाहरणार्थ जङ्कर्स कम्पनी की शाखाएँ भिन्न-भिन्न नगरों में हैं जहाँ वायुयान के भिन्न-भिन्न भाग अलग-अलग तयार किये जाते हैं और फिर एकत्रित करके एक स्थान पर जैंकर वायुयान तयार किया जाता है। समुद्री जहाज के भी भिन्न-भिन्न टुकड़े भीतर के नगरों में अलग-अलग तैयार किये जाते हैं और फिर जहाज बनाने वाले घाटों पर लाकर जहाज की पूर्ति की जाती हैं। मैनद्वीप में पनडुब्बी नावों के इञ्जिन तैयार किये जाते हैं। रसायनिक पदार्थों से बिस्फोटक यन्त्र तैयार किये जाते हैं। गैस, बम्ब, गोले आदि वस्तुएँ रसायनिक कारखानों में तैयार होते हैं।

रुई की कमी होने के कारण सूती कारखानों में लकड़ी, घास और बनस्पतिबर्ग से रेशा तैयार किया जाता है और फिर उसी से कपड़ा बनाया जाता है पेट्रौल और रबर कोयला से बनाया जाता है। इस प्रकार जर्मन सेना को युद्ध सामग्री तथा अस्त्र-शस्त्र पहुँचाने के लिये समस्त योरुप के कारखाने लगे हैं।

★ ★ ★

जर्मनी ने भिन्न प्रकार की रक्षक सीमाओं को भेदने के लिये एक नवीन तरीक़ा आधुनिक युद्ध मे निकाला है जिसे विद्युत-युद्ध कहते है। इस युद्ध का तात्पर्य यह है कि रक्षक-सीमा को भेद कर उसका सत्यानाश कर दिया जावे। साधारण रूप से आक्रमण से रक्षा के लिये लाइनें बनाई जाती हैं और लाइनों की रक्षा अग्नि (तोपों) से होती है।

फ्रान्सीसी सेना का रक्षक-नियम अग्नि द्वारा रक्षा करने पर निर्भर था। मशीनगनों की एक लम्बी पंक्ति लगा दी जाती थी जो अग्नि की एक दीवार सी बना देती थी और जिसके भीतर आक्रमण करने वाली सेना नहीं प्रवेश कर सकती थी। टैंक-संहारिणी तोपें और दूसरी गोला वर्षाने वाली बड़ी तोपें एक ऐसी दीवार बना देती थीं कि उनके बीच से टैंकों का जाना असम्भव हो जाता था। आधुनिक जर्मन सैनिक नीति अग्नि और चाल पर निर्भर है। वे तेज चलने वाले जत्थों को रक्षक लाइनों के संकरे भाग पर बलपूर्वक लगा देते हैं उसके बाद छोटा मार्ग बना कर अग्नि-दीवार को पार कर जाते हैं और फिर अग्नि-दीवारों के पीछे खुले मैदानों में जाकर नरक की भीषण अग्नि का प्रदर्शन करने लगते हैं।

फ्रांसीसी नीति के अनुसार रक्षक लाइनों की

रक्षा उन अस्त्रों से की जाती थी जो अपनी अग्नि और गोले दूर फेंकते थे परन्तु जर्मनी ने अपने आक्रमणकारी सेना में समीपवर्ती सेना, अस्त्र और शस्त्र को नष्ट करने के लिये समीपवर्ती स्थानों में अग्नि तथा गोले फेंकने वाले अस्त्र-शस्त्र जोड़ दिये हैं।

जर्मन सेना के आक्रमण करने की कुशलनीति यह है कि वह सूराखों (छोटे मार्गों) में होकर अपनी सेना को छानती (ले जाती) है। आक्रमणकारी दल एक लम्बे-चौड़े मैदान में धावा नहीं मारते वह कमजोर सँकरे मार्ग पर तेजी से बल्लम या भाले की भाँति धावा करके रक्षक लाइन में छिद्र बनाते हैं।

जर्मन सेना की सब से बड़ी कुशलता तो यह है कि सँकरे निर्बल स्थान पर वह बड़ी तेजी से भारी सेना लाकर एकाएक एकत्रित कर देती है और प्रवेश-मार्ग बनाने के पश्चात् १५ से ३० मील प्रति दिन की चाल से आगे की ओर बढ़ने लगती है। आगे बढ़ने का काम मोटरों द्वारा होता है। समस्त सेना मोटर पर नहीं जाती वरन् साधारण पैदल सेना या तो पैदल बढ़ती है या फिर रेलगाड़ी द्वारा आगे भेजी जाती है। परन्तु मोटर वाली सेना इतनी काफी रहती है कि वह रक्षक सेना को पीछे से शीघ्रता के साथ घेर लेती है मोटरों की सेना के कारण ही जर्मन शीघ्रनाशीघ्र एक स्थान पर अपनी सेना एकत्रित करने में सफल होते हैं और मार्ग बनाने के बाद तो फिर उनकी चाल पाँचगुनी हो जाती है।

नाजी सेना की दूसरी चाल यह है कि वह तोपों के स्थान पर विमानों का प्रयोग करती है। एकत्रित टैंक सेना का प्रयोग उसकी तीसरी चाल है। विमानों से जर्मन लोग जिस स्थान को चुनते हैं उसे दूसरे स्थानों से अलग कर देते हैं। रक्षक तोपों को बम्ब वर्षा करके शान्त कर देते हैं और रक्षक सेना के आगे वाले मार्गों को काट देते हैं। विमान, टैंकों की सेना के अग्रगामी भाग के आगे बम्बों की एक दीवार बना देते हैं जिससे रक्षक लाइन तोड़ दी जाती है। टैंकों की सेना का मुख्य कार्य रण-स्थल में होता है परन्तु रण-स्थल में जाने का मार्ग टैंक ही बनाते हैं जिससे मोटर वाली सेना, मैदानी तोपें और मध्यम श्रेणी की तोपें गाड़ियों पर लाद कर पैदल सेना के साथ ही साथ उस स्थान पर पहुँच सकें जहाँ पैदल सेना जा रही है।

जर्मन सेना का तोपखाना एक स्थान पर नहीं रहता है। एक बड़े समूह में तोपें काम नहीं करती हैं जैसा कि गत महायुद्ध में हुआ था। तोपों का समूह यदि एक साथ रहता है तो वह मार्ग को बन्द कर देता है साथ ही साथ उस पर बम्ब वर्षा भी सरलतापूर्वक की जा सकती है। इसलिये प्रत्येक पैदल सेना और मोटरों की सेना के साथ साथ तोपों के छोटे छोटे जत्थे रहते हैं। तोपों का कुछ काम विमान करते हैं। विमान दूर दूर वाले स्थानों पर गोला बारी करते हैं जहां तोपों के गोले नहीं पहुँच सकते यह विमान रक्षक-लाइन, उसके सामान ले आने तथा ले जाने वाले साधनों और पीछे के सामान एकत्रित रखने वाले स्थानों पर बम्ब गिराते तथा उनका सत्यानाश करते हैं। इसके सिवा विमान वह कार्य करते हैं जिसे तोपें शीघ्रता से नहीं कर सकतीं क्योंकि तोपें अपने स्थानों को शीघ्रता के साथ नहीं बदल सकती हैं फिर भी जिन स्थानों पर अधिक समय तक सामना होता है वहाँ तोपें अपना कार्य कुशलता पूर्वक करती हैं और फिर अपनी सेना के साथ साथ आगे बढ़ती हैं।

टैंकों के प्रयोग में जर्मन लोगों ने फ्रान्सीसी नीति को उलट दिया है। फ्रान्सीसी नीति के अनुसार टैंक सेना तीन मील प्रति घंटा चलने वाली पैदल सेना को आगे बढ़ने में सहायक होती थी। जर्मन लोग ३० मील प्रति घंटा चलने वाली मोटर सेना के सहारे अपनी टैंक सेना को आगे बढ़ाते हैं। जब टैंक किसी ऐसे स्थान पर पहुँच जाते हैं, (जैसे नहर नदी या टैंकों को गिराने वाली खाई आदि) तो वह अपनी मोटर सेना और इँजिनियरों को उस स्थान को पार करने या खाई अथवा पुल को उड़ा देने के लिये सीटी द्वारा बुलाते हैं। टैंक अपने साथ वाले गोताखोर बम्ब वर्षक विमानों को भी सीटी देते हैं जिससे वह उस स्थान से आध मील दूरी तक की शत्रु सेना का संहार कर दें।

मोटर सेना, विमानों और टैंकों का यही प्रयोग विद्युत-युद्ध की मुख्य नीति है। तेजी के साथ बढ़ती हुई सेना के भिन्न २ भागों को जोड़ने के लिये

रेडियो का प्रयोग होता है। रेडियो द्वारा संकुचित समाचार सेना के भिन्न भागों को प्रत्येक समय दिये जाते हैं। यह समाचार शत्रु सेना को भी मालूम हो सकते हैं परन्तु घटनाओं का का उलटफेर इतनी शीघ्रता से होता है कि शत्रु उन समाचारों से लाभ ही नहीं उठा सकते। छतरी वाली सेना का प्रयोग भी साथ ही साथ अवसर आने पर किया जाता है। यह सेना शत्रु सेना के पीछे विमानों द्वारा उतार दी जाती है जिससे वह रक्षक सेना में गड़बड़ी पैदा कर दे। जर्मन सेना धुएँ का प्रयोग भी खूब करती है।

धुवां का प्रयोग जर्मन सेना को छिपाने के लिये नहीं किया जाता है वरन् वह रक्षा करने वाली शत्रु सेना पर इस प्रकार फेंका जाता है कि वह अपने निशान का पता नहीं लगा सकती। जर्मन सेना की प्रगति में मुख्य बात अग्रगामी टैंक तथा मोटर सेना और पैदल सेना है। जब जर्मन पञ्जर डिवीजन (मोटर सेना) अपने सभी सहायक अस्त्रों-शस्त्रों के साथ तेज़ी से आगे बढ़ती है तो उसका आकार मनुष्य द्वारा फेंके गये बल्लम या भाले की भांति हो जाता है। इसी को विद्युत-युद्ध कहते हैं।

जर्मन सेना के एक पञ्जर डिवीजन (मोटर सेना) में ४८ भारी टैंक, ८४ मध्यम श्रेणी के टैंक, २५२ छोटे टैंक, २३० सेना ले जाने वाली लारियां, ९६ तोपें, २७ गोताखोर बम्ब वर्षक विमान और २५८ सशस्त्र सुसज्जित सैनिक मोटर सायकिलें रहती हैं। इसके सिवा लगभग १००० मोटर लारियां, ४ मोटर वाली पैदल सेना और इञ्जीनियर तथा संकेत करने वालों की सेना रहती है।

अब विचार करने की बात यह है कि आखिर विद्युत-आक्रमण से रक्षा किस प्रकार की जावे। प्राकृतिक रूप से इसका उत्तर यही है कि या तो भाले को तोड़ दिया जावे या उसे जिस हाथ में है वह हाथ काट दिया जावे। दूसरी विधि यह है कि भाले को उस समय तक रोक लिया जावे तब तक रक्षक सेना अपना भाला आक्रमण कारी भाले पर न चलादे अर्थात् प्रत्याक्रमण न हो जावे।

भाले को काटनेवाली नीति में सर्वप्रथम काम यह होना चाहिये कि टैंकों को मोटर वाली सेना से अलग कर दिया जावे और यदि यह बात सम्भव न हो सके तो फिर मोटर-सेना को पैदल सेना से अलग कर दिया जावे। केवल टैंक या टैंक और मोटर सेना के छोटे दस्ते पराजय भूमि की रक्षा करने में समर्थ नहीं हो सकते हैं।

इसलिये आवश्यक बात यह है कि मित्र सेना का रक्षक अस्त्र एक चलनी की भाँति होना चाहिये जिससे उसके भीतर का कुछ भाग शत्रु सेना पर धावा करे और कुछ भाग शत्रु सेना के हमले को को रोके जिससे वह चलनी में प्रवेश न करे सके।

मित्र सेना का रक्षक मैदान मकड़ी के जाले की भांति भी निर्माण किया जा सकता है जिससे आक्रमणकारी बढ़ने वाली सेना मकड़ी के जाले में फंस जावे या पकड़ ली जावे और फिर छिन्न-भिन्न होकर इधर उधर मार खाती हुई भटकती रहे। टैंकों और मोटरों को तेल तथा दूसरी रसद वाले स्थानों से भी अलग करने का प्रबन्ध होना चाहिये।

मकड़ी के जाले की भांति वाले रक्षक मैदान में ऐसे द्वीप होने चाहियें जिनमें जिन टैंक प्रवेश न कर सकें, उनमें सुरंगें बिछा देनी चाहिये जिससे वह टैंकों का नाश कर सकें। यह द्वीप अपनी तोपों की सहायता से एक दूसरे की सहायता भी करते रहेंगे। इस प्रधान मकड़ी के जाले के पीछे दूसरे बड़े जाल होने चाहियें और इनके पीछे क़िले होने चाहियें जिनमें नागरिक लोग सरलता पूर्वक खतरा समीप आ जाने के समय तक काम करते रहें। जाल की बनावट साधारण पैदल सेना, आर्मर्ड और मोटरों की सेना विमानों की सेना और भारी तोपों की सेना से होगी।

टैंकों के विरुद्ध सुरङ्गों का प्रयोग मित्र-सेना ने अब तक बहुत कम किया है। साधारण जर्मन सेना जब आगे बढ़ती है तो वह प्रत्येक डिवीजन के साथ १२ हज़ार सुरंगें रखती है जिससे यदि उस पर टैंकों का प्रत्याक्रमण होता है तो वह अपनी रक्षा के लिये उन्हीं सुरङ्गों का प्रयोग करती है।

१८००० सुरङ्गों का मैदान १८ हज़ार तोप के गोलों की अपेक्षा कहीं अधिक रक्षा के लिये उपयोगी हैं। १८ हज़ार तोप के गोले ४ मील लम्बे मैदान में तोपों द्वारा एक घंटे में चलाये जावेंगे और उनसे शत्रु टैंक-सेना का केवल ५ प्रतिशत भाग नष्ट हो सकेगा

सुरंगे अधिक समय तक रह सकती हैं और गोलों की अपेक्षा शत्रु की अधिकाधिक हानि कर सकती हैं यदि सुरङ्गों के मैदान के बीच बीच के भाग उड़ा कर नष्ट कर दिये जावें तो शत्रु का टैंक-दल अवश्य उन खाली मार्गों में होकर आगे बढ़ेगा जिसके विरुद्ध तोपों द्वारा गोलेबारी की जा सकती है। रात के समय उन मध्यवर्ती मार्गों को बन्द कर देना भी सम्भव होगा।

जाल के भीतरी सामना करने वाले द्वीपों में भिन्न प्रकार के किले होंगे और उनकी रक्षा के लिये आवश्यक सैनिक अस्त्र सामग्री तथा सेना रहेगी। प्रत्येक स्थान अपनी रक्षा चारों ओर से करेगा और वहाँ पर कई दिन के लिये भोजन सामग्री तथा लड़ने का सामान रहेगा जिससे वह स्थान कुछ समय तक शत्रु का सामना करता रहे टैंक द्वारा अभेदनीय स्थानों में सेना भली भाँति छिपाई जा सकती है। ऐसे स्थान के पीछे दो सेनाएँ रहेंगी जो पीछे से रक्षा करती रहेंगी।

टैंकों द्वारा अभेदनीय स्थानों पर शत्रु के टैंक-दल का आक्रमण ही न होगा क्योंकि उन पर आक्रमण करके अपने टैंकों को बेकार नष्ट करना है। अब यदि टैंकों का भीषण आक्रमण होता है और वह कटते मरते आगे बढ़ते हैं तो जब तक वह मैदानों के पीछे चौकसी करने वाली सेना तक पहुँचेंगे तब तक चौकसी करने वाली सेना घूम कर नये द्वीपों में पहुँच जावेगी। यदि यह मान भी लिया जावे कि टैंक सेना अपनी हानि उठाती आगे पहुँच भी गई तो फिर टैंक दल के पिछले भाग का क्या फल होगा?

रक्षक लाइनों में यदि टैङ्क दल का आक्रमण होता है तो लाइन की सेना अपनी दाहिनी तथा बांई ओर की सेना से अलग हो जाती है। वह मजबूर होकर पीछे को हट जाती है। यदि वह पीछे नहीं हटती तो गोलों का शिकार बनती है।

परन्तु द्वीपों की सेना की दशा यह न होगी। वह तो पहले ही से जानती है कि वह घेर ली जावेगी अतः वह अपनी पूरी शक्ति के साथ शत्रु का सामना करेगी और मोटर द्वारा उतरती हुई सेना को मारेगी और यदि शत्रु का टैंक दल आगे नहीं बढ़ता और अपनी सेना को साथ लेने के लिये रुकता है तो फिर क्या है वह तोपों के गोलों की पहुँच में रहता ही है उस पर गोलेबारी करके नाश किया जा सकता है।

यदि टैंक दल चलनी वाले क्षेत्र को तोड़ने में असफल होता है तो फिर कहना ही क्या? और यदि वह उसे तोड़ कर आगे बढ़ता है तो फिर मोटर-सेना के सैनिकों को धरती पर उतर कर धीरे धीरे साधारण रूप से प्रत्येक भाग का सामना करते हुये आगे बढ़ना पड़ेगा।

अब यदि कुछ मोटर-सेना आगे भी धुयें के पर्दे में या कुछ द्वीपों के उड़ जाने से जाती है तो फिर पैदल सेना को जाल वाली रक्षक सेना पूर्ण रूप से रोक सकेगी और फिर उस पर स्थानीय छोटे सैनिक टुकड़े प्रत्याक्रमण भी कर सकेंगे। यदि पूर्ण रूप से सेना न भी रुक सकेगी तो भी शत्रु सेना की पूर्ण गति में शिथिलता तो अवश्य ही आ जावेगी जो आधुनिक महायुद्ध के आक्रमण के लिये बहुत अधिक हानिकारक है।

जाल वाले रक्षक तरीके से शत्रु के टैंकों को प्रत्येक स्थान पर तोपों का सामना करना होगा। शत्रु की पैदल सेना पर दिन में और टैंक सेना पर रात के समय जवाबी हमले सम्भव हो सकेंगे। यदि पैदल शत्रु-सेना अपनी मशीनों की सेना तक न पहुँच सकेगी तो फिर उनकी मशीनों की सेना के लिये रात में आक्रमण करना असम्भव नहीं तो बहुत ही कठिन कार्य अवश्य सिद्ध होगा।

मित्र-सेना के जवाबी हमले शत्रु-सेना की संख्या की बराबरी या अधिक सेना तथा टैंकों द्वारा होना चाहिये। साथ ही साथ शत्रु-सेना की भांति सबसे कमजोर भाग पर हमारा जवाबी हमला होना चाहिये मित्र-सेना, आर्मर्ड, मशीन वाली तथा तीव्र गति से बढ़ने वाली सेना को शत्रु की पैदल सेना पर धावा मारना चाहिये साथ ही साथ जवाबी हमले वाली विद्युत-सेना को शत्रु के सेना को घूम कर घेर लेना चाहिये और उस स्थान तक पहुँचना चाहिये जहां से शत्रु-सेना को सामान, भोजन और तेल आदि मिलता है। शत्रु विमानों का सामना करने के लिये भी उपयुक्त मात्रा में हवाई सेना तथा विमानों

की आवश्यकता है। मित्र-सेना को यह भी करना होगा कि वह अपने मित्र राष्ट्रों के विमानों को मार्ग दें कि वह शत्रु के हवाई अड्डों पर बम्ब वर्षा करके उनके विमान तथा दूसरी युद्ध सामग्री को नष्ट कर दें।

गोलेबारी करने तथा तीव्र गति से बढ़ने वाली सेना का सामना दो प्रकार से करना चाहिये। पहला तरीक़ा तो यह है कि शत्रु-सेना पर तोपों, मशीनगनों, टैंकों विमानों द्वारा तीव्र गति के साथ जवाबी हमला किया जावे।

इङ्गलैण्ड को इस सम्बन्ध में शत्रु की अपेक्षा अधिक आसानी तथा लाभ है क्योंकि इङ्गलैंड की लड़ने वाली सेना के पीछे वहाँ की होमगार्ड सेना है और फिर होमगार्ड सेना की सहायक वहाँ की साधारण प्रजा की सेना है। इस प्रकार की सहायता शत्रु को आक्रमणकारी सेना को कदापि न होगी।

★ ★ ★

इटली

इटली प्रायद्वीप के राज्यों की सामूहिक एकता १८७० ई० में हुई। उससे ५० वर्ष पूर्व इटली छोटे छोटे राज्यों में बँटा था। सभी राज्य स्वतंत्र थे। दक्षिण की ओर प्रधान राज्य नैपिल्स, सिसली और उत्तर की ओर प्रधान राज्य पाइडमोंट और सार्डीनिया थे। यह राज्य मध्यवर्ती चर्च-राज्यों द्वारा अलग थे। चर्च-राज्यों का केन्द्र रोम था। इटली की एकता के लिये १८६१–६७ ई० में गैरीबाल्डी नामक व्यक्ति ने आन्दोलन किया। उसे फ्रान्स और इङ्गलैंड की नर्मदल सरकार ने सहायता प्रदान की। १८७० ई० में आन्दोलनकारियों ने रोम पर अधिकार कर लिया। पोप के हाथ से शक्ति छीन ली गई परन्तु पोप पाएस नवें ने कैदी होते हुये भी विक्टर इमैनुअल की सरकार को स्वीकार नहीं किया। इटली का शासन प्रजातांत्रिक विधान के अनुसार आरम्भ किया गया।

१८८०-१९१४ ई० के मध्य योरुप के राज्य दो समूहों में बँट गये। १८८१ ई० के ट्रपिल (तीन) संधि के अनुसार इटली आस्ट्रिया के समूह में मिल गया। ट्यूनिस पर इटली अधिकार करना चाहता था। ट्यूनिस फ्रान्स का था। इटली को प्रशा के प्रधान बिस्मार्क ने सहायता दी। १९१४ ई० में इटली की नीति भूमध्य सागरीय बनी रही। उसे अपने देश और ट्रिपली, डोडेकेनीज़ द्वीप की रक्षा करनी थी। १९११-१२ ई० में इटली-तुर्की छोटा युद्ध हुआ जिसमें ट्रिपली पर इटली का अधिकार हो गया। डोडेकेनीज़ द्वीप पर अधिकार करने के लिये गत महासमर मे इटली मित्रराष्ट्रों के साथ हुआ। मई १९१५ ई० की लन्दन की गुप्त संधि के अनुसार इटली मित्रराष्ट्रों के साथ सम्मिलित हुआ था। वर्साई की संधि के बाद इटली को डोडेकेनीज द्वीप समूह ट्रीस्ट, ज़ारा के दल्माशियन अड्डे, लगोस्टा और जर्मन टीरोल प्रान्त मिले। फ्यूम पर इटली ने ज़बरदस्ती अधिकार कर लिया।

नवीन इटली

चार वर्ष के भीतर ही इटली का मानचित्र बदल गया और उसमें बड़े परिवर्तन हुये। युद्ध के पश्चात मध्य तथा दक्षिणी योरुप मे कम्युनिस्ट क्रान्तियां हुई। १९२२ ई० में मसोलनी के फैसिस्ट दल ने विक्टर इमैनुअल त्रितीय की रज़ामन्दी के साथ इटली की सरकार पर प्रभुत्व जमाया और रोम पर अधिकार किया। उसके पश्चात् फैसिस्ट शासन में इटली ने अच्छी सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक उन्नति की। कारखानों को उन्नति देने के लिये कार्पोरेशन संगठित किये गये जिसमें मजदूर मालिक तथा

इटली

१०

११

१२
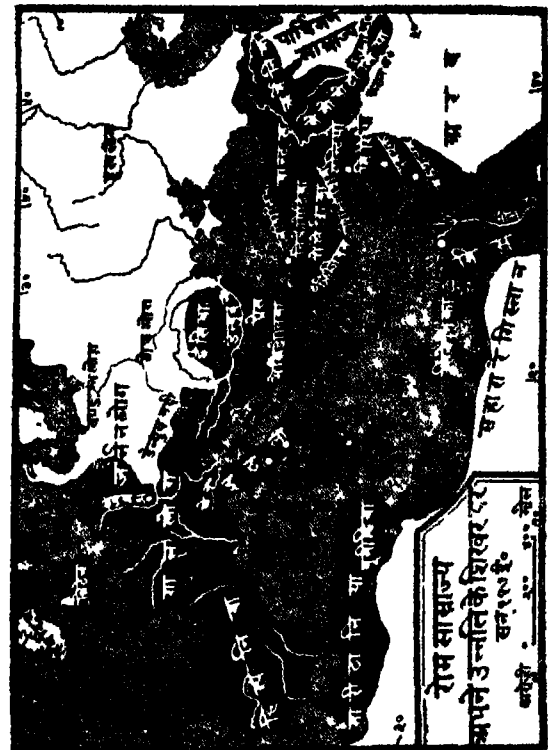
१३

प्रजा सभी सम्मिलित हुये। मन्त्री-मंडल में मसोलनी सर्व प्रिय नेता बना रहा। फरवरी १९२९ ई० की संधि के अनुसार वाटिकन नगरों का पोप दुनिया की राजा स्वीकार किया गया।

इटली तथा राष्ट्र संघ

गत महासमर के पश्चात् इटली ने कहा कि वर्साई की संधि ठीक नहीं हुई उसमें परिवर्तन की आवश्यकता है काफू पर १९२३ ई० में इटली ने अधिकार किया जिसे राष्ट्र संघ ने स्वीकार नहीं किया १९२८–३५ ई० तक मसोलनी, ग्रैण्डी और सियानों ने राष्ट्र संघ में वर्साई संधि के परिवर्तन करने के सम्बन्ध में कई भाषण दिये। जब राष्ट्र संघ के सामने अशस्त्रीकरण प्रश्न उठा तो इटली ने कहा यदि वर्साई की संधि में परिवर्तन होता है तो वह अशस्त्रीकरण नीति पर चलने के लिये तयार है अन्यथा नहीं। लीबिया और सोमालीलैण्ड सीमाओं पर भी इटली शान्ति पूर्वक फैसला करना चाहता था जब राष्ट्र संघ ने उसकी मांगों को ठुकरा दिया तो १९३४ ई० में इटली ने अफ्रीका में राष्ट्र संघ के विरुद्ध साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण किया। वल-वल घटना होने पर एबीसीनिया पर इटली ने आक्रमण किया और उसे विजय कर लिया। एबीसीनिया, लीबिया, ट्रिपली, सोमालीलैंड (इटेलियन) के साथ साथ इटेलियन साम्राज्य में मिला लिये गये। अप्रैल–नवम्बर १९३८ ई० की भूमध्य सागरीय संधियों के अनुसार ब्रिटेन ने इटली एबीसीनिया आदि स्थानों पर इटैलियन साम्राज्य होने की स्वीकृत कर ली। ७ अप्रैल १९३९ ई० को इटली ने अल्बेनिया को भी अपने साम्राज्य में मिला लिया।

इटली की आधुनिक स्थिति

राष्ट्र से अलग हो जाने पर जुलाई १९३९ ई० से इटली ने जर्मनी का साथ पकड़ा। उसके बाद इटली और जर्मनी धुरी-राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुये। इटली भूमध्य सागर में अपना अधिकार देखना चाहता है। इसी कारण उसने स्पेन में फ्रेंको का साथ दिया और फिर उसने अफ्रीका तथा यूनान पर आक्रमण किया। बर्नर दर्रे पर कई बार मसोलनी-हिटलर सम्मेलन हुआ जिससे इटली की विदेशी नीति जर्मनी के अनुसार बदलती गई। १० जून को जब फ्रान्स का पतन होने को ही था तो इटली ने फ्रान्स पर धावा मार दिया। उसके बाद फ्रान्स से उसकी अलग क्षणिक संधि हुई। मसोलनी ने यूनान तथा उत्तरी अफ्रीका पर आक्रमण किया परन्तु मित्र-राष्ट्रों का सामना न कर सका। लीबिया के कई स्थान और एबीसीनिया उसके हाथ से निकल गये। जर्मनी इसी बीच इटली की सहायता को पहुँचा और यूनान पर जर्मन सेनाओं ने विजय प्राप्त की। लीबिया में भी जर्मन सेना ने अँग्रेजों द्वारा छीने हुये स्थान छीन लिये।

आज इटली पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं है। उसे जर्मनी के आदेशानुसार काम करना पड़ता है।

अल्बेनिया

१९१२ ई० में प्रथम बाल्कन युद्ध के पश्चात् योरुप का तुर्की साम्राज्य विजयी बाल्कन राज्यों में विभाजित किया गया उसी समय एड्रियाटिक सागर के पूर्वी तट पर अल्बेनिया का राज्य स्थापित किया गया। गत महायुद्ध के पश्चात् इटली ने उस पर अपना प्रोटेक्टरेट स्थापित कर लिया। मई १९३९ ई० में मसोलनी ने उस पर अधिकार करने की आज्ञा दी और उसके राजा को देश से निकाल दिया। उसके पश्चात् अल्बेनी प्रजा ने इटली के विरुद्ध कई बार विद्रोह किया। अल्बेनिया एक पहाड़ी देश है। उसकी नदियां गरमी में सूख जाती हैं। उसका क्षेत्रफल १० हजार वर्गमील से कुछ अधिक है।

२८ अक्तूबर १९४० ई० को यूनानी सीमा को पार करके इटेलियन सेना अल्बेनिया से फ्लोरीना और जनिना नगरों की ओर बढ़ी। फ्लोरीना क्षेत्र में यूनानी सेना ने आक्रमण कर दिया और कोरिट्सा नगर पर गोलबारी की। मध्य और बाईं ओर यूनानी सेना हटी जिससे इटली की सेना तट होकर आगे बढ़ी। थोड़े ही दिनों में प्रत्येक स्थान पर यूनानी सेना प्रत्याक्रमण करने लगी और अधिक से अधिक सैनिक गिरफ्तार करने लगी। २१ नवम्बर को यूनान की दाहिनी बग़ली सेना ने कोरिट्सा से प्रवेश किया और पागराडेट्स की ओर शीघ्रता पूर्वक बढ़ी। ४ दिसम्बर सन्तीक्वारंटा और अर्गीरोकास्ट्रो पर अधिकार हो गया। शीतकाल के कारण सेना के आगे बढ़ने में रुकावट हुई फिर भी बलोना और एलबासन नगरों की ओर यूनानी सेनाएँ अग्रसर होती रहीं। यूनानी सेना की सहायता ब्रिटिश बम्ब-वर्षक करते रहे और इटैलियन अड्डों तथा युद्ध-क्षेत्र के मुख्य स्थानों पर बम्ब गिराते रहे।

अल्बेनिया की इटली सेना को युद्ध सामग्री पहुँचाने वाली लाइन बारी और बिरिन्दसी बन्दरगाहों से दुराज्जो और बलोना नगरों को जाती थी। इस लाइन पर भी ब्रिटिश बम्ब वर्षकों ने बम्ब वर्षा की। नवम्बर मास में एक ब्रिटिश जहाजी बेड़े ने ओट्रान्टो खाड़ी में इटली के युद्ध सामग्री ले जाने वाले जहाजों पर धावा मारा और एक जहाज डुबो दिया और दो
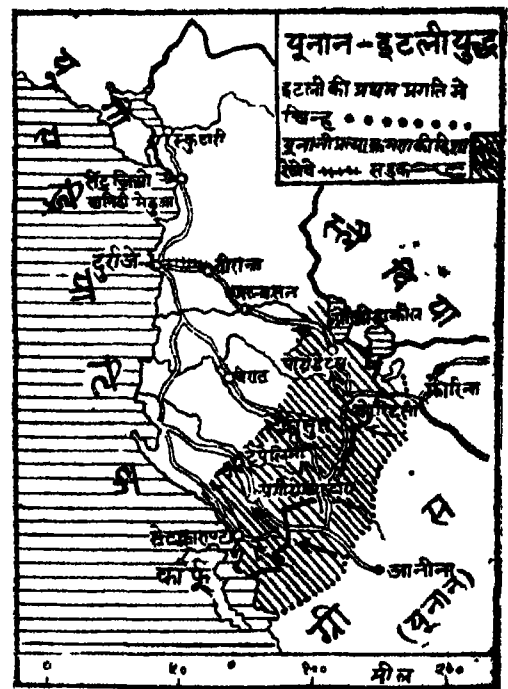
में आग लगा दी। १८ दिसम्बर को ब्रिटिश जलसेना के जहाज बारी दुराज्जो एड्रियाटिक सागर में गये परन्तु शत्रु जहाजों से मुठभेड़ न हुई। उसी रात ब्रिटिश युद्ध-पोतों ने बलोना पर भीषण गोलेबारी की।

यूनान और इटली का युद्ध

२८ अक्तूबर १९४० ई० को इटली ने यूनान से कार्फू, क्रीट, एपीरस, पिरेअस आदि सामरिक महत्व के स्थानों को लेने के लिये मांग पेश की। इटली ने यूनान पर और दूसरे दोषारोपण भी किये। यूनान ने इटली की शर्तों को अस्वीकार कर दिया। इस पर अल्बेनिया से इटली की सेनाएँ यूनान की ओर बढ़ीं।

फ्लोरीना क्षेत्र में यूनानी सेना ने हमला कर दिया और कोरिट्सा नगर पर गोलाबारी की। इटली की सेनाएँ तटीय मार्ग होकर आगे बढ़ीं। इटली का जहाजी बेड़ा भी चल पड़ा परन्तु उस पर ब्रिटिश जहाजी बेड़े तथा हवाई जहाजों की रोक थी अतः वह अपनी सेना की अधिक सहायता नहीं कर सका। थोड़े दिनों के पश्चात् यूनानी सेना ने प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिये और इटली की सेना को मार भगाया और अधिक से अधिक सैनिक पकड़ लिये। यूनानी सेनायें जनरल मेटाक्सस के कुशल सेना पतित्व में इटली की सेना को खदेड़ती हुई अल्बेनिया में घुस पड़ीं। २१ नवम्बर को यूनान की सेना ने कोरिट्सा में प्रवेश किया और पोग्राडेट्स की ओर बढ़ीं। ४ दिसम्बर को सैन्तीक्वारंटा और अर्गीरोकास्ट्रो पर अधिकार कर लिया और बलोना तथा एल्बासन की ओर बढ़ीं। यूनानी सेना की सहायता ब्रिटिश वायुयान करते रहे। ब्रिटिश जहाजों ने इटली के सामान ले जाने वाले जहाजों को भी मार्ग में डुबो दिया। यूनान की सेना ने टेपलानी तक अपना अधिकार जमा लिया।

४१

यूनानी सेना ने अपने साहस और वीरता से इटली की मर्यादा धूल में मिला दी। इटली की हार होते देख जर्मनी को बड़ी बेचैनी हुई। लीबिया में भी इटली की सेनाएँ हार रही थीं। अतः जर्मनी आगे बढ़ा और ६ अप्रैल को यूनान पर धावा बोल दिया।

यूनान और जर्मन युद्ध

इटली की यूनान तथा अल्बेनिया में पराजय देख हिटलर को बड़ी चिंता हुई। वह यूनान की ओर पहले से ही आंख लगाये था। बल्गेरिया में जर्मन सेनाओं का जमघट पहले से ही कर लिया गया था। जर्मनी आक्रमण करने का मार्ग ढूँढ रहा था। उसे यूगोस्लाविया पर धावा करना पड़ा। इसलिये ६ अप्रैल को जर्मन सेनाओं ने यूनान पर भी अचानक धावा कर दिया।

जनरल लिस्ट यूनान और क्रीट में नाज़ी सेना के संचालक।

यूनान ने इंगलैण्ड तथा अमरीका से सहायता मांगी। यूनान को शीघ्र ही ब्रिटिश सहायता भेजी गई। लीबिया और मिस्र से ब्रिटिश तथा आस्ट्रेलियन सेनाएँ शीघ्र ही यूनान पहुँच गईं। यूनानी सेना ने बड़ी वीरता से शत्रु सेना का सामना किया और एक स्थान पर पहाड़ी के मध्य जर्मन सेना को घेर लिया और जर्मन सेना के एक बड़े भाग को नष्ट कर डाला।

शत्रु सेना में टैंकों, भारी तोपों और विमानों की अधिकता थी। इस कारण यूनान की सेना को पीछे हटना पड़ा। १८ अप्रैल को यूनानी सेना अल्बेनिया में पीछे हटी और यूनान में जर्मन सेना ने ओलिंपस पर्वत पर अधिकार कर लिया। इसी दिन यूनान के प्रधान मंत्री की मृत्यु एथेन्स नगर में हुई। १९ अप्रैल को मित्र तथा यूनानी सेना यूनान और अल्बेनिया से हटाई गईं। २० अप्रैल को यूनान में ब्रिटिश सेना लारीसा के दक्षिण हट गई और अल्बेनिया में इटली की सेना यूनानी सीमा पर पहुँच गई। २१ अप्रैल को मित्रसेना ने लामिया के दक्षिण रक्षक लाइन बनाया और जर्मन सेना ने लामिया तथा वोलो के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया। २१ अप्रैल को यूनान की सेना इटली और जर्मन सेना द्वारा घेर ली गई और एपीरस की सेना ने (२ लाख ५० हजार) आत्मसमर्पण कर दिया और थेर्मोपीली के दर्रे पर भीषण युद्ध हुआ। उसके बाद जर्मन सेना ने थेर्मोपीली पर अधिकार कर लिया और यूनान की सरकार क्रीट चली गई और जर्मन सेना ने कोरिंथ और एथेन्स पर भी अधिकार कर लिया। २६ अप्रैल तक समस्त मित्रसेना यूनान से हटा कर क्रीट पहुँचा दी गई। यूनान भी शत्रु हाथों में चला गया।

यूगोस्लैविया का घेरा

लोअर डैनूब की ओर हँग्री और रूमानिया पर जर्मन सेना के बढ़ने से यूगोस्लाविया घिर गया। यूगोस्लाविया की सरकार ने बार बार तटस्थ रहने की घोषणा की जिसे उसने इटैलो-ग्रीक युद्ध के समय पुनः घोषित किया। डैनूब नदी यूगोस्लाविया के उत्तरी पूर्वी कोण होकर बहती है इसी से यह आशा पहले से ही की जाती थी कि जर्मनी उसकी ओर बढ़ेगा। २५ मार्च को स्वेकोविच सरकार ने जर्मन शक्ति से प्रभावित हो वियना में आकर त्रिराष्ट्र संधि पर हस्ताक्षर कर दिया। परन्तु इससे देश भर में असंतोष फैल गया। सेना ने अकस्मात विद्रोह कर दिया। नाबालिग बादशाह पीटर ने देश को शासन व्यवस्था अपने हाथों में ले ली और जनरल सिमोविच को प्रधान मन्त्री बनाया। जर्मनी ने वहाँ ब्रिटिश हथकंडों पर शंका की और २५ मार्च के समझौते के विषय में यूगोस्लाविया से अपनी नीति स्पष्ट करने के लिये कहा।

स्पष्ट उत्तर न मिलने पर ६ अप्रैल १९४१ ई० को जर्मनी ने यूगोस्लाविया पर आक्रमण कर दिया। कुछ ही दिनों में वहां की सेना बिखर गई और उसके विभिन्न भागों पर हँगरी और बल्गेरिया ने अपना अधिकार कर लिया। क्रोशिया का
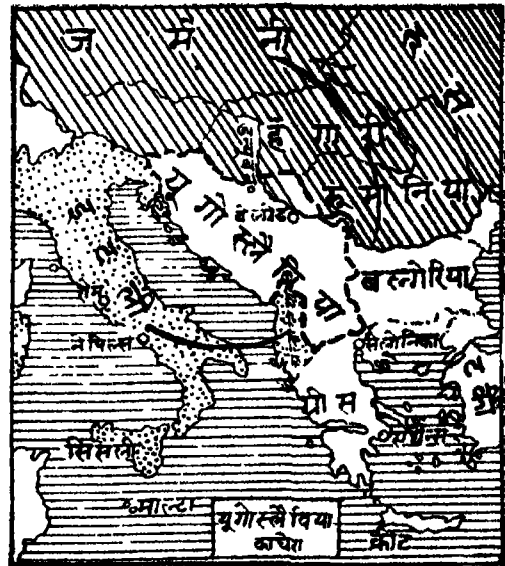
१६

नया राज्य इटैलियन राज्य-वंश के ड्यूक को गद्दी पर बैठा कर स्थापित कर दिया गया।

★ ★ ★

क्रीट-ब्रिटेन का नवीन हवाई अड्डा

जैसे ही यूनान युद्ध-क्षेत्र में उतरा ब्रिटेन ने उसे समुद्री तथा हवाई सहायता दी। यूनान के पतन पर क्रीट द्वीप का महत्व बढ़ गया, वहां समुद्री तथा हवाई अड्डे थे जिनसे दक्षिणी इटैलियन और अल्बेनियन बन्दरगाहों पर हवाई आक्रमण हो सकता था। इटली से लीबिया सामान ले जाने वाले जहाजों को भी क्रीट से रोका जा सकता था। यूनान की पराजय के पश्चात् कुछ यूनानी तथा ब्रिटिश सेनाएँ क्रीट पहुँचीं। यूनान की सरकार भी २३ अप्रैल को क्रीट चली गई। २२ मई १९४१ ई० को जर्मन हवाई जहाजों तथा छतरी सैनिकों ने क्रीट पर भी आक्रमण कर दिया। ब्रिटिश सेना की पराजय हुई और १ जून १९४१ ई० को वहां से बची हुई ब्रिटिश सेना हटा ली गई।

पूर्वी भूमध्यसागर, टोरण्टो

यूनान पर इटली द्वारा युद्ध घोषित करने के कुछ समय पहले पूर्वी भूमध्य सागर में ब्रिटेन के पक्ष की भावनायें जागृत हो गई थीं। जुलाई १९४० ई० के आरम्भ में सिकन्दरिया बन्दरगाह का फ्रांसीसी जहाजी बेड़ा अशस्त्र किया गया और मास नामक क्रूशियर जहाज को क्रीट के उत्तर-पश्चिम में डुबोया। सितम्बर मास के आरम्भ और अंत काल में ब्रिटिश जहाजी बेड़े ने मध्य तथा पूर्वी भूमध्यसागर में प्रयत्न किया कि इटली का जहाजी बेड़ा बाहर निकल कर मैदान में आ जाय परन्तु असफल रहा।
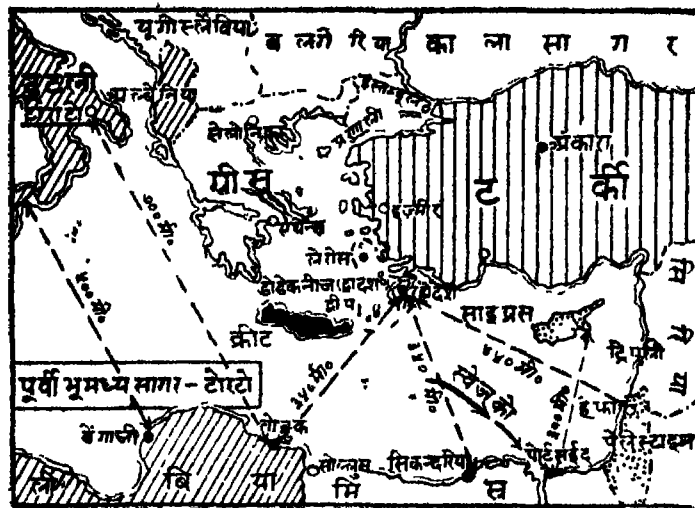
१७

के अंतिम भाग में स्वेज नहर पर ब्रिटेन ने पूर्ण रूप से सैनिक अधिकार प्राप्त कर लिया।

१९ जुलाई १९४० ई० को आस्ट्रेलिया के क्रूशियर जहाज सिडनी ने इटली के बार्टोमियो, गोल्योनी

१३ नवम्बर को ब्रिटिश हवाई सेना के बम्ब वर्षकों ने टोरएटो के इटेलियन जहाजी बेड़े के ६ युद्ध पोतों पर आक्रमण किया और तीन को नष्ट कर डाला।

क्रीट पर हवाई धावा

यूनान से ब्रिटिश तथा मित्रराष्ट्रों की सेनाओं के हट जाने के पश्चात् युद्ध-क्षेत्र में कुछ शिथिलता सी रही। जर्मनी के दिमाग़ में उस समय दो बातें गूंज रही थीं एक तो यह कि भूमध्य सागर से ब्रिटिश जहाजी बेड़े को भगा दिया जावे दूसरे सिकन्दरिया और स्वेज नहर पर अधिकार जमा कर इराक़ (मसूल) के तेल के कुओं पर अधिकार जमा लिया जावे। इन दोनों कार्यों की पूर्ति करने के लिये सब से पहला कार्य जर्मनो ने यह किया कि क्रीट द्वीप पर अपना अधिकार जमाया।

जब ब्रिटिश सेना यूनान से हटी तो उसका एक बड़ा भाग क्रीट में पहुँचा। इसका समाचार पाते ही जर्मनी ने दक्षिणी यूनान में युद्ध-सामग्री खास कर, गोता-खोर और सेना-वाहक समुद्री विमान तथा दूसरे छोटे जहाज एकत्रित किये। जर्मनी और इटली ने एजियन सागर के द्वीपों पर शीघ्र ही क़ब्जा जमा लिया। गोताखोर जहाजों की सहायता से लेम्नोस, मिटीलेने, चिओस, सामोस, सीक्लेड्स, कीथेरा, और ऐराटीकीथेरा आदि सभी स्थानों पर शत्रु ने अधिकार जमा लिया। उसके बाद यह बात स्पष्ट होगई कि पुनः तयारी और संगठन के बाद शत्रु का पूर्व की ओर बढ़ना अनिवार्य है। क्रीट और टर्की दो ही मुख्य स्थानों की ओर शत्रु बढ़ सकता था। क्रीट का नम्बर पहले आया और शत्रु-सेना का उस पर जब आक्रमण होगया तो क्रीट का भीषण युद्ध आरम्भ होगया।

जिस भीषणता के साथ शत्रु का आक्रमण हुआ और जिस दिलेरी और बहादुरी के साथ उसका ब्रिटिश सेना ने सामना किया उसी से क्रीट की सामरिक महत्व का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। हवाई-युद्ध की दृष्टि से इसकी स्थिति तो और अधिक महत्व की है। क्रीट की विजय से क्रीट और लीबिया के मध्य जो ब्रिटिश जहाज भूमध्य सागर में हैं उनको हवाई आक्रमण से बड़ा भय है और उन्हें अधिक से अधिक हानि पहुँचाने की कोशिश भी शत्रु की ओर से की गई है। पूर्वी भूमध्यसागर ब्रिटिश-जहाजी बेड़े के लिये बिल्कुल खतरनाक बन गया है। क्रीट से शत्रु सेना सीरिया की ओर बढ़ सकती है। स्वेज़, तोब्रुक और साइप्रस पर क्रीट से बम-वर्षा भी की जा सकती है।

क्रीट पर शत्रु का जैसा हवाई आक्रमण हुआ इस प्रकार का आक्रमण पहले और कभी नहीं हुआ था। जिस कुशल-नीति का आक्रमण में प्रयोग किया गया था वह अध्ययन योग्य है। पहले बन्दरगाहों और हवाई-अड्डों पर बम्ब-वर्षा की गई। यह बम्ब-वर्षा लड़ाका विमानों को भगाने, नष्ट करने और समुद्री जहाजों को हानि पहुँचाने के लिये की गई थी। क्रीट में कुछ ही हवाई-मैदान थे जो बहुत छोटे थे इस लिये कुछ ही समय के बाद ब्रिटिश लड़ाका विमान क्रीट छोड़ कर भाग गये। उसके बाद हजारों की संख्या में विमानों से छतरी वाली सेना और छोटे तेज़ समुद्री जहाजों से पैदल सेना उतार दी गई। ग्लाइडर्स सेना का इतनी अधिक संख्या में आक्रमण में भाग लेना युद्ध-संसार में एक नवीन बात थी। प्रत्येक विमान ले जाने वाले जहाज में पीछे की ओर ग्लाइडर्स बांध दिये गये थे। यह एक विमान पर ३ से ८ तक संख्या में थे। जब धरती के समीप जहाज पहुँचते थे तो यह छोड़ दिये जाते थे। उनके धरती पर उतरने की चाल २० मील प्रति घंटा है। यह बहुत थोड़े स्थान में उतारे जा सकते हैं। समुद्री विमान के ग्लाइडरों का भी प्रयोग किया गया था जो रेथीम्नो के समीप समुद्र में उतरे थे। उन्हें छोटी मोटरों द्वारा खींच कर तट पर लगाया था। बड़े बड़े सेना ले जाने वाले जंकेर विमान अंग्रेजी वी अक्षर केरूप में क्रीट पर उतरे उनके पीछे मेसेर्स-चिम्ट लड़ाका विमान थे। प्रत्येक बाहरी मशीनों से १० से १५ तक छतरी-सैनिक नीचे उतारे गये और भीतरी मशीनों से उनके लिये अस्त्र-शस्त्र और युद्ध सामग्री गिराई गई। उतरने के पश्चात् सैनिक कुछ समय तक शान्त रहे और इस प्रकार उनके दिमाग़ तथा होश-हवास ठीक हो गये।

कैनिया, कैंडिया और रेथीम्नो क्रीट के उत्तरी तटीय नगर हैं और कैनिया सूदा-खाड़ी के बन्दरगाह

तथा मलेमे के हवाई मैदान के बीच में है। कैंडिया क्रीट का मुख्य बन्दरगाह और हवाई स्टेशन है हवाई अड्डों पर अधिकार करके बन्दरगाहों पर अधिकार करने के विचार से ही शत्रु ने यह चाल चली थी। आक्रमणकारियों और रक्षकों में घोर संग्राम हुआ और दोनों ओर भीषण जान व माल की हानि हुई। कुछ दिनों के बाद मलेमे के हवाई मैदान पर शत्रु के पैर जम गये जिससे समस्त द्वीप पर शत्रु का धीरे धीरे अधिकार हो गया। मलेमे के बाद कैनिया और सूदा-खाड़ी पर शत्रु सेना ने कब्जा किया और ब्रिटिश तथा यूनानी सेना बलपूर्वक पीछे हटा दी गई। शत्रु का हवाई शक्ति बहुत बड़ी थी और क्रीट के हवाई मैदानों में विमान संहारिणी तोपों की कमी थी। यदि विमान-विध्वंसक तोपें होतीं तो शत्रु की हवाई सेना का कार्य बहुत कठिन हो जाता। इस कमी के कारण रक्षा करने में बहुत से लड़ाका विमान नष्ट हो गये। तोपों की रेंज के बाहर विमान से सेना उतारी गई इसलिये तोपें बेकार सिद्ध हुईं। फिर भी समस्त द्वीप पर अधिकार करने में शत्रु को १२ दिन लग गये। इसी से ब्रिटिश सेना की बहादुरी, साहस और कुशलता की परीक्षा की जा सकती है। क्रीट की पराजय से जो पाठ अंग्रेजों ने सीखा है वह उसकी हानि से कहीं बढ़ कर लाभकारी है। जो त्रुटि क्रीट में हुई थी अब ब्रिटेन, मिस्र, माल्टा आदि स्थानों पर उसका सुधार हो गया है। माल्टा पर शत्रु के लगभग ५०० हवाई आक्रमण हो चुके फिर भी वहाँ के हवाई मैदानों में पूर्ण रूप से काम हो रहा है। वहां के हवाई स्टेशन विमान-संहारिणी तोपों से भली भांति सुरक्षित हैं और उनकी सहायता के लिये पैदल सेना तथा लड़ाका विमान हैं।

पंज़ेर हवाई सेना

फिर भी जर्मनो के ऐसे आक्रमण की शक्ति का कम अंदाज हमें नहीं लगाना चाहिये। शत्रु के एक हवाई पञ्जेर सेना में ७००० सैनिक रहते हैं जो दो पैदल सेना में विभाजित रहते हैं। तीसरी सेना तोपों की होती है जिसमें साधारण ७'५ मिलीमिटर की तोपें रहती हैं (कभी कभी यह तोपें १०५ मिलीमिटर तक की होती हैं।) उसमें एक भाग मोटर-साइकिल सेना और टैंक-विध्वंसक तोपों और इञ्जीनियरों का भी एक दल रहता है। टैंक-विध्वंसक तोपें ३७ मिलीमिटर की होती हैं। प्रत्येक पैदल सेना तीन बटैलियन में विभाजित रहती है जिसमें दो बन्दूकों के सैनिकों का जत्था और एक मशीनगन वाले सैनिकों का जत्था रहता है।

ऐसी सेना को कहीं ले जाने में कम से कम दो दिन लगते हैं और २५० विमानों को काम करना पड़ता है। प्रत्येक विमान को तीन या चार चक्कर लगाना पड़ता है।
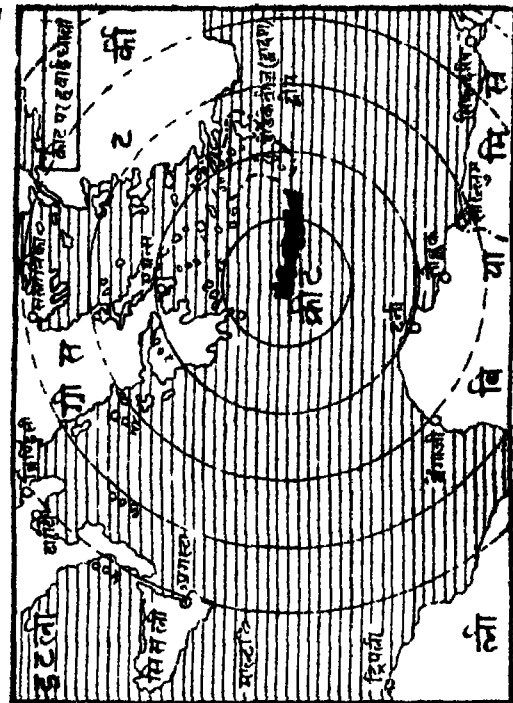
हवाई आक्रमण के विरुद्ध रक्षा करने के लिये सबसे अच्छा उपाय लड़ाका विमानों और विमान-संहारिणी तोपों का है। यदि लड़ाका विमान होंगे तो ग्लाइडर्स और छतरी वाली सेना का धरती पर उतरना असम्भव होगा और फिर तोपें मार गिरायेंगी। इस प्रकार के आक्रमण में बड़ा व्यय होता है। ऐसी सेना में शिक्षित, चतुर, तगड़े चुने सैनिक भेजने पड़ते हैं। जो उठा कर ले जाने वाले बेतार के तार का समाचार लेने और भेजने वाली कलों का प्रयोग कर सकें और अजनबी देश में कई दिनों तक रह सकें फिर सबसे आवश्यक बात यह है कि अचानक हमला करने में यदि विलम्ब हुआ तो बड़े हानि की शंका रहती है।

द्वितीय खण्ड

रूस के राज्य की वृद्धि तथा क्षणिक ह्रास

पोलैण्ड विच्छेद होने पर पोलैंड के पूर्वी भाग पर रूस ने अधिकार जमाया। जून ११४० में रूमानी सरकार ने रूसी अंतिम मार्गों की स्वीकृत दी और बसारेबिया तथा बुकोविना प्रान्त रूस को दे दिये। (१९१९ के पहले बसारेबिया रूस का था।)

जुलाई १९४० ई० में बाल्टिक राज्य एस्टोनिया लैटविया और लिथवानिया रूस में मिल गये। यह राज्य ज़ार के रूसी राज्य के अंग थे। फिनलैंड के कुछ भाग पर भी रूस ने विजय प्राप्त करके अधिकार कर लिया था।

२२ जून १९४१ ई० को जर्मन सेनाओं ने रूस पर भयानक १५०० मील लम्बे क्षेत्र में आक्रमण कर दिया और उपर्युक्त राज्य अब फिर रूस के हाथ से निकल गये हैं।

१९

★ ★ ★
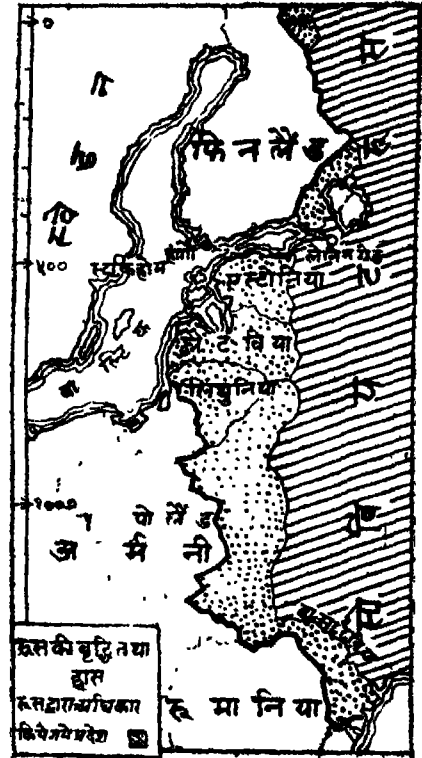
रूमानिया में विदेशी हथकंडे

गत महायुद्ध के पश्चात् रूमानिया की सीमा में बहुत वृद्धि हुई। रूमानिया की जन संख्या २ करोड़ है जिसमें ६० लाख अल्प संख्यक लोगों के कारण वहां सदैव अशान्ति बनी रहती है।

जुलाई १९४० ई० में पड़ोसी राज्यों के भय के कारण रूमानी सरकार ने ऐंग्लो-फ्रान्सीसी छत्रछाया से अलग हो जाने की घोषणा की और रूसी मांग स्वीकार करके बसारेबिया प्रान्त और बुकोविना प्रान्त का कुछ भाग रूस को दे दिया। अगस्त मास में दक्षिणी डोब्रुजा प्रान्त को बल्गेरिया ने ले लिया। हँगरी ने भी ट्रान्सीलवानिया प्रान्त माँगा इस पर वियना में सम्मेलन हुआ जिसमें जर्मन तथा इटैलियन राजदूत भी भाग ले रहे थे। ३० अगस्त को एक संधि हुई ट्रान्सील्वानिया का एक बड़ा भाग रूमानिया को छोड़ना पड़ा।

उसके पश्चात् देश में अशान्ति फैल गई और कैरोल राजा ने गद्दी छोड़ दी। जनरल अंटो नेस्क्यू

प्रधान मन्त्री बना। आइरन गार्डस और रूमानी फैसिस्ट संस्था वहां की मुख्य क़ानूनी संस्थाएँ घोषित की गईं। देश पर जर्मन प्रभुत्व हो गया। ब्रिटिश प्रजा क़ैद कर ली गई और जर्मन सेना वहां पहुँच गई। मुख्य मुख्य तेल की कम्पनियों पर रूमानी सरकार ने अधिकार कर लिया। कुछ दिनों के पश्चात रूमानिया जर्मन सैनिक छत्र-छाया में हो गया। २३ नवम्बर को बर्लिन में रूमानी प्रधान मन्त्री ने धुरी राष्ट्रीय त्रि-शक्ति-संधि पर हस्ताक्षर कर दिये।

जब जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया तो रूमानी सेना ने भी पग उठाये और बसारेबिया तथा बुकोविना प्रान्त पर अधिकार जमा लिया। इस समय भी रूमी प्रदेश प्राप्त करने के लोभ से रूमानिया की फौजें जर्मनी को सहायता देने के लिये रूस पर आक्रमण कर रही हैं।

★ ★ ★

रूस और फिनलैंड

फिनलैण्ड रूस के पश्चिम बाल्टिक सागर पर स्थित है। फिनलैंड की जन-संख्या २८ लाख और क्षेत्रफल १ लाख ३५ हजार है। बाल्टिक राज्यों से समझौता करने के पश्चात् अक्तूबर सन् १९३९ ई० में रूस ने फिनलैंड से करेलियन स्थल संयोजक और कुछ द्वीप मांगे। बदले में कहीं अधिक अपनी रूसी भूमि देने को कहा लेकिन फिनलैण्ड ने रूसी मांग अस्वीकार कर दी। इस पर ३० नवम्बर को रूसी सेना ने फिनलैण्ड पर चार स्थानों से आक्रमण कर दिया।
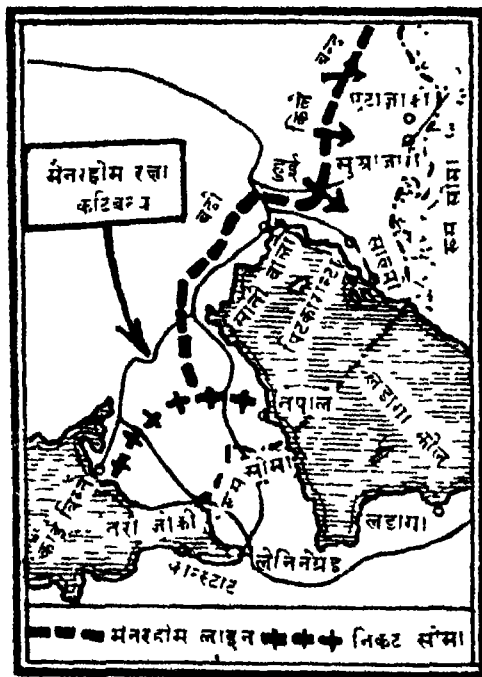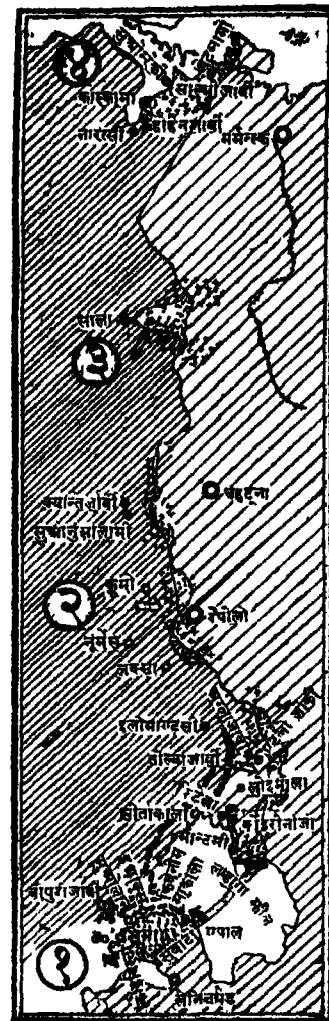
करेलियन स्थल संयोजक में फर्वरी १९४० की मैनरहीम लाईन की स्थिति

२०

२९ फर्वरी १९४० में रूस और फिनलैंड की सीमा

२१

फिनलैण्ड ने मित्र-राष्ट्रों से सहायता मांगी। स्वयंसेवक फ्रान्स आदि कई देशों से गये लेकिन स्कैण्डोनेविया के राज्यों ने अपने देश में होकर मित्र सेनाओं को जाने की आज्ञा न दी। उसके पश्चात् शीतकाल आ गया। विषम शीत काल में लड़ाई

कुछ समय तक चली। आरम्भ मे फिन सेना ने रूसी सेना के छक्के छुड़ा दिये। जब रूस ने अपनी पराजय होते देखी तो उसने ५ हजार विमान फिन सीमा पर लगा दिये और फिनलैंड की प्रसिद्ध मैनरहीम लाइन टूट गई। मैनरहीम लाइन टूटने से फिन सेना हताश हो गई। १२ मार्च १९४० ई० को फिनलैंड की सेना ने हथियार डाल दिये।

कारेलियन स्थल संयोजक की स्थिति

२२

युद्ध समाप्त होने के पश्चात् रूस और फिनलैंडमे संधि हो गई। संधि होने पर करेलियन स्थल संयोजक (जिसमें वीपुरी भी शामिल है) रूस को दिया गया जिससे वह बोथनिया खाड़ी तक पहुँच गया। हांगो द्वीप ३० वर्ष के लिये रूस को ४०,००० पौंड लगान पर मिल गया। इस प्रकार लड़ाई के बादफिनलैंड को पहले से कहीं अधिक स्थान देने पड़े।

जब जर्मनी ने रूस पर चढ़ाई की तो फिनलैंड ने जर्मनी का साथ दिया और रूस से अपने कई स्थान छीन लिये। इस परिवर्तन से रूस को यह लाभ हुआ कि जर्मनी लेनिनग्राड पर अचानक छापा न मार सका इसी से रूस का यह प्रसिद्ध बाल्टिक द्वार इस समय भी स्वाधीन है।
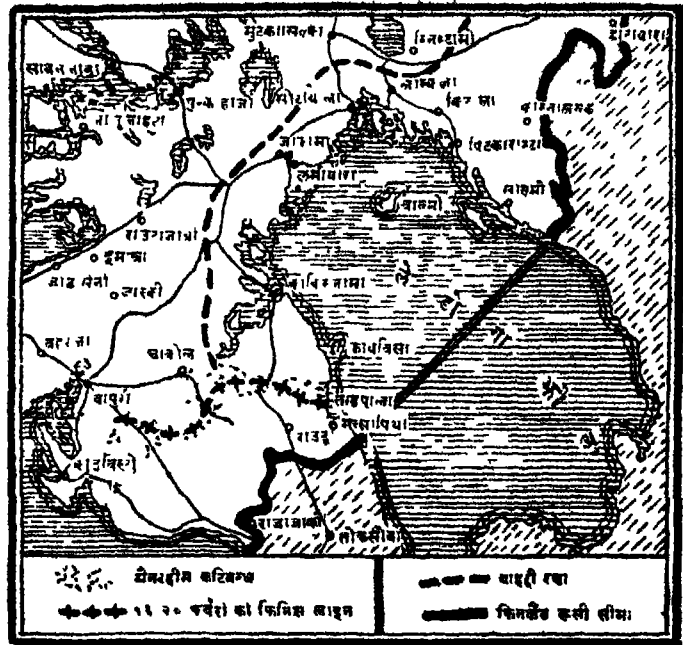
फर्वरी मे वीपरी की स्थिति

२३

[illegible] की स्थिति

२४
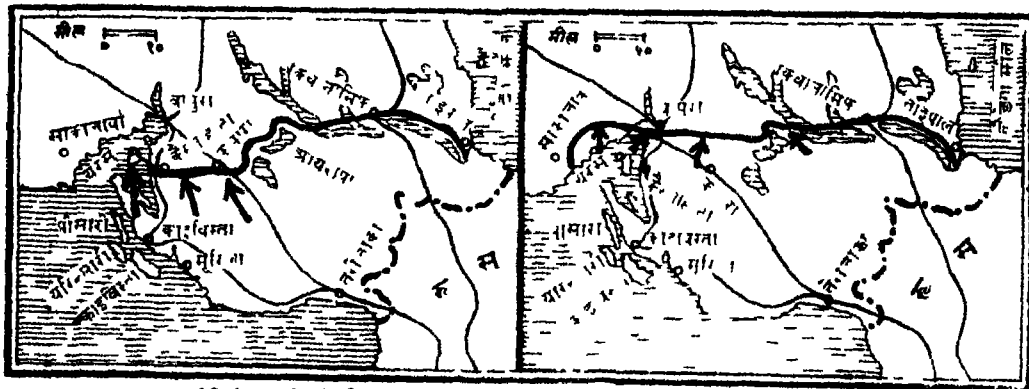
जर्मनी अपने राजनैतिक लक्ष्य को सामने रखते हुये दो सीमाओं पर युद्ध लड़ने से सदैव भयभीत रहा है। १९४० ई० में जब हिटलर पश्चिम की ओर इंगलैण्ड और फ्रान्स से भिड़ा था तो उसने अपने पूर्वी शत्रु रूस के साथ संधि कर ली थी। फिर भी पूर्वी सीमा पर एक बड़ी जर्मन सेना लगी हुई थी। उस वर्ष इंगलैण्ड को छोड़ कर समस्त पश्चिमी-योरुप पर हिटलर का अधिकार होगया। इंगलैण्ड की बढ़ती हुई शक्ति को देख और पूर्व की ओर रूसी सेना का भय दूर करने के ध्यान से ब्रिटेन पर धावा मारने के पहले हिटलर पूर्व की ओर झुका। २२ जून १९४१ ई० को १५०० मील लम्बे (श्वेत सागर से काला सागर तक) क्षेत्र में जर्मन सेनाओं ने रूस पर धावा बोल दिया।

पिछली बड़ी लड़ाई के बाद रूस ने अद्भुत उन्नति की है वहां एक विशाल भीषण आर्थिक तथा सैनिक क्रान्ति उत्पन्न हुई है। आधुनिक रूसी सेना जार की सेना से कहीं अधिक बड़ी और मजबूत है। रूसी सेना की शक्ति को हिटलर ने भी स्वीकार कर लिया है। रूसी सेना का भेद अब तक अज्ञात था। रूसी-जर्मन युद्ध के कारण अब सैनिक भेद का पता चल रहा है।

पश्चिमी सीमा पर रूस की १७० डवीजन सेनाएँ युद्ध में लड़ रही थीं। एक डिवीजन में प्राय: २५००० सिपाही होते हैं। १९३९ ई० में रूस के पास १० हजार टैंक थे। अब तक टैंकों की संख्या और अधिक होगई होगी। रूस के मध्यम श्रेणी के टैंक लगभग ८४० मन के हैं। रूसी टैंक संसार में सर्वोत्तम हैं। समस्त रूसी सेना कलों और मशीनों से परिपूर्ण है। पैदल सेना को रूस ने अब मोटरवाली सेना बना दिया है जिसका विशाल संगठन अद्वितीय है।

रूस के पास एक बड़ी हवाई सेना है। लड़ाका वायुयान कुछ प्रथम श्रेणी के हैं जो बड़े भयानक हैं। बम्बवर्षक वायुयान मजबूत, दर्घ और सुसंगठित हैं। बड़े रूसी बम्बवर्षक वायुयान अमरीकन, प्रथम श्रेणी वाले वायुयानों से किसी प्रकार भी कम नहीं हैं। उनकी चाल, उनके अस्त्र, बम्ब भरने की शक्ति और छत आदि अमरीकन अच्छे से अच्छे बम्बवर्षकों की भांति है।

रूस की जल शक्ति भी काफी तगड़ी है। उसके पास समुद्री प्रथम श्रेणी के लड़ाका जहाज एक या दो से अधिक तो नहीं हैं परन्तु २०० जहाजों का एक बड़ा बेड़ा है जिसकी ओर हिटलर की आँखे लगी हैं। रूस के पास आइसब्रेकर (बरफ तोड़ने वाले) जहाज हैं जो जमे हुये समुद्र में बरफ को तोड़ कर निकाल लेते हैं। पूर्व की ओर उसकी जलशक्ति बड़ी मज़बूत है। और उसमें प्रत्येक भांति के आधुनिक जहाज हैं जो समय पर बिना किसी प्रकार की सहायता के शत्रु का सामना कर सकते हैं। व्लाडीवास्टक में ऐसे सबमेरीन हैं जो बहुत समय तक बरफ से जमे हुये समुद्र के नीचे चल तथा रह सकते हैं।

स्टैलिन रूस का कर्णाधार है। जब से (पोलैण्ड पतन के बाद) उसने अपने पग उठाये हैं उसकी चाल से संसार चकित रहा है। पोलैण्ड पतन होने पर उसने पूर्वी पोलैण्ड पर अधिकार जमाया। उसके बाद एस्टोनिया, लैटविया, लिथवानिया आदि बाल्टिक राज्यों को रूस में मिलाया। इन राज्यों के मिलाने से पश्चिमी सीमा, दक्षिणी बाल्टिक सागर, फिनलैण्ड की खाड़ी और लेनिनग्राड की रक्षा स्टैलिन ने की और जर्मनी का सीधा आक्रमण रूस पर न होसका। बुकोविना और बसारेबिया प्रान्त पर अधिकार करने से कार्पेथियन से कीव तक के क्षेत्र की शत्रु से रक्षा हुई। नीस्टर नदी की लाइन की रक्षा उत्तर-पश्चिम की ओर से हुई और रूसी सेना ने रूमानिया के तेल के प्रदेश से लवोव तक सुरक्षित कर लिया। पश्चिम की ओर जिस कूटनीति का रूस ने अवलम्बन किया था उसका भेद अब रूसी-जर्मन युद्ध से खुल रहा है कि उससे रूस को कितना बड़ा

लाभ पहुँचा। इससे स्टैलिन की युद्ध-की कुशलता तथा दूरदर्शिता का पता चलता है।

पश्चिमी सीमा के पीछे रूसी सेना ने अपना सुदृढ़युद्ध-क्षेत्र बनाया है जो लेनिनग्राड के पश्चिम से कालासागर तक फैला हुआ है। प्रीपेट के दलदलों से रूसी पश्चिमी सीमा दो भागों में विभाजित हो जाती है। उत्तर की ओर बाल्टिक राज्य और मास्को तथा लेनिनग्राड के पश्चिमी स्तम्भ मिन्स्क कौनस, विल्ना, रीगा और टालिन आदि नगर स्थित हैं। प्रीपेट दलदल के दक्षिण की ओर कीव और ओडेसा नगरों के पश्चिमी स्तम्भ लवाव, सेर्नौती और प्रेजेमिस्ल आदि नगर हैं।

रूस के तीन सागर हैं। बाल्टिक सागर में जर्मन जल तथा हवाई शक्ति मिलकर रूस से, शक्ति शाली पड़ती है। पर एस्टोनिया और हैङ्गो को लेकर रूस ने अपना उपकार किया। उत्तर की ओर मुरमान्स्क और आर्केञ्जल के बन्दरगाह हैं। यह पश्चिमी देशों के साथ जहाजी सम्बंध स्थाई रखने के लिये साल के कई महीनों तक खुले रहते हैं। कालासागर की रक्षा रूसी जहाजी बेड़े तथा सेवेस्टोपोल और क्रीमिया के हवाई अड्डों से होती है। कालासागर और कास्पियन सागर के मध्य काकेशिया, जार्जिया के प्रदेश और बाकू के तेल के कुएँ स्थित हैं।

सेना के पीछे हटने से सेना की पराजय नहीं मानी जा सकती। यदि रूसी सेना घेरी न जा सकी तो फिर वह जर्मनी को नष्ट कर देगी। मास्को,

बाल्टिक तट के अल्पायु राज्य
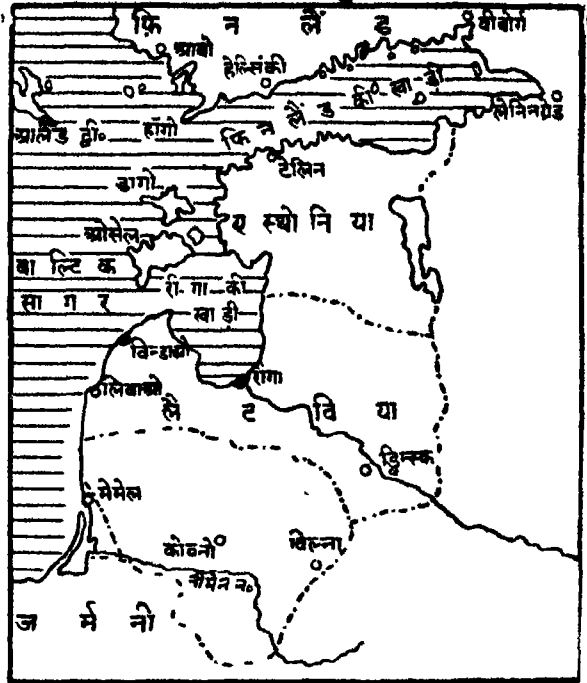
२६

लेनिनग्राड और काकेशिया में भीषण संग्राम होंगे। अमरीका पर नाजी आक्रमण होने के लिये रूस पश्चिमी द्वार है। रूस पर विजय पाकर अलास्का होकर अमरीका पर जर्मन आक्रमण हो सकता है।

९ रूसी-जर्मन युद्ध—१५

बाईस जून सन् १९४१ ई० को प्रात: काल जर्मनी ने बिना किसी प्रकार की चेतावनी दिये रूस की प्राय: २००० मील लम्बी सीमा पर एक साथ हवाई आक्रमण कर दिया। जर्मनी का अनुमान था कि इस अचानक विद्युत-युद्ध से रूस पर भी वह शीघ्र ही अधिकार प्राप्त कर लेगा। जर्मनी की वे सेनायें जो अब तक अजेय समझी जाती थीं रूस में उलझ गईं। इस आक्रमण का पहला धक्का लैटविया लिथवेनिया, एस्टोनिया, पूर्वी पोलैंड, बुकोविना और बसारेबिया पर पड़ा जिसे रूस ने हाल ही में मिलाया था। इन स्थानों पर रूसी सेना का तो बुरा हाल हो गया परन्तु प्रधान रूस में स्थिति रूसी सेनाओं के संचालन का पूरा अवसर प्राप्त हो गया। इस आक्रमण में फिनलैंड इटली, हङ्गरी और रूमानिया की सेनाएँ भी जर्मनी का साथ दे रही थीं। स्वयम् जर्मनी की लगभग ५० लाख सेना रूस में लगी थी। ईसाई धर्म की रक्षा

के नाम से सैनिक स्वयम् सेवक तो स्पेन आदि और कई देशों से रूस पर चढ़ आये थे।

जर्मन आक्रमण एक विशाल ज्वार भाटे की भांति था। पहली लड़ाई की बाढ़ अपनी पूरी शक्ति लगाने और अपना निश्चित कार्य पूरा करने के के पश्चात् कुछ समय के लिये रुकी और शक्ति संचित करने के पश्चात् दूसरी, तीसरी बाढ़ और तेजी से आई।

जर्मन सेनाएँ मरमन्स्क, लेनिग्राड, मास्को और कीव की ओर बढ़ीं। इन चार क्षेत्रों में कभी किसी क्षेत्र में युद्ध अधिक उग्र रूप से छिड़ा तो किसी में शिथिल गति से चला। प्रथम आक्रमण २२ जून से १९ जुलाई तक जारी रहा। इस आक्रमण में जर्मन सेनायें बहुत आगे बढ़ गई। लेकिन इस समय में उन्होंने अधिकतर उस प्रदेश पर अधिकार जमाया जिसे रूस ने हाल ही मे मिलाया था। प्रीपेट दलदलों के उत्तर में जर्मन सेनाएँ चिमटे के आकार में दो भिन्न दिशाओं में बढ़ीं। जर्मनी की लिथुएनिया के कौनास नगर में घुसती हुई राएगा बन्दरगाह की ओर बढ़ती हुई लैटविया और एस्टोनिया के बढ़े भाग को दबा कर वेलीकाया नदी के समीप प्स्कोव और ओस्ट्रोव नगरों में जाकर रुकीं। दक्षिणी सेना ग्राडनो और विलना के मार्ग से मिन्स्क के प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन पर पहुँची और आगे बढ़ी। पोलोटस्क और विटेब्स्क नगर पर घमासान युद्ध हुआ इन्हें लेने के पश्चात् जर्मन सेना बोब्रुइस्क और मोहिलेव नगरों की ओर बढ़ी।

मध्य वर्ती क्षेत्र में प्रीपेट और स्टर नदियों के पड़ोस में जर्मन सेना कुछ धीमी चाल से बढ़ी। प्रीपेट दलदलों के दक्षिण में जर्मन सेना का अधिक तेजी के साथ बढ़ना अधिक महत्वपूर्ण न था फिर भी सामरिक दृष्टि से इस भाग पर अधिकार जमा लेना आवश्यक था जिससे दूसरी ओर छलांग मारी जा सके। ल्वाओ नगर पर अधिकार जमाने में जर्मन सेना को भारी हानि उठानी पड़ी। ल्वौओ नगर लेने के पश्चात् जर्मन सेना ने फिर दूसरा सैनिक चिमटा बनाना आरम्भ किया। जर्मन सेना का बांया पक्ष रेल मार्ग से आगे बढ़ा और झीटोमिर नगर छीन कर रूसी रक्षक पंक्ति (डिफेन्स लाइन) में एक पच्चड़ भोंक दी। जर्मन सेना के दाहिने पक्ष ने सर्नोटो नगर पर अधिकार जमा लिया। इन दोनों पक्षों के मध्य घिर जाने के भय से रूसी सेना पीछे हटी और प्रूथ नदी की रक्षक पंक्ति छोड़ कर रूसी सेना निस्टर नदी पर आ डटी इससे बसारेबिया का प्रान्त जर्मनी के अधिकार में हो गया।

इस एक माह के संग्राम के पश्चात् जर्मन सेनाएँ विश्राम लेने और पुनः संगठन करने के लिये ठहर गई कुछ लोगों को भ्रम हो गया कि जर्मन सेना की इतनी अधिक क्षति हो गई है कि वह आगे बढ़ने में असमर्थ है पर यह बात न थी नये ढंग की जटिल मशीनों की मरम्मत करने और पुनः चालू करने के लिये विश्राम की आवश्यकता होती है। सिगनल (संकेत) देने वालों और रसद पहुँचाने वालों पर भी इस विद्युत-युद्ध में ऐसा जोर पड़ता है। कि उनके लिये भी विश्राम करना अनिवार्य हो जाता है। टैंकों और विमानों के अनुपम सहयोग के कारण ही जर्मनी को आधुनिक समर में सफलता प्राप्त हो रही है। जर्मन विमान पहले इतना ऊँचे उड़ते हैं कि दिखाई नहीं पड़ते और फिर सेना पर आक्रमण करने के लिये डुबकी लगा कर इतना नीचे उतर आते हैं कि उनकी ऊँचाई भूमि से केवल कुछ सौ गज की होती है। वह सीधी रेखा में ऊपर से नीचे आते हैं। अतः उन पर गोली का निशाना कम लगता है और वह शत्रु सेना पर बम्ब छोड़ कर तथा मशीनगन चला कर उसमें खलबली मचा देते हैं जिस स्थान पर सेना में खलबली मचती है उसी ओर टैंकों को बढ़ने का संकेत किया जाता है। इस विकराल लड़ाई मे बहुत से विमान बिगड़ तथा नष्ट हो जाते हैं। उन्हें ठीक करने तथा नवीन विमान मंगाने में भी समय लगता है। जहाँ कहीं जर्मन बम्ब-वर्षक विमानों का अधिक समूह एकत्रित हो गया वहीं रूसी सेना में अपार नर संहार हुआ। रूस में प्रथम आक्रमण में जर्मन वायुयान दल का नेता वानरिक थोफर था।

जुलाई मास के अंतिम दो सप्ताह में उत्तर की ओर प्स्कोव और ओस्कोव नगरों पर जर्मन सेना ने अधिकार जमा लिया और वेलिकाया नदी पर

रूसी-जर्मन युद्ध का
आरम्भ काल जुलाई
से अक्तूबर तक
१०० मील २००
जर्मन आक्रमण का क्षेत्र
१-१५ सितम्बर
१५-२८ सितम्बर
फिनलैंड की खाड़ी
लेनिनग्राड
इस्थोनिया
लैटविया
लिथुआनिया
विलना
मास्को
कालिनिन
स्मोलिन्स्क
मोहिलेव
कीव
ज़िटोमीर
उमान
कालुगा
तूला
कुर्स्क
ब्यैलगोरोड
खर्कोव
निप्रोपिट्रोव्स्क
स्टेलिनो
वोरोशिलवग्रेड
ओडेसा
निकोलेयेव
रोस्टोव
क्रीमिया
सिवैटोपोल
काला सागर
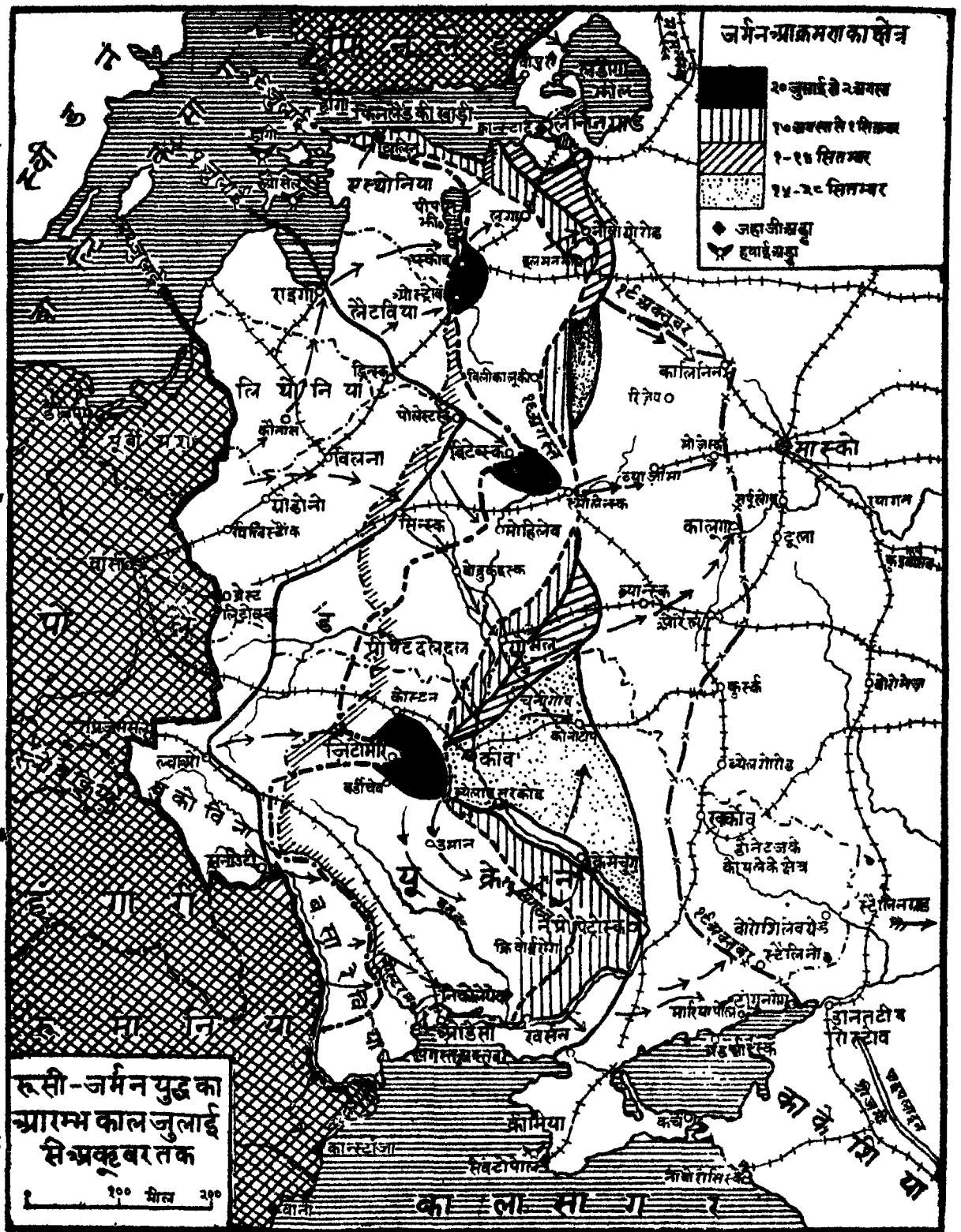
पुल बना लिया। मध्यवर्ती क्षेत्र में विकराल युद्ध करने के बाद जर्मन सेना नीपर नदी और स्मोलेन्स्क के समीप पहुँच गई। उत्तर की ओर कोरोस्टेन, बर्दीचेव, बएला, जर्कोव आदि स्थानों पर जर्मन सेना का अधिकार हो गया और कीव नगर खतरे में पड़ गया। एकोव, ओस्ट्रोव, विटेबेस्क और कोरोस्टेन तथा बएला जेर्कोव चार स्थानों से जर्मन सेनाएँ आगे बढ़ रही थीं।

★ ★ ★

रूसी-जर्मन युद्ध-२

अगस्त मास के आरम्भ में रूस में जर्मन सेना का द्वितीय आक्रमण आरम्भ हुआ। उत्तर की ओर हवाई जहाजों की अधिकता के कारण जनरल वान लीब लूगा और नोवगोरोड नगरों की ओर बढ़ा और थोड़ा विश्राम करने के पश्चात् तालिम तथा एस्टोनियन तट पर अधिकार जमाने के बाद लेनिनग्राड का घेरा डाल दिया। रूसी रक्षक सेना ने बड़ी चतुरता और वीरता से नगर की रक्षा की। बाल्टिक-सागर की रूसी जल सेना ने भी आश्चर्यजनक युद्ध किया और लेनिनग्राड की रक्षा में सहायक सिद्ध हुई।

मध्यवर्ती भाग में जनरल हाट और गूडेरियन की देखभाल में जर्मन पन्जेर सेना आगे बढ़ी और स्मोलेन्स्क, मोहिलेव, गोमेल और चर्नीगाव पर अधिकार जमा लिया। उत्तर की ओर से भी कीव नगर पर जर्मन सेना ने खतरा उत्पन्न कर दिया।

सबसे भीषण धावा दक्षिण की ओर यूक्रेन सीमा पर बएला टजेर्कोव से यूमान की ओर जनरल रून्स्टाट का हुआ। जर्मन जनरल रून्स्टाट ने इस प्रदेश की रूसी सेना को घुमा कर नीपर और बग नदी के तट पर कर दिया। इस प्रदेश में रूसी सेना घिरते घिरते बची। जब रूसी सेना नीपर नदी की ओर हटी तो उसी ओर जर्मन सेना भी बढ़ी और क्रेमेनचुग नगर पर पुल बना कर नीपर नदी को पार किया और कीव नगर दक्षिण की ओर से भी घेर लिया। क्रिवोयरोग के लोहे के प्रदेश, निकोलाएव के बन्दरगाह पर जर्मन सेना ने अधिकार करके ओडेसा बन्दरगाह का घेरा डाल दिया।

इस प्रकार सितम्बर की १५ तारीख तक जर्मन सेना रूसी सेना, टैंक तथा विमान सेना को नष्ट करती आगे बढ़ती गई। ओडेसा और कीव नगर घेर लिये गये तथा मास्को और लेनिनग्राड में लड़ाई के डंके की ध्वनि सुनाई देने लगी।

सितम्बर महीने के दूसरे पक्ष में जर्मन सेना उत्तर की ओर अधिक नहीं बढ़ सकी परन्तु दक्षिण की ओर उसने पुनः विकराल धावा मारा। जर्मन सेनापति वानबोक की सेना का दाहिना अंग कोनोटोप नगर को काट आगे बढ़ गया। जनरल रून्स्टाट की सेना का बाम पक्ष भी वानबोक की सेना से हाथ मिलाने के लिये उत्तर की ओर अग्रसर हुआ। जब रूसी सेना ने देखा कि कीव नगर चारों ओर से जर्मन सेना द्वारा प्रायः घिर गया है तो उसने कीव नगर खाली कर दिया। इस बार भी बड़ी कठिनाई तथा हानि के पश्चात् रूसी सेना ने अपने को घेरे जाने से बचा लिया। सुदूर दक्षिण की ओर जर्मन सेना ने नीपर नदी पार किया और खेरसोन तथा पेरेकोप नगरों पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार जर्मन सेना की प्रगति बढ़ती ही चली गई और रूसी सेना को अधिकाधिक भय उत्पन्न होता ही गया।

अक्तूबर मास में जर्मन सेना का तीसरा भीषण आक्रमण आरम्भ हुआ और अक्तूबर मास के अंत तक में जर्मन सेना ने उत्तर की ओर स्लूटेस्क, नोवोग्राड कलीनिन तक, मध्यवर्ती भाग में मोजेस्क, कलूगा, ओरेल और कुर्स्क नगरों तक और दक्षिणी भाग में कोलोमाक, क्रस्नोग्राड, स्टालिनो और टागनरोग तक अपना अधिकार जमा लिया।

उसके बाद जर्मन सेना ने लेनिनग्राड घेर लिया और लडोगा झील के दक्षिण तट तक बढ़ी। मास्को नगर के उत्तर-पश्चिम, पश्चिम और दक्षिण और पश्चिम की ओर शत्रु सेना ने घेरा डाल

दिया। मास्को नगर पर विकराल शत्रु हवाई आक्रमण होने लगे और नगर के घेरे की घोषणा कर दी गई। रूस की सरकार मास्को से हट कर क्विबिशेव नगर चली गई। क्लिन से मोजैस्क, मालो, जेरोस्लाविज नगरों तथा अधिक उत्तर की ओर स्टालिनोगोर्स्क की ओर से मास्को नगर पर जर्मन सेना चढ़ रही थी और दिन प्रति दिन अधिकाधिक

२८

समीप होती जा रही थी। दक्षिण की ओर शत्रु सेना पूर्व की ओर जेलेटज नगर के आगे उस रेलवे की ओर बढ़ी जो ईरान के सामग्री पहुँचाने वाले मार्गों और काकेशिया के तेल-प्रदेश को प्रधान रूसी केन्द्रों तथा रण क्षेत्र की रूसी लाइनों से मिलाती थी।

सुदूर दक्षिण की ओर डान पर रोस्टोव नगर पर जर्मन अधिकार हो गया और पेरेकोप खाड़ी से क्रीमिया में जर्मन सेना प्रवेश कर गई। सिम्फेरोपोल याल्टा, थेवोडोसिया और कर्च पर जर्मन सेना ने अधिकार कर लिया केवल सेवेस्टोपोल पर रूसी अधिकार रह गया।

इस प्रकार जर्मन सेना की भीषण प्रगति देख कर प्रतीत हुआ कि प्रधान शीतकाल के पूर्व ही जर्मन सेना समस्त रूस के सामरिक महत्व वाले स्थानों पर अधिकार प्राप्त कर लेगी। परन्तु रूसी सेना के उच्च पदाधिकारियों ने सामरिक चतुरता का विलक्षण उदाहरण संसार के सामने रख दिया और अपनी सेना को फिर भी पहले की भांति बना रक्खा। शीतकाल आरम्भ होते ही रूसी सेना ने अपने प्रत्याक्रमण आरम्भ करके जर्मन सेना को पीछे हटाना आरम्भ कर दिया।

जर्मन आक्रमण-योजना के अनुसार लेनिनग्राड को फिनलैण्ड और दक्षिण-पश्चिम की ओर से और यूक्रेन को श्वेतरूस तथा बसारेबिया की ओर से घेरना था। यूक्रेन की विजय से जर्मनी को वहाँ की उपज, खनिज सम्पत्ति तथा कारखाने हाथ में आने को थे साथ ही साथ काकेशिया के तेल-क्षेत्र को सीधा मार्ग मिलना था। इसी कारण जर्मन सेना यूक्रेन की राजधानी कीव की ओर बढ़ी और उस पर अधिकार जमाया।

जर्मन सेना को स्मोलेन्स्क क्षेत्र और स्टेनियन सीमा पर रूसी सेना का भीषण सामना करना पड़ा। वह आगे बढ़ने की अपेक्षा दक्षिण की ओर घूम पड़ी। परन्तु कीव की सीमा की ओर बढ़ती हुई जर्मन सेना रोक दी गई तब उसने सोवियत सेना के सब से निर्बल स्थान की खोज की। नोवोग्राड-वोलीन्स्क की ओर बढ़ने वाली जर्मन सेनाएँ कोरोस्टेन पर रोक दी गई। ज्हीटोमिर क्षेत्र में बम्ब-वर्षक वायुयानों तथा टैङ्कों की सहायता से जर्मन सेनाओं को बएलाया टसर्कोव पहुँचने में सफलता प्राप्त हुई। यह स्थान कीव के दक्षिण की ओर है। इससे प्रतीत हुआ कि जर्मन सेनाएँ कीव नगर का घेरा डाल रही हैं। उसके पश्चात उत्तर-पूर्व कीव नगर की ओर बढ़ने की अपेक्षा जर्मन पञ्जेर सेना दक्षिण की ओर घूम पड़ी और यूमान के रेलवे स्टेशन पर अधिकार कर लिया। जिससे नोवो यूक्रेन्का का जङ्कशन सङ्कट में पड़ गया। उस समय रूसी सेना जादू से मार सी दी गई और घबराहट में वह रुकी रही जिससे भीषण हानि हो गई।

यूक्रेन में ६ बड़ी नदियाँ बहती हैं—प्रूथ, नीस्टर, बग, नीपर, डोनेज और डान नदियाँ प्राकृतिक रक्षक हैं। जब जर्मन सेनाएँ लवाव और सर्नोविज पहुँची तो सोवियत सेनाएँ प्रूथ से नीस्टर नदी की ओर हट गईं। इस स्थान पर रूसी सेना ने रूमानी और हङ्गेरियन सेना के आक्रमण को पीछे हटा दिया और सुरक्षित सी हो गई परन्तु उसी समय यूमान की ओर नाजी आक्रमण होने से रूसी सेना को अपनी सहायक सेनाओं से अलग हो जाने का भीषण भय उत्पन्न हो गया। रूसी जनरल मार्शल बुडेनी ने शीघ्र ही लड़ जाने या हट जाने का निश्चय किया। उस समय पीछे हट जाना ही बुद्धिमत्ता थी अतः भीषण युद्ध करती हुई रूसी सेना अपने विशेष युद्ध-कौशल और वीरता का परिचय देती हुई पीछे बग नदी तक सुरक्षित हट गई। वहाँ उत्तर की ओर से जर्मन सेना का जोर बढ़ा तो रूसी सेनाओं को नीपर नदी की ओर हटना पड़ा और ओडेसा के बड़े बन्दरगाह तथा मज़बूत क़िले को छोड़ना पड़ा। शत्रु ने कीव और ओडेसा की रेलवे लाइन काट दी और एक एक कर के नोवे-यूक्रेन्का, क़िरोवो, पेर्वोमैस्क और ओल्वेसेन्स्क पर अधिकार जमा लिया। उसके बाद ओडेसा का युद्ध आरम्भ हुआ। जनरल बुडेनी ने अपनी सेना को सुरक्षित हटा कर संसार के सामने एक अनोखा उदाहरण रख दिया। ऐसी ही स्थिति फ्रांस के युद्ध में उत्पन्न हुई थी लेकिन ब्रिटिश सेना वहाँ शत्रु के वेग को न रोक सकी। जिससे फ्रांस में जर्मनी की विजय हुई।

नीपर नदी तक पहुँचने में जर्मन सेना ने क्रीवोई-रोग (कच्चे लोहे का केन्द्र), नेप्रोपेट्रोस्क का भव्य कारखाने वाला नगर, नीपर नदी का बाँध और निकोलाएव के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया। नीपर नदी के पार करने के पश्चात् रूसी सेना तथा रूस की स्थिति बड़ी भयङ्कर हो जाती। खारकोव और रोस्टोव के कारखाने वाले प्रदेशों के चले जाने से रूस के लिये युद्ध सामग्री का तयार होना ही बन्द

हो जाता और काकेशिया के तेल क्षेत्र को भीषण भय उत्पन्न हो जाता।

अतः नीपर नदी युद्ध दृष्टि से बड़ी महत्व रखती है कीव नगर के पास इसकी चौड़ाई ८०० गज है। समतल मैदान में प्रवाह करने के पश्चात जब यह समुद्र में प्रवेश करती है तो इसकी चौड़ाई १ मील हो जाती है। इसलिये यह एक दृढ़ रक्षक स्थान है। इसी कारण जब शत्रु सेना ने नीपर नदी के सामने की भूमि पर अधिकार प्राप्त कर लिया तो उसकी सेनाएँ उत्तर की ओर घूम पड़ीं और गोमेल नगर की ओर उनका रुख हुआ। रूसी सेना ने जर्मन सेनाओं का बहादुरी से सामना किया और शीतकाल के पहले जर्मन सेना रूस पर विजय प्राप्त न कर सकी। जर्मन सेना की विद्युत्-युद्ध कौशल रूसी सेना की युद्ध कुशलता के सामने गुठने टेक कर बैठ गई।

★ ★ ★

जर्मन सेनाओं का पीछे हटना

शीत-काल की सहायता

नवम्बर १९४१ ई० में लेनिनग्राड घिर गया और शत्रु सेनाएँ लडोगा झील के दक्षिणी तट की ओर बढ़ रही थीं। मास्को सीमा पर चारों ओर से संकट उपस्थित था। चारों ओर से नगर पर हवाई हमले हो रहे थे। नगर के चारों ओर रक्षक वृत्त बना दिया गया और नगर के घेरे की घोषणा कर दी गई। क्लिन, मोजेस्क, मालोजारो स्लाविज और स्टैलिनोगोर्स्क की ओर से जर्मन सेनाएँ मास्को की ओर बढ़ रही थीं। अधिक दक्षिण की ओर जेलेटज नगर के आगे तक प्रवेश कर गई थीं यह सेनायें ईरान और काकेशिया के सामान पहुँचाने वाले उस भाग की ओर बढ़ रही थी जहां रूसी कारखाने तथा सेनायें थीं। सुदूर दक्षिण की ओर रोस्टोव (डान नदी) पर अधिकार करती हुई जर्मन सेनायें पेरेकोप जलडमरू मध्य होकर क्रीमिया पहुँची। सिम्फेरोपोल, माल्टा, थियोडोसिया और कर्च पर जर्मन अधिकार हो गया केवल सेवेस्टोपोल का किला रूसी सेना के हाथ में रह गया। स्थिति बड़ी जटिल हो गई और बहुतों का ख्याल था कि शीत काल की हिम गिरने के पूर्व ही शत्रु के अधिकार पूर्वी रूसी सीमा के सामरिक स्थानों पर हो जावेगा परन्तु जर्मन सेनायें स्वयं रुकीं उन्हें सामान आदि पहुँचने में कठिनाई हुई। रूसी हवाई कमांड की सामरिक कुशलता की विजय हुई। जिस समय जर्मन सेनायें थक कर सिथिल हो रही थीं रूसी सेनायें अपने प्रत्याक्रमण की तयारी कर रही थीं।

रूस की सहायता प्रकृति ने भी दी शीतकाल का आरम्भ कुछ जल्दी हुआ और बरफ गिरने लगी। १९४१ ई० का रूसी शीत काल जितना विकराल हुआ उतना शायद गत ४० या ५० वर्षों से नहीं हुआ था। रूसी सेना ने अपना प्रत्याक्रमण समस्त युद्ध क्षेत्र में पुनः संगठन के साथ आरम्भ किया। शत्रु सेना पर बीमारी ने भी आक्रमण किया और रूसी सेना की सहायक हुई। लेनिनग्राड सीमा में रूसी सेना ने टिखविन और वोल्कोन पर पुनः अधिकार प्राप्त कर लिया। नोव्गोरोड और लेनिनग्राड के मध्य जर्मन-लाइन पर रूसी आक्रमण हुये और शत्रु को बड़ी हानि पहुँचाई गई। लेनिनग्राड को रूस के भीतरी भाग से सामान पहुँचने का मार्ग फिर खुल गया। मास्को के चारों ओर का शत्रु घेरा भी कमजोर बना दिया गया। क्लिन से कालिनिन और वोलोकोलाम्स्क तक और मालो जारोस्लाविज से कालूगा के आगे तक

फिनलैंड की खाड़ी
लेनिनग्राड
नोवगोरोड
प्स्कोव
ओस्त्रोव
मास्को
कालिनिन
विटेब्स्क
ओर्शा
स्मोलेन्स्क
मिन्स्क
व्याज्मा
कालूगा
तूला
ब्रियान्स्क
कराचेव
ओरेल
नोवोसिल
रोस्लाव्ल
रोगाचेव
रेचित्स
स्तारोडूब

बहादुर सोवियत् सेना ने शत्रु सेना में गड़बड़ी उत्पन्न कर दी और संकट डाल दिया। मास्को की ओर जर्मन बगली दिसर सेना तोड़ दी गई मोजेस्क के चारों ओर शत्रु सेना पड़ गई और उस पर रूसी सेना के हमले होने लगे।

दक्षिण की ओर स्टैलिनोगोर्स्क और टूला के प्रसिद्ध नगर पुनः ले लिये गये और रूसी सेना ओरेल के समीप पहुँच गई। जेलेटज़ नगर पर भी रूसी सेना ने फिर अधिकार प्राप्त कर लिया है। और डोनेज़ बेसिन की उत्तरी बगली सेना निर्भय बना दी गई। धुर-दक्षिण में रूसी सेना को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। रोस्टोव नगर पर फिर अधिकार हो गया और शत्रु सेना को बुरी तरह परास्त होना पड़ा। जर्मन सैनिक गिरफ्तार किये गये और युद्ध सामग्री छीन ली गई। जर्मन सेना परियूपाल क्षेत्र में टागान्रोग के आगे हट गई। इस पराजय से जर्मन सेना की काकेशिया पहुँचने वाली योजना नष्ट हो गई। इसी कारण रोस्टोव की हार के पश्चात जर्मन सेना ने सेवेस्टोपोल पर अधिकार करने के लिये कई बार प्रयत्न किया।

रूसी प्रत्याक्रमण में रूसी सेना को बड़ी सफलता हुई। संसार की दृष्टि इसी पर लगी हुई है। रूसी विजय देखकर संसार तथा मित्र सेनाओं को संतोष हुआ और समस्त संसार ने रूसी सेना की बहादुरी की हृदय से प्रशंसा की। परन्तु जर्मन सेना के पीछे हटने से शत्रु सेना की पराजय मान लेना शायद भारी धोका का कारण होगा। जर्मनी अपनी सेना का संगठन बड़ी कुशलता के साथ करता है। सैनिक संगठन सुदृढ़ सुसज्जित होने के कारण ही उसे शीघ्र ही विजय होती है। जर्मन सेना की टाट संस्था संसार की एक बहुत बड़ी संस्था है। उसने अपने सेना को सामान पहुँचाने, किले बन्दी करने और अपने शत्रु सेना को टुकड़े टुकड़े कर देने में जादू कर दिखाया है। टाट संस्था ने पश्चिमी रूस में नोवगोरोड, स्मोलेन्स्क, ब्रयान्स्क और खारकोव सीमाओं में मज़बूत रक्षक क्षेत्र बनाये थे। शीतकाल में शत्रु सेना इन्ही सुरक्षित स्थानों को धीरे धीरे हटी और रूसी सेना के युद्ध सामग्री को लड़ाई जारी रखकर हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया। जर्मन सेना रूसी सेना को पश्चिम की ओर फँसाये रही जिससे वह पूर्व की ओर जापान से युद्ध नहीं आरम्भ कर सकी। उधर जापान ने प्रशान्त महासागर का युद्ध छेड़ दिया और भीषण सफलता प्राप्त करके संसार को चकित कर दिया। पश्चिम की ओर अपने देश के भीतर युद्ध में फंसे रहने के कारण रूस को जापान से दस वर्ष के लिये संधि कर लेनी पड़ी। शीत काल के अंत होते ही जर्मनी ने अपी सेना का संगठन किया और खारकोव का युद्ध आरम्भ कर दिया।

मरमन्स्क

स्वेत सागर में कंडलास्का की खाड़ी के सिरे में आर्कटिक सागर का हिमरहित मरमन्स्क बन्दरगाह तथा नगर है। कंडलास्का नगर कंडलास्का खाड़ी के सिरे पर स्थित है। कंडलास्का होकर मरमन्स्क को रेलवे लाइन जाती है। मरमन्स्क का बन्दरगाह कंडलास्का से २१० मील उत्तर की ओर है। कंडलास्का लेनिनग्राड से लगभग ८७५ मील की दूरी पर है। साला से कंडलास्का तक रेलवे लाइन को काट कर मरमन्स्क को शत्रु सेना अलग करना चाहती थी। फिनलैंड की सेना उत्तर की ओर (कंडलास्का की ओर) स्की के सहारे शीघ्रतापूर्वक बढ़ी। जर्मन सेना लेनिनग्रेड जाकर मरमन्स्क रेलवे पर अधिकार करना चाहती थी। मरमन्स्क बन्दरगाह होकर रूस को अमरीका से सहायता पहुँचाने का प्रयत्न हो रहा था इसी कारण इस सामान पहुँचाने वाले मार्ग को शत्रु-सेना काटना तथा अपने अधिकार में करना चाहती थी। परन्तु शत्रु-सेना को सफलता नहीं प्राप्त हो सकी।

साला नगर पर फिनलैंड की सेना ने अधिकार कर लिया था और उत्तर की ओर बढ़ रही थी। शीतकाल की बरफ ने उत्तरी रूसी-जर्मन-युद्ध को बड़ा ही कठिन बना दिया था। ग्रीष्म काल आने पर भी जर्मनी ने अपनी अधिकतर शक्ति काकेशस के युद्ध-क्षेत्र की ओर लगा दी। इसलिये मरमन्स्क की सैनिक स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन न हुआ।

मास्को (राजधानी) पर अधिकार जमाने के लिये जर्मन सेनायें पश्चिम की ओर कालिनिन और क्लिन नगर होकर बढ़ रही थीं। २४ नवम्बर को जर्मन सेनाएँ क्लिन पहुँच गईं और २३ नवम्बर को शत्रु सेना मास्को की ओर वेगपूर्वक बढ़ी। २७ और २८ नवम्बर को रूसी सेना पीछे हट गई। क्लिन के दक्षिण वोलोकोलाम्स्क नगर पर २५ नवम्बर को जर्मन अधिकार हुआ और मास्को की ओर शत्रु सेना बढ़ी। स्मोलेन्स्क से मास्को को प्रधान सड़क जाती है। इस सड़क होकर भी जर्मन सेनाएँ बढ़ीं और मोजेस्क पहुँचीं। दक्षिण की ओर ब्रियान्स्क से मास्को जाने वाली रेलवे के मालोयारोस्लावेट्स नगर पर जर्मन सेनाएँ पहुँच चुकी थीं। दक्षिण-पूर्व की ओर टूला नगर पर अधिकार कर स्टैलिनोगोर्स्क नगर तक जर्मन सेना पहुँची। स्टैलिनोगोर्स्क के दक्षिण होकर जनरल गुडेरियन्स की सेना मास्को का पूर्व की ओर से घेरा डालने को २७ नवम्बर को आगे बढ़ी।

मास्को से कालीनिन नगर १०० मील, क्लिन ५३ मील, मोजेस्क ६५ मील, मालोयारोस्लावेट्स ५० मील, टूला १०५ मील और स्टैलिनोगोर्स्क १२० मील की दूरी पर है। उपर्युक्त नगरों के एक ओर जर्मन सेना और दूसरी ओर रूसी सेनाएँ डटी थीं।

शत्रु के भीषण संग्राम तथा तूफानी लहर के

सामने रूसी सेनायें पीछे हटती जा रही थीं। दिसम्बर मास के आरम्भ में क्लिन मार्ग से जर्मन सेना मास्को से १९ मील की दूरी पर पहुँच गई। मास्को नगर के

शत्रु सेना को खदेड़ दिया। इससे मास्को और वोलोगोवो के मध्य की रेलवे लाइन रूसी सेना के हाथ आ गई। रेलवे लाइनों का सहारा पाकर

३०

घेरे की घोषणा कर दी गई और रूसी सरकार मास्को छोड़ कर कुजबीशेव हट गई। कुजबीशेव नगर रूस की युद्ध कालीन राजधानी बनाया गया।

इतने में शीतकाल का आरम्भ हो गया, भीषण सरदी पड़ने लगी साथ ही रूसी सेना ने प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिया। क्लिन नगर की ओर रूसी सेना ने क्लिन से कालिनिन और फिर वोलोकोलाम्स्क तक

वल्दाई पहाड़ियों का युद्ध आरम्भ हुआ और रूसी सेना स्मोलेन्स्क के उत्तर-पश्चिम वलेकी लूकी तक पहुँच गई।

मास्को के दक्षिण-पश्चिम काल्गा और लिख्विन नगरों पर रूसी सेना ने अधिकार कर लिया और जर्मन सेना को खदेड़ती हुई आगे बढ़ी और स्मोलेन्स्क के लिये भय उत्पन्न कर दिया है। उत्तर-पश्चिम

की ओर त्रियान्स्क को भी भय उत्पन्न हो गया। इस प्रकार मास्को क्षेत्र में गत वर्ष की अपेक्षा वर्तमान समय में रूस की स्थिति बहुत कुछ सुधर गई है।

रूसी पार्लियामेन्ट

सामने बायें से दाहिने—मिकोयान, भोजन उद्योग मन्त्री, मेदनाव, वैदेशिक कमीशन के प्रधान, मोलटाव परराष्ट्र मन्त्री, कालिनिन, सोवियत के सभापति, वोरोशिलोव सेनापति, उत्तरी-मोर्चा, स्टैलिन प्रधान मन्त्री, कागनोविच, रेलों के मन्त्री और पार्लियामेंट के दूसरे सदस्य।

लेनिनग्रेड का घेरा

फिनलैण्ड की खाड़ी के रूसी जहाजी बेड़े ने लेनिनग्राड की रक्षा में बड़ी सहायता की। यह जहाजी बेड़ा क्रान्स्टाट के द्वीपीय दुर्ग पर रहता है। दूर गोला फेंकने वाली तोपों के बनने के पहले यह संसार का सबसे अधिक सुरक्षित स्थान माना जाता था इस दुर्ग के तीन तल्लों पर तोपें लगी हैं जो कितने ही जर्मन विमानों को नष्ट कर चुकी हैं क्रान्स्टाट लेनिनग्राड का व्यापारिक बन्दरगाह है और एक विशेष जहाजी नहर द्वारा लेनिनग्राड से मिला है यह नहर फिनलैण्ड की खाड़ी होकर बनाई गई है।

लेनिनग्राड और समीपवर्ती प्रदेश

३१

लेनिनग्राड पर जर्मनी स्थल, जल और आकाश मार्ग से गत वर्ष भीषण आक्रमण करता रहा और लेनिनग्राड को घेरने के लिये भीषण जर्मन सेनायें बढ़ रही थीं। जर्मन सेनायें मास्को-लेनिनग्राड रेलवे लाइन काटने का प्रयत्न कर रही थीं। रूसी सेना भी जल-स्थल और हवाई मार्ग से नगर की रक्षा कर रही थी। रूसी रक्षक सीमा के भीतर बड़े बड़े कारखाने तथा अपार युद्ध सामग्री और सेना थी। मार्शल वोरोशिलोव पर लेनिनग्राड की रक्षा का भार सौंपा गया था। रक्षा का प्रबन्ध ६ मनुष्यों की एक कौंसिल के हाथ में था। शीत काल धीरे धीरे समीप आता जाता था और जर्मन सेनायें शीत काल के आरम्भ होने के पूर्व ही नगर पर अधिकार प्राप्त कर लेना चाहती थीं। रूसी सेना दिसम्बर, जनवरी और फरवरी शीत कालीन सेनापतियों की प्रतीक्षा में ही नगर की रक्षा करती रही। उसे सफलता हुई और शीत काल के पहले लेनिनग्राड पर जर्मन अधिकार न हो सका। जर्मन सेना को असफलता हुई।

★ ★ ★

रूसी-जर्मन युद्ध की प्रधान तूफानी लहर

वर्तमान रूसी जर्मन युद्ध संसार के इतिहास में अपूर्व है जर्मनी की सेना ने श्वेत सागर से काला सागर तक प्रायः २००० मील लम्बे क्षेत्र पर आक्रमण किया इस समस्त क्षेत्र पर दोनों ओर से सेनायें डटी थीं। इस क्षेत्र में डेढ़ करोड़ से ऊपर सेनायें लड़ीं। जर्मन आक्रमण विद्युत रूप में हुआ और एक बड़े भीषण तूफान की भांति वेग पूर्वक आगे बढ़ता गया। उत्तर की ओर मरमन्स्क, बाल्टिक क्षेत्र में लेनिनग्राड, मध्यवर्ती भाग में मास्को और दक्षिण की ओर कीव नगर जर्मन सेना के प्रधान लक्ष्य थे।

पोलैण्ड, एस्टोनिया और लिथवानिया पर अधि-

कार जमाती हुई जर्मन सेनायें रूस में घुसीं और उत्तर की ओर टालिना, प्स्कोव, लूगा, ओस्ट्रोव और नोवगोरोड नगर पर अधिकार करती हुई लेनिनग्राड का घेरा डाल दिया। नोवगोरोड से एक सेना मास्को की ओर भी बढ़ी। मध्यवर्ती क्षेत्र में जर्मन सेना विलना, विटेब्स्क, मोहीलेव, स्मोलेन्स्क, व्याज्मा, मोजेस्क पर अधिकार करके मास्को के समीप पहुँच गई। दक्षिण की ओर जर्मन सेना ने गोमेल, लवाव, झितोमिर, केरोस्टेन बुकोविना, बेसारेबिया, यूक्रेन की राजधानी कीव, यूमान, ओडेसा, खेर्सन, क्रेमेनचुग, डान पर रोस्टोव और क्राइमिया पर अधिकार कर लिया। उसके बाद एक सेना मास्को की ओर कलूगा और टूला के मार्ग मास्को का घेरा डालने के लिये बढ़ी दूसरी काकेशिया तैल प्रदेश और क्राइमिया की ओर अग्रसर हुई। शीत काल आरम्भ होने के पूर्व ही जर्मन सेनायें मास्को और लेनिनग्राड पर अधिकार कर लेना चाहती थीं। परन्तु ऐसा न हो सका और शीत काल में रूसी सेना ने प्रत्याक्रमण करके कितने ही स्थानों पर अधिकार कर लिया। ग्रीष्मकाल में जर्मन सेनायें संगठित तथा एकत्रित होती रहीं। उसके बाद फिर आगे बढ़ीं और रोस्टोव, कर्च और खारकोव आदि पर अधिकार कर लिया डान नदी को जर्मन सेनायें पार कर चुकीं। सेवेस्टोपोल पर भी जर्मन अधिकार हो गया।

★ ★ ★

यह आधुनिक युद्ध का प्रथम शीत काल था जब कि युद्ध भीषण रूप से संसार में चलता रहा।

इसी शीत काल में जापान और अमरीका युद्ध-क्षेत्र में उतरे और आधुनिक महासमर को संसार का युद्ध बनाया। दिसम्बर के मध्य में जर्मन सेनाओं का रूसी क्षेत्र में आगे बढ़ना रुक गया था। जर्मन सेना ने रूस के एक बड़े भाग पर अधिकार जमा लिया परन्तु फिर भी वह अपने ध्येय की पूर्ति नहीं कर सका। ओडेसा, कीव, रोस्टोव, खार्कोव, वियाज्मा और स्मोलेन्स्क आदि नगरों पर जर्मन सेना ईरान होकर जाने वाले युद्ध सामग्री मार्ग को न रोक सकी, वह काकेशिया के तेल क्षेत्र पर अधिकार न जमा सकी और लेनिनग्राड तथा मास्को पर अधिकार प्राप्त करने में असफल रही रूसी सेना को वह तितर-बितर नहीं कर सकी। रूसी सेना पहले की भांति बहादुर तथा आशापूर्ण बनी रही। इसलिये जर्मन सेना का आक्रमण बन्द होते ही रूसी सेना ने अपने प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिये।

लेनिनग्राड सीमा में जहां शीत काल सभी स्थानों से अधिक विकराल था टिखविन नगर पर रूसी सेना ने अधिकार प्राप्त कर लिया और नोवगोरोड नगर के समीप पहुँच गई। लेनिनग्राड सीमा में बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। इससे प्रतीत होता है कि शत्रु ने उसे अपना एक बड़ा सामरिक क्षेत्र बना रक्खा है।

मास्को सीमा में रूसी सेना मास्को के उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ी। रूसी सेना की प्रथम प्रगति में क्लिन से कालीनिन और वोलोकोलम्स्क के आगे तक रूसी सेना बढ़ती चली गई और मास्को-वोलोगोग्रो रेलवे को शत्रु हाथ से अलग कर दिया। इस रेलवे तथा दूसरे रेलवे लाइनों पर निर्भर करता हुआ वाल्दाई पहाड़ियों पर एक भीषण युद्ध छिड़ गया। यद्यपि जर्मन सेना इल्मेन झील क्षेत्र के नोव्गोरोड और स्टारिया रूस से रजेव तक जर्मन सेना अपनी लाइनों पर मज़बूती के साथ चिपकी रही फिर भी रूसी सेना इन दोनों स्थानों के बीच काफी बढ़ी। खोल्म और स्टारिया ट्रोपा पर

१—प्रधान रूसी सेनापति मार्शल तिमिशिंको

२—रूसी सेनापति मार्शल बुडेनी
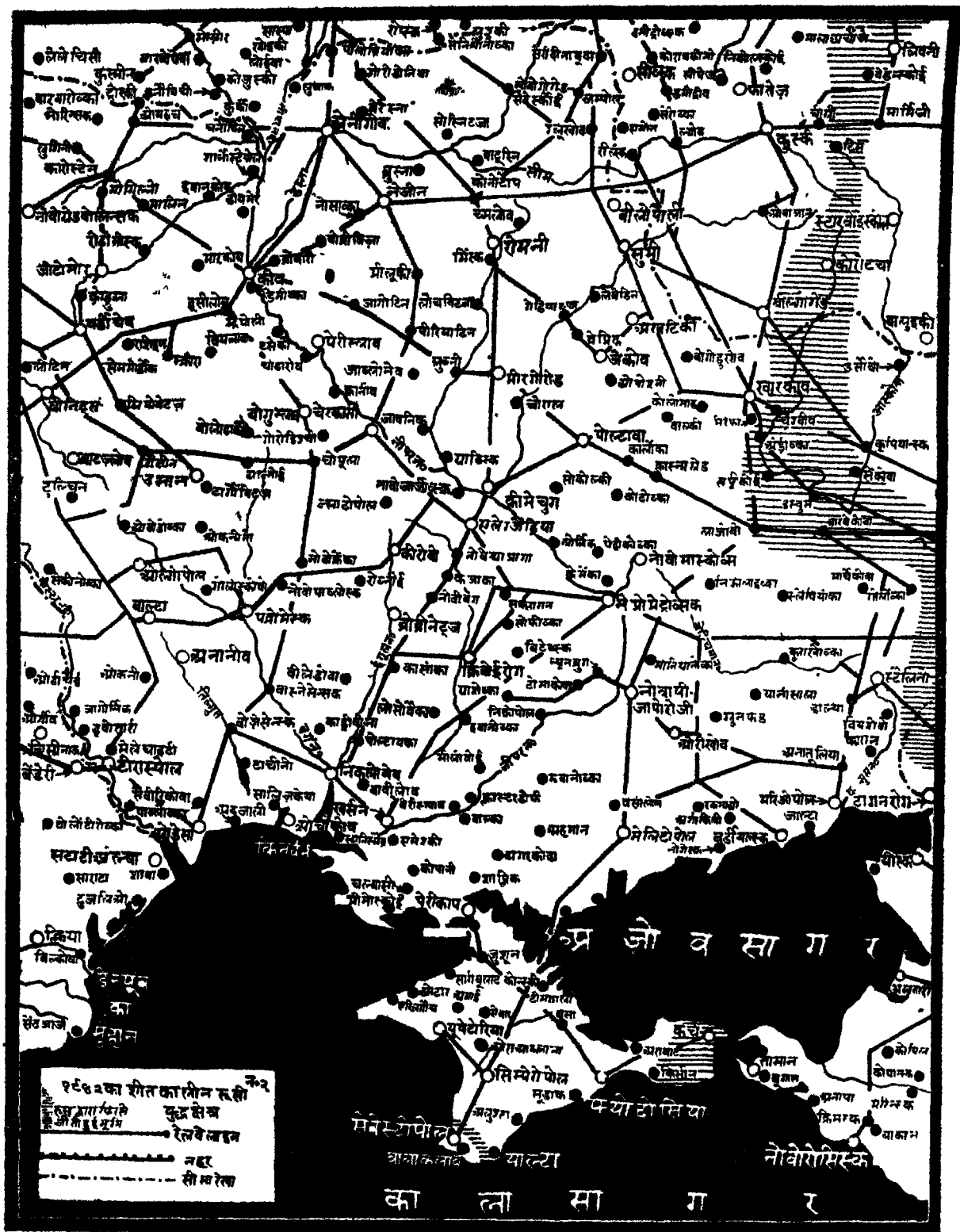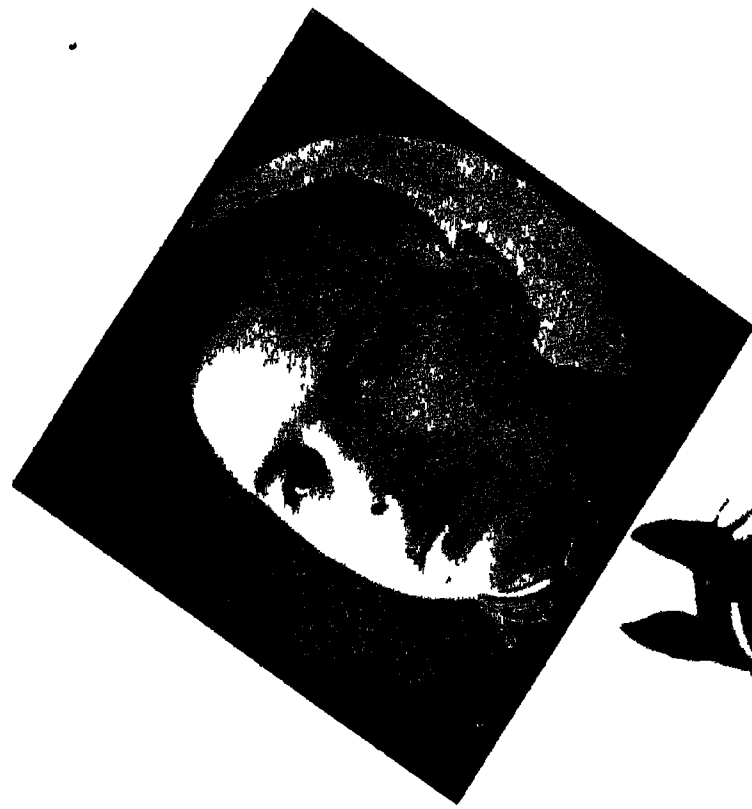
३—रूसी सेनापति मार्शल वोरोशिलोव

रूसी सेना अधिकार करती हुई स्मोन्लेस्क के उत्तर-पश्चिम वेलोकीलुकी तक पहुँच गई।

मास्को के दक्षिण-पश्चिम सोवियत सेना ने कलूगा और लिख्विन पर अधिकार कर लिया और कीरोव के पूर्व पहुँच गई। रोस्लाव्ल की ओर रूसी सेना के बढ़ने से स्मोलेन्स्क और ब्रयान्स्क नगरों को संकट उत्पन्न हो गया। जर्मन सेना व्याज्मा के पूर्व रजेव से जुब्सोव तक रूसी सेना का सामना करती रही। यदि रूसी सेना इस भाग में और आगे बढ़ जावेगी तो जर्मन सेना को स्मोलेन्स्क की ओर हटना पड़ेगा।

दक्षिण की ओर ओरेल से काला और अजोव सागर तक रूसी लोगों को दो प्रधान सफलतायें प्राप्त हुई। रूसी सेना ने डान नदी पर रोस्टोव और कर्च पर अधिकार प्राप्त कर लिया। रोस्टोव काकेशिया का द्वार और कर्च क्रीमिया का प्रधान स्थान है। कर्च पर जर्मन सेनाओं ने फिर अधिकार कर लिया सेवेस्टोपोल पर रूसी सेना ने शत्रु के आक्रमण का बड़ी वीरता के साथ सामना किया। पहले सेना ने फ़िआडेमिया पर अधिकार कर लिया था परन्तु शत्रु सेना ने उसे फिर छीन लिया।

इससे उत्तर की ओर रूसी सेना ने शत्रु सेना को डोनेज बेसिन के अधिकांश भाग से मार भगाया फिर भी खार्कोव, पोल्टावा, नेप्रोपेट्रोव्स्क मोरियोपोल और तागनरोग पर जर्मन सेना का अधिकार है। यूक्रेन क्षेत्र में रूसी सेना ने और दूसरे युद्ध-क्षेत्रों की अपेक्षा कम भूमि पर अधिकार जमा सकी यद्यपि इस भाग में लेनिनग्राड सीमा से शीत काल कम विकराल था।

★ ★ ★

१९४२ ई० का ग्रीष्मकाल और दक्षिणी क्षेत्र में जर्मन सेना का जमघट

१९४२ ई० के शीतकाल के आरम्भ होते ही जर्मन सेनाएँ नोवोगोरोड, स्मोलेन्स्क, ब्रियान्स्क और खारकोव की ओर हटने लगीं। शीतकाल में जर्मन सेनाओं ने विश्राम लिया और रूसी सेना ने प्रत्याक्रमण करके कुछ भाग पर अधिकार कर लिया। ग्रीष्म काल के आरम्भ होने पर संसार को निश्चय था कि जर्मन सेना पुनः आक्रमण आरम्भ कर देगी। पर ऐसा न हुआ। जर्मन सेना शान्त रही। इसके विपरीत रूसी सेना आगे बढ़ती रही। ग्रीष्म काल में जर्मन सेना योरुप से पुनः रूस आने लगी और अपने विश्राम क्षेत्रों में एकत्रित होने लगी। ब्रियान्स्क और खारकोव के दक्षिणी क्षेत्र में अधिक सेना तथा सैनिक सामग्री एकत्रित की गई। खारकोव और क्रीमिया प्रदेश में लगभग २० लाख जर्मन सेना पहुँचाई गई। इस प्रकार ग्रीष्म काल में दक्षिणी रूसी क्षेत्रों में जर्मन सेना का जमघट होता रहा। यह जमघट निरर्थक न था कुछ लोगों का ख्याल था कि ब्रियान्स्क से ओरेल के दक्षिण की ओर जर्मन आक्रमण होगा कुछ लोग खारकोव प्रान्त के आक्रमण की बातें सोच रहे थे। अन्त में जर्मन सेना ने कर्च पर धावा करके पुनः अधिकार जमा लिया। उसके बाद खारकोव पर धावा किया। खारकोव के घमासान संग्राम के पश्चात् सेवस्टोपोल पर जर्मनी ने अधिकार कर लिया और वोरोनेज क्षेत्र से दक्षिण की ओर रोस्टोव (डान पर) की ओर शत्रु सेना बढ़ी।
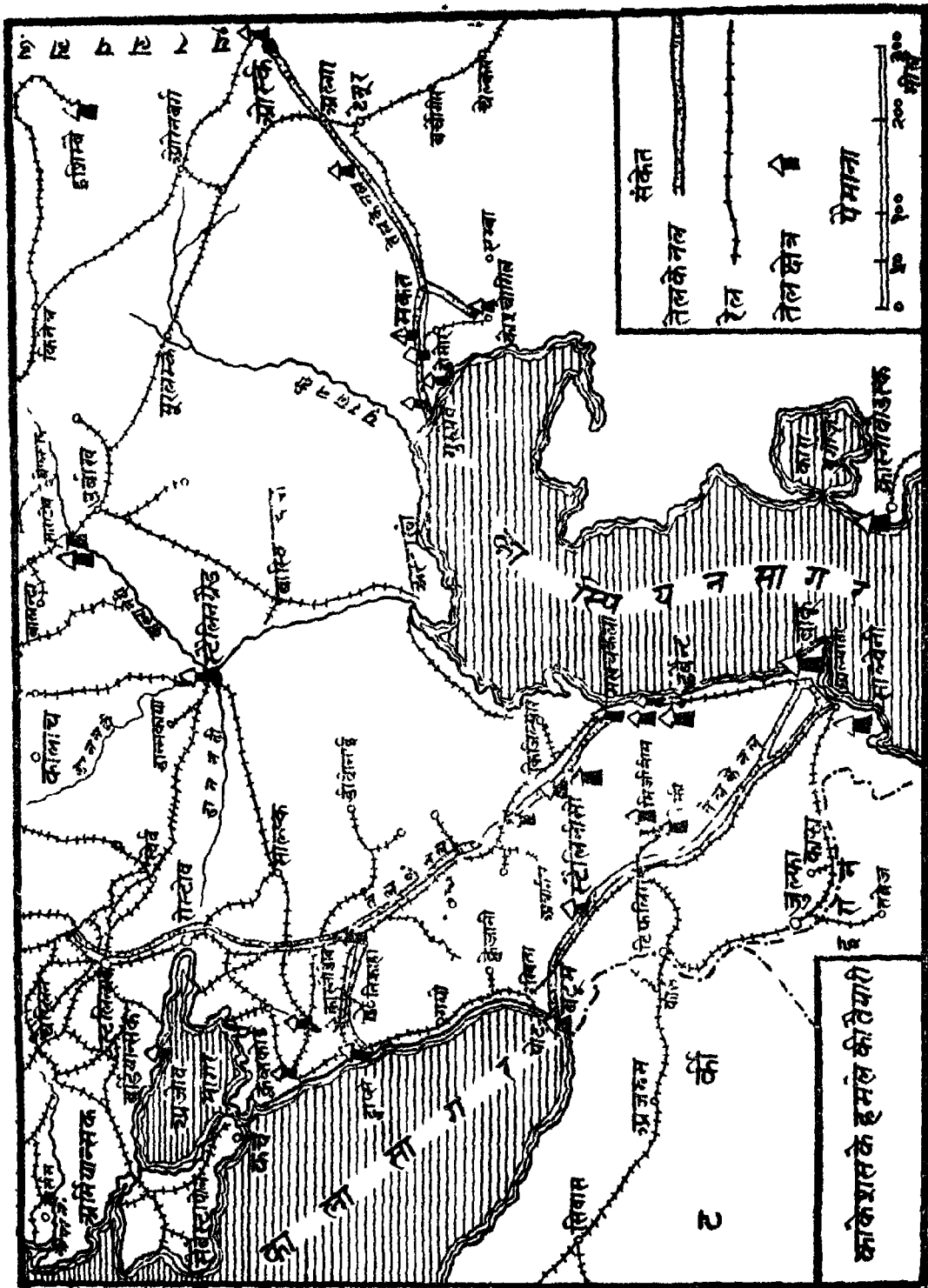
कर्च पर जर्मन धावा

काकेशश के तैल-प्रदेश के पहरेदार

१९४२ के शीतकाल में रूसी सेना ने कर्च पर अधिकार जमा लिया था। जर्मन सेना सेवेस्टोपोल की ओर हट गई थी। दक्षिणी क्षेत्र में जब जर्मन सेना ने अपनी अच्छी तरह तयारी कर ली तो मई मास के दूसरे सप्ताह में कर्च पर लगभग १ लाख सेना से धावा कर दिया। १३ मई तक घोर संग्राम होता रहा। १३ मई को कर्च में शत्रु सेनाओं के अधिक होने के कारण रूसी सेनायें पीछे की ओर हट गईं। कर्च पर जर्मनी ने पुनः अधिकार प्राप्त कर लिया। जर्मनी और रूस दोनों को कर्च में भी भीषण हानि उठानी पड़ी। काकेशिया पर आक्रमण करने के लिये कर्च पर अधिकार करना जर्मनी आवश्यक समझता था। इसी कारण कर्च पर जर्मनी ने भीषण तयारी करके धावा मारा और वहाँ से रूसी सेना को निकाल दिया। कुछ रूसी सेना पकड़ ली गई और कुछ रूसी टैंक भी जर्मनों के हाथ लगे।

१० जून को जर्मन सेना ने कर्च प्रणाली को पार किया और कनापा स्थान पर छतरी द्वारा सेना उतार कर अधिकार कर लिया। यह स्थान कर्च प्रायद्वीप से समीपतम स्थान से ५० मील की दूरी पर एक स्वास्थ्यप्रद स्थान है। यह नोवोरोसिस्क से २५ मील की दूरी पर है जो काकेशिया का काला सागर में मुख्य रूसी सैनिक अड्डा और बन्दरगाह है।

★ ★ ★

शीतकालीन प्रत्याक्रमण जो रूसी सेना ने आरम्भ किया था वह ग्रीष्मकाल में भी लगातार जारी रहा। १८ मई को रूसी सेना ने खारकोव क्षेत्र पर भीषण आक्रमण १०० मील लम्बे मैदान पर किया और कुछ भूमि पर अधिकार कर लिया। रूसी आक्रमण के भीषण परिणाम को देख कर जर्मनी ने खारकोव क्षेत्र में रूसी सेना के विरुद्ध विकराल धावा किया। जनरल टिमोशिंको की रूसी सेना ओल्चान्स्क से चुगुएव और क्रास्नोग्राड होकर बढ़ रही थी। १८ मई के संग्राम में रूसी सेना ने ७३ टैंक नष्ट किये और ३० तोपों तथा ४७० बन्दूकें छीन लीं। दो दिन के संग्राम में ३ हजार जर्मन सेना मारी गई। जनरल वान बाक ने अपनी सेना का संहार देख कर डोनेज नदी पार करने का प्रयत्न किया।

खारकोव-इज्यूम-बार्वेनकोवो का संग्राम केवल नदी पार करने का न था। इस क्षेत्र में दोनों ओर से लगभग ५ लाख सेना संग्राम में भाग ले रही थी। ३० मई को खारकोव सीमा में सोवियट सेना ने आधे नगर पर अधिकार कर लिया। इज्यूम (खारकोव के दक्षिण) जर्मन सेना ने तीन रूसी सेनाओं को घेर कर नष्ट कर दिया। ३ जून को खारकोव के दक्षिण जनरल टिमोशेंको घमासान युद्ध स्थल में गये। वह विमान द्वारा रण क्षेत्र में उतरे और मोटर द्वारा युद्ध का निरीक्षण कर रहे थे। उसी समय स्तुका गोताखोर जर्मन बम्ब वर्षक ने उनके मोटर

काकेशस प्रदेश
की सम्पत्ति
कास्पियन सागर
काला सागर
अजोव सागर
काकेशिया
टर्की
संकेत
पैमाना
नोवोरोसिस्क
मैकोप
ट्वाप्से
सुखूम
तिफ्लिस
लेनिनाकान
सेवान झील
एरिवान
कूमा नदी
किजलार

पर बम्ब गिराया जिससे उनकी मोटर नष्ट हो गई। और उनको उनके साथियों सहित चोट लगी। इस प्रकार खारकोव सीमा पर लगभग १ महीने तक घमासान युद्ध होता रहा। जर्मन सेना ने खारकोव में अपना अड्डा बना रक्खा था। उसके पास टैङ्क तथा विमानों का अधिक जोर था। इसलिये रूसी सेना को पीछे हटना पड़ा। इसके अतिरिक्त सेबस्टोपोल, स्मोलेन्स्क और नोवगोरोड की ओर भीषण संग्राम जारी हो गया जिससे रूसी सेना को उस ओर भी अपना ध्यान बटाना पड़ा और खारकोव के भीषण संग्राम में शिथिलता आ गई।

* * *

रूसी-जर्मन युद्ध ३

रूसी क्षेत्र में भीषण तयारी करने तथा ७० लाख नवीन सेना, वायुयान सेना और टैंक सेना पहुँचाने के बाद जर्मनी ने पुनः आक्रमण आरम्भ किया। क्रीमिया में कर्च पर उसका मई मास में आक्रमण हुआ। कर्च पर अधिकार करके जर्मनी ने काकेशिया प्रदेश में सेना उतार दिया। उसके पश्चात् खारकोव का घमासान संग्राम जारी हुआ।

इज्यून, सेबेस्टेपोल, कालिनिन के संग्राम छिड़ गये। उसके पश्चात् मार्शल वान बाक की सेना रोस्टोव की ओर बढ़ी। इसके साथ ही साथ ब्रियान्स्क इल्मेन के संग्राम भी छिड़ गये। स्मोलेन्स्क क्षेत्र में भी जर्मन सेना ने आक्रमण किया। आर्कटिक सागर का संग्राम भी पुनः छिड़ गया। २० जून को मरमन्स्क पर जर्मन हवाई आक्रमण तथा भीषण हवाई युद्ध हुआ जिसमें २४ जर्मन विमान नष्ट हुये। उसके पश्चात् कूप्यान्स्क क्षेत्र में भी लड़ाई जारी हो गई।

८ मास के घेरे और लगभग १ महीने के संग्राम के पश्चात् २ जुलाई को सेवेस्टेपोल (क्राइमिया) पर जर्मन सेना ने अधिकार कर लिया। उसके बाद रोस्टोव नगर पर चढ़ाई की। यहीं से काकेशिया को सीधा मार्ग जाता है। ७ जुलाई को कुर्स्क-खारकोव क्षेत्र में घमासान युद्ध हुआ और जर्मन सेना ने कई स्थानों पर डान नदी को पार किया। उसके पश्चात् जर्मन सेना वोरोनेज नगर की ओर अपना आक्रमण आरम्भ किया। यह नगर मास्को-रोस्टोव रेलवे का प्रधान जंकशन है। इसी प्रदेश में रूस के प्रधान कारबारी नगर और गेहूँ की उपज के मूल्यवान प्रदेश हैं। काकेशस का तैल-प्रदेश तो युद्ध संचालन के लिये अनिवार्य है ही।

रूस में जैसा घमासान संग्राम जारी है उसका अनुमान लगाना बड़ा कठिन है। दस मील चौड़े और लगभग १०० मील लम्बे युद्ध क्षेत्र में दोनों सेनायें लगातार आग और गोले उगल रही हैं। हवाई जहाज ऊपर से बम्ब छोड़ रहे हैं। इस क्षेत्र में २० लाख से ऊपर सिपाही लड़ रहे हैं। वोरोनेज के संग्राम के बाद रोस्टोव (डॉन पर) नगर की ओर जर्मन सेना बढ़ी। रोस्टोव के घमासान युद्ध में रूसी सेना को पीछे हटना पड़ा। नगर पर अधिकार करने के पश्चात् जर्मन सेना स्टेलिनग्राड की ओर बढ़ी। रूस को युद्ध सामग्री ले जाने वाले मार्ग लगभग बन्द हो जाने से बड़ी कठिनता होती है और काकेशश प्रान्त पर अधिकार जमाने के लिये जर्मन सेना बढ़ रही है।

रूसी रसद के मार्ग

जर्मनी के भीषण रूसी आक्रमण के कारण रूस की दशा बड़ी शोचनीय हो गई। अब वहां फौज को रसद पहुँचाने में बड़ी कठिनाई उठानी पड़ रही है।

इस समय रूस को रसद पहुँचाने के लिये केवल तीन मार्ग शेष रह गये हैं। (१) ईरान तथा फारस की खाड़ी और ईरान की बरमा सड़क होकर (२) आर्कटिक सागर के मार्ग मुर्मान्स्क बन्दरगाह होकर और (३) अलास्का होकर साइबेरिया द्वारा है।

(१) ईरान होकर सड़क तथा रेलों द्वारा सामान खार्तूम और तिफ्लिस नगर होकर काकेशिया को मार्ग जाता है फारस की खाड़ी के बसरा, खुर्रमशहर, आहवाज़ बन्दरशाह पुर औ॰ बुशीरे आदि बन्दरगाहों पर भारतवर्ष, आस्ट्रेलिया, अमरीका और ग्रेट-ब्रिटेन से आने वाला सामान उतारा जाता है और फिर ईरान-सोव-ट्रांस रेलवे और सड़कों द्वारा रूस पहुँचाया जाता है। ट्रांस-ईरानियन रेलवे लाइन फारस की खाड़ी के बन्दरगाह बन्दरशाहपुर से कैस्पियन सागर के बन्दरगाह बन्दरशाह तक जाती है। इनके अतिरिक्त दो और ट्रांस ईरानियन सड़क मार्ग हैं। यह मार्ग कई सौ मील लम्बे हैं। इन मार्गों में केवल लारी द्वारा सामान जाता है। इन मार्गों में बुशायर-मफहान-हमदन सड़क है। यह सड़क ईरान के मध्यवर्ती भाग होकर कैस्पियन सागर के पहलवी नामक बन्दरगाह को जाती है। शीतकाल में यह मार्ग बरफ से जम जाता है।

३५

दूसरा मार्ग भारतीय-स्थल मार्ग है जो बिलोचिस्तान सीमा की रेलवे लाइन से चलता है और उत्तरी-पूर्वी ईरान होकर मेशेद को जाता है। वहां से कैस्पियन सागर होकर रूस के मध्यवर्ती भाग को भेजा जाता है।

एक चौथा मार्ग अभी हाल में बनाया गया है जिसे ईरान की बरमा सड़क कहा जाता है। यह सड़क भारतीय रेलवे लाइनों को रूसी रेलवे लाइनों से मिलाती है। यह प्रत्येक ऋतु में चालू रहेगी।

भारतवर्ष की उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती लाइन की एक शाखा बिलोचिस्तान होकर ईरान के सीमावर्ती स्थान जाहेदान या दुज्दाब तक जाती है। जाहेदान से धुर उत्तर की ओर ६०० मील की दूरी पर सरख्स नामक स्थान रूसी सीमा पर है। सरख्स स्थान को रूसी तुर्किस्तान की एक शाखा आती है। जाहेदान से सरख्स तक का फारसी जंगली प्रदेश है जो दश्ते-लूट (लूट का बन) के नाम से प्रसिद्ध है। सामरिक दृष्टि से यह मार्ग बड़ा ही उपयोगी है।

२—आर्केंजिल और मुर्मन्स्क होकर ट्रान्स अटलांटिक मार्ग है। इस मार्ग होकर संयुक्त-राष्ट्र-अमरीका, कनाडा और इङ्गलैंड से सामान आर्केंजल और मुर्मन्स्क के रूसी बन्दरगाहों को पहुँचाया जाता है। शीतकाल में यह मार्ग बिलकुल बन्द रहता है परन्तु और ऋतुओं में इस मार्ग द्वारा सामान पहुँचाया जा सकता है। मार्ग जर्मन आक्रमणकारी जहाजों तथा विमानों द्वारा संकटपूर्ण है। अभी हाल ही में कुछ सामान इस मार्ग होकर जर्मन बम्ब वर्षकों की बम्ब वर्षा का सामना करता हुआ पहुँचाया गया है।

३६

एक तीसरा मार्ग इराक और ईरान होकर है। यह बसरा के आधुनिक बन्दरगाह से आरम्भ होता है और इराक देश की रेलवे लाइन होकर खानकिन के स्टेशन को पहुँचता है। खानकिन स्टेशन ईरान की सीमा पर है।

व्लाडीवास्टक और ट्रान्स साइबेरियन रेलवे लाइन होकर रसद पहुँचाने वाला मार्ग प्रशान्त महासागरीय युद्ध के कारण बन्द है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अभी हाल ही में अलास्का को एक सड़क बनाई है। यह सड़क संयुक्त राष्ट्र तथा कनाडा की रेलवे लाइनों तथा सड़कों से मिली

है। इसी मार्ग होकर संयुक्त राष्ट्र अमरीका का सामान अलास्का पहुँचाया जाता है। अलास्का हवाई मार्ग होकर नोम और फोर्ट डेविस के हवाई अड्डे द्वारा वेलेन, स्किमिट अन्तरीप, शेलागास्की अन्तरीप और मार्कोवो आदि हवाई अड्डों को सामान पहुँचता है। वहां से सड़कों और ट्रान्स साइबेरियन रेलवे द्वारा रूस सामान पहुँचाया जाता है। इस ओर का प्रदेश बरफ से साल भर ढका रहता है। अतः जल में चलने वाले जहाजों का चलना कठिन है।

रूस के भीतरी भाग में नहरें, रेलवे लाइनें और सड़कें बहुत हैं नहरों द्वारा प्रधान नदियां, बड़े नगर और सागर सभी मिला दिये गये हैं। अतः यदि रूस किसी प्रकार सामान पहुँच गया तो फिर समस्त देश में सरलतापूर्वक बांट दिया जाता है।

★ ★ ★

सेवेस्टोपोल का भीषण संग्राम

क्राइमिया प्रायद्वीप में सेवेस्टोपोल का बन्दरगाह कालासार पर है। यहां पर कालासागरीय रूसी जल सेना का जहाजी बेड़ा रहता है। सेवेस्टोपोल में हवाई स्टेशन तथा जहाज बनाने के घाट भी हैं। गत वर्ष जर्मनी ने क्राइमिया की विजय करने पर इसे जीतने का प्रयत्न किया था परन्तु रूसी सेना के भीषण संग्राम के आगे उसकी दाल न गल सकी इसलिये जर्मनी ने ५ लाख जर्मन सेना से सेवेस्टोपोल का घेरा डाल दिया।

सेवेस्टोपोल का महत्व पूर्ण बन्दरगाह

३७

८ महीने तक जर्मन सेना सेवेस्टोपोल का घेरा डाले पड़ी रही और नगर पर प्रति दिन हवाई टैंक तथा तोपों द्वारा आक्रमण करती रही। आक्रमणकारी सेना को आक्रमणों में भीषण क्षति उठानी पड़ी। ३ प्रधान आक्रमणों में १६ हजार, ४५ हजार और ५० हजार जर्मन सेना क्रमशः मारी गई। २१ मई तक जर्मन सेना सेवेस्टोपोल के घेरे नगर पर प्रति दिन १० से १२ तक हवाई आक्रमण करती रही २१ मई को नगर पर जर्मन बम्ब वर्षक सेना ने भीषण आक्रमण आरम्भ किया हवाई आक्रमण इतना भीषण होने लगा कि हवाई हमले की चेतावनी दी जानी भी बन्द कर दी गई। थोड़ा थोड़ा करके समस्त नगर ढा दिया गया।

जून के प्रथम ८ दिनों में जर्मन सेना ने नगर पर ९ हजार बम्ब गिराये। सेवेस्टोपोल के भीषण संग्राम में १ हजार जर्मन विमान भाग ले रहे थे। लगभग १ हजार के अधिक शत्रु टैंक लड़ाई में लगाये गये थे। सेवेस्टोपोल का प्रत्येक नर-नारी युद्ध में सम्मिलित हुआ। नगर के प्रत्येक गज़ धरती पर अधिकार जमाने के लिये जर्मन सेना को भीषण संग्राम करना पड़ा। जनरल वान मैन्स्टीन की जर्मन सेना ने नगर सत्यानाश कर दिया। २३ जून के पश्चात् रूसी सेना हटने लगी। नगर के अंतिम घमासान युद्ध में लगभग १ लाख जर्मन सेना मारी गई। १ जुलाई को जर्मन सेना नगर में प्रवेश कर गई। ४ जुलाई तक नगर

के भिन्न भिन्न गलियों में रूसी सेना शत्रु सेना का सामना करती रही। अन्त में समस्त नगर पर शत्रु का अधिकार हो गया। सेवेस्टोपोल नगर के युद्ध में शत्रु को भीषण हानि उठानी पड़ी।

नगर हाथ से चले जाने के दो दिन पूर्व ही वहां से कालासागरीय रूसी जहाजी बेड़ा हट गया था और नोवोगोसिस्क बन्दरगाह से युद्ध संचालन करने लगा था।

सेवेस्टोपोल के किले पर जर्मन सेना ने १ जुलाई बुधवार को १२ बजे दिन में अधिकार किया। रूस की अधिकांश सेना नगर की रक्षा में मारी गई जो शेष बची वह खेर्सोन्स प्राय द्वीप में हट गई रूसी सेना ने सेवेस्टोपोल के संग्राम को अमर बना दिया है।

★ ★ ★

अफ्रीका का फ्रांसीसी राज्य

मेडेगास्कर को छोड़ कर फ्रान्सीसी अफ्रीका का क्षेत्रफल ४० लाख वर्गमील और जनसंख्या ३

३८
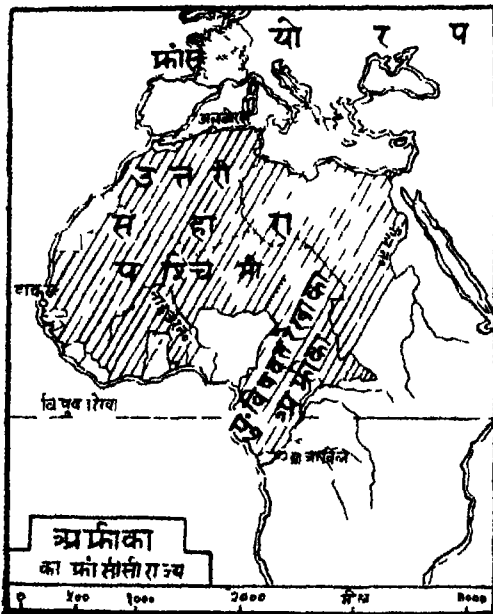
करोड़ है। मेडेगास्कर पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार कर लिया है। फ्रान्सीसी अफ्रीका तीन भागों में बँटा है (१) फ्रान्सीसी उत्तरी अफ्रीका (मरक्को, अल्जीरिया और ट्यूनिस) (२) फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका जिसमें मौरिटानिया, फ्रांसीसी सूडान, सेनेगाल, गिनी, आइवरी तट, डहोमी और नाइजर उपनिवेश हैं। सभी के शासन का केन्द्र डाकर है। (२) फ्रांसीसी विषुवत् रेखा का अफ्रीका जिसमें गाबुन, मध्य कांगो युबांगीशारी, चाड और कैमरून सम्मिलित हैं। कैमरून की राजधानी ब्राजाविल्ली है। १९३४ से यह संयुक्त क्षेत्र बना दिया है।

अक्तूबर १९४० ई० में विची सरकार ने जनरल वेगां को मरक्को भेजा। कहा जाता है वहाँ उत्तरी अफ्रीका की फ्रान्सीसी शक्ति का उसने संगठन किया है। पर अब मरक्को में जर्मन प्रभुत्व बढ़ रहा है। वहाँ जर्मन दूत काम कर रहे हैं। वहाँ पर वेगां नहीं है।

तेईस सितम्बर १९४० ई० को स्वतंत्र फ्रांसीसी सेना के संचालक जनरल डि गाल डाकर पहुँचे। डाकर फ्रान्सीसी पश्चिमी अफ्रीका का राजनैतिक केन्द्र, बन्दरगाह और हवाई अड्डा है। उसने वहाँ के निवासियों को बुलाकर अपनी सहायता के लिये कहा। उसके उत्तर में तटीय तोपों ने डि गाल के साथ वाले ब्रिटिश जहाजों पर गोलेबारी आरम्भ कर दी। फ्रांसीसी लड़ाका जहाज और क्रूशियर जो जिब्राल्टर मार्ग से डाकर गये थे उन्होंने भी ब्रिटिश जहाजों के विरुद्ध लड़ाई में भाग लिया। ब्रिटिश जहाजों ने भी तोपों द्वारा उत्तर दिया जिसके फलस्वरूप दो फ्रांसीसी पनडुब्बी नावें डूब गईं।

उसके बाद ब्रिटिश सरकार ने डाकर से ब्रिटिश जहाजों तथा सेना को हट जाने की आज्ञा दी। ब्रिटिश सरकार विची सरकार के राजभक्त अफ्रीकन प्रजा के विरुद्ध युद्ध नहीं करना चाहती है इसी कारण ब्रिटिश सेना हटाई गई। इससे प्रतीत हुआ कि पश्चिमी अफ्रीका में जनरल डि गाल के अधिक सहायक नहीं हैं।

३९

★ ★ ★
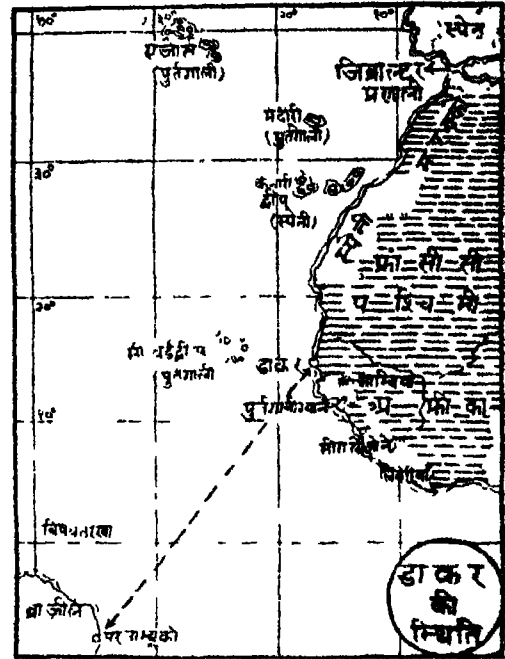
फ्रांसीसी विषुवत् रेखा के अफ्रीका पर
स्वाधीन फ्रांस का अधिकार

उनतीस अगस्त १९४० ई० को घोषणा की गई कि फ्रान्सीसी विषुवत् रेखा के अफ्रीका और कैमरून का राज्य जनरल डि गाल के साथ सहमत है। यह मित्र सेना के लिये युद्ध दृष्टि से बड़े काम का है। चाड प्रदेश ब्रिटिश नाइजीरिया को ऐंगलो-मिस्री सूडान से मिलाता है। इस प्रकार दोनो देशों के मध्य लैमेफोर्ट होकर सड़क का स्थल मार्ग है। इसके अतिरिक्त ब्रायरे अन्तरीप और ब्राजाविल्ली तथा बेल्जियम कांगो के मध्य वाले मार्गों की यह रक्षा करता है।

डाकर घटना के पश्चात् जनरल डि गाल ने कैमरून और चाड प्रदेश का भ्रमण किया। गाबुन में उसका विरोध किया गया। १० नवम्बर को लिब्रेविल्ले ने डि गाल की सेना को आत्म समर्पण कर दिया।

मेडेगास्कर द्वीप

मेडेगास्कर द्वीप हिन्द महासागर के दक्षिणी पश्चिमी द्वार का पहरेदार है। इस द्वीप का क्षेत्रफल २,४२,००० वर्गमील है जो हमारे संयुक्त प्रान्त के दोगुने से भी अधिक बड़ा है। लेकिन इसकी जनसंख्या केवल ३८ लाख है। इसमें ३० हजार योरुपीय हैं। यहाँ कुछ अरबी, कुछ हिन्दू सौदागर और चीनी मजदूर रहते हैं। अधिकांश मूल निवासी हैं। इनकी कई जातियाँ हैं। होवा जाति

४०

के लोग अधिक उन्नतशील हैं। १८८५ ई० तक होवा इस द्वीप पर शासन करते थे। इनके राजदूतों को संयुक्त राष्ट्र अमरीका ब्रिटेन और फ्रान्स ने मान लिया था। लेकिन इसी वर्ष तोपों के जोर से फ्रान्स ने यहाँ पैर जमाने के लिये जगह ले ली और दस वर्ष के भीतर सारे मेडेगास्कर द्वीप पर अपना अधिकार कर लिया।

१९४० ई० में फ्रान्स के पतन के बाद इस द्वीप का महत्व बढ़ गया। वहाँ के फ्रान्सीसी गवर्नर ने ब्रिटिश सरकार को अपने साम्राज्य में मिलाने के लिये तार भेजा। वह तार पड़ा ही रह गया। इतने में फ्रान्स की विची सरकार ने दूसरा गवर्नर नियुक्त कर दिया। इस गवर्नर के आँख छिपाने से धुरी सरकार अरबी नावों में शस्त्र भेजने लगी और मूल-निवासियों को फौजी शिक्षा देने लगी। जापान ने अपने कुछ फौजी विशेषज्ञ भी यहां भेज दिये।

बरमा छिन जाने के बाद ब्रिटेन को डर लगने लगा कि कहीं जापान फ्रान्सीसी इण्डोचीन की तरह चुपचाप मेडेगास्कर पर भी अपना अधिकार न जमा ले। मेडेगास्कर का चावल, कहवा, मक्का, सोना, आलू, मूँगफली, शक्कर, तम्बाकू और फास्फेट जापान को मिल जावें। इसकी ब्रिटेन को चिन्ता न थी। लेकिन डीगो स्वारेज पोर्ट नीवर आदि मेडेगास्कर के सर्वोत्तम बन्दरगाह और पश्चिमी खुश्क भाग के १०० से ऊपर

हवाई स्टेशनों पर जापान का अधिकार हो जाने से ब्रिटेन को भारी संकट था। मेडेगास्कर से लंका, भारतवर्ष और आस्ट्रेलिया केवल साढ़े तीन हजार मील दूर है। मडेगास्कर में स्थित जापानी लड़ाका जहाज इन देशों में आतंक फैला देते और अटलांटिक महासागर से आने वाले ब्रिटिश और अमरीकन जहाजों का मार्ग रोक देते। मेडेगास्कर से दक्षिण-अफ्रीका तो केवल ७०० मील दूर है इस भाग और पूर्वी-पश्चिमी अफ्रीका जो २४० मील दूर है पर तो जापानी हवाई हमले बराबर होते रहते। इन्हीं कारणों से ब्रिटेन ने इस द्वीप पर अपना फौजी अधिकार कर लिया है। लेकिन भावी निर्णय स्वाधीन फ्रान्सीसी नेता डिगाल की सम्मति के अनुसार करने की घोषणा की गई है।

★ ★ ★

सूडान पर इटैलियन आक्रमण

जुलाई १९४० ई० में एबीसीनिया की इटैलियन सेना ने सूडानी सीमा को तीन स्थानों पर पार किया और कसाला (सेनारपोर्ट सूडान रेलवे पर) गालाबाट और कुर्मुक नगरों पर अधिकार कर लिया। इटैलियन सेना खारतूम की ओर बढ़ी। नवम्बर मास में गालबाट नगर को ब्रिटिश सेना ने छीन लिया और फिर कुर्मुक नगर होकर गुब्बा (एबीसीनियन सीमा के भीतर) नगर तक बढ़ी।

जुलाई अगस्त कीन्या के उत्तरी पूर्वी सीमावर्ती कोण की ओर इटली की सेना बढ़ी और मोयाले तथा बूना पर अधिकार कर लिया। जनवरी १९४१ ई० में जनरल स्मट्स ने इन स्थानों पर पुनः अधिकार प्राप्त कर लिया। उसके बाद इटली की सेना ने ब्रिटिश सुमाली लैण्ड पर आक्रमण किया।

४१

४२
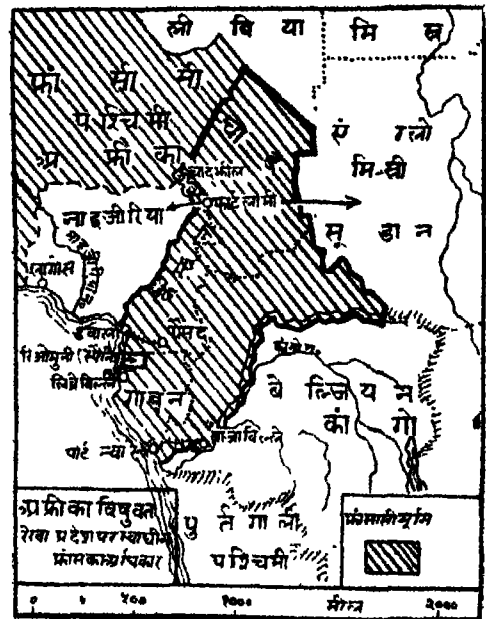
सुमालीलैण्ड में इटली की विजय

फ्रांसीसी सुमाली लैण्ड और जिबूटी बन्दरगाह पर अधिकार करने के पश्चात् इटली की सेना ने ब्रिटिश सुमालीलैंड पर आक्रमण किया। वहां जो ब्रिटिश सेना थी वह उसकी रक्षा नहीं कर सकती थी। जीला और बर्बेरा के बन्दरगाहों में आधुनिक सुविधाएँ नहीं हैं। सुमालीलैंड में रेलवे भी नहीं हैं।

१९३६ ई० में एबीसीनिया की विजय के पश्चात से वहां पर बहुत बड़ी इटैलियन सेना थी। वह समस्त सेना ब्रिटिश सुमालीलैंड की विजय के लिये बढ़ी। ४ अगस्त १९४० ई० को इटली की सेना ने ब्रिटिश सुमालीलैंड की सीमा पार किया और जीला बन्दरगाह में बिना विरोध के प्रवेश कर गई। एक और दूसरी इटैलियन सेना जिसमें टैंक, तोपें और वायुयान थे हर्गीसा की ओर बढ़ी और ५ अगस्त को उस पर अधिकार प्राप्त कर लिया। ६ अगस्त को तीसरी आर्मर्ड सेना ने (जिसमें ७००० सैनिक थे) ओडवीना पर अधिकार कर लिया।

जीला से इटली की सेना तट होकर बर्बेरा की ओर बढ़ी दूसरी दो सेनाएँ दक्षिण की ओर से बर्बेरा की ओर बढ़ीं। वहां ब्रिटिश तथा इटली की सेनाओं में घोर संग्राम हुआ। १९ अगस्त को बर्बेरा से ब्रिटिश सेना हटा ली गई और घायल सैनिकों तथा अस्त्र-शस्त्रों के साथ अदन पहुँच गई। बर्बेरा में केवल दो ब्रिटिश तोपें छूट गई थीं। ब्रिटिश सेना के कथनानुसार इटली की ब्रिटिश सुमालीलैंड में ब्रिटिश
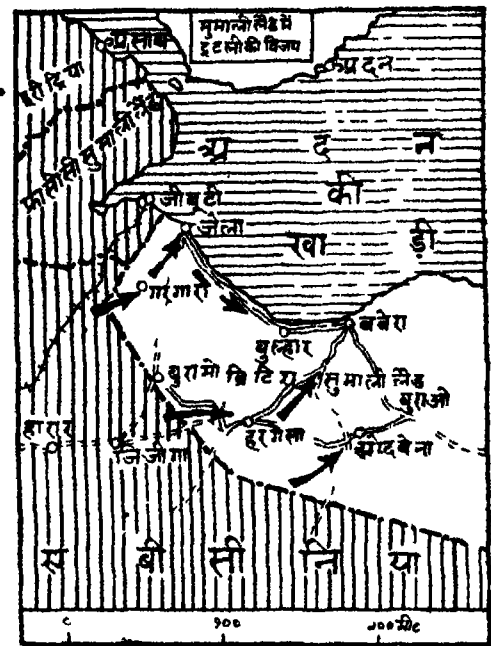
४३

सेना की अपेक्षा बहुत अधिक सेना मारी गई। इटली की सेना ने समस्त ब्रिटिश सुमालीलैंड पर अधिकार प्राप्त कर लिया।

इटली ने ब्रिटिश तथा फ्रान्सीसी सुमालीलैंड पर अधिकार कर लिया तो भी पूर्वी अफ्रीका में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ इटली से फिर भी वहां की इटैलियन सेनाएँ अलग रहीं क्योंकि मध्यवर्ती भाग में स्वेज नहर पर ब्रिटिश अधिकार था। सुमाली लैण्ड की पराजय से ब्रिटेन के मान हानि को अवश्य ही धक्का पहुँचा परन्तु फिर भी लाल सागर और अदन की खाड़ी पर पूर्ण रूप से ब्रिटिश अधिकार जमा रहा।

सूडान और कीन्या की सीमा पर गश्त लगाने वाले चौकीदार सैनिकों में मुठ भेड़ होने के अतिरिक्त शान्ति बनी रही। जनवरी १९४१ ई० में ब्रिटिश सेना इरीट्रिया की ओर बढ़ी। उसे एबीसीनिया के देश भक्तों की सहायता मिली। इसलिये उसने एबीसीनिया में भी प्रवेश किया।
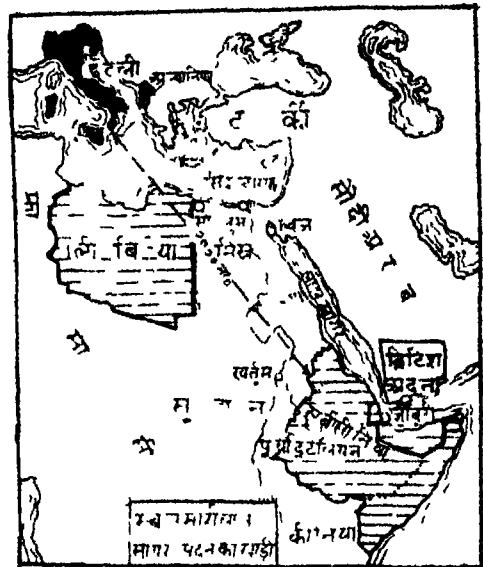
४४

★ ★ ★

एबीसीनिया में इटैलियन साम्राज्य

का अन्त

और हेल सलासी का पुनः राज्याभिषेक

पहले एबीसीनिया अफ्रीका का एक स्वाधीन राज्य था। अवसर पाकर १९३६ ई० में इटली ने यहाँ अपना अधिकार जमा लिया। फिर भी यहाँ के लोग अपनी स्वाधीनता को नहीं भूले। जनवरी १९४१ ई० में ब्रिटिश सेनाओं ने एबीसीनिया के देशभक्तों की सहायता पाकर देश में प्रवेश किया। जनरल वेविल सम्राट की सेना का संचालन कर रहा था ब्रिटिश सेना गोंडार, डेसी पर अधिकार करती हुई आगे बढ़ी। ५ मई १९४१ ई० को हेल सेलासी ने आदिसअबाबा में प्रवेश किया। उसके पश्चात् ब्रिटिश सेना अम्बा अलागी की ओर बढ़ी। परन्तु वर्षा के कारण सेना का बढ़ना रुक गया। ब्रिटिश

सेनायें चारों ओर से बढ़ रही थीं जिसके फलस्वरूप अओस्ता के ड्यूक की सेनायें घिर गईं। वह पूर्वी अफ्रीका की इटेलियन सेना का प्रधान सेनापति था। ड्यूक आत्म समर्पण करने के लिये विवश हो गया। १८ मई को उसने अपने राजदूत ब्रिटिश सेना के पास भेजे। २० मई को अओस्ता ने ५ जनरलों तथा १८००० सेना के साथ आत्म समर्पण कर दिया। उसके पश्चात् ब्रिटिश सेना ने अबाल्ती पर अधिकार किया और एक हजार इटेलियन सैनिक पकड़ लिये।

अओस्ता के ड्यूक की पराजय से इटली की सेना में बड़ी गड़बड़ी मच गई थी। इटली से सहायता पहुँचनी भी कठिन हो गई। आदिस अबाबा में ब्रिटिश सेना ने हेल सेलासी को पुनः राजगद्दी पर बैठा दिया। १५ जून को जनरल प्राज़ोमों ने सोद्दू के समीप ४००० सेना के साथ आत्मसमर्पण किया।

४५
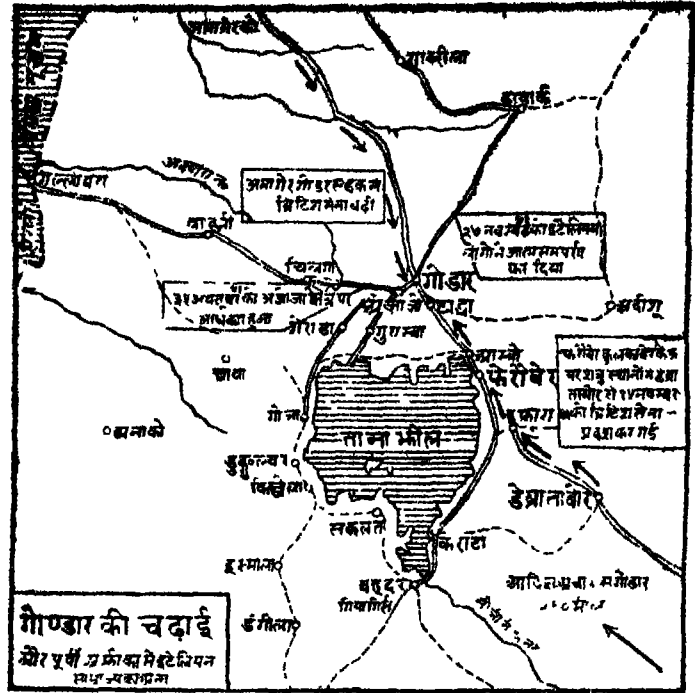
धीरे धीरे समस्त एबीसीनिया पर ब्रिटिश सेना ने अपना अधिकार कर लिया।

✷ ✷ ✷

पूर्वी अफ्रीका में इटली

के साम्राज्य का अन्त

ड्यूक अओस्ता की पराजय और आत्मसमर्पण का पूर्वी अफ्रीका की इटेलियन सेना पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। सब कहीं इटेलियन सैनिकों के पाँव उखड़ गये। ब्रिटिश सेनाएँ पूर्व-पश्चिम और दक्षिण की ओर से बढ़ती चली गईं। एबीसीनिया पर अधिकार जमा कर उन्होंने, सुमालीलैंड पर धावा मारा और एक एक करके सभी इटेलियन सेनाओं को हराती हुई आगे बढ़ती गईं। काउण्ट मियानो अफ्रीका में इटली की सेना का पुनर्संङ्गठन करने के लिये भेजा गया परन्तु उसके जाने से भी कोई लाभ नहीं हुआ।

लीबिया में इटली की सेना को पराजय हो रही
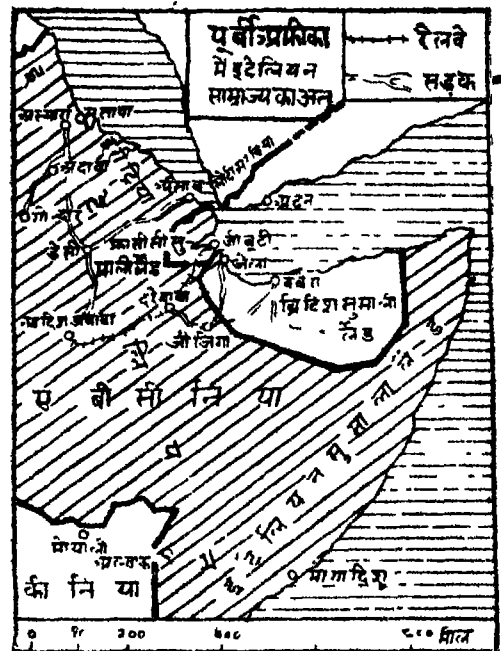
४६

थी और ब्रिटिश सेनाएँ घेर घेर कर इटेलियन सैनिकों को पकड़ रही थीं। अन्त में अफ्रीका में इटली की पराजय हुई। एबीसीनिया, इटेलियन सुमालीलैण्ड, ब्रिटिश सुमालीलैंड आदि सभी छीन लिये गये और पूर्वी अफ्रीका में इटेलियन साम्राज्य का अन्त हो गया। एबीसीनिया पर इटली ने १९३६ ई० में अधिकार जमाया था वहाँ हेलसेलासी पुनः गद्दी पर बैठा दिये गये।

★ ★ ★

मिस्र और लीबिया का युद्ध

अगस्त (१९४० ई०) में इटली की सेना मिस्री सीमा पर एकत्रित होती रही। सितम्बर मास के मध्य में उन्होंने सीमा पार करके सोलुम पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश सेना मर्सामातरूह की ओर हट गई और इटेलियन सेना सीदी बरानी पहुँची जहाँ वह अपने को संगठित करने लगी। उसके पश्चात् कुछ समय तक सेनाएँ शान्त रहीं परन्तु दोनों ओर से हवाई आक्रमण होते रहे।

मिस्र-लीबिया सीमा का युद्ध ३० मील चौड़ी सीमा में हो रहा था। इस सीमा के दोनों ओर युद्ध-सामग्री पहुँचाने वाली लाइनें थीं। युद्ध-क्षेत्र का कुछ परिचय मानचित्र से प्राप्त हो सकता है।

९ दिसम्बर को नील नदी की ब्रिटिश सेना मर्सामातरूह के सामने बढ़ी। दो दिन बाद उसने सीदी बरानी में प्रवेश किया और २० हजार से अधिक इटेलियन क़ैदी पकड़े। भूमध्य सागर के युद्ध पोत साथ देते रहे और वे तटीय सड़क के इटेलियन स्थानों पर गोलबारी करते रहे। बाद्याबक स्थान पर पहुँच कर ब्रिटिश सेना ने और अधिक क़ैदी पकड़े जिससे उनकी संख्या ३५ हजार हो गई। १६ दिसम्बर १९४० को सोलम पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार किया।

मिस्र को शत्रु सेना से मुक्त करने के पश्चात् बर्दिया के इटेलियन बन्दरगाह की ओर ब्रिटिश सेनायें बढ़ीं। ब्रिटिश कलों वाली सेना ने तोब्रक की सड़क काट दी और बर्दिया में जो इटेलियन सेना थी वह दो भागों में अलग अलग हो गई। ४ जनवरी १९४१ ई० को नगर पर ब्रिटिश अधिकार हो गया और ३० से ४० हजार तक इटेलियन सेना पकड़ी गई। इस युद्ध में आस्ट्रेलियन सेना ने प्रमुख भाग लिया।

उसके बाद ब्रिटिश सेनायें तोब्रक की ओर बढ़ीं और २१ जनवरी को नगर पर हमला किया। २२ जनवरी को उन्होंने १४ हजार क़ैदी पकड़े। तोब्रक से देर्ना १०० मील से कुछ अधिक पश्चिम की ओर है। ८ दिन पश्चात तोब्रक में ब्रिटिश सेना ने प्रवेश किया। ७ फरवरी को कैरो से समाचार मिला कि बेंग़ाज़ी पर ब्रिटिश अधिकार हो गया। देर्ना से आस्ट्रेलियन सेना तट होकर बढ़ी और साथ ही साथ एक कलों वाली सेना शीघ्रता के साथ मरुस्थल होकर अल मकीली से बढ़ी और उसने बेंग़ाज़ी के दक्षिण जाने वाली सड़क काट दी। इस प्रकार लीबिया का पूर्वी समस्त साइरेनिका प्रान्त ब्रिटिश हाथों में आ गया।

नील नदी की जनरल वावेल की सेना ने २ मास में ४०० मील से अधिक लम्बे प्रदेश में बढ़ कर १ लाख १० हजार क़ैदी पकड़े। साथ ही साथ बहुत सी युद्ध सामग्री भी हाथ लगी। बेंग़ाज़ी एक बड़ा जहाज़ी तथा हवाई अड्डा है। इस प्रकार लीबिया में इटेलियन सेना को ब्रिटिश सेना ने पराजित किया। इटली की सेना की हार जर्मनी सहन नहीं कर सका और जर्मन सेनाओं ने लीबिया के युद्ध को अपने हाथ में ले लिया।

ब्रिटिश तथा जर्मन सेनाओं में रस्साकशी होने लगी। माल्टा पर विकराल गोलाबारी करके उसी की आड़ में इटली और जर्मनी ने जनरल रोमेल को नई सेना तथा टैंक और युद्ध सामग्री आदि भेज दी। जनरल रोमेल ने पूर्ण तयारी करने के पश्चात् बीर-हकीम पर आक्रमण किया और वहाँ भीषण युद्ध हुआ। बीर हकीम पर अधिकार करने के बाद अल-अदम, अल गोरी, सीदी रेजेग, तोब्रक, गम्बूत, कपूज़ो

सिदी ओमर सोलम और मर्सामातरूह आदि पर जर्मन सेना ने अधिकार जमा लिया। सिकन्दरिया स्वेज और नील की घाटी की ओर जर्मन सेनायें बढ़ने लगीं। जर्मनी तथा इटली ने मिस्र की स्वतंत्रता की घोषणा भी की। समस्त साइरेनिका (लिबिया) और उत्तरी मिस्र पर जर्मन अधिकार हो गया। कई हजार ब्रिटिश सेना मारी गई तथा ५० हजार से अधिक सेना पकड़ ली गई और बहुत अधिक युद्ध सामग्री शत्रु के हाथ लगी। मिस्र की रक्षा के लिये मिस्र में सेना चारों ओर से पहुँचा दी गई और विकराल युद्ध होने के बाद क्षणिक शान्ति सी हो गई है। लेकिन दोनों ओर से घोर तयारी हो रही है।

★ ★ ★

रेगिस्तान में वायुयानों तथा टैंकों का युद्ध

सन् १९४१ ई० में जब ब्रिटिश सेना ने लीबिया के युद्ध में प्रत्याक्रमण आरम्भ किये तो जर्मन सेना के दो पञ्जर डिवीजन वहां पहुँच चुके थे। प्रत्येक पञ्जर सेना में लगभग ५०० टैंक थे। बृटिश सेना ने गुप्त रूप से आक्रमण करने का विचार किया। आक्रमण आरम्भ होते समय बृटिश टैंकों का सेना पति बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था और अपनी कलाई की घड़ी की ओर देख रहा था वह आगे बढ़ने की आज्ञा की प्रतीक्षा में था। उसी समय उसके ऊपर वायुयानों का समूह उड़ता हुआ दिखाई पड़ा और घरघराहट की आवाज़ हुई। आर० ए० एफ० के बम्ब वर्षक विमानों के समूह के ऊपर अधिक ऊँचाई पर तोपों वाले तोमाहाक्स वायुयान सीटी बजाते उड़ रहे थे।

इस भयङ्कर युद्ध में बृटिश मशीनों की सेना और वायुयान सेना संयुक्त रूप से लड़ने वाली थी। इस आक्रमण के संचालक दो व्यक्ति थे जो एक दूसरे से मीलों दूर बैठे हुये रैडियो द्वारा संचालन कर रहे थे। इनमें से एक तो बृटिश सेना का सैनिक अफसर और दूसरा बृटिश वायुयान सेना का अफसर था। समस्त युद्ध लड़े जाने तक यह अफसर अपने सहायक कार्य कर्ताओं के साथ बैठे संचालन कार्य करते रहे और एक क्षण के लिये भी स्थान से नहीं हटे। वह प्रत्येक क्षण अपनी सेना की गति का समाचार प्राप्त कर रहे थे।

'जब कभी अधिक हवाई शक्ति की आवश्यकता होती थी वह हवाई अड्डों से नये लड़ाका तथा बम्ब वर्षक विमान भेजते थे। टैंको के दस्ते, हवाई दस्ते और स्थल सेना के सेनापति संयुक्त रूप से आक्रमण में भाग ले रहे थे। इसी संयुक्त मोर्चे के कारण जनरल रोमेल की सेना को १९४१ ई० में रेगिस्तानी युद्ध में कई स्थानों पर मुँहकी भी खानी पड़ी थी। यह संयुक्त मोर्चा सचमुच ही जनरल कनिंघम का गुप्त अस्त्र था। क्योंकि साइरेनिका में पश्चिम की ओर बृटिश सेना का प्रगति के पहले बृटिश स्थल सेना और हवाई सेना ने मिल कर अपनी शक्ति का खुले मैदान में अंदाज नहीं किया था।

जब जनरल कनिंघम का आक्रमण आरम्भ हुआ तो उसने आकाश को वायुयानों से भर दिया और धरती अग्नि उगलने वाले टैंकों से ढक दी। इस नीति से जनरल रोमेल की सेना पर भारी प्रभाव पड़ा। बृटिश आक्रमण रात को भी अचानक हुआ। रोमेल की सेना को पीछे हटना पड़ा। उसकी सहायता के लिये तटीय सड़क होकर सेनायें सामग्री के साथ दौड़ीं परन्तु सिर्टे की खाड़ी के टैंकर जहाजों तथा सड़क की लारियों को बृटिश बम्ब वर्षकों ने हवा में उड़ा दिया। कपूजा और एल डूडा प्रदेशों में स्वतंत्र फ्रांसीसी और बृटिश बम्ब वर्षक चक्कर काटते रहे और शत्रु टैंक तथा आर्मर्ड सेना को तितर-बितर करते रहे।

सिदी रजेग और सिदी ओमर नगरों के ऊपर रैडियो द्वारा संचालित तोमाहाक्स विमान बृटिश टैंकों का मार्ग साफ कर रहे थे उनसे ME ११० और CR ४२ से मुठभेड़ हुई उन्हें उन्होंने मार भगाया और हवाई युद्ध में प्रधानता स्थापित की।

बार्से के दक्षिण की ओर बृटिश बम्ब वर्षक

सामान पहुँचाने वाली गाड़ियों पर बम्ब गिरा रहे थे। अजेदाबिया के हवाई अड्डे पर विद्युत-बृटिश हवाई आक्रमण हुआ और उसके वायुयान तथा उसके दौड़ने के मार्ग नष्ट कर दिये गये। एल अघम के पश्चिम तथा पूर्व वाली शत्रु सेना भी विमानों द्वारा नष्ट की गई। फिर एक धुरी सेना पूर्व की ओर बढ़ती दिखाई दी। उस पर तोमाहाक्स वायुयानों ने नीचे उड़ कर आक्रमण किया और सात माल लम्बे एक जत्थे को नष्ट कर दिया।

रेगिस्तानी स्थिति के अनुसार बृटिश सेना आगे बढ़ती गई उसे सुदूर पीछे के स्थान से संचालकों द्वारा आज्ञा मिल रही थी।

आज्ञा-केन्द्र से ब्रीयु लड़ाका (Breuu fighters) विमान मतूबा क्षेत्र के जंकर्स ५२ सेना वाहक विमान को नष्ट करने के लिये भेजे गये। सामान पहुँचाने वाली लाइनों पर भी ब्रो लड़ाका जहाज गये और उन्होंने नीचे उड़ कर गोले मारे। एक जहाज तो इतना नीचे उड़ा कि टेलीफोन के खम्भे से केवल तीन फुट ही ऊँचा था और गिरते गिरते बचा।

एक स्थान पर एक ब्रिटिश टैंक सेना पर ६० शत्रु वायुयान आक्रमण कर रहे थे। शत्रु वायुयानों मे जंकर ८७, मे० ११०, १०९, जी ५० और सी० आर० ४२ जहाज भी थे। टैंकों की सहायता को २० तोमाहाक्स विमान भेजे गये। जब स्तूका खाता-खोर जहाज टैंकों पर बम्ब गिराते हुये उतरे तभी बीसों तोमाहाक्स उनके सामने प्रगट हुये। स्तूका विमानों के ऊपर २० सहायक धुरी-लड़ाका वायुयान थे और उनके ऊपर लड़ाका जहाजों का एक दूसरा जत्था था और ब्रिटिश सेना को विध्वंस करने के लिये भेजा गया था तोमाहाक्स विमानों ने शत्रु सेना की योजना नष्ट कर दी और शत्रु विमानों को मार भगाया। उस हवाई युद्ध में १० शत्रु विमान तथा दो बृटिश विमान नष्ट हुये। यह एक विचित्र हवाई युद्ध था जिसे तोब्रुक के लोगों ने अपनी आंखों से देखा और लड़ने वालों की बड़ी प्रशंसा की

इस प्रकार के बृटिश आक्रमण में विमानों के लिये रेगिस्तान में पहले से ही उतरने के स्थान बना दिये गये थे। ऐसे स्थानों को देखने के लिये विशेष ढंग के विमान पहले ही भेज दिये गये थे। तेज चलने वाले आर्मर्ड कारों ने उन स्थानों पर शीघ्र ही अधिकार जमा लिया था। आर्मर्ड कारों के पीछे पीछे ऐक-ऐक (Ack Ack) बैटरियां तथा लेविस तोपों के जत्थे गये। उसके बाद सेना संचालक डेरे तथा सहायक सामग्री टेलीफोन, रेडियो, जल, तेल, युद्ध-सामग्री आदि पहुँचाई गई। इस प्रकार रेगिस्तान में बृटिश हवाई अड्डे बनाये गये। जनरल आचिलेक के आधीन जनरल कनिंघम पश्चिमी रेगिस्तान में सेना का संचालन कर रहा था।

पश्चिम की ओर से घेरे जाने से शत्रु सेना की दशा जटिल हो गई। जनरल रोमेल ने बड़ी चतुरता से काम लिया और पीछे की ओर हटकर उसने सेना को संगठित किया और तोब्रुक के बृटिश कारीडर (मार्ग) पर टूट पड़ा और उसे तोड़ते हुये उसने अपना मार्ग बनाया। इस प्रकार वह घेरे जाने से बच गया। बृटिश सेना के जाल से बचने के कारण लीबिया के युद्ध का दूसरा अध्याय आरम्भ हो गया। गम्बूत, बर्दिया, सोलम आदि स्थानों पर बृटिश सेना ने अधिकार कर लिया।

इसी बीच रोमल की आर्मर्ड सेना जिसे कुछ हवाई सहायता भी मिल गई पश्चिम की ओर शीघ्रता के साथ भागी। दर्ना और मेकेली पर अधिकार किया गया और बेंगाजी पर भी बड़े दिन के दिन अधिकार हो गया। जनवरी में हल्फाया पर भी अधिकार हो गया। समस्त साइरेनैका पर बृटिश अधिकार हो गया।

रोमेल अल अघीला की ओर चला गया था वहां उसे रक्षक लाइन बनाने की सुविधा थी। शत्रु सेना ने दलदली भूमि में सुरंगें लगा दीं और डेरा डाल दिया। अल अघीला से तीन मोटर के जत्थे पश्चिम की ओर भेजे गये और उन्होंने जेदाबिया पर अधिकार कर लिया। आगे चल कर एक बड़ा टैंकों का युद्ध आरम्भ हो गया। पश्चिमी साइरेनैका में बृटिश बम्ब वर्षक शत्रु की सहायक सेना तथा सामान पहुँचाने वाली लाइनों को नष्ट करते रहे परन्तु शत्रु ने इतनी तयारी की थी कि उसको पूर्ण रूप से पश्चिम की ओर हटाने में बृटिश सेना को सफलता नहीं प्राप्त हुई।

——०ः०——

तृतीय खण्ड

भूमध्य सागर में युद्ध आरम्भ होते ही सीरिया का महत्व बढ़ गया। सीरिया फ्रान्सीसी अधिकार में था। फ्रान्स के आत्मसमर्पण होने के पश्चात् सीरिया ने युद्ध जारी रखने की घोषणा की थी। घोषणा के पश्चात् जनरल वेगां ने वहां का भ्रमण किया। वेगां के जाने से वहां की स्थिति में परिवर्तन हो गया। उसके बाद ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि वह सीरिया तथा लेबनोन पर शत्रु का किसी प्रकार का अधिकार नहीं देखना चाहती है। इसके बाद ट्रिपोली को सीरिया के जो तेल के नल जाते थे वह हैफा की ओर बदल दिये गये।

सितम्बर मास में समाचार मिला कि बेरूत में एक इटैलियन दूत मंडल गया है और वह हवाई तथा समुद्री अड्डों की मांग पेश कर रहा है। २५ नवम्बर को विची सरकार ने मिस्टर चियापे को सिरिया का हाई कमिश्नर नियुक्त किया। परन्तु जिस वायुयान पर वह यात्रा कर रहा था वह सार्डीनिया में गोला मार कर गिरा दिया गया। चियापे की मृत्यु हो गई। चियापे के स्थान पर जनरल डेण्ट्ज की नियुक्ति विची सरकार द्वारा वेगां की आज्ञा से की गई।

भारतवर्ष मिस्र, स्वेज नहर, इराक़ तथा ईरान के तेल प्रदेश पर शत्रु सेना का भय प्रतीत करते हुये सीरिया पर ब्रिटिश सरकार ने अधिकार कर लेना निश्चय किया। विची सरकार की फ्रान्सीसी सेनाओं ने घोर विरोध किया लेकिन ब्रिटिश सरकार की आज्ञा के अनुसार भारतीय सेना ने सीरिया पर अधिकार प्राप्त कर लिया। जर्मनी ने हवाई सेना से सीरिया की सहायता करनी चाही परन्तु उपर्युक्त सहायता न पहुँच सकी और फ्रान्सीसी सेना सामना करने में असफल हुई।
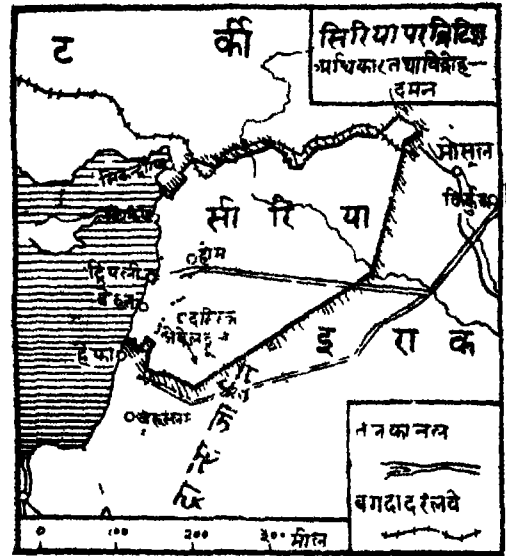
सीरिया में अलप्पो, पतममेरा, रायाक इत्यादि मिट्टी के तेल के क्षेत्र हैं। बेरूत का हवाई अड्डा और ट्रिपली का बन्दरगाह प्रसिद्ध है। यह सामरिक स्थान हैं। सामरिक दृष्टि से सिरिया और इराक़ की गणना साथ ही साथ होती है। स्वेज नहर की रक्षा के लिये इन पर अधिकार होना आवश्यक है। यद्यपि यह दोनों राष्ट्र अपना अस्तित्व अलग अलग रखते हैं तो भी उन्हें अलग करना असम्भव है। इन देशों में होकर पूर्व की ओर कारवाँ मार्ग जाता है। यह मार्ग अब भी चालू है। इराक़ का तेल मरुस्थल होकर ट्रिपली और हैफा जाता है। यह दोनों तेल के

नलों वाली बड़ी लाइनें हैं। सीरिया पर शत्रु का प्रभुत्व होने से ब्रिटिश पैलेस्टाइन तथा ट्रान्स जार्डन को भय था। ईराक़ फारस की खाड़ी और भारत के ब्रिटिश हवाई मार्ग में पड़ता है।

सीरिया में डाक्टर ग्रोनायु जर्मन प्रचार करने के लिये भेजा गया था उसने अरब लोगों को भड़का कर उनके बीच राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न की पर यहूदी लोगों की बस्ती होने के कारण लेबनान को प्रजा ब्रिटिश साम्राज्य के पक्ष में बनी रही। सीरिया खास (जिसकी राजधानी दमश्क है) लटाकिया और जेबेल द्रूस में जर्मन प्रभुत्व अधिक था। सीरिया में प्रचार करते समय डाक्टर ग्रोनायु का नारा था कि "आकाश में ईश्वर और पृथ्वी पर हिटलर सबसे महान है।" सीरिया में यरूशलम का बड़ा मुफ़्ती शेखुलज़ार और फौजी अफ़सर धुरी राष्ट्र के पक्षपाती थे।

इराक़ में जर्मन सहानुभूति
और
रशीदअली का विद्रोह तथा दमन

इराक़ का क्षेत्र फल १ लाख १६ हजार वर्ग मील और जन संख्या ३० लाख है। यहां की राजधानी बग़दाद दजला नदी पर स्थित है। वर्तमान महायुद्ध के आरम्भ में इराक़ ने ब्रिटेन का साथ दिया और जर्मनी से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

इराक़ में अनिवार्य सैनिक शिक्षा का प्रचार है। वहां २८००० सेना है। सेना में आधुनिक अस्त्र-शस्त्र भी हैं। इराक़ से पैलेस्टाइन में हैफा तक तथा सीरिया में ट्रिपोली तक तेल के नलों की लाइनें जाती हैं। मोसूल के तेल के कुवों के कारण इराक़ का महत्व बढ़ गया है। इराक़ में प्रति वर्ष ४३ लाख टन तेल निकाला जाता है। १९२८ ई० में इस तेल के २० हजार टन से कलों में तेल देने वाला चिकना तेल तयार किया गया। इराक़ का तेल भूमध्य सागरीय ब्रिटिश जहाजी बेड़े के लिये बड़ा उपयोगी था।

मोसूल का तेल पहले किर्कूक जाता है। यह मोसूल से १०० मील और बग़दाद से १५० मील उत्तर है। किर्कूक से दुहरी पाइप लाइनें दजला नदी पार करती हुई हिडिथा जाती हैं जो फरात नदी पर है। यहां इसकी दो शाखा हो जाती है। फ्रांसीसी शाखा पल्मायरा के मार्ग ट्रिपोली (सीरिया) जाती है। ब्रिटिश लाइन इराक़ के रेगिस्तान होकर ट्रान्स-जार्डन होती हुई एम्वाह और फिर हैफा (पैलेस्टाइन) जाती है। पाइप लाइनों के अंत में (हैफा और ट्रिपोली में) तेल साफ करने के कारखाने बने हैं। बिना साफ किये हुये तेल का उपयोग नहीं हो सकता इसी कारण तेल साफ करने वाले स्थान बड़े महत्व पूर्ण हैं।

फ्रान्स के पतन होने पर सीरिया, इराक़ और ईरान आदि देशों में जर्मन प्रचार होने लगा। डाक्टर ग्रोनायु तथा दूसरे प्रचारक इराक़ पहुँचे और प्रजा को ब्रिटेन के विरुद्ध भड़काने लगे। १९४१ ई० के अप्रैल में इराक़ में रशीद अली नामक एक भूत पूर्व मन्त्री ने राज शक्ति अपने हाथ में ले ली। वहाँ के प्रधान मन्त्री अब्दुल्ला देश छोड़ कर भाग गये। रशीद अली ने ब्रिटेन आदि के साथ भूत पूर्व संधियों को मानने का आश्वासन दिया था। इसलिये ब्रिटिश सेना इराक़ में उतरने लगी। परन्तु रशीद अली ने यह रोक लगा दी कि जब सेना का एक भाग इराक़ से चला जाय तो दूसरा उतरे। ब्रिटिश सरकार ने रशीद अली की इस शर्त को मानने से इनकार कर दिया और ब्रिटिश सेना ले जाने पर तत्पर हुई।

रशीद अली के सैनिकों ने इराक़ी विमानों द्वारा ब्रिटिश हवाई अड्डों पर बम्ब गिराये। सीरिया के

मार्ग से कुछ जर्मन सहायता भी इराक़ भेजी गई। ब्रिटिश सेना ने हबानिया और फ़लूजा पर अधिकार कर लिया। बसरा इराक़ का प्रधान हवाई अड्डा तथा बन्दरगाह है। देश के भिन्न-भिन्न भागों को यहीं से सामग्री पहुँचाई जाती है। यहाँ समस्त देश की रेलवे लाइनों को (नियंत्रण) करने वाला जंकशन है। बसरा का हवाई स्टेशन मगिल है। यह नदी तट पर बन्दरगाह से एक मील की दूरी पर है। यहाँ पानी में उतरने वाले विमानों के लिये भी सुगम स्थान है। हबानिया भी एक बड़ा ही सुन्दर हवाई अड्डा है यह ब्रिटिश फ्लाइंग भाग पर स्थित है। फ़लूजा के पुल पर अधिकार करने के बाद ब्रिटिश सेनाएँ बग़दाद की ओर बढ़ीं। हैफ़ा की पाइप लाइनों को विद्रोहियों ने काट डाला। बग़दाद पर अधिकार करने के बाद ब्रिटिश सेनाओं ने हिंदिया, रमदी, बैजी और किर्कूक पर अधिकार कर लिया।

८ मई १९४१ ई० को रशीद अली भाग गया। बग़दाद पर अधिकार प्राप्त करने के बाद अमीर अब्दुल्ला को बुला कर अँग्रेज़ी सेना ने पुनः रीजेंट बना दिया। इस प्रकार इराक़ के विद्रोह का दमन हुआ और ब्रिटिश भारतीय सेना ने वहाँ अपना अधिकार जमाया।

★ ★ ★

ईरान में विदेशी जमघट

ईरान देश का क्षेत्रफल ६ लाख २८ हज़ार वर्ग-मील और जनसंख्या १ करोड़ ५० लाख है। है। ईरान के राजा रिज़ाअली शाह पहलवी थे। ईरान में मिट्टी का तेल बहुत है। मिट्टी के तेल की उपज में ईरान का संसार में चौथा स्थान है। युद्ध के पहले

ईरान के राजा रिज़ाशाह पहलवी जो सिंहासन से हटा दिये गये।

यहाँ १ करोड़ टन कच्चा मिट्टी का तेल निकलता था तेल साफ करने के पश्चात् दूसरे देशों को भेजा जाता था। ईरान के प्रसिद्ध तेल के कुएँ दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित हैं। तेल निकालने के मुख्य केन्द्र मस्जिदुल सुलेमान और हफ़्कल हैं। यह फारस की खाड़ी से १३० और १०० मील की दूरी पर स्थित हैं। हफ़्कल से १०५ मील दक्षिण-पश्चिम गाचसरन स्थान है। यहाँ के तेल के कुओं की उन्नति अभी हाल में हुई है। नफ़्तीशाह में स्थानीय खर्च के लिये तेल निकाला जाता है। तेल वाले जिले पाइप लाइनों द्वारा मिले हुये हैं। मिट्टी के तेल के साफ करने के कारखाने अबादान में हैं। अबादान के तेल साफ करने का कारखाना संसार के सबसे बड़ा आधुनिक कारखाना है। सबसे पहले इसी स्थान पर ब्रिटिश सेना उतरी और अपने हित साधनों की रक्षा के लिये आगे बढ़ी।

शान्ति के समय यहाँ का तेल योरुप, अफ्रीक़ा, एशिया, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड आदि को जाता था। जब से ऐंग्लो-ईरानियन कम्पनी ने तेल निकालना आरम्भ किया है तब से इङ्गलैण्ड वहाँ के तेल का सबसे बड़ा खरीदार है। पूर्व की ओर युद्ध बढ़ने से ईरान के तेल का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

सामरिक दृष्टि से भी ईरान बड़े महत्व का है। ईरान पर शत्रु अधिकार हो जाने से भारत, इराक़, सीरिया, रूस आदि को भीषण संकट का सामना करना पड़ता। रूस पर पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त

करने तथा काकेशिया और ईरान के तेल के कुओं पर अधिकार जमाने के ध्यान से ही जर्मनी ने ईरान में अपना प्रचार आरम्भ किया। टर्की पर जर्मनी ज़ोर डाल रहा था कि वह दक्षिण की ओर से काकेशिया पर हमला करे। ईरान पर जर्मनी ब्रिटिश अधिकार नहीं देखना चाहता क्योंकि ईरान के मार्ग ही रूस को सहायता पहुँचाई जा रही थी।

जब ईरान में जर्मन प्रचार का ज़ोर बढ़ा और रिज़ाशाह का जर्मनी तथा धुरी राष्ट्रों की ओर झुकाव प्रतीत हुआ तो ब्रिटिश सरकार तथा रूस ने उस पर राजनैतिक प्रभाव डाल कर उसे अपनाने का प्रयत्न किया परन्तु जब राजनैतिक चाल का उस पर प्रभाव न पड़ा तो उत्तर की ओर से रूसी सेनाओं और दक्षिण की ओर से भारतीय सेनाओं ने ईरान में प्रवेश किया और उस पर अधिकार कर लिया।

रिज़ाअली शाह गद्दी से उतार दिया गया और उसके स्थान पर उसका पुत्र गद्दी पर बैठाया गया। ईरान से सभी जर्मन निकाल बाहर किये गये। अब ईरान पर पूर्ण रूप से ब्रिटिश भारतीय सेना का अधिकार है।

★ ★ ★

दिल्ली में ब्रिटिश साम्राज्य का युद्ध सम्बन्धी नया दरबार

अटलांटिक युद्ध में ब्रिटिश जहाज़ इस प्रकार फँसे हैं कि दूसरे युद्ध क्षेत्रों को सामान पहुँचाने के लिये व्यापारी जहाज़ पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं है। रास्ता भी चक्कर दार और संकट मय है। जहाज़ों की कमी को पूरा करने के लिये इस बात की आवश्यकता हुई कि सुदूर युद्ध क्षेत्रों में स्थानीय कारखानों से युद्ध सामग्री तयार की जावे। इसीलिये १९४१ ई० नवम्बर में दक्षिणी, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, रोडेसिया, पूर्वी अफ्रीका, मलय, लंका, हाँग काँग, बरमा और पैलेस्टाइन के प्रतिनिधियों का एक विराट सम्मेलन दिल्ली में हुआ जिसमें भारतीय सरकार से संयुक्त रूप से आर्थिक दशा को संगठित करने की बात चीत हुई। १९१३ ई० के पश्चात् अब तक उपर्युक्त देशों में बहुत कुछ उपज तथा कारखानों में उन्नति हुई है। यदि सभी देशों के आर्थिक साधन संयुक्त रूप से संगठित हो जांय तो युद्ध को बहुत बड़ी सहायता मिलने की आशा है।

क्रिप्स-योजना

लार्ड प्रीवीसील तथा कामन्स सभा के नेता सर स्टैफर्ड क्रिप्स भारत विषयक ब्रिटिश प्रस्ताव लेकर २२ मार्च १९४२ ई० को विशेष वायुयान द्वारा लन्दन से भारत में पधारे। सर स्टैफर्ड क्रिप्स ने भारत के भिन्न भिन्न दलों के नेताओं तथा प्रान्तों के प्रधान मन्त्रियों को दिल्ली में आमंत्रित किया। कांग्रेस, मुसलिम लीग, हिन्दू महासभा,

सर स्टैफर्ड क्रिप्स

देशी राजे महाराजे आदि सभी बुलाये गये। कांग्रेस की ओर से मौलाना अबुल कलाम आजाद (राष्ट्रपति) पंडित जवाहर लाल नेहरू और श्री राज गोपालाचार्य ने बात चीत की। सर स्टैफर्ड क्रिप्स ने निम्नांकित बृटिश युद्ध मंत्री मंडल के प्रस्ताव उनके सामने रक्खे:

सम्राट के प्रस्ताव

(अ) युद्ध बन्द होने के पश्चात् तुरन्त ही भारत के लिये एक नवीन शासन विधान का निर्माण करने के उद्देश्य से बाद में वर्णित आधार पर एक निर्वाचित संस्था क़ायम की जायगी।

(ब) इस विधान बनाने वाली संस्था में देशी रियासतों द्वारा भाग लिये जाने की व्यवस्था जिस प्रकार से की जावेगी उसका वर्णन नीचे है।

(स) सम्राट की सरकार इस प्रकार तयार किये गये विधान को स्वीकार करके कार्यान्वित करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर केवल उसी अवस्था में लेती है जब कि निम्नलिखित शर्तें भी पूरी होती हों।

(१) यदि ब्रिटिश भारत का कोई प्रान्त नये विधान को स्वीकार न करना चाहे तो उसे वर्तमान वैधानिक स्थिति को क़ायम रखने का अधिकार रहे, किन्तु साथ ही में यह व्यवस्था भी रहेगी कि यदि वह प्रान्त बाद में चाहे तो विधान में शामिल कर लिया जाय।

नये विधान मे सम्मिलित न होने वाले ऐसे प्रान्तों को यदि वह चाहे तो सम्राट की सरकार नया विधान देना स्वीकार करेगी और उनका पद भी पूर्ण रूप से भारतीय संघ के ही समान रहेगा। यह विधान उस क्रम से मिलते जुलते ढंग पर तयार होगा, जिसका उल्लेख यहाँ किया गया है।

अल्प संख्यकों की रक्षा

(२) सम्राट की सरकार तथा उस विधान-निर्मातृ संस्था (जो भारतीय होगी) के बीच एक संधि होगी। अंग्रेजों से भारतियों के कंधे पर पूर्ण उत्तरदायित्व हस्तान्तरित होने की सभी आवश्यक समस्याओं का पूर्ण समावेश इस संधि मे रहेगा। सम्राट की सरकार द्वारा दिये गये आश्वासनों को ध्यान में रखते हुये संधि में जातीय तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिये प्रबन्ध रहेगा, किन्तु उसमें ऐसा कोई प्रतिबंध न रक्खा जायगा जिसके कारण भारतीय संघ को ब्रिटिश राष्ट्र मंडल के अन्य सदस्यों से अपने भावी सम्बन्ध निश्चित करने के के अधिकार में कमी होने की सम्भावना हो।

देशी राज्य नये विधान के अनुसार चलना चाहें अथवा नहीं, नई परिस्थित पर दृष्टि रखते हुये, उनकी संधियों की व्यवस्था मे संशोधन करना आवश्यक होगा:—
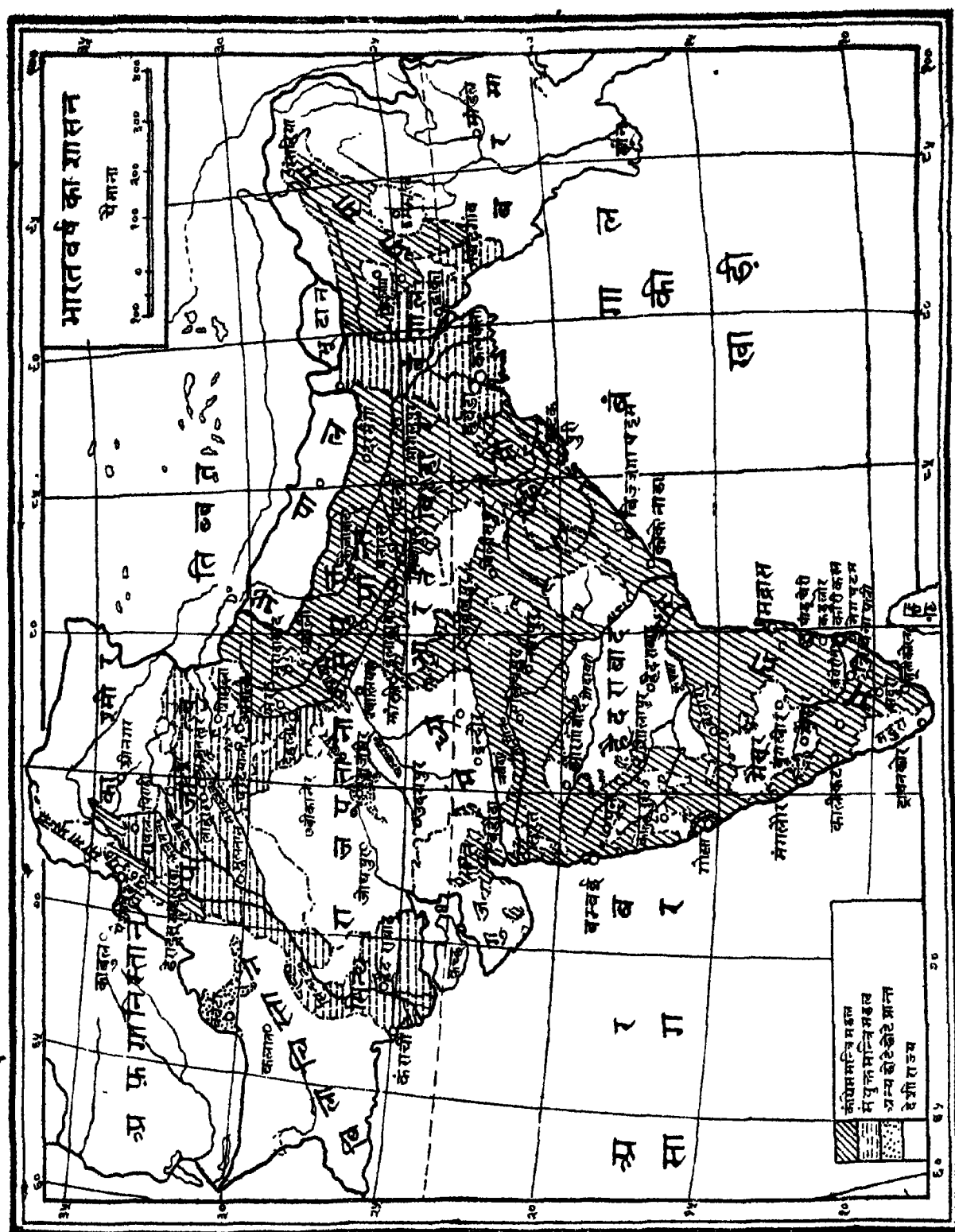
(द) यदि प्रमुख सम्प्रदायों के नेताओं ने युद्ध समाप्त होने तक और किसी प्रणाली के विषय में मिलकर निश्चय न कर लिया तो विधान-निर्मातृ-संस्था का निर्माण इस प्रकार होगा:—

प्रान्तीय चुनाव के परिणाम ज्ञात होते ही (युद्ध समाप्त होने पर प्रान्तीय चुनाव की आवश्यकता होगी) प्रान्तों की निम्न धारा सभाओं के सम्पूर्ण सदस्य मिलकर एक निर्वाचक की हैसियत से बैठेंगे और अनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर विधान निर्मातृ संस्था का चुनाव करेंगे। निर्वाचक मण्डल में जितने व्यक्ति होंगे उसकी दशमांश संस्था इस विधान-निर्मातृ संस्था में होगी।

ब्रिटिश भारत की भाँति देशी राज्यों से भी अपनी जन-संख्या के अनुपात से प्रतिनिधि नियत करने को कहा जायगा और इन प्रतिनिधियों के अधिकार ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधियों के समान रहेंगे।

(य) भारत के आगे संकट काल उपस्थित है। और जब तक नया विधान लागू नहीं होता इसके बीच में सम्राट की सरकार भारत की रक्षा का नियंत्रण और निर्देशन का उत्तरदायित्व सम्पूर्ण विश्व युद्ध प्रयत्नों के एक अंग के रूप में अपने हाथ में रक्खेगी किन्तु भारतीय जनता के सहयोग से देश के सम्पूर्ण सैनिक, नैतिक तथा आर्थिक साधनों का संगठन करने की जिम्मेदारी भारत सरकार पर रहेगी। सम्राट सरकार की इच्छा है और वह भारतीय जनता के विविध वर्गों के नेताओं को आमन्त्रित करती है कि वे अपने देश, ब्रिटिश राष्ट्र मंडल तथा मित्र राष्ट्रों के सलाह-परामर्श में तुरन्त और प्रभावोत्पादक ढंग से भाग लें। इस प्रकार एक ऐसे महान कार्य के करने में वे रचनात्मक और सक्रिय सहायता प्रदान कर सकेंगे, जो भारत की भावी स्वाधीनता के लिये बहुत ही महत्व पूर्ण है।

स्टैफर्ड-योजना के प्रस्तावों पर अखिल भारतीय कांग्रेस कार्य कारिणी समिति ने काफी विचार किया कई दिन तक बैठक रही परन्तु अन्त में क्रिप्स योजना अस्वीकार कर दी गई क्योंकि ब्रिटेन की ओर से भविष्य के लिये तो बहुत कुछ वादे किये गये लेकिन वर्तमान शासन में देश के प्रतिनिधियों को कोई ठोस अधिकार नहीं दिया गया। कांग्रेस भारत की पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा कराना चाहती थी। भारत की रक्षा का भार भारतियों के कंधे पर रखना चाहती थी और केन्द्र में भारतीय कार्य कारिणी परिषद् बनाना चाहती थी।

भारत के अन्य सम्प्रदायिक दलों ने भी योजना अस्वीकार कर दी। मुसलिम लीग के प्रधान मिस्टर जिन्ना ने भी क्रिप्स योजना रद्द कर दी। हिन्दू महासभा ने तो देखते ही उसे स्वीकार करने से इंकार किया था।

भारत के प्राणाधार महात्मा गाँधी

११ अप्रैल को दिल्ली रेडियो से समझौता न हो सकने तथा योजना अस्वीकार होने पर सर स्टैफर्ड-क्रिप्स ने खेद प्रगट किया और फिर लन्दन लौट गये। भारत, इंगलैंड, अमरीका और दूसरे मित्र देशों को समझौता होने की पूर्ण आशा थी परन्तु जब योजना में ठोस वस्तु थी ही नहीं तो समझौता हो ही कैसे सकता था। इसी कारण जब क्रिप्स महोदय ने महात्मा गान्धी से बातचीत की तो महात्मा जी ने पहले ही कह दिया था कि कांग्रेस की ओर से मौलाना अबुल कलाम आज़ाद तथा पण्डित जवाहर लाल नेहरू इस सम्बन्ध में आप से बातें करेंगे और उनकी बातें कांग्रेस को माननीय होंगी। भारतीय पत्रों ने भी योजना को हर पहलू से देखा और आशा की थी कि शायद सर स्टैफर्ड जैसे महान व्यक्ति के प्रभुत्व से कुछ समझौता का मार्ग निकल आवे परन्तु अंत में उन्हें भी एक बार पुनः निराश होना पड़ा।

चीन के विधाता च्याँगकाई शेक का आगमन

जापान की विजय तथा बढ़ती हुई शक्ति और प्रशान्त महासागर में मित्र राष्ट्रों की पराजय देख चीन का निराशा सी हुई अपने लिये भीषण संकट दिखलाई पड़ा इसलिये सोमवार ९ फरवरी को रहस्यमयी विशेष ट्रेन से जनरलासिमो और मैडम च्याँगकाई शेक दिल्ली आये उसी दिन वाइसराय भवन के दरबार हाल में सम्भ्रान्त अतिथियों के सम्मान में स्वागत समारोह हुआ। वाइसराय महोदय ने उनका स्वागत करते हुये एक भाषण दिया जिसके उत्तर में चीन के प्रधान सेनापति तथा विधाता च्याँग काई शेक ने कहा:—

चीन के विधाता मार्शल और मैडम च्यांगकाई शेक

'......अपने मित्रराष्ट्र और चीन से भाई चारे का सम्बन्ध रखने वाले पड़ोसी—भारत देश की यात्रा का अवसर मिलने के कारण मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। मेरी यात्रा का उद्देश्य यह है कि आप, आप की सरकार के सदस्यों तथा भारतीय सार्वजनिक जीवन के प्रमुख व्यक्तियों से विचारों का आदान प्रदान करूँ ताकि आक्रमणकारियों के विरुद्ध संगठित तथा प्रभाव पूर्ण प्रयत्न हो सके। इस सम्मेलन के महत्व को मैं भली भाँति समझता हूँ।..... हमारे देशों के पारस्परिक आध्यात्मिक सम्बन्ध नये नहीं हैं और न अभी थोड़े दिनों से उनका विकाश हुआ है। उन दिनों जिन्हें पौराणिक काल कहा जा सकता है। सत्य की खोज के इच्छुक चीनी यात्री जलहीन मरूभूमि तथा गगन चुम्बी पर्वत श्रेणी को पार करके और मार्ग में अनेक संकटों का सामना करते हुये भारतीय दर्शन की अक्षय धारा का पान करके अपनी

ज्ञान पिपासा शान्त करने आये थे। अवर्णनीय विपत्तियों और कठिनाइयों के रहते हुये भी सत्य के वे खोजक अपने साथ उन अमूल्य ग्रन्थों को ले गये जिनमें भारत का ज्ञान निहित है।······हमारे संग्राम के आरम्भ से ही भारतीय राष्ट्र हमारे प्रति गहरी सहानुभूति प्रगट करता रहा है। इस शत्रु ने जो अब हम दोनों का शत्रु (जापान) है भारत की सहानुभूति को अपनी ओर करने का भरसक प्रयत्न किया था किन्तु भारत एक क्षण के लिये भी भ्रम में नहीं पड़ा। ··········· ····· ·

मार्शल तथा मैडम च्यॉंग काई शेक ने भारतवर्ष के महान व्यक्तियों महात्मा गान्धी, पंडित जवाहर-लाल नेहरू और मिस्टर जिन्ना आदि से भी भेंट करके वर्तमान परिस्थित पर बात चीत की। भारतीय नेताओं ने अपनी भरसक सहायता चीन को पहुँचाने का वचन दिया और कहा कि परतंत्र होते हुये हम पूर्ण रूप से चीन को सहायता पहुँचाने में असमर्थ हैं।

मैडम च्यॉंग काई शेक का अखिल भारतीय महिला मण्डल ने दिल्ली में स्वागत किया और उन्हें बधाई दी।

मार्शल तथा मैडम च्यॉंग काई शेक ने पेशावर और ईरान की भारतीय सेना का भी निरीक्षण किया। वह बरमा में भी अपनी तथा मित्रसेना का निरीक्षण करने गये। भारत में आप दोनों व्यक्तियों का प्रत्येक स्थान पर बड़े समारोह के साथ स्वागत किया गया। आपने शान्ति-निकेतन का भी दर्शन किया और दान दिया।

जब आप भारत से चीन लौट कर गये तो आपने ब्रिटिश सरकार से अपील की कि वह भारत को शीघ्र से शीघ्र स्वतंत्र कर दे और शासन की बागडोर भारतियों के हाथ सौंप दे।

पिछली कुछ सदियों में ऐसी कुछ ही घटनाओं ने भारतीय जनता की भावनाओं को इतना अधिक प्रभावित अथवा अपने आप ही उसकी सद्भावना और सहानुभूति को जागृत किया है जितना कि मार्शल तथा मैडम चियांग काई शेक की यात्रा ने किया है। यह यात्रा एक ऐसे समय में हुई है जब कि चीन और भारतीय संस्कार अपने समान शत्रु से जीवन-मरण का युद्ध कर रहे हैं इसलिये यात्रा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। यह यात्रा एक महान उद्देश्य को लेकर हुई है जिसका अभिप्राय मित्रता के सदियों पुराने बन्धनों को मजबूत बनाना और दो महान राष्ट्रों के समर संगियों की शोपिन संधि पर मुहर लगाना है यह दोनों राष्ट्र ऐसे है जिनमे ८० करोड़ जनता (समस्त संसार की एक तिहाई जन संख्या) है।

चतुर्थ खण्ड

अट्ठारह अगस्त सन् १९४० ई० को घोषणा की गई कि कनाडा की सरकार और संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने संगठित रूप से एक सभा बनाई है जिसके ऊपर पश्चिमी गोलार्द्ध की रक्षा का भार रक्खा गया है। उसके एक या दो दिन के पश्चात् ब्रि० प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल ने कहा कि ब्रिटेन अपने पश्चिमी जहाजी अड्डे उधार-पट्टा व्यवस्था के अनुसार अमरीका को सौंपने के लिये तैयार है। सितम्बर मास में सभापति रूजवेल्ट ने घोषित किया कि पचास पुराने विध्वंसकारक जहाज ब्रिटेन को भेजे जा रहे हैं। ५ नवम्बर को मिस्टर रूजवेल्ट अमरीका के सभापति तीसरे बार निर्वाचित किये गये। दो सप्ताह पश्चात् अमरीका को ब्रिटेन ने उधार-पट्टा व्यवस्था के अनुसार जहाजी अड्डे न्यूफाउण्डलैण्ड, बर्मूदा, बहमास, जमीका, एण्टीग्वाद्वीपों, सेंटलूसिया और ब्रिटिश गायना में स्थित हैं। न्यूफाउण्डलैण्ड और बर्मूदा के अड्डे पारितोषिक रूप से दिये गये हैं। शेष ९९ वर्ष के लिये पट्टे पर दिये गये हैं।

अटलांटिक महासागरीय युद्ध की भीषणता और यारुपीय राष्ट्रों के पतन के पश्चात् अटलांटिक सागर में प्रिन्सआफवेल्स नामक जहाज पर रूजवेल्ट-चर्चिल सम्मेलन हुआ जिससे अटलांटिक चार्टर बना और अटलांटिक सागरीय राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का बीड़ा उठाया गया। रूस पर आक्रमण होने पर संयुक्त राष्ट्र ने रूस को सहायतार्थ वचन दिया।

७ दिसम्बर १९४१ ई० को जापान ने इङ्गलैण्ड और अमरीका पर युद्ध-घोषणा की और थाईलैण्ड, मलय, पर्ल हार्बर, ग्वाम, होनोलूलू और सिंगापुर में जापानी आक्रमण हुये। उसके बाद ९ दिसम्बर को संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने जापान, इटली और जर्मनी पर युद्ध घोषणा की। २२ दिसम्बर को ब्रिटिश प्रधान मन्त्री चर्चिल वाशिंगटन जाकर रूजवेल्ट से मिले।

संयुक्तराष्ट्रअमरीका तथाआधुनिकयुद्ध

५०

इस प्रकार धीरे धीरे अमरीका भी युद्ध क्षेत्र में उतर पड़ा। जापान ने फिलीपाइन द्वीप पर विजय प्राप्त कर ली और वहां की लगभग ४० हजार सेना को गिरफ़ार कर लिया। फिलीपाइन अमरीका के अधिकार में था। मलय, पूर्वी द्वीप समूह, सिंगापुर

फिलीपाइन बरमा आदि के पतन होने पर सर स्टैफर्ड क्रिप्स ब्रिटिश सरकार की ओर से भारत में भारतीय समस्या को हल करने के लिये आये। उनके साथ ही साथ प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के विशेष प्रतिनिधि कर्नल-लूई जानसन भारत आये। उन्होंने दिल्ली में भारतीय कांग्रेस नेताओं, पं० जवाहरलाल नेहरू तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद से बात चीत की और भारतीय जटिल समस्या सुलझाने में सहायता दी।

२३ अप्रैल १९४२ ई० को अखिल भारतीय रेडियो के दिल्ली स्टेशन से लूई जानसन ने ब्राडकास्ट किया और भारत तथा अन्य एशियाई देशों के प्रति संयुक्तराष्ट्र अमरीका का दृष्टि कोण बतलाया। उन्होंने कहा 'अमरीका संसार के देशों की स्वतंत्रता के लिये युद्ध लड़ रहा है। उसे भारत, चीन फिलीपाइन तथा दूसरे एशियाई पराजित देशों से हार्दिक सहानुभूति है। अमरीका ने मित्र राष्ट्रों की स्वतंत्रता की रक्षा का भार उठाया है और शत्रु के विरुद्ध संयुक्त मोर्चों का निर्माण किया है। इसी संयुक्त युद्ध प्रयत्न का एक भाग बन कर अमरीकन टेक्निकल मिशन भारतवर्ष आया है। हमने चीन की रक्षा और उन्नति के लिये उसे युद्ध सामग्री तथा टेक्निकल सहायता देने का वचन दिया है''।

अमरीकन सेना के कुछ दस्ते भारत आ गये हैं और अधिक सेना आ रही है। अमरीकन सेना का उद्देश्य भारत की रक्षा करना तथा शत्रु पर आक्रमण करने के लिये सैनिक अड्डे बनाना बतलाया जाता है। इस समय अमरीका युद्ध पर ३३ अरब डालर प्रति वर्ष व्यय कर रहा है। ग्रीष्म काल (१९४२ ई० का) आधा व्यतीत होते होते वह ४० अरब व्यय करने लगेगा।

* * *

ग्रीनलैण्ड पर संयुक्तराष्ट्र अमरीका का अधिकार

ग्रीनलैंड उत्तरी अटलांटिक सागर में कनाडा और आइसलैंड के बीच में स्थित है। यह एक बर्फीला देश है। साल में केवल कुछ दिनों के लिये यहां के तट खुलते हैं। इसी कारण यहाँ जहाज बहुत कम जाते हैं। यह देश पहले डेन्मार्क के राजा के आधीन था। मार्च १९४० ई० में जब जर्मनी ने डेन्मार्क पर अधिकार किया तो ग्रीनलैंड की दशा शोचनीय हो गई।

यह देश पश्चिमी गोलार्द्ध में स्थित है। यहाँ हवाई अड्डे बनाने की सुविधा है। जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति तथा विश्व-विजय योजना देख कर संयुक्त राष्ट्र अमरीका को पश्चिमी गोलार्द्ध की रक्षा की चिंता उत्पन्न हुई। ग्रीनलैंड में जर्मनी का यदि अधिकार हो जाता तो वहाँ हवाई अड्डे बना कर वह कनाडा और संयुक्त राष्ट्र अमरीका पर हवाई आक्रमण कर सकता था। जर्मन वायुयान वहाँ से उड़ कर बम्ब वर्षा करते और फिर अपने ग्रीनलैंड के अड्डों को लौट जाते। इसलिये डेन्मार्क के पतन होने पर संयुक्त-राष्ट्र अमरीका ने अपनी तथा कनैडा की रक्षा करने के लिये ग्रीनलैंड पर अधिकार कर लिया। ग्रीनलैंड पर अधिकार जमाने से इङ्गलैंड की रक्षा करने और युद्ध-सामग्री पहुँचाने में भी बड़ी आसानी हुई है।
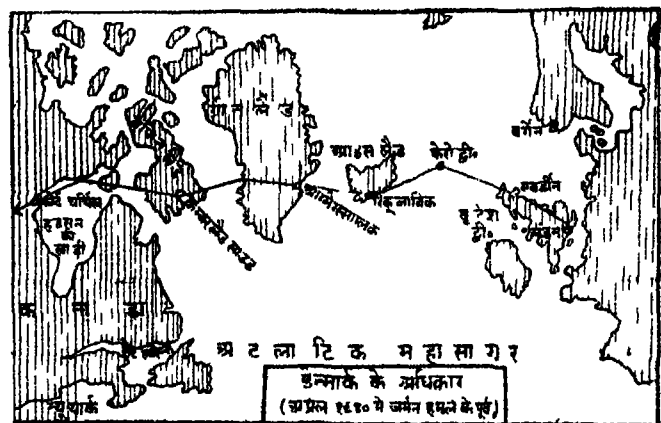
५१

आइसलैण्ड में ब्रिटिश सेना का अड्डा

आइसलैंड ग्रीनलैंड और नार्वे के मध्य उत्तरी अटलांटिक सागर में स्थित है। यह ग्रीनलैंड से १८० मील, फेरो द्वीप से ३०० मील, स्काटलैंड से ५०० मील और नार्वे से ६०० मील दूर है। १९४० ई० के पहले यह द्वीप डेन्मार्क के राजा के अधिकार में था। डेनमार्क के पतन के पश्चात् इसकी महत्ता बढ़ गई।

जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति देख कर संयुक्त राष्ट्र अमरीका और कनाडा का भय उत्पन्न हुआ। संयुक्त राष्ट्र को पश्चिमी गोलार्द्ध की रक्षा करनी थी। इङ्गलैंड की सहायता का भार भी उसने उठाया था। आइसलैंड के उत्तरी-पश्चिमी पहाड़ों से ग्रीनलैंड दिखाई पड़ता है। यह इङ्गलैंड के उत्तरी-पश्चिमी कोण पर स्थित है। इङ्गलैंड का पूर्ण रूप से घेरा डालने तथा अटलांटिक सागर का युद्ध लड़ने के लिये जर्मनी के लिये आवश्यक था कि वह आइसलैण्ड पर अधिकार करता और वहां अपने हवाई तथा जहाजी अड्डे बनाता जिससे वह इङ्गलैंड और अमरीका के जहाजों को डुबोता और इङ्गलैंड पर आक्रमण करता। आइसलैंड से इंगलैंड, कनाडा और संयुक्त राष्ट्र अमरीका पर भी आक्रमण हो सकते थे। इङ्गलैण्ड, स्काटलैण्ड और आयरलैंड में आइसलैण्ड से भीषण बम्ब वर्षा हो सकती थी तथा सेनायें उतारी जा सकती थीं।

इङ्गलैण्ड और अमरीका में ग्रीनलैण्ड और आइसलैंड के सम्बन्ध में बातचीत हुई अन्त में आइसलैंड पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार कर अपना अड्डा जमा लिया। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सेनायें यहाँ आ डटीं। लेकिन इन्होंने आइसलैण्ड की स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप न करने की घोषणा की है।

★ ★ ★

आयरलैंड की स्थिति

आयरलैण्ड के उत्तरी भाग को अलस्टर कहते हैं यह आयरलैण्ड का एक बहुत छोटा भाग है। इसमें ६ काउन्टियां हैं। यह भाग ब्रिटेन के अधिकार में है। महारानी एलिजबेथ के समय में अंग्रेज लोग यहाँ आकर बस गये थे। यह भाग प्रधान आयरलैंड की स्वतन्त्रता में सदैव बाधक बना रहा है। आयरलैंड की प्रजा कैथलिक और अलस्टर की प्रोटेस्टेण्ट है। इसी कारण आयरलैंड की प्रजा जनरल फ्रैंको से सहानुभूति रखती है और मुसोलिनी की ओर कड़ी दृष्टि से नहीं देखती।

इस समय प्रधान आयरलैंड स्वतन्त्र है। १९२१ ई० की संधि के अनुसार लफस्विली, बेरेहेवन और कोम के जहाजी अड्डे एरी को ब्रिटेन ने दे दिये। इनके चले जाने से इङ्गलैण्ड को हानि पहुँची है।

गत महायुद्ध की भांति आधुनिक महासमर में भी आयरलैंड तटस्थ है। मिस्टर डी वेलरा एक शान्ति प्रिय व्यक्ति हैं और अपने देश में युद्ध नहीं देखना चाहते। सन् १९३९ ई० में जब ब्रिटेन में अनिवार्य सैनिक सेवा का निश्चय किया गया तो अलस्टर पर एरी के विरोध के कारण ही यह नियम लागू नहीं किया गया। मई १९४१ ई० में उत्तरी आयरलैंड में भी अनिवार्य सैनिक सेवा का प्रश्न उठा। डी वेलरा ने इसका घोर विरोध किया। इसलिये यह प्रश्न पुनः स्थगित कर दिया गया। फिर भी आयरलैंड के निवासी इङ्गलैण्ड में स्वयंसेवक के रूप में आकर सेना में भरती होते हैं। वह आयरलैंड में सैनिक भेष में नहीं निकल सकते। मिस्टर डी वेलरा चैम्बरलैन की शान्त्वना नीति के अनुयायी हैं। वह आई० आर० ए० (आयरिश प्रजातन्त्र सेना) के भूतपूर्व सदस्य होते हुये भी उसके घोर विरोधी हैं और उसके दबाने का बड़ा प्रयत्न किया है।

आयरलैंड छोटे राष्ट्रों की स्वतंत्रता में विश्वास करता है। वह इसी स्वतंत्रता के लिये इंगलैंड से गत ७०० वर्षों से युद्ध करता रहा है। आयरलैंड की

प्रजा सामाजिक तथा मानसिक रूप से प्रजातन्त्रवादी है फिर भी वह एकवाद को मानने वाली है। ७०० वर्ष के ब्रिटिश शासन ने उनके हृदय पर विभिन्न नीतियों की एक अद्भुत छाप लगा दी है।

आयरलैण्ड को स्वाधीनता दिलाने वाले डीवेलरा।

नाजीवाद और फैसिस्टवाद की नीति से संसार के प्रजातांत्रिक देश चकित तथा भयभीत हो गये हैं परन्तु आयरिश लोगों की दृष्टि में हिटलर आज वही कर रहा है जो कि १६४९ ई० में क्राम्वेल ने ड्रोघेडा के हत्याकांड में किया था और आयरलैंड की प्रजा पर घोर दमन किया था। लार्ड लाएड जार्ज की नीति की भी वह तुलना हिटलर नीति से करते हैं। आयरिश लोग सभी आक्रमणकारियों को एक दृष्टि से देखते हैं। वह सभी आक्रमणकारियों का सामना करने का साहस तथा प्रबल इच्छा रखते हैं और इसी पर उनकी तटस्थ नीति निर्भर है। आज भी आयरिश प्रजा इस बात को मानती है कि अनजान शैतान की अपेक्षा जान पहिचान के शैतान से सम्पर्क रखना कहीं अच्छा है। वह स्वतंत्रता के सच्चे प्रेमी तथा सत्कारी हैं। उनका विश्वास है कि संसार में राष्ट्रों के बीच युद्ध केवल व्यापार और शक्ति बढ़ाने के लिये होता है और ब्रिटिश साम्राज्य ने सदैव इङ्गलैंड की रक्षा तथा प्रभुता के लिये ही युद्ध किया है। इसी कारण वह ब्रिटिश नीति पर उतना ही सन्देह करते हैं जितना कि कोई भी ब्रिटेन निवासी हिटलर पर करता है। हां संयुक्त राष्ट्र अमरीका पर अवश्य ही उनका विश्वास है वहाँ आयरलैंड की ८० लाख प्रजा जाकर बस चुकी है।

आयर और उत्तरी आयरलैंड

५८

आयरलैंड भोजन सामग्री तथा रोजाना के प्रयोग आने वाली वस्तुओं के लिये इङ्गलैंड पर निर्भर है। आयरलैंड का व्यापार भी इङ्गलैंड के जहाजी कम्पनियों पर निर्भर है उसकी रक्षा भी ब्रिटिश जहाजी बेड़े पर ही निर्भर है। आयरलैंड और इङ्गलैंड के मध्य जो जहाज चलते है उन पर ब्रिटेन का अधिकार है। आयरलैंड स्वयं अकेले हिटलर जैसे शत्रु का सामना नहीं कर सकता। यदि वहाँ जर्मन सेनायें उतर जाती हैं तो इँगलैंड की स्थिति और भी अधिक संकट तथा भयानक हो जावेगी। इसी कारण वहाँ अमरीकन सेना उतारी गई है जिसका डी वेलरा ने विरोध किया है।

अटलांटिक का युद्ध-क्षेत्र—१

सितम्बर १९३९ ई० की युद्ध-घोषणा के साथ ही साथ ब्रिटेन ने जर्मनी का ब्लाकेड किया (घेरा डाला) जर्मनी ने इस घेरे को तोड़ने के ध्यान से ही भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में युद्ध किया। जहाँ कहीं ब्रिटिश सेना ने पैर रक्खे जर्मन सेना उसे निकाल बाहर करने के लिये वहाँ पहुँची। समस्त योरुप का युद्ध और रूसी आक्रमण भी ब्रिटिश घेरे का ही फल है। सभी जल-स्थल और वायु के युद्ध इसी घेरे को तोड़ने के ध्यान से किये गये हैं। संकट की परवाह न करके खतरनाक घेरा तोड़ने के लिये जर्मनी ने उल्टा अपना घेरा डालना आरम्भ कर दिया। इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञ तथा युद्ध-कौशल के विशेषज्ञ लोग गतमहायुद्ध और आधुनिक महासमर के मध्यवर्ती काल में योरुपीय संगठन में लगे हुये थे। इङ्गलैण्ड घेरे को ही अपना प्रधान आक्रमणिक अस्त्र समझता था परन्तु हिटलर के प्रतिकूल घेरे का सामना करने के लिये इङ्गलैण्ड के पास काफी लड़ाका और व्यापारिक जहाज नहीं हैं। हिटलर का प्रतिकूल घेरा जो इङ्गलैण्ड के घेरे वाले अस्त्र के विपरीत चल रहा है जर्मनी का प्रधान आक्रमणकारी रक्षक अस्त्र है।

यदि अटलांटिक सागरीय युद्ध में हिटलर ब्रिटिश जहाजों को इतना डुबाने में सफल होता है कि इङ्गलैंड युद्ध चला न सके और अपनी प्रजा को भोजन न पहुँचा सके तो हिटलर की विजय होती है और इङ्गलैण्ड को पराजय हो जाती है। इसके विपरीत यदि इङ्गलैण्ड अपने जहाजों के डुबाये जाने में कमी करके जर्मनी का घेरा डालने में सफल होता है और जर्मनी में संसार के भिन्न-भिन्न देशों प्रधानतः गरम देशों से सामान नहीं पहुँच पाता है तो फिर जर्मनी की विजय होनी सम्भव हो जावेगी। इङ्गलैण्ड का घेरा जिब्राल्टर पर अधिकार जमाये रखने पर ही निर्भर करता है। इस समय रूस पर आक्रमण करके जर्मनी ने स्पेन की पूर्ण सहानुभूति प्राप्त कर ली है। इसी कारण अटलांटिक सागरीय युद्ध इतना महत्व ग्रहण करता जा रहा है।

अटलांटिक सागर के युद्ध का अध्ययन करते हुए जर्मन प्रतिकूल घेरा पांच भागों में विभाजित किया जा सकता है।

जर्मनी बन्दरगाहों पर और उसके समीप सुरंगें लगा देता है। बन्दरगाहों पर और उसमें ठहरे जहाजों पर बम्ब-वर्षा करता है। ब्रिटिश जहाजों पर बम्ब वर्षक, समुद्री आक्रमणकारी जहाजों और यू-बोटों द्वारा आक्रमण हो रहा है।

पहली बात सुरङ्ग बिछाने वाली है। यह कार्य फ्रांस और नार्वे के हवाई अड्डों और बन्दरगाहों से वायुयानों द्वारा होता है मान चित्र के देखने से विमानों के बम्ब-वर्षा करने वाले क्षेत्र अथवा वृत्त का पता लग सकता है। इस प्रकार के आक्रमण समस्त ब्रिटिश बन्दरगाहों पर हो सकते हैं। ब्रिटिश जहाजी बेड़े ने अपने पराक्रम द्वारा इसका सामना किया है और वह सुरंगों को हटाने में सफल हुआ है। इसलिये जहाँ तक सुरंगों द्वारा जहाजों के डुबाये जाने का सम्बन्ध है सुरंगें अपने कार्य में असमर्थ सिद्ध हुई हैं। हाँ सुरंग लगाये हुये बन्दरगाहों से सुरंग हटा कर जहाजों को निकालने में विलम्ब अवश्य होती है।

दूसरी बात बन्दरगाहों पर बम्ब-वर्षा से सम्बन्ध रखती है। १९४० ई० के अगस्त मास में लफ्टवाफे (जर्मन हवाई सेना) के बम्ब-वर्षक विमानों को दिन मे आक्रमण करने में पराजय हुई तो जर्मन बम्ब-वर्षक रात में आक्रमण करने लगे। रात में आक्रमण होने से इङ्गलैण्ड के बहुत से जहाज डूब गये और बहुत से नष्ट हुये। रात्रि की बम्ब-वर्षा के कारण जहाजी घाट और सामान उतारने वाले साधनों को बड़ी भीषण हानि पहुँच रही है सामान उतारने का कार्य तो एक दम नष्ट सा हो रहा है।

रात्रि की बम्ब-वर्षा का सामना करने के लिये विविध भाँति के उपाय किये गये हैं फिर भी पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो पाई है। पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करने के लिये अत्यन्त आवश्यक है कि ब्लैक-आउट (अँधेरा) वाली नीति का अन्त कर दिया

जावे और प्रकाश का प्रयोग रक्षा और आक्रमण दोनों में प्रधान बम्ब-वर्षा किये जाने वाले स्थानों पर इस प्रकार किया जावे कि वे स्थान प्रकाश के पर्दे में ही छिप जावें। वहाँ पर ब्रिटिश लड़ाका विमान इतने मुस्तैद हों कि वे शत्रु के बम्ब-वर्षकों को उसी प्रकार पराजित करें जिस प्रकार अगस्त मास में दिन के समय उन्होंने किया था।

५३

तीसरी बात समुद्र में चलने वाले जहाजों पर बम्ब वर्षकों द्वारा आक्रमण होने से सम्बन्ध रखती है। जिस स्थान से बम्ब वर्षक विमान चलते हैं वहाँ से उनका वृत्त लगभग १५०० मील का होता है। यदि पथ-रक्षक सेना तथा जहाजों का प्रबन्ध इस वृत्त के अनुसार छोटे मार्गों में रक्खा जावे तो बम्ब वर्षा को रोकना सम्भव हो सकता है। यू-बोट के आक्रमण का भय पथ-रक्षक सेना तथा दूसरे जहाजों को रहता है इसलिये समुद्र के उस भाग को जिसमें एक पथ-रक्षक सेना के जहाज हों और यू-बोट काम कर सकें उसे कम से कम क्षेत्र वाला बना देना चाहिये।

बम्ब वर्षक जहाजों का सामना करने के लिये अधिक दूर तक उड़ कर लड़ने वाले तटीय लड़ाका वायुयान होने चाहिये। जहाजों में वायुयान विध्वंसक तोपें भी होनी चाहिये जिससे बम्ब वर्षक बिना चोट खाये हुये वापस लौट कर न जा सकें।

चौथी समस्या समुद्र में चलने वाले जहाजों पर शत्रु आक्रमणकारी लड़ाका जहाजों के आक्रमण की है। यदि शत्रु के पास आक्रमण करने वाले जहाज काफी संख्या में वर्तमान रहते हैं तो फिर इस कठिनाई से छुट्टी मिलनी कठिन है। इस प्रकार के आक्रमण से समुद्र में आने जाने वाले ब्रिटिश जहाजों की रखवाली करने वालों को भी बड़ी कठिनता पड़ती है। पथ-रक्षक सेना के बीच व्यापारिक और सामान वाले जहाजों का जो समूह चलता है उसे भी भीषण संकट का सामना करना पड़ता है। इसका मुख्य कारण यह है कि पथ-रक्षक सेना की शक्ति का अनुमान लगा कर ही शत्रु आक्रमणकारी जहाज उस पर आक्रमण करता है। अटलांटिक महासागर में हजारों जहाज नित्य अकेले चला करते हैं। अकेले चलने वाले जहाजों को जहाँ भीषण खतरा है वहाँ उनके बचने का भी उपाय है। पथ-रक्षक सेना के जहाजों के समूह की अपेक्षा अकेला जहाज आक्रमणकारी जहाज तथा यू-बोट को धोका देने और उनके द्वारा न देखा जाने में अधिक सफल होता है। यदि सामान ले जाने वाले जहाज आक्रमणकारी जहाजों को धोका देकर निकल आते हैं तो फिर इँगलैण्ड के समीप आकर उनके लिये भय कम हो जाता है। यदि फिर भी उन पर आक्रमण होता है

तो उसकी सहायता को ब्रिटिश जहाज काफी मात्रा में दौड़ पड़ते हैं। यदि ये जहाज उसकी रक्षा भी न कर सके तो कम से कम आक्रमण कारी जहाज को ऐसा पाठ पढ़ा देते हैं कि वह फिर जल्दी आक्रमण करने का साहस नहीं करता। इसलिये मार्ग बचा कर चलना ब्रिटिश जहाजों के लिये बड़ा लाभ दायक है।

आक्रमणकारी जहाज बड़े समुद्र में घास के ढेर की आड़ में छिपे रहते हैं। उन्हें ठहरने के लिये किसी बन्दरगाह आदि की कदापि आवश्यकता नहीं है।

बिस्मार्क, ग्राफस्पी, स्चानहोर्स्ट, ग्नोसेनाउ और प्रिन्जयूगेन आदि आक्रमणकारी लड़ाका जर्मन जहाजों को डुबोने और नष्ट करने में जो सफलता ब्रिटिश जहाजों को प्राप्त हुई है उससे शत्रु के दाँत खट्टे हो गये हैं।

इसके साथ ही साथ संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अभी जो नवीन अड्डे पश्चिमी-द्वीप समूह, ग्रीनलैंड आइसलैंड और आर्कनी द्वीपों में बनाये हैं उनसे घूमने वाले जर्मन आक्रमण कारी जहाजों को आक्रमण करने से रोकने में बड़ी सहायता मिली है।

पाँचवीं समस्या सबसे जटिल है। यह यू-बोटों और पनडुब्बी नावों से सम्बन्ध रखती है। आक्रमणकारी जहाजों का पता लगाने पर उसके मार्ग को छोड़कर दूसरा मार्ग बदला जा सकता है। परन्तु यू-बोटों को तो देखा भी नहीं जा सकता। इन्हीं के द्वारा अधिक से अधिक ब्रिटिश जहाज समुद्र की तली में पहुँचे और प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट को कहना पड़ा कि इँगलैंड और अमरीका की जितनी सामूहिक शक्ति जहाजों को बना कर समुद्र में उतारने की है उससे तीन गुने अधिक जहाज जर्मनी डुबो रहा है। इँगलैंड ने सबमेरीन जहाजों और यू-बोटों के शिकार करने के लिये जो आधुनिक उपाय निकाला है उसके कारण पनडुब्बी नावें तथा यू-बोट समुद्र में अधिक भीतर की ओर चले जाते हैं और दिन में पानी के नीचे आक्रमण करने की अपेक्षा रात में पानी के धरातल के ऊपर आकर हमला करते हैं। वह समुद्र में कितनी दूर जाकर आक्रमण करते हैं यह राबिन-मूर जहाज के डुबाये जाने वाले स्थान का अध्ययन करने से पता चल सकता है। यदि पथ-रक्षक सेना की अधिकता कर दी जाय और वह यू-बोटों के मार्ग को बचा कर चलने का प्रयत्न करें तो कम से कम हानि होने की सम्भावना रह जाती है।

जर्मनी के इन पांचों अस्त्रों का सामना करने के लिये इँगलैंड को प्रस्तुत होना पड़ेगा। उसे अपने पथ रक्षक जहाजों की सेना की वृद्धि करनी पड़ेगी। दूर उड़ कर आक्रमण करने वाले लड़ाका विमानों की संख्या बढ़ानी होगी, सबमेरीनों के विध्वंसक जहाज तयार करने पड़ेंगे और जितने जहाज डुबाये जा चुके हैं उनकी संख्या पूरी करने के लिये अधिक से अधिक जहाज बनाने होंगे।

★ ★ ★

अटलांटिक महासागर का युद्ध-क्षेत्र-२

अटलांटिक महासागर के युद्ध का आरम्भ उस समय से होता है जब से अमरीका ने इंगलैंड को युद्ध सामग्री देनी आरम्भ की। मार्ग में हिटलर के यू-बोट सामान ले जाने वाले जहाजों को डुबा देते हैं। सामान ले जाने वाले जहाजों को डुबाने के लिये जर्मनी ने यू-बोट, लम्बे बम्ब वर्षक विमान और समुद्री आक्रमणकारी जहाज मार्ग में लगा रक्खे हैं। इन संहारकारी यन्त्रों से बच कर निकल जाना भी आश्चर्यजनक बात है।

जून सन् १९४१ ई० में जर्मनी अटलांटिक सागर में जिस संख्या तथा मात्रा के अनुसार जहाज डुबो रहा था वह ब्रिटिश जहाज बनाने वाले अड्डों के बनाने वाली शक्ति का तीन गुना था। अमरीका और इंगलैंड में जितने जहाज एक मास में बन सकते थे उसके दोगुने से अधिक जहाज जर्मन संहारकारी यन्त्रों द्वारा समुद्र में डुबा दिये जाते थे।

अमरीका को जर्मनी से जब अधिक भय प्रतीत हुआ तो उसने आइसलैंड और ग्रीनलैंड पर अमरीकन सेना रखने का विचार प्रकट किया। अमरीका को इन द्वीपों का महत्व भली भांति मालूम था।

ग्रीनलैंड अटलांटिक मार्ग के लगभग मध्यवर्ती भाग में स्थित है।

ग्रीनलैंड पश्चिमी गोलार्द्ध में स्थित है इसलिये यदि ग्रीनलैंड पर शत्रु का किसी प्रकार का भी आक्रमण होगा तो उसका सामना अमरीका अवश्य ही करेगा। ग्रीनलैंड और आइसलैंड के उत्तरी मार्ग होकर ही अमरीकन सामग्री इंगलैंड आती है और इसी कारण इसी मार्ग पर जर्मनी का अधिक से अधिक समुद्री आक्रमण होता है।

आइसलैंड, ग्रीनलैंड, एज़ोर्स और केप वर्डी द्वीप-समूह पर यदि जर्मनी का अधिकार हो जाता तो उससे उसकी शक्ति बहुत बढ़ जाती और इंगलैंड की शक्ति बहुत घट जाती साथ ही साथ समस्त प्रजा-तन्त्रवादी देशों के सर्वनाश का भय भी उत्पन्न हो जाता। इसी कारण संयुक्त-राष्ट्र अमरीका ने उपर्युक्त स्थानों पर अधिकार जमा लिया है।

जब डेनमार्क पर जर्मन आक्रमण हुआ तो आइसलैंड ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की। उसके पश्चात् ब्रिटिश सेना ने उस पर अधिकार जमा लिया। ब्रिटिश अधिकार हो जाने के बाद जर्मनी ने अपने बड़े लड़ाका जहाज़ बिस्मार्क को आइसलैंड पर गोलाबारी करने के लिये भेजा। बिस्मार्क के भेजे जाने का एक और उद्देश्य उत्तरी अटलांटिक मार्ग में पथ-रक्षक सेना तथा चौकीदारी करने वाले जहाज़ों की शक्ति का भी अन्दाज़ लगाना था जिससे जर्मनी के जहाज़ और अधिक जहाज़ों पर आक्रमण करके डुबाने में सफल हो सकें। स्वयं हिटलर डुबाये जाने वाले जहाज़ों की संख्या से अधिक जहाज़ डुबाने के प्रबन्ध में था।

उसी समय बर्लिन समाचार से पता लगा कि प्रीन नामक जर्मन डुबुकनी किश्ती लापता हो गई। प्रीन ने ही अंग्रेज़ों के रायल ओक नामक लड़ाका जहाज़ को डुबोया था। जैसे ही जर्मनी ने क्रेचमेर और शेप्के जहाज़ों को अटलांटिक के रण-क्षेत्र से हटाया। वैसे ही ब्रिटिश सबमेरीन नष्ट करने वाले यन्त्रों ने उसका अन्त कर दिया।

हिटलर का ख्याल था कि यू-बोटों की संख्या उत्तरी अटलांटिक में और अधिक बढ़ा दी जाय। धरातल में आक्रमण करने वाले जहाज़ तथा लम्बे उड़ कर बम्ब गिराने वाले विमान भी यू-बोटों के साथ काम पर लगाये गये।

बिस्मार्क के पहुँच जाने पर अटलांटिक सागर में एक भीषण युद्ध हुआ जिसमें बिस्मार्क जहाज़ डूब गया। यह युद्ध अटलांटिक सागरीय के युद्ध नाम से प्रसिद्ध है। परन्तु सचमुच ही यह अटलांटिक सागरीय युद्ध का केवल एक भाग है।

बिस्मार्क जहाज़ का पीछा जिस भीषणता के साथ ब्रिटिश जहाज़ों ने किया और फिर जिस प्रकार भीषण समुद्री युद्ध हुआ वह घटना बड़ी ही रोमांचकारी है। ब्रिटिश जहाज़ों की विजय हुई। बिस्मार्क जहाज़ डुबो दिया गया और हुड (ब्रिटिश) जहाज़ का बदला चुका लिया गया।

अटलांटिक-सागरीय-युद्ध के लड़ने वाले सचमुच तो वे लोग हैं जो छोटे छोटे जहाज़ों पर बैठे ग्रीष्म काल, वर्षा ऋतु और शीतकाल तथा बसंत ऋतु में अटलांटिक सागर में पहरा देते रहते हैं और शत्रु के संहारकारी अस्त्रों का सामना करते हैं।

अटलांटिक सागरीय युद्ध को कुशलतापूर्वक लड़ने के लिये अधिक से अधिक विध्वंसकारक जहाज़, पनडुब्बी नावें, लड़ाका जहाज़, विमान और दूसरे रक्षक यन्त्र तयार किये जा रहे हैं। बड़े बड़े लड़ाका जहाज़ों को भी पथ-रक्षक सेना के साथ जाने का प्रबन्ध किया गया है।

बिस्मार्क के डुबाये जाने के पश्चात् ही रोडने और रामिलीस नामक बड़े लड़ाका जहाज़ पथ-रक्षक सेना के साथ भेजे गये थे। वर्तमान अटलांटिक सागरीय युद्ध बड़ा ही भयानक और रोमांचकारी है। यह अब से पहले वाले समस्त समुद्री युद्धों से कहीं भीषण तथा भयानक है।

उत्तरी सागर

नार्वे और फ्रान्स के तटीय बन्दरगाहों पर अधिकार प्राप्त करने के बाद जर्मनी के वायुयान बम्ब वर्षकों और पन डुब्बी नावों को वहां अड्डा मिल गया। वहाँ अड्डे पाकर ब्रिटिश जहाजों पर और अधिक वेग के साथ आक्रमण होने लगे। जर्मन यू-बोट यात्री तथा व्यापारिक जहाजों पर भी आक्रमण करते थे। उन्होंने जुलाई में अरानडोरा स्टार नामक जहाज को डुबोया जिसमें जर्मन तथा इटैलियन नजर बन्द लोग ईंगलैंड से कनैडा भेजे जा रहे थे उसके बाद दिसम्बर में ब्रिटिश बच्चों से भरे हुये दो जहाज जो कनैडा जा रहे थे उन्हें भी जर्मन यू-बोटों ने डुबा दिया। २६ अक्तूबर को एरी के उत्तरी तट पर जर्मन बम्ब वर्षकों ने एम्प्रेस आफ ब्रिटेन नामक लाइनर जहाज पर बम्बगिरा कर आग लगा दी। यह जहाज ४२ हजार टन का था।

उत्तरी सागर के प्रधान जहाजी अड्डे

५४

जुलाई १९४० ई० के आरम्भ में ब्रिटिश जल सेना ने आर्कनो-आइसलैंड और ग्रीनलैण्ड के मध्य समुद्र में जल सुरंगे बिछा दीं। ग्रीनलैण्ड के युद्ध क्षेत्र में आ जाने से अमरीकन जनमत में परिवर्तन हुआ और अमरीका की प्रजा ने विचार किया कि यदि अमरीका युद्ध से पूर्णरूप से अलग रहता है और जर्मनी की विजय हो जाती है तो इससे संयुक्त राष्ट्र को भी संकट में पड़ने की सम्भावना है।

नवम्बर मास में समाचार द्वारा विदित हुआ कि एक जर्मन पाकेट-लड़ाका जहाज उत्तरी अटलांटिक सागर में चक्कर लगा रहा है। थोड़ी देर के पश्चात् मालूम हुआ कि उसने ३८ जहाजों के पथ रक्षकबेड़े पर आक्रमण किया है। उस बेड़े की रक्षा फर्विसबे नामक सशस्त्र व्यापारिक क्रूजर जहाज कर रहा था आक्रमण होते ही फर्विसबे के संचालक ने अड़तीसों जहाजों को अलग अलग हो जाने की आज्ञा दी और उसके बाद गोले बारी आरम्भ की इस प्रकार उसने ३८ में ३२ जहाज बचा लिये। उसके बाद फर्विसबे शत्रु पर गोला बारी करता हुआ स्वयम् डूब गया।

६ दिसम्बर को कानीर्वोन कासेल नामक क्रूजर जहाज ने मोंटेविडियो के ७०० मील उत्तर-पूर्व की ओर एक जर्मन आक्रमण कारी जहाज से युद्ध किया ८ दिसम्बर को टैम्पिको से एक सामान ले जाने वाला जहाज चला और उसने ब्रिटिश जहाजों के आक्रमण के भय के कारण कूबा में अपने भीतर छिद्र करके अपने आप को डुबो दिया। २९ दिसम्बर को एक जर्मन आक्रमण कारी जहाज पर ब्रिटिश क्रूजर ने उत्तरी सागर में गोलेबारी की जिसमें एक सामान ले जाने वाला ब्रिटिश जहाज डुबाया गया।

ग्राफ स्पी जर्मन जहाज का खाड़ी में लाया जाना

वर्तमान महासमर के आरम्भ होने के लगभग १०० दिनों के पश्चात् जर्मन जहाजी बेड़े के पाकेट (जेबी) लड़ाकू जहाज डचलैण्ड, स्चियर और ऐडमिरल ग्राफस्पी समुद्र में युद्ध के लिये बाहर निकले। यह जर्मनी के ८ बड़े लड़ाकू जहाजों में से थे। समस्त संसार को विदित हो गया कि यह जहाज बाहर निकल चुके हैं और ब्रिटिश जहाजी बेड़े के जहाज उनकी खोज में रात-दिन लगे हुये हैं।

१३ दिसम्बर सन् १९३९ ई० को ग्राफस्पी यूरूग्वे के तट पर जाता हुआ दिखाई पड़ा। यह जर्मन पाकेट लड़ाकू जहाजों में तीसरा और सबसे नया आधुनिक जहाज था। इसको ६ बजे सबेरे एक ब्रिटिश छोटे लड़ाकू जहाज तथा फारमूसे नामक फ्रान्सीसी जहाज ने देखा। ब्रिटिश लड़ाकू जहाज की चाल ३२ नाट प्रति घंटे से अधिक थी और ऐड-मिरल ग्राफ स्पी की चाल केवल २७ नाट प्रति घंटे थी। इसलिये दो घंटे के भीतर ही अंग्रेजी जहाज ग्राफ स्पी के पास पहुँच गया। समीप पहुँच जाने पर दोनों जहाजों ने गोले चलाने आरम्भ कर दिये। ग्राफ स्पी ने आशा की थी कि वह अपने शत्रु जहाज को हरा कर डुबा देगा। परन्तु उसी समय एक्जटर नामक दूसरा ब्रिटिश जहाज वहां पहुँच गया।

किनारे के निवासी अचानक तोपों का गरजना सुनकर बाहर निकल पड़े थे। वे धुआंधार युद्ध को देख रहे थे। उन्होंने १२ बार तोप की गरज सुनी। ब्रिटिश जहाज को धुंआंधार सीटी देते हुये भी देखा। धुंये से सारा आकाश काला हो रहा था।

दूसरे जहाज को देखकर ग्राफ स्पी खुले समुद्र की ओर बढ़ा परन्तु दूसरा ब्रिटिश जहाज उसके समीप होने लगा। तट के समीप ही दौड़ते हुये दोनों जहाजों में युद्ध होने लगा। दिन भर युद्ध होता रहा। जितनी शीघ्रता के साथ ग्राफ स्पी के इंजिन कार्य कर सके उतनी शीघ्रता से ग्राफ स्पी प्लेट नदी की ओर अपनी रक्षा के लिये बढ़ा। वह तेजी के साथ तोपों से गोलाबारी भी कर रहा था। उस समय तक एचिलिस नामक एक तीसरा ब्रिटिश लड़ाकू जहाज भी पहुँच चुका था। ब्रिटिश जहाज ग्राफ स्पी को डुबाने अथवा बेकार करने की कोशिश यूरूग्वे के समुद्र में पहुँचने के पहले ही कर रहे थे।

लड़ते लड़ते संध्या हो गई और अंधेरा छा गया और ग्राफ स्पी की (टार्च) चोर बत्ती किनारे पर खुले समुद्र की खोज में प्रकाशित होने लगी। वह मान्टीविडियो बन्दरगाह के निकास की खोज कर रहा था। जहाजी पुलिस ने मार्ग बतलाया और जहाज लंगर के स्थान पर नावों द्वारा खींच कर पहुँचाया गया। ऐम्बुलेन्स बोट उसकी सहायता को दौड़े। ३६ आदमी मरे और ६० घायल ग्राफ स्पी से उतारे गये। घायलों में ग्राफ स्पी का कैप्टन भी था।

* * *

भूमध्य सागर के मार्ग

भूमध्य सागर में प्रवेश करने के लिये तीन जगत प्रसिद्ध जल मार्ग हैं। इसके पश्चिम की ओर का द्वार-मार्ग जिब्राल्टर प्रणाली है। इस संकरी प्रणाली द्वारा रूम सागर अटलांटिक सागर से मिलता है। यदि यह मार्ग न होता तो पश्चिमी योरुप और अमरीका के जहाजों को भूमध्य सागर में प्रवेश करना ही असम्भव हो जाता। जिब्राल्टर पर ब्रिटिश अधिकार है। वहाँ एक बड़ी ब्रिटिश जल सेना रहती है। जो भूमध्य सागरीय ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करती है। जिब्राल्टर से यदि एक सीधी रेखा स्वेज को खींची जावे तो वह अफ्रीका महाद्वीप के त्रिभुज की आधार होगी। इस आधार के पूर्वी सिरे पर स्वेज नहर है। स्वेज भूमध्य सागर का दूसरा बड़ा मार्ग है जो लाल सागर को रूम सागर से मिलाता है। पहले जब यह नहर न थी तो पश्चिमी राष्ट्रों के जहाज अफ्रीका का चक्कर काट कर पूर्वी देशों

को पहुँचते थे। इसके बन जाने से उन्हें हजारों मील के चक्कर लगाने से बचत हो गई।

तीसरा मार्ग मारमोरा सागर, डार्डनलीस और बास्फोरस जलसंयोजक का है। यह काला सागर को रूम सागर से मिलाते हैं और रूस, बल्गेरिया रूमानिया और काकेशिया के लिये जल मार्ग बना देते हैं।

स्वेज नहर पर ब्रिटिश जल सेना का एक बड़ा जहाजी बेड़ा रहता है। नहर पर ब्रिटेन का अधिकार है। डार्डनलीस और बास्फारस पर टर्की का अधिकार है। स्वेज से जिब्राल्टर की दूरी लगभग २००० मील है।

★ ★ ★

माल्टा की गोलेबारी

माल्टा द्वीप चारों ओर से घिरा है। उत्तर की ओर सिसली ६० मील की दूरी पर, पश्चिम की ओर १५० मील की दूरी पर पंटेलारिया और दक्षिण की ओर २१० की दूरी पर ट्रिपली स्थित हैं। इटली को माल्टा पर आक्रमण करने के लिये सभी भौगोलिक सुविधायें प्राप्त थीं परन्तु फिर भी वह उसे परास्त करने में असफल हुआ। अब इटली ने जर्मनी का सहारा लिया है। अब तक माल्टा पर लगभग १००० हवाई आक्रमण हो चुके हैं और १२०० बार खतरे की घंटी बज चुकी है। माल्टा का प्रसिद्ध हवाई स्टेशन हल्फार है।

माल्टा द्वीप में ब्रिटिश जल सेना का प्रसिद्ध मजबूत जल सैनिक अड्डा है। इसकी सामरिक स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। यह भूमध्य सागर के लगभग मध्यवर्ती भाग में इटली के समुद्री तट से ५८ मील की दूरी पर स्थित है। माल्टा से इटली तथा सिसली पर कई बार हवाई आक्रमण हो चुके हैं। माल्टा द्वीप १७ मील लम्बा और ८ मील चौड़ा है।

जब तक माल्टा, जिब्राल्टर और साइप्रस पर ब्रिटिश अधिकार है जर्मन भूमध्य सागर में विजयी नहीं हो सकते। माल्टा पर शत्रु ने जल तथा आकाश मार्ग से हजारों आक्रमण किये हैं और कर रहा है फिर भी माल्टा आक्रमणों का सामना साहसपूर्वक कर रहा है। माल्टा पर कदाचित संसार के सभी स्थानों से अधिक बम्ब वर्षा की गई है फिर भी उसकी नीति तथा दृष्टिकोण में किसी प्रकार का भी अन्तर नहीं हुआ है।

यह द्वीप पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ के निवासियों ने पहाड़ियों को काट कर अपने लिये सुरक्षित स्थान बना लिये हैं। बम्ब वर्षा के समय वह इन्हीं स्थानों में चले जाते हैं। पहाड़ी तोड़ कर इन स्थानों तक बम्ब नहीं पहुँच सकते।

५५

जिब्राल्टर की क़िलेबन्द पहाड़ी

जिब्राल्टर उस स्थान पर स्थित है जहाँ भूमध्य सागर अटलांटिक महासागर से मिलता है। जिब्राल्टर की पहाड़ी लगभग ५०० गज ऊँची है। अब से २०० वर्ष पूर्व अंग्रेज मल्लाहों ने इस पर अपना अधिकार जमा लिया था तबसे यह पहाड़ी अंग्रेजों के अधिकार में चली आ रही है। इस पहाड़ी की तलहटी में समतल धरती बहुत कम है। इसलिये यहाँ जिब्राल्टर नाम का जो छोटा नगर बस गया वह कुछ समुद्र के किनारे और अधिकतर पहाड़ी ढालों पर बसा। पर बृटिश सरकार ने जहाजों के टहरने के लिये अच्छा बन्दरगाह बना दिया। अटलांटिक महासागर की लहरों को रोकने के लिये एक बड़ी दीवार पहाड़ी की तलहटी से लेकर समुद्र के भीतर तक बना दी गई है। यह पहाड़ी भूमध्य सागर की कुञ्जी है। इसी से यहां जगह जगह परबड़ी बड़ी तोपें लगा दी गई हैं।

जिब्राल्टर तीन मील लम्बा है। जिब्राल्टर नगर में दुनिया भर में सबसे अधिक मजबूत क़िलेबन्दी है लेकिन इसका कोई भाग पौन मील से अधिक चौड़ा नहीं है। यह अल्जीसीरास की खाड़ी के ठीक सामने है। यहां पर बृटिश जल सेना का अड्डा है। जर्मनी के भड़काने से शायद स्पेन इसे वापस लेने की चिंता करे। यहां कुछ हवाई हमले हो चुके हैं।

जिब्राल्टर से माल्टा की दूरी ९९१ मील है। माल्टा भी बृटिश अधिकार में है और वहां बृटिश जल सेना का एक प्रसिद्ध जहाजी तथा हवाई अड्डा है। जिब्राल्टर निकल जाने से माल्टा को भी आत्म-

५६

समर्पण करना पड़ेगा यद्यपि अब तक वह शत्रु के हजारों हवाई आक्रमणों की बौछार सहन कर चुका है और फिर भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। माल्टा से ९०० मील की दूरी पर सिकन्दरिया और ११०० मील की दूरी पर पोर्टसईद का बन्दरगाह है। जहां पर बृटिश जल सेना का अड्डा है।

स्वेज़ का मार्ग

स्वेज़ नहर ८७ मील लम्बी है और लाल सागर को रूम सागर से मिलाती है। इसके उत्तरी सिरे पर पोर्टसईद बन्दरगाह स्थित है। पोर्टसईद तथा स्वेज़ पर बृटिश सरकार का अधिकार है। गत महासमर में टर्की ने स्वेज़ नहर पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया था। आधुनिक महासमर में भी इटली ने पहले उत्तरी अफ्रीका पर अधिकार करके स्वेज़ पर कब्ज़ा करना चाहा था। पर उत्तरी अफ्रीका में उसकी पराजय हो गई।

वर्तमान समय में जनरल रोमेल (जर्मन) बड़ी तेज़ी के साथ स्वेज़ नहर की ओर अग्रसर हो रहा है। समस्त लीबिया, तोब्रुक आदि से उसने बृटिश सेना को निकाल बाहर किया अथवा पकड़ लिया है। समस्त उत्तरी अफ्रीका पर जनरल रोमेल ने अधिकार कर लिया है और मिस्र के कुछ भाग पर सिक्का जमा बैठा है। अब वह स्वेज़ पर अधिकार जमाने का विचार कर रहा है। भूमध्य सागर की ओर से भी जर्मन सेनायें स्वेज़ की ओर बढ़ रही हैं। क्रीट पर जर्मनी का अधिकार हो ही चुका है साथ ही साथ दक्षिणी एजियन सागर के लेरोस, रोडेस आदि द्वीपों पर जर्मनी ने अपने हवाई अड्डे बना लिये हैं। इस प्रकार उत्तर तथा पश्चिम की ओर से जर्मनी स्वेज़ पर बढ़ना चाहता है।

यदि स्वेज़ पर शत्रु सेना का अधिकार हो जाता है तो फिर भूमध्य सागर के बृटिश माल्टा, साइप्रस, पांटेलैरिया आदि स्थानों की बुरी दशा हो जावेगी। मिस्र, सीरिया, पैलेस्टाइन, इराक़, ईरान और भारतवर्ष की भी रक्षा करनी असम्भव हो जावेगी। काकेशिया की स्थिति भी जटिल रूप धारण कर लेगी।

५७

जिब्राल्टर और स्वेज़ पर धुरी अधिकार होने से मित्र सेना भूमध्य सागर में प्रवेश न कर सकेगी और अफ्रीका के दक्षिण होकर जहाज़ पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व जा सकेंगे जिनका मार्ग बड़ा ही संकटपूर्ण होगा।

ओरन में विची [फ्रांस] की जल सेना

आधुनिक युद्ध के आरम्भ में इङ्गलैंड तथा फ्रांस में यह बात तय हुई थी कि कोई भी राष्ट्र शत्रु के साथ अलग होकर संधि न करेगा। फ्रान्स के पतन होने पर विची सरकार (जनरल पेतां की सरकार) और जर्मनी के मध्य

५८

क्षणिक संधि हुई। इस संधि के होने के पूर्व ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल और फ्रान्स के प्रधान नेताओं के मध्य बातचीत हुई जिसमें फ्रांस ने इंगलैंड को विश्वास दिलाया कि फ्रांसीसी जहाजी बेड़ा जर्मनी के हाथ नहीं लगने पावेगा। परन्तु क्षणिक संधि की आठवीं धारा के अनुसार सशस्त्र-फ्रांसीसी जहाज जर्मनी और इटली के अधिकार में बन्दरगाहों पर भेज दिये थे।

फ्रांसीसी-जर्मन क्षणिक संधि धारा ८—"फ्रांसीसी जहाजी युद्ध बेड़ा इटली अथवा जर्मनी के अधिकार किये हुये बन्दरगाह पर एकत्रित करके निशस्त्र कर दिया जावेगा, केवल फ्रान्सीसी साम्राज्य की रक्षा के लिये आवश्यक जहाजी बेड़ा रह सकेगा ...... जर्मन सरकार सत्यता के साथ घोषित करती है कि वह अधिकार किये हुये बन्दरगाहों के लड़ाके जहाजों का प्रयोग तट की रक्षा तथा सुरंग हटाने के अतिरिक्त और किसी कार्य में न करेगी ....संधि के समय जर्मन सरकार फ्रांसीसी जल सेना पर किसी प्रकार की मांग न करेगी। फ्रांसीसी उपनिवेशों के जहाजी बेड़े के जहाजों के अतिरिक्त सभी फ्रांसीसी लड़ाका जहाज वापस बुला लिये जावेंगे।"

इंगलैण्ड को सन्देह हुआ। इसलिये कुछ दिनों के पश्चात् पोर्ट्समाउथ, प्लाईमाउथ, शियरनेस और सिकन्दरिया बन्दरगाह के फ्रांसीसी लड़ाका जहाजों को इंगलैंड ने छीन लिया। ओरन बन्दरगाह के दो लड़ाका जहाजों ने दूसरे लड़ाका जहाजों, छोटे क्रूशियर जहाजों, विध्वंसकारक जहाजों और पनडुब्बी नावों के साथ ब्रिटिश शर्तों को मानने से इनकार कर दिया। इस पर वाइस-ऐडमिरल सोमेरविल्ले ने उन पर गोलबारी की आज्ञा दे दी। गोलेबारी के कारण कुछ जहाज डूब गये केवल एक लड़ाका क्रूशियर टूला भाग गया और कुछ घायल हो गये।

ब्रिटिश चैनल की पहरेदारी

और

जर्मन जहाजों का भाग निकलना

जुलाई १९४० ई० में जर्मनी उत्तरी फ्रान्सीसी तट से ब्रिटिश चैनल के जहाजों पर आक्रमण करने लगा। जुलाई के आरम्भ में जर्मनी ने इंगलिश चैनल के बन्दरगाहों पर अधिकार जमाया। २९ जुलाई को डोवर बन्दरगाह पर भीषण हवाई आक्रमण हुआ। आध घंटे के भीतर ही ८० शत्रु विमानों में से २८ गिरा दिये गये। अगस्त मास में जर्मन विमानों ने पथ-रक्षक जहाजों, जहाजी अड्डों (यारमाउथ, इप्सविच, हार्विच, डोवर, लन्दन, पोर्ट समाउथ, बृस्टल, प्लाईमाउथ आदि) और बृटिश चैनल के हवाई अड्डों पर भीषण हवाई हमले किये और बृटेन के अधिकांश नगरों पर रात में हवाई हमले हुये।

अगस्त मास में बृटेन में १०९६ जर्मन विमान गिराये गये। सितम्बर मास में १०७१ शत्रु विमान गिराये गये। १५ अगस्त, ७ सितम्बर, १५ सितम्बर और २७ सितम्बर का भयानक हवाई युद्ध हुये।

इसी बीच आर० ए० एफ० के विमानों ने डच, बेल्जियम और फ्रांसीसी तट के चैनल बन्दरगाहों पर हवाई आक्रमण किये। युद्ध आरम्भ होने के पश्चात् से आज तक बृटिश चैनल में सैकड़ों हवाई तथा समुद्री युद्ध हो चुके हैं। बृटिश चैनल की पहरेदारी बृटिश लड़ाका जहाज, विध्वंसकारक जहाज, पनडुब्बी नावें, क्रूशियर जहाज, आर० ए० एफ० के लड़ाका तथा बम्ब वर्षक विमान, तटीय तोपें आदि करते हैं। शत्रु विमान अथवा जहाज को देखते ही वह उस पर टूट पड़ते है और मार भगाते या नष्ट कर डालते हैं।

११ फरवरी सन् ११४२ ई० को कुछ जर्मन जहाज बृटिश चैनल में दिखलाई पड़े। उनकी रक्षा जर्मन वायुयान कर रहे थे। शत्रु जहाजों को देखते ही बृटिश वायुयान (बम्ब वर्षक तथा लड़ाका) और विध्वंश कारक जहाज आगे बढ़े और उन पर आक्रमण हुआ। चैनल तट से दूर गोला फेंकने वाली तोपों ने भी गोलेबारी आरम्भ की। बृटिश तटीय तोपों का उत्तर शत्रु की फ्रान्सीसी तटीय तोपों ने दिया।

११ बजे दिन को हवाई तथा समुद्री संग्राम आरम्भ हुआ और ४ बजे तक जारी रहा। इस भीषण संग्राम में बृटिश वायुयानों ने ११० बार जर्मन जहाजों पर हवाई आक्रमण किये और ४ हजार टन के बम्ब गिराये। ४२ बृटिश विमान नष्ट हुये और २४७ वायुयान सैनिक मरे। एक समुद्री जहाज तथा एक विध्वंस कारक जहाज डूबा। बादल और कुहरे के कारण तथा धुँये की अधिकता से शत्रु की हानि का पता नहीं चल सका। जर्मन जहाज निकल कर उत्तरी सागर की ओर अपने नियत स्थान को चले गये।

यह जर्मन लड़ाका जहाज ब्रेस्ट तथा ला पैलिस (फ्रांसीसी तट के) बन्दरगाह पर थे। इनका नाम स्चार्न होर्स्ट, ग्नीसेनो और प्रिन्स यूगेन था। यह चोट खाये हुये ब्रेस्ट में पड़े थे। इन पर लगातार ब्रिटिश हवाई हमले होते रहे और इनकी मरम्मत न हो सकी। इनको जर्मन लोग वापस ले जाना चाहते थे। वापस ले जाने में ही ५ घंटे तक घोर हवाई तथा समुद्री संग्राम करना पड़ा।

स्चार्नहोर्स्ट और ग्नीसेनो युद्ध पोत २६ हजार टन के प्रत्येक हैं। प्रत्येक पोत में ९ तोपें ५.५ इञ्च वाली और ३० वायुयान संहारिणी तोपें हैं। प्रत्येक जहाज में वायुयानों के लिये भी स्थान है और १४६१ सैनिक आ सकते हैं। इनकी चाल ३० नाट प्रति घन्टे है। यह जनवरी १९३५ ई० में विलियम्स-हेवेन में तयार किये गये थे।

प्रिन्स यूगेन १० हजार टन वाले हिपेर श्रेणी के

५० क्रूजियर जहाजों में से है। यह १९४१ ई० में तयार हुआ है। इसमें ८ तोपें ८ इन्च वाली, १२ तोपें ३·५ इन्च वाली ४ वायुयान संहारिणी तोपें, ४ वायुयान तथा ८३२ सैनिक रहते हैं।

इन शत्रु लड़ाका जहाजों के भाग निकलने से ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में बड़ी सनसनी फैल गई और कामन्ससभा में प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल से पहरेदारी के सम्बन्ध में प्रश्न किये गये।

★ ★ ★

ब्रिटिश द्वीप समूह पर हवाई आक्रमण होने के पश्चात् ब्रिटिश विमानों ने भी फ्रांस, हालैंड बेल्जियम के जर्मन हवाई, सैनिक और जहाजी अड्डों पर हवाई हमले किये। यह हमले प्रत्येक रात में मौसम अच्छा और खराब होने पर भी होते रहे। हमले अस्त्र-शस्त्र तयार करने वाले कारखानों, वायुयान कारखानों, तेल साफ करने के कारखानों, गोदामों, बिजली तयार करने के स्थानों, रेलवे लाइनों, स्टेशनों और नहरों पर भी किये गये। अधिकतर यह आक्रमण कील, हैम्बर्ग, एम्डेन, विलियम्स-हेवेन, ल्नाब्रूक, पोर्टसंड, सहर, डस-लडार्फ, कलोन, ल्यूना, बर्लिन, स्टेटिन, ब्रेस्ट, चेरबर्ग, हाब्रे, डांपे, आमीन्स, बोलोन, डंकिर्क, न्यूपोर्ट, ब्रूसेल्स, राटर्डम आदि नगरों पर हुये।

ब्रिटिश विमानों के हवाई आक्रमणों से घबड़ा कर जर्मन कारखाने पश्चिम की ओर से पूर्व की ओर हटाये जाने लगे परन्तु ब्रिटिश विमानों ने स्टेटिन नगर तक आक्रमण किया। बर्लिन, सैक्सनी के कारखानों, स्कोडा कारखानों (पिल्सन) पर भीषण बम्ब वर्षा की गई। ९ नवम्बर को म्यूनिक नगर में ब्रिटिश विमानों ने उस समय रात में बम्ब गिराये जबकि हिटलर का भाषण होने को था।

३१ मई सन् १९४२ ई० को १००० ब्रिटिश बम्ब वर्षक विमानों ने कोलोन नगर पर आक्रमण किया। इस आक्रमण से शत्रु की बड़ी हानि हुई। यह आधुनिक युद्ध का सबसे बड़ा हवाई आक्रमण है। इससे पहले कभी भी एक हजार बम्ब वर्षकों ने हवाई आक्रमण में एक साथ भाग नहीं लिया था।
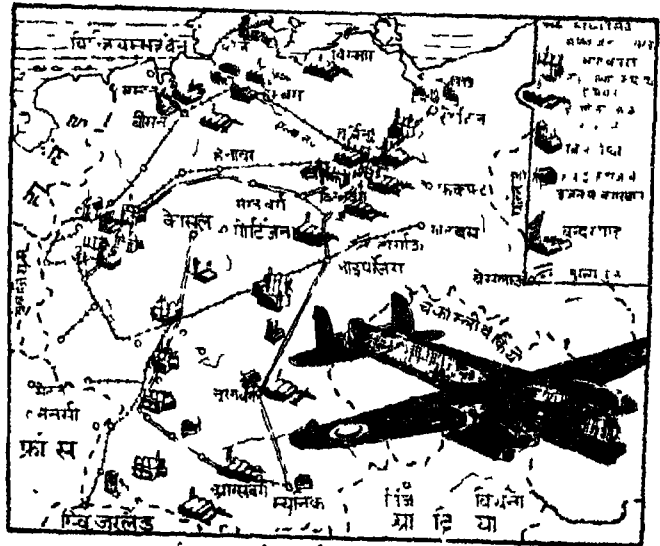
जर्मन कारखानों पर ब्रिटिश हवाई हमले

५९

जर्मन हवाई आक्रमण

अगस्त १९४० ई० से जर्मनी ने अपने आक्रमण इङ्गलैण्ड पर आरम्भ किये। हवाई आक्रमण के बाद जर्मनी इङ्गलैण्ड पर अपनी सेना उतार कर आक्रमण करना चाहता था। परन्तु उसे सफलता नहीं हुई। जब से जर्मन आक्रमण आरम्भ हुये हैं वह लगातार जारी हैं। अधिकांश हवाई हमले प्रान्तीय नगरों, मर्सीसाइड, मध्यवर्ती भूमि और दक्षिणी पश्चिमी भाग में हुये हैं। १४ नवम्बर को कवंट्री में भीषण आक्रमण हुआ।

ब्रिस्टल, साउथहैम्पटन, शेफील्ड, प्लाईमाउथ, लन्दन, लिवरपूल, कार्डिफ, पोर्ट्समाउथ, और मानचिस्टर नगर पर भीषण विस्फोटक तथा आग लगाने वाले बम्ब गिराये गये जिनसे बड़ी भीषण हानि हुई। आक्रमण में व्यापारिक तथा निवास स्थान वाले भागों को अधिक हानि पहुँची। सैनिक स्थानों, अड्डों तथा कारखानों को कम हानि पहुँची है। लन्दन पर जो भीषण हवाई आक्रमण हुये हैं उनसे व्हाइट हाउस पार्लियामेन्ट भवन तथा लन्दन के बड़े बाजार गिरजाघर और प्रसिद्ध भवन सभी नष्ट कर दिये गये हैं।

लन्दन नगर में नवम्बर महीने में ४५८८ नागरिक मारे गये और ६००० घायल हुये। इङ्गलैण्ड के नागरिक पुरुष, स्त्री और बच्चे जो हवाई आक्रमण में मारे गये या घायल हुये उनकी सबसे अधिक संख्या सितम्बर १९४० की है। उस महीने में ७००० व्यक्ति मारे गये और लगभग १०,५०० घायल हुये। अक्टूबर मास में मरने वालों की संख्या घट कर ६ हजार और घायलों की संख्या लगभग ९ हजार हो गई। नवम्बर में साढ़े ४ हजार मारे गये और ६००० घायल हुये। दिसम्बर में मरने वालों की संख्या घट कर ४००० और घायल होने वालों की ५००० हो गई।
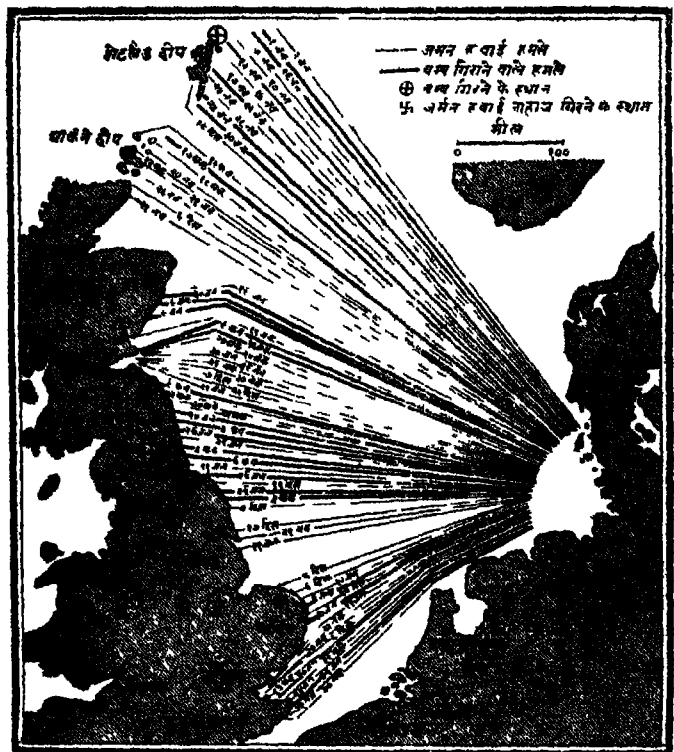
६०

वास्तव में ही जर्मन हवाई आक्रमण से लन्दन तथा इंगलैंड के दूसरे प्राचीन तथा बड़े नगर नष्ट हो गये। वहां के ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक स्थान नष्ट कर दिये गये और भीषण हानि पहुँचाई गई फिर भी ब्रिटिश जाति ने अपना सिर नहीं झुकाया और शत्रु के हवाई हमलों का साहस के साथ सामना किया।

पंचम खण्ड

प्रशान्त महासागरीय युद्ध को समझने के लिये सामरिक स्थानों की दूरी जानना बहुत आवश्यक है। नीचे कुछ स्थानों की दूरी इस प्रकार है:—

सैनफ्रांसिस्को से	याकोहामा	४५००	मील
” ”	होनोलूलू	२५६०	”
” ”	समोआ	४२००	”
सिंगापुर से	हांगकांग	१४४०	”
” ”	बोर्नियू	१२००	”
” ”	बटाविया	५०५	”
पर्ल हार्बर से	याकोहामा	२४००	”

प्रशान्त महासागर के हवाई मार्ग

१७ या १८ नाट प्रति घंटे की चाल से चलने वाले जहाजी बेड़े को १००० मील का मार्ग समाप्त करने में ढाई दिन लग जाते हैं इसलिये जल सेना के युद्ध में काफी समय लग जाता है। इसके अतिरिक्त एक बड़े जहाजी बेड़े को पनामा से मनिला तक प्रशान्त महासागर पार जाने में ३ लाख टन पेट्रोल की आवश्यकता होती है। दक्षिणी-पश्चिमी प्रशान्त महासागर में बड़े जहाजों के ठहरने के लिये सूखे घाट नहीं हैं जिससे जहाजी बेड़े को बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती है। इस भाग में कोई ऐसे घाट नहीं हैं जहाँ जहाजों की मरम्मत हो सके। अतः यदि जापान को अपने किसी क्रूशियर जहाज की मरम्मत कराने की आवश्यकता पड़ती है और वह स्वयम् नहीं चल सकता तो उसे दो हजार या तीन हजार मील लम्बा मार्ग समाप्त करके जापान के किसी जहाजी

घाट पर ले जाना पड़ता है जहाँ उसकी मरम्मत ठीक रूप से हो सके। मनिला में मरम्मत का छोटा-मोटा काम हो सकता है। परन्तु फिर भी मरम्मत करने वाले कारीगरों तथा मरम्मत का सामान बाहर से लाना होगा सुर्बाया बन्दरगाह पर क्रूशियर जहाजों की मरम्मत हो सकती है और बटाविया में जहाजी घाट बने हैं। बड़े जहाज़ जिन्हें सूखे घाट की आवश्यकता है उन्हें सिंगापुर जाना पड़ता है या उन छोटे घाटों का जाना होता है जो संसार को अभी अज्ञात हैं। आस्ट्रेलिया के जहाज़ी घाट में ३० हज़ार टन का जहाज़ नहीं समा सकता। सबसे समीपवर्ती हिन्दमहासागर पर डर्बन का घाट १ हज़ार फुट लम्बा है।

सामुद्रिक युद्ध की इन कठिनाइयों का अनुमान साधारण व्यक्ति नहीं लगा सकता परन्तु इनका जहाज़ी युद्ध में भारी प्रभाव पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जल सेना विभाग ने इस कठिनाई को पहले ही समझ लिया था और लम्बी यात्रा करने वाले जहाज़ी बेड़ों के साथ उन्होंने कुछ टैंकर जहाज़ लगा दिये थे जिन्हें "ट्रेन" कहते हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के ट्रेन में आरम्भ काल में ३४ जहाज़ रक्खे गये थे जिनमें एक लाख टन तेल आता था। गत दो वर्षों में ट्रेनों में भीषण परिवर्तन हो गया है और अब कितना तेल जा सकता है यह जलसेना का एक गुप्त रहस्य है।

जापान ने भी इस कठिनाई की ओर ध्यान दिया और अपने कारखानों में २१ नाट प्रति घंटा चलने वाले टैंकर जहाज़ तयार कराये जिससे वह १८ नाट प्रति घंटा चलने वाले युद्ध-पोतों के साथ पहुँच सकें। साधारणतः टैंकर जहाज़ १४ से १६ नाट प्रति घंटा चला करते हैं। दोनों ओर के लिये तेल की समस्या पूर्वी-द्वीप में जटिल थी। तेज़ चाल से चलने वाले एक युद्ध पोत को २४ घंटे में ४०० टन तेल की आवश्यकता है। इस प्रकार एक बार तेल भरने से जापानी जहाज़ी बेड़ा १० दिन तक चल फिर सकता है।

ग्वाम, वेक द्वीप और मनिल्ला आदि के छिन जाने से प्रशान्त महासागरीय तथा एशियाई दोनों जहाज़ी बेड़े को तेल पहुँचाने की कठिनाई उत्पन्न हुई। परन्तु उपर्युक्त स्थानों के छिन जाने से संयुक्त राष्ट्र के किसी भी जल सेना के अफसर को विस्मय नहीं हुआ। १९२१ ई० में अमरीका ने जो चार शक्तियों की संधि की थी उसके अनुसार प्रशान्त महासागर में जहाज़ी अड्डों की उन्नति हो ही नहीं सकती थी और यह बात निश्चय थी कि यदि जापान से युद्ध छिड़ा तो इन स्थानों की रक्षा नहीं हो सकेगी सेलेबिस से मलक्का प्रणाली के मध्य संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जो स्थान हैं उनमें जहाजी अड्डे गुप्त रूप से बनाये गये थे परन्तु वह भी उपयोगी सिद्ध न हो सके।

जापानी प्रशान्त महासागरीय योजना धुरी राष्ट्रों की योजना का एक अंग है। जापान चीन सागर और मलक्का प्रणाली होकर हिन्द महासागर तक जाने के लिये स्वतन्त्र मार्ग प्राप्त करना चाहता था। उसे चीन में पहुँचने वाली सहायता रोकनी थी। धुरी राष्ट्र के जहाज़ हिन्द महासागर तक नहीं पहुँच सके जो भेजे गये वह मार्ग में ही घेर कर पकड़ लिये गये। आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड और भारतवर्ष से युद्ध सामग्री पश्चिम को ओर जाती रही। गुडहाप अन्तरीप के दक्षिण होकर ब्रिटिश जहाजी बेड़ा उत्तरी अफ्रीका तट तक बिना किसी विशेष संकट के पहुँचता रहा। इसी कारण जापान ने ७ दिसम्बर १९४१ ई० को प्रशान्त महासागर में आक्रमण आरम्भ कर दिया। जिससे उसकी पनडुब्बी नावें तथा आक्रमणकारी जहाज हिन्द महासागर में घूम-फिर कर मित्र जहाज़ों को हानि पहुँचा सकें।

हिन्द महासागर, चीन सागर और पश्चिमी प्रशान्त महासागर पर पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त करने के लिये भीषण सामुद्रिक युद्ध का होना अनिवार्य है। अब तक जापान ने अपने पुराने तथा छोटे जहाज़ों का प्रयोग आक्रमण में किया है। उसका प्रधान जहाज़ी बेड़ा जो ऐडमिरल यामामोटो के निरीक्षण में है अब तक युद्ध में नहीं उतरा है। उसमें प्राप्त समाचारों के अनुसार ८ प्रथम श्रेणी के युद्ध पोत हैं। १९४३ ई० तक में ५ प्रथम श्रेणी के युद्ध पोत बनने की योजना थी जिसमें २ के समाप्त होने का समाचार प्राप्त हुआ है। जापान ने विध्वंसकारक जहाज़ों का भी एक बड़ा गुप्त बेड़ा तयार किया है। अमरीका की जल सेना में २० प्रथम श्रेणी के युद्ध-

पोत हैं और अमरीकन जहाजी घाटों में नये युद्ध-पोत प्रति वर्ष तयार हो रहे हैं। अमरीकन जहाजी बेड़े को तोड़ने के ध्यान से ही जापान ने पर्ल बन्दरगाह पर धावा मारा था और प्रिंस आफ वेल्स तथा रिपल्स जहाजों को डुबोया था। फिर भी जापान के पास कदाचित मित्र राष्ट्रों की अपेक्षा कम जहाजी शक्ति है इसी कारण यह अपने जहाजी बेड़े को बाहर नही निकाल रहा है। इसलिये सम्भव है संयुक्त राष्ट्र सुदूर पूर्व और हिन्द महासागर में प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न करे परन्तु ऐसे प्रभुत्व के लिये डच द्वीप समूह और मलक्का प्रणाली मार्ग के द्वीपों पर अमरीकन अधिकार होना आवश्यक है।

जापानी प्रधान जहाजी बेड़े की अचल दशा देख कर पता चलता है कि ऐडमिरल यामामोटो समुद्री युद्ध उसी प्रकार बचाना चाहता है जिस प्रकार गत महासमर में जर्मन जहाजी जल सेना के बेड़े ने किया था। जापान का सैनिक जहाजी बेड़ा जापान की रक्षा का भार भी उठाये है उसे भय है कि कहीं जापान पर ही आक्रमण न हो जाय। बाहर जाने से यदि उसे पराजय हुई तो उसका और उसके साथ

प्रशान्त महासागर में जापानी आक्रमण

६२

ही साथ जापान का भी सर्वनाश हो जावेगा। अमरीकन जल सेना के जहाज जापानी जहाजों की देख भाल में लगे हैं। वह जापानी जहाजों को आस्ट्रेलिया तथा हिन्द महासागर की ओर बढ़ने से रोकते हैं। अभी हाल में प्रशान्त महासागर के मध्य में जो मुठभेड़ अमरीका और जापान के जहाजों से हुई उसमें जापान को हानि उठानी पड़ी है।

हां! यदि अमरीकन जहाजी बेड़े के कुछ जहाज जापानी सीमा में जायें और अपने प्रधान जहाजी बेड़े से अलग होकर असहाय हो जावें तो उस पर जापान का प्रधान जहाजी बेड़ा आक्रमण करेगा अन्यथा वह शान्त बना युद्ध से टाल-मटोल करता रहेगा। फिर जापान को भी युद्ध चलाने, विजय प्राप्त करने और सेना को प्रत्येक युद्ध सामग्री पहुँचाने में भांति भांति की कठिनाई उठानी पड़ रही है।

जब से रूस पर जर्मन आक्रमण हुआ प्रशान्त महासागर में नवीन स्थिति उत्पन्न हो गई। ब्लाडीवास्टक से जापान पर आक्रमण होने का भय था। साथ ही साथ जापानी सेना रूस पर आक्रमण करने के लिये तयार थी। ब्लाडीवास्टक से ६०० मील के वृत्त में प्रत्येक जापानी कारखाने वाला नगर आ जाता है। जापान के अधिकाँश घर कागज के बने हैं। अलास्का होकर अमरीका का रूस से सम्बन्ध है! भय को प्रतीत करते हुये रूसी-मञ्चूरियन सीमा पर जापानी सेनाएँ भेज दी गईं। उसके बाद जापान और रूस में १० वर्ष के लिये अनआक्रमणक संधि हो गई। इस संधि के पश्चात् जापान ने अपना भीषण आक्रमण आरम्भ किया। धीरे धीरे जापानी सेना ने इण्डोचीन, थाई देश, मलय, सिंगापुर, फिलीपाइन, पूर्वी द्वीप समूह, बरमा, अंडमान आदि स्थानों पर अधिकार प्राप्त कर लिया है।

★ ★ ★

जापानी साम्राज्य की वृद्धि

लगभग १०० वर्ष पूर्व जापान छोटे छोटे राज्यों में बँटा था। वह संसार के दूसरे राज्यों से बिलकुल अलग एकांत में था। वह बहुत निर्धन तथा प्रथक था। उसके राजा अपनी संस्कृति अलग ही बनाना चाहते थे इसलिये संसार के दूसरे राज्यों से वह सम्बन्ध नहीं करना चाहते थे। केवल चीन और हालैंड को नागासाकी के बन्दरगाह पर व्यापार करने की आज्ञा थी।

उन्नीसवीं सदी में तीन प्रमुख घटनाएँ घटीं जिनके कारण जापान की विशाल उन्नति हुई। १—१८५३-५४ ई० में जापानी बन्दरगाह अमरीका तथा और दूसरे राष्ट्रों के लिये खोल दिये गये। १८६८ ई० में जापान के मिकाडो (राजा) ने शोगुन (सेनापति) के हाथ से शासन की बागडोर लेकर पुनः राज्य करना आरम्भ कर दिया। १८७१ ई० में जापान से जमींदारी तथा सरदारी प्रथा का अन्त कर दिया गया और पश्चिमी राष्ट्रों की भांति वहां भी जापान का सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक संगठन किया गया।

शासन की बागडोर मिकाडो के हाथ आने से जापानी साम्राज्य की वृद्धि आरम्भ हुई। उसी के फलस्वरूप जापान पूर्वी एशिया के समस्त तट पर क्यूरायल द्वीप से फारमूसा (३००० मील लम्बा) तक जापान का राज्य विस्तृत हो गया। मरिना, मार्शल और केरोलाइन द्वीप भी राष्ट्र-संघ की ओर से जापानी संरक्षता में कर दिये गये और जापानी साम्राज्य २ लाख ६० हजार वर्ग मील में फैल गया जिसकी जन-संख्या १० करोड़ है। इसके सिवा एशिया में भी जापानी भूमि का एक बड़ा भाग है।

जापान ने १८७५ ई० में क्यूरायल और १८७९ ई० में लूचू द्वीप पर अधिकार जमाया। १८९४-९५ ई० में कोरिया के सम्बन्ध में युद्ध हुआ जापान की विजय हुई कोरिया स्वतंत्र किया गया। और फारमूसा तथा पेस्काडोर्स के द्वीप जापान को

मिले। मंचूरिया के दक्षिण लिऔतुङ्ग प्रायद्वीप पर जापान योरुपीय राष्ट्रों और रूस के कारण अधिकार नहीं प्राप्त कर सका।

१९०४-५ ई० में रूसी-जापानी युद्ध हुआ जिसमें जापान की विजय हुई। लिऔतुङ्ग, शखालिन द्वीप के दक्षिणी भाग और दक्षिणी मंचूरियन रेलवे पर जापान का अधिकार हो गया। दक्षिणी मंचूरिया से रूसी हट गये। ५ वर्ष के बाद कोरिया को भी जापान ने अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।

१९१४ ई० के महासमर में जापान मित्र-राष्ट्रों की ओर से लड़ा। संधि होने पर उसे राष्ट्र संघ में प्रशान्त महासागरीय राष्ट्रों में प्रधान स्थान मिला और मैरिआना, मार्शल और कैरोलाइन द्वीप जापान की संरक्षता में सौंपे गये। यह संयुक्त राष्ट्र अमरीका और फिलीपाइन के मध्य स्थित हैं। १९१५ ई० में जापान ने चीन के सामने २१ मांगें पेश कीं जो अस्वीकार की गईं। १९२० ई० में वाशिंगटन सम्मेलन हुआ और नौ-शक्ति संधि हुई जिसमें चीन में व्यापार करने तथा शक्ति बढ़ाने के लिये जापान को स्वतंत्रता प्रदान की गई। वाशिंगटन संधि में निर्णय किया गया कि इंगलैंड संयुक्त राष्ट्र अमरीका और जापान ५: ५: ३ के अनुपात से जहाज रक्खें।

चीनी-जापानी युद्ध

गत महायुद्ध के पश्चात् मंचूरिया में चीन और जापानी हितों में संघर्ष हुआ जिसके फल-स्वरूप १९३१ ई० में चीनी-जापानी युद्ध का श्री गणेश हुआ जापान ने चीन के चार उत्तर-पूर्व के प्रान्तों पर अधिकार कर लिया और मंचूको का राज्य अपनी क्षत्र-छाया में स्थापित किया। चीन में भी जापानी आक्रमण होने लगे। १९३७ ई० में लुकोचिअवो स्थान पर युद्ध हुआ। उसके बाद जापान ने चीनी तट का घेरा डाल दिया और उत्तरी-मध्यवर्ती तथा दक्षिणी चीन के विजय किये स्थानों में जापानी बस गये।

जापानी साम्राज्य की वृद्धि के आर्थिक कारण भी हैं। गत ७० वर्षों में जापान की संख्या ३ करोड़ से बढ़ कर ७ करोड़ हो गई है। वहां की भूमि अधिक उपजाऊ नहीं है। समस्त क्षेत्रफल के केवल पांचवें भाग में कृषि हो सकती है। वहां प्रति वर्ग मील में २७७९ मनुष्य रहते हैं। जापान ने अपने कारखानों को अच्छी उन्नति दी है यद्यपि वहां खनिज सम्पत्ति की कमी है। जापान के कारखानों में सस्ता सामान तयार होता है जो संसार के सभी देशों में जाता है। गत कुछ वर्षों से जापान का सूती सामान और दूसरी कारखानों की बनी वस्तुएँ संसार के भिन्न-भिन्न देशों को और खासकर पूर्वी-दक्षिणी एशिया के देशों को भेजी जाती हैं।

सैनिक, भूमाय और आर्थिक यफैलाव के कारण
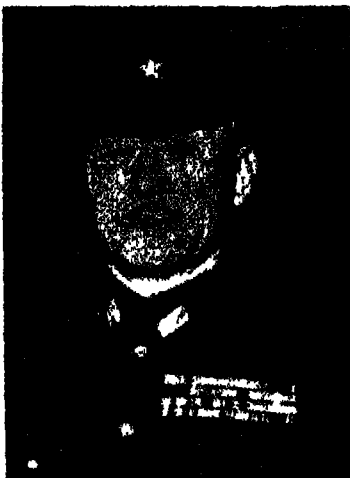
जनरल सुगियामा जापानी स्थल सेना के प्रधान।

ऐडमिरल ओसामी नगानो जापानी जल सेना के प्रधान सेनापति।
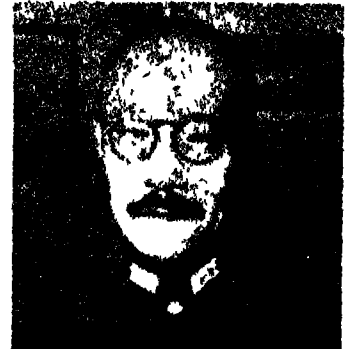
लैफ्टिनैन्ट जनरल हिडेकी टोजो जापान के नये प्रधान मन्त्री।

जापान की समस्त कठिनाइयों का अंत नहीं हुआ। अमरीका और इँगलैंड से उसकी तनातनी बढ़ती ही गई और चीन में उसका युद्ध भीषण रूप धारण करता ही गया। १९३९ ई० में आधुनिक महासमर छिड़ा। इस बार जापान ने आरम्भ से ही धुरी राष्ट्रों के साथ रहने का रुख ग्रहण किया।

योरुप विजय करने के बाद जर्मनी ने जब रूस पर आक्रमण किया तो दिसम्बर मास में जापानी सेनाएँ भी आगे बढ़ीं। जनरल टोजो जापान का प्रधान मन्त्री बनाया गया। ७ दिसम्बर १९४१ ई० को जापान ने अचानक फिलीपाइन, पर्ल हार्बर, हॉनोलूलू, सिंगापुर आदि स्थानों पर आक्रमण कर दिया। जापानी आक्रमण की लहर इतनी तीव्र तथा शक्तिशाली सिद्ध हुई कि इण्डोचीन, थाई देश, मलय, पूर्वी द्वीप समूह, फिलीपाइन द्वीप समूह, बोर्नियो और बरमा पर जापानी सेनाओं ने अपना विजय पताका फहरा दी।

६३

आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी, लंका, पूर्वी भारतीय तट और आसाम पर भी जापान के हवाई हमले हुये। अब चीन की बरमा सड़क रोकने के बाद जापानी सेनाओं ने चीन पर आक्रमण जारी कर दिया है।

★ ★ ★

फ्रांसीसी इण्डोचीन पर जापानी अधिकार

१८५८ ई० से फ्रांसीसी लोगों ने यहाँ घुसना आरम्भ किया। १८६७ में अनाम, १८८४ में कम्बोडिया और टांगकिंग और १८९३ में लाओस और १९०७ में स्याम का दूसरा छोटा भाग जीत कर फ्रांस ने इण्डोचीन पर अपना अधिकार जमाया। इस प्रकार फ्रान्सीसी इण्डोचीन फ्रान्स के साम्राज्य का अंग था। जब जून १९४० ई० में फ्रान्स का पतन हुआ तो पूर्व की ओर जापान ने इन्डोचीन पर सैनिक दबाव डाला और इन्डोचीन के कुछ हवाई अड्डे ले लिये तथा चीन के लिये इण्डोचीन का मार्ग बन्द कर दिया। इण्डोचीन का कोई सहायक न था। अतः उसने जापानी मांगें स्वीकार कर लीं। जापान इण्डोचीन के हवाई अड्डों से चीन पर हवाई आक्रमण कर सकता था। उन्हीं अड्डों से जापानी सेना ने सितम्बर १९४० ई० में बरमा सड़क पर बम्ब गिराये थे।

जापान इण्डोचीन और थाई देश दोनों पर अधिकार प्राप्त करना चाहता था। इसलिये जापान ने दोनों को भड़का कर सीमावर्ती झगड़ा उत्पन्न कर दिया। थाई देश और इण्डोचीन में युद्ध घोषणा

हो गई। जापान ने मध्यस्थ होकर दोनों के झगड़ों को निपटा दिया और थाई देश की मांगें पूरी की गईं। १२ मार्च सन् ११४१ को थाई-सरकार और इण्डोचीन में समझौता हो गया।

जुलाई १९४१ ई० में स्थिति फिर बिगड़ गई और जापान ने इण्डोचीन पर फिर दबाव डाला जिससे इण्डोचीन ने दक्षिणी चीनसागर में कुछ जहाजी अड्डे जापान को दे दिये। ४० हजार जापानी सेना का व्यय भी इण्डोचीन के ऊपर रक्खा गया।

८ दिसम्बर १९४१ ई० को जापान और इण्डोचीन में सैनिक संधि हो गई। इण्डोचीन के समस्त जहाजी तथा हवाई अड्डे जापान को प्राप्त हुये।

८ दिसम्बर १९४१ ई० को सैनिक संधि के अनुसार अब इण्डोचीन जापान की छत्र-छाया में है। इण्डोचीन के सैगोन, कमरान्ह के जहाजी तथा हवाई अड्डे और हैपोंग का हवाई अड्डा जापान के लिये बड़े ही उपयोगी सिद्ध हुये। इन्हीं अड्डों की सहायता से जापानी सेना विजय मार्ग पर बढ़ती जा रही है।

★ ★ ★

थाईदेश की संधि

जून १९४० ई० में इण्डोचीन पर प्रभुत्व जमाने के पश्चात जापान ने थाई देश पर भी अपना प्रभुत्व जमाना चाहा। इण्डोचीन में जापान ने सेनायें एकत्रित कर लीं उसके पश्चात कूटनीति

फील्ड मार्शल ल्वांगबिगुल सोनग्राम स्याम (थाईदेश) के प्रधान तथा रक्षा मन्त्री

की चालें चलने लगा। जब कोई मार्ग न दिखलाई पड़ा तो इण्डोचीन और थाई देश में सरहदी प्रश्न पर झगड़ा उत्पन्न कर के मध्यस्थ हो गया। दोनों देशों ने मध्यस्थता स्वीकार कर ली। तब जापान ने इण्डोचीन और थाई देश में संधि करा दी और थाई देश की मांगें स्वीकार करा दीं। उसके बाद जापान ने थाई देश से हवाई तथा जहाजी अड्डे मांगे और न देने पर सैनिक धमकी दी। इंगलैंड उसे अपने हथकंडे में रखना चाहता था उसने भी थाईदेश को बहुत कुछ सहायता देने के लिये कहा।

जब जापान ने अपनी सेनायें इण्डोचीन में एकत्रित कर लीं तो उसने थाई देश पर भी और दूसरे स्थानों की भांति इण्डोचीन होकर आक्रमण कर दिया। असहाय थाई देश कर ही क्या सकता था। मौखिक युद्ध करने के बाद वह संधि करने पर मजबूर हो गया।

१२ दिसम्बर १९४१ ई० को जापान और थाई देश में सैनिक संधि हो गई। थाई देश ने जापान को सैनिक सहायता देने का वचन भी दे दिया। संधि होने के पश्चात् थाई सरकार ने अमरीकन तथा ब्रिटिश सामानों पर अधिकार कर लिया। संधि के अनुसार थाई देश ने इङ्गलैंड पर युद्ध-घोषणा कर दी और थाई सेना ने जापानी सेना के साथ ही साथ बरमा की सीमा पार करके बरमा पर आक्रमण कर दिया। बंकोक और सिंगोरा थाई देश के प्रधान

जहाजी तथा हवाई अड्डे हैं। इन अड्डों से जापान को आधुनिक प्रशान्त महासागरीय युद्ध में बहुत सहायता मिल रही है। च्यांगमाई का अन्तिम रेलवे स्टेशन बरमी सीमा से केवल २०० मील दूर है। थाई देश में इस रेलवे को जापान ने ही बनाया था। इस लाइन से कोई विशेष आर्थिक लाभ न था लेकिन इस लाइन से जापान को बरमा विजय करने में अपूर्व सहायता मिली।

६६

★　★　★

हांगकांग विजय

संयुक्त राष्ट्र अमरीका और इंगलैंड पर युद्ध घोषणा करने के पश्चात् जापानी सेना ने हांगकांग पर ७ दिसम्बर को हवाई तथा समुद्री आक्रमण कर दिया। ११ दिसम्बर को ब्रिटिश सम्राट ने हांगकांग की प्रजा तथा गवर्नर को जापानी आक्रमण का सामना करने के लिये बधाई दी और सहायता पहुँचाने तथा युद्ध जारी रखने के लिये प्रोत्साहन दिया।

हांगकांग की सहायता के लिये चीनी सेनायें भी कैन्टन की ओर से गईं। १० दिसम्बर को हांगकांग की अग्रगामी सेनाएँ जापानी सेना के दबाव के कारण क्वांगलुंग की ओर हट गईं। हांगकांग पर बम्ब वर्षा और गोलेबारी की झड़ी लगी हुई थी।

१४ दिसम्बर को जापान की सेना ने हांगकांग को आत्म-समर्पण कर देने के लिये कहा परन्तु आत्म-समर्पण करने से हाँगकांग ने इनकार कर दिया। १५ दिसम्बर को हांगकांग का घेरा आरम्भ

हो गया। उस पर स्थल और आकाश से बम्ब तथा गोलों की वर्षा होने लगी। कोलून पर जापानी सेना ने अधिकार करके तोपें लगा दीं और नगर पर गोलेबारी आरम्भ कर दी गई। कोलून से ब्रिटिश सेना हटा ली गई। यह भूमि हांगकांग के सामने है।

हांगकांग के गवर्नर तथा प्रधान सेनापति सर मार्क के सेनापतित्व में कनैडियन और भारतीय सेनायें वीरता के साथ लड़ती रहीं। चीनी सेनाएँ कैंटन की ओर से बढ़ कर (पीछे से) जापानी सेना पर आक्रमण करना चाहती थीं। शत्रु सेनायें बड़ी प्रबल थीं। वायुयानों का समूह नगर तथा द्वीप पर टिड्डी दल की भांति मंडरा रहा था। २४ दिसम्बर तक हांगकांग शक्ति-शाली शत्रु-सेना का सामना करता रहा। परन्तु जब लगभग प्रत्येक क़िले तथा स्थान पर अग्नि ज्वालाएँ धधक उठीं और बचने तथा सहायता पहुँचने की आशा जाती रही तो २५ दिसम्बर को हांगकांग ने आत्म समर्पण कर दिया।

६७

ब्रिटिश सेनायें सेनापति के साथ पकड़ ली गईं और हांगकांग पर जापानी विजय-पताका फहराने लगी।

* * *
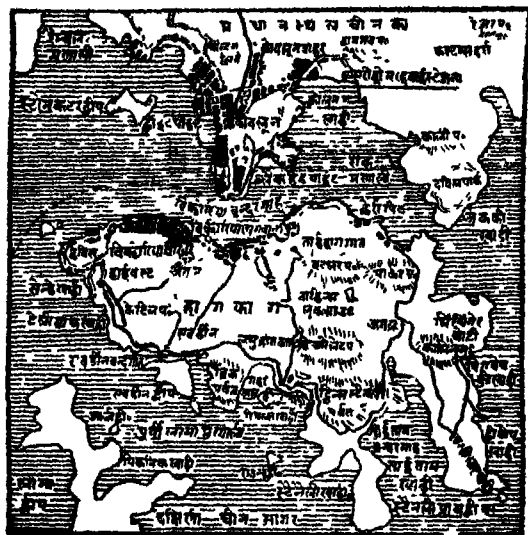
मलय विजय

सात दिसम्बर १९४१ ई० को जापन ने प्रशान्त महासागर में युद्ध छेड़ा। ८ दिसम्बर को थाई देश होकर जापानी सेना ने मलय पर आक्रमण कर दिया। मलय के दक्षिणी भाग में

लैफ्टिनेन्ट जनरल ए० ई० पेर्सीवल। मलययुद्ध के संचालक तथा ब्रिटिश टी० ओ० सी०।

जापानी सेना उतार दी गई थी। उत्तर की ओर थाई देश से जापानी सेनायें बढ़ीं और कोटाबहरू के हवाई अड्डे पर अधिकार करना चाहा। इसी बीच थाई देश ने जापान को अपना आत्म समर्पण कर दिया। मलय के दक्षिण जापानी विमानों ने प्रिन्स आफ वेल्स और रिपल्स नामी प्रसिद्ध ब्रिटिश लड़ाका जहाजों पर आक्रमण करके उन्हें डुबा दिया। कोटा-बहरू पर अधिकार करने के पश्चात् शत्रु सेनायें बरमा, थाई देश सीमा पर पहुँचीं और यहां ब्रिटिश सेना से घमासान युद्ध हुआ। मलय में जापानी सेना आगे बढ़ती गई। ब्रिटिश सेनायें लड़ती पीछे हटती गईं। १७ सितम्बर को मलय के उत्तर-पूर्व ब्रिटिश सेना की दशा भयानक हो गई। पेनाँग का ब्रिटिश सेना ने खाली कर दिया। इपोह में जापानी सेना टिन के खानों की ओर बढ़ने लगी। कोटाबहरू के दक्षिण से ब्रिटिश सेनायें हट गईं और पेराक में इपोह की खानों के लिये घमासान युद्ध हुआ। इपोह पर अधिकार करने के बाद जापानी सेना दक्षिण की ओर बढ़ी।

पहली जनवरी को जापानी सेना ने क्वान्टन नगर

पर अधिकार कर लिया। यह नगर सिंगापुर से १९० मील की दूरी पर है। पेराक में भीषण संग्राम करने के बाद ब्रिटिश सेना उसका सामना न कर सकी और पहाँग होकर पीछे हट गई। ९ जनवरी को क्वालालुम्पुर नगर के उत्तर की ओर भीषण युद्ध हुआ। ब्रिटिश सेना को पीछे हट जाना पड़ा और शत्रु सेना ने नगर पर अधिकार कर लिया। क्वालालुम्पुर सेलंगोर प्रान्त की राजधानी है। क्वालालुम्पुर से हट कर ब्रिटिश सेना ने सेरेंबान के उत्तर की ओर मोर्चा जमाया। ब्रिटिश सेना को हवाई सहायता न मिल रही थी सेना लड़ते लड़ते थक गई थी इसीलिये वह जापानी सेना का डट कर सामना करने में असमर्थ होगई। सिंगापुर पर भी जापानी हवाई आक्रमण होने लगे।

१७ जनवरी को नवीन जापानी सेना म्वार में उतर गई। आस्ट्रेलियन सेना ने मलय में डट कर जापानी सेना का सामना किया। परन्तु शत्रु सेना की अधिकता तथा विमानों की अग्नि वर्षा के सामने उसके भी पैर नहीं जमे। १९ जनवरी को जोहार प्रान्त मे तीन स्थानों पर नई जापानी सेनायें उतरीं। इसी बीच थाई सीमा को पार करके बरमा में शत्रु सेनायें घुस पड़ीं। जापानी सेनायें मौल्मीन की ओर बढ़ती गईं।

२७ जनवरी को कुछ हवाई सेना ब्रिटिश सेना की सहायता को पहुँच गई। परन्तु शत्रु सेनायें सिंगापुर के मार्गों पर संकट उपस्थित कर रही थीं। उन्होंने योंगपेंग की सड़क को काट दिया। मलय से ब्रिटिश सेनायें सिंगापुर की ओर हटने लगीं। जापानी सेनायें ब्रिटिश सेना को खदेड़ती हुई दक्षिण की ओर बढ़ती गईं और जोहार प्रणाली से १० मील की दूरी पर ३० जनवरी को पहुँच गई। ३१ जनवरी को समस्त ब्रिटिश सेनायें मलय से सिंगापुर हटा ली गईं
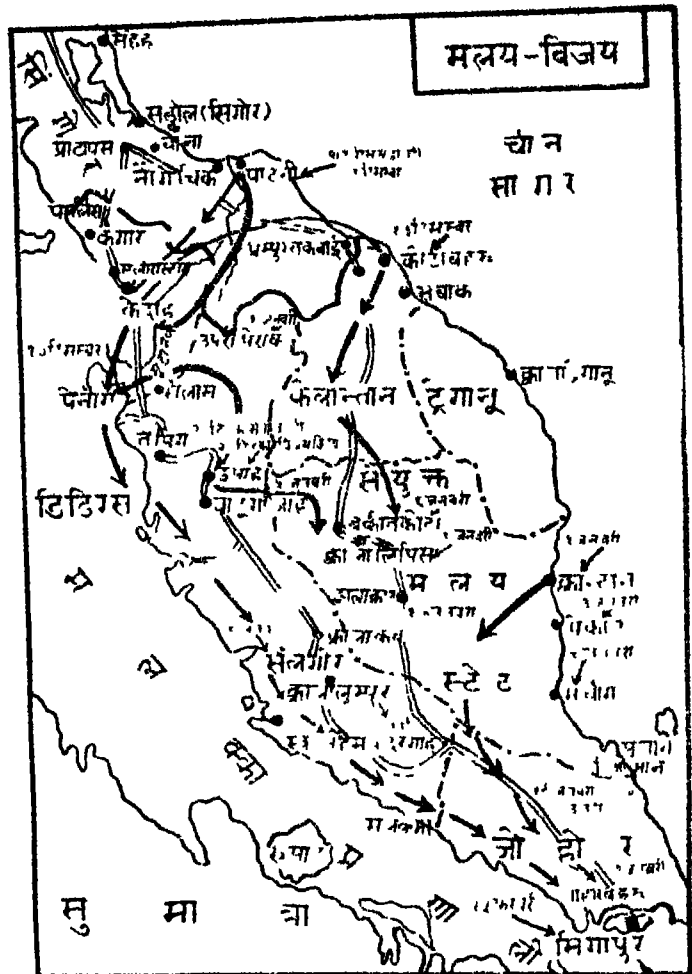
६८

और सिंगापुर तथा मलय को मिलाने वाला मजबूत रेल का पुल उड़ा दिया गया।

इस प्रकार ३१ जनवरी १९४२ ई० तक जापानी सेनाओं ने समस्त मलय पर अपना अधिकार जमा लिया। मलय के बनों तथा पहाड़ी स्थानों पर जापानी दूत पहले से ही अपना गुप्त रूप से प्रचार कर रहे थे। ब्रिटिश सेना के पास विमानों की बड़ी कमी थी। शत्रु सेना की बाढ़ के सामने ब्रिटिश सेना के पैर ही नहीं रुक सके। मलय पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् शत्रु सेना ने सिंगापुर का घेरा डाल दिया।

सिंगापुर का पतन

सिंगापुर प्रशान्त महासागर का जिब्राल्टर है। प्रवेशद्वार होने से प्रशान्त महासागर की कुञ्जी सिंगापुर ही है। इसीलिये सिंगापुर को ब्रिटिश सरकार ने अपने पूर्वी साम्राज्य की रक्षा के लिये जल सैनिक जहाजों तथा वायुयानों का एक बहुत ही बड़ा अड्डा बनाया था। यह पूर्व का द्वार कहलाता था। यहाँ जहाज बनाने और मरम्मत करने के घाट बनाये गये थे। यहाँ पर बड़ी सुदृढ़ क़िलेबन्दी की गई थी। यह एक बड़ा ही सामरिक महत्व का स्थान है। गत तीन वर्षों से ब्रिटिश सरकार इसे और भी अधिक मज़बूत तथा शक्तिशाली बना रही थी। भारतवर्ष से अधिक से अधिक सेना तथा सैनिक सामग्री सिंगापुर की रक्षा के लिये यहाँ युद्ध के आरम्भ काल से ही प्रस्तुत थी। यहीं से डच द्वीप समूह, मलय, भारत बरमा और आस्ट्रेलिया की रक्षा का प्रबन्ध किया गया था।

जापानी-टार्पिडो-वायुयानों ने मलय के समीप प्रिंस आफ़ वेल्स तथा रिपल्स जहाजों को डुबा दिया। प्रिन्स आफ वेल्स बड़ा भारी लड़ाका जहाज था। उसकी धाक जमी थी और उसके भय के कारण शत्रु लड़ाका जहाज या पनडुब्बी नावें प्रशान्त महासागर, चीन सागर और हिन्द महासागर में प्रवेश करने का साहस नहीं करते थे। इनके डूबने से मित्र सेना को बड़ी हानि हुई और वह हताश हो गई। उसके बाद सिंगापुर में शत्रु के हवाई आक्रमण होते रहे। १५ जनवरी को सिंगापुर में भीषण जापानी हवाई आक्रमण हुआ जिससे सेना तथा सैनिक सामग्री को हानि पहुँची। उसके बाद आस्ट्रेलिया से भी सेनायें मलय और सिंगापुर की रक्षा के लिये भेजी गईं। चीनी सेनायें भी सिंगापुर पहुँच गईं।

जोहार में जापानी सेनाएँ तीन स्थानों पर उतरीं और सिंगापुर से १०० मील की दूरी पर पहुँच गईं।

२४ जनवरी को जापानी सेनायें और दक्षिण की ओर बढ़ीं और सिंगापुर से ६५ मील की दूरी पर पहुँचीं। सिंगापुर के मार्गों को भी जापान ने संकटपूर्ण बनाना आरम्भ कर दिया था। ३० जनवरी तक मलय की ब्रिटिश सेनायें सिंगापुर हटने लगीं। सिंगापुर का उत्तरी भाग खाली कर दिया गया। ३१ जनवरी तक मलय से समस्त मित्र सेनायें सिंगापुर हटा दी गईं। सिंगापुर और मलय के बीच जोहार का पुल तोड़ दिया गया जिससे शत्रु सेना सिंगापुर में न बढ़ सके। पहली फरवरी को सिंगापुर को जापानी सेना ने घेरना आरम्भ कर दिया। जापानी लोग चारों ओर से सिंगापुर को घेर कर उसे भूखों मार कर आत्म समर्पण करवाना चाहते थे। सिंगापुर में पानी का कष्ट था। जोहार प्रणाली के
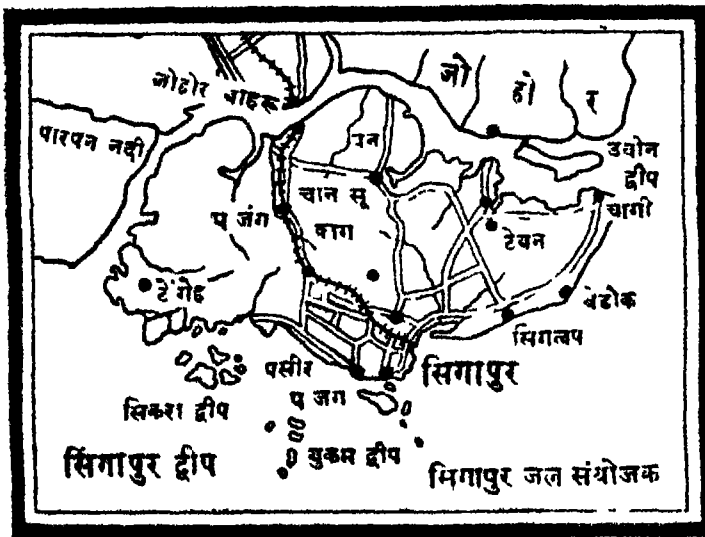
६९

सबसे प्रथम जापानी हवाई आक्रमण सिंगापुर में ७ दिसम्बर को हुआ। उसके बाद जापानी सेना मलय में उतारी गई। १० दिसम्बर को जापान ने सिंगापुर पर भीषण हवाई आक्रमण किया और

उस पार जोहार प्रान्त से सिंगापुर में पानी आता था। परन्तु पुल तोड़ देने से वहाँ से पानी पहुँचना बन्द हो गया था।

४ फरवरी को जनरल वावेल ने सिंगापुर की रक्षा करने वालों से नगर की रक्षा की अपील की और कहा कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका और इङ्गलैंड से सहायता आ रही है। सहायता समय पर नहीं पहुँच सकी। ५ फरवरी को सिङ्गापुर पर जापानी सेना का चारों ओर से आक्रमण आरम्भ हो गया। ६ फरवरी को जोहार प्रणाली पर दोनों ओर से गोलाबारी होती रही और ब्रिटिश सेना पर जापानी विमान हवाई आक्रमण करते रहे। ७ फरवरी को मलय धरती पर लगी जापानी तोपों ने सिङ्गापुर पर भीषण गोलेबारी की और ४ घंटे लगातार बम्ब वर्षा की गई। सिंगापुर की सेना में कुछ विद्रोह भी हो गया था जिससे समस्त सिगापुर में फौजी नियम लागू कर दिया गया था। ८ फरवरी को जोहार प्रणाली के यूबिन द्वीप में जापानी सेना उतर गई और सिंगापुर पर गोलेबारी तथा बम्ब वर्षा जारी रही।

उसके बाद जापानी सेना सिंगापुर के पूर्वी तट पर रबर की नावों द्वारा उतर उई। ब्रिटिश तोपें भी भीषण गोलेबारी करती रहीं परन्तु फिर भी रात मे जापानी सेना उतर गई। १० फरवरी तक सिगापुर मे बहुत अधिक शत्रु सेना उतर गई। उत्तरी भाग से लड़ती हुई ब्रिटिश सेना पीछे हटी। जापानी लोगो ने जोहार प्रणाली के पुल को पुनः बना लिया था जिससे सेना लाने मे उन्हें बड़ी सरलता हुई। सिगापुर मे भीषण संग्राम होता रहा।

उत्तर और पूर्व की ओर घाटों में उतर जाने से शत्रु सेना सिगापुर नगर की ओर लड़ती हुई बढ़ी। १२ को शत्रु वायुयानों के गोताखोर जहाजों ने सिगापुर नगर पर लगातार बम्ब-वर्षा की और तोपों द्वारा गोलेबारी की गई। जापानी सेनाएँ पीने के पानी के प्रधान तालाबों की ओर बढ़ रही थीं। १३ फरवरी को वह प्रधान तालाबों के समीप पहुँच गईं। १४ फरवरी को जापानी सेना ने दो प्रधान पानी के तालाबों पर अधिकार प्राप्त कर लिया, इन्हीं तालाबों से नगर को पानी प्राप्त होता था। नगर पर पूर्व-उत्तर और पश्चिम की ओर से जापानी सेनाएँ बढ़ रही थीं। गोलाबारी और बम्ब-वर्षा के कारण नगर का विध्वंस हो रहा था। सिगापुर की दशा बड़ी शोचनीय थी। भीषण अग्नि वर्षा के सामने मनुष्य की वीरता काम न कर रही थी। चारों ओर हाहाकार मचा था। सेनाओं के पैर उखड़ चुके थे। ब्रिटिश सैनिक अफसरों को प्रतीत हो रहा था कि यदि नगर का आत्म-समर्पण नहीं होता तो फिर समस्त नगर उड़ा दिया जावेगा और सारी सेना तथा प्रजा मारी जावेगी।

६ मील के घेरे में १० लाख सेना तथा प्रजा घेरी थी। नागरिकों और सैनिक अफसरों ने नगर का आत्म-समर्पण करना ही अधिक उचित समझा। ब्रिटिश तथा अमरीकन सहायता भी ठीक समय पर न पहुँच सकी। सेना हटाने वाले जहाज भी न पहुँच सके। अन्त मे सिगापुर ने १५ फरवरी को आत्मसमर्पण कर दिया। १० बजे दिन को लड़ाई रोक दी गई। जापानी सेना ने नगर पर अधिकार कर लिया।

जापानी सेना ने ६० हजार सैनिक गिरफ़ार कर लिये। सिगापुर के गवरनर और उनकी स्त्री क़ैद कर लिये गये।

सिगापुर पर शत्रु अधिकार होने से मित्र सेना को बड़ी भारी हानि पहुँची। बरमा, भारत, चीन और हिन्द महासागर की स्थिति बड़ी सङ्कटमय हो गई। सिगापुर का नाम बदल कर शोनान रख दिया गया।

फिलीपाइन द्वीप समूह का आक्रमण—विजय

सात दिसम्बर को युद्ध घोषणा करते हुये जापान ने मनिल्ला (फिलीपाइन) पर आक्रमण कर दिया। फिलीपाइन के प्रधान मन्त्री एम क्वेज़ान ने फौजी क़ानून की घोषणा की और

लेफ्टिनेंट जनरल डगलस मकार्थर फिलीपाइन में अमरीकन सेना के प्रधान सेनापति

ऐडमिरल टायस मो० हार्ट संयुक्तराष्ट्र की जल सेना के प्रधान जिनका केन्द्र मनिल्ला में था आपकी देखभाल में अमरीका, डच और ब्रिटिश जल सेना के जहाज थे।

कहा कि प्रत्येक स्त्री और पुरुष का धर्म है कि वह अपने कर्तव्य का पालन करे। हवावो स्थान पर जापानी हवाई आक्रमण के कारण प्रेस्टन विध्वंस कारक जहाज डूब गया। मनिल्ला से ६० मील उत्तर लूवांग द्वीप में जापानी सेना उतार दी गई। मनिल्ला के नगर, क़िले फार्टविलियम, मोकिंले, निकोल्स हवाई मैदान, पार्क फील्ड, हवाई अड्डु, रैडियो, बन्दरगाह आदि स्थानों पर बम्ब गिराये गये। २०० आदमी मर गये। क्लार्क फील्ड (सबसे बड़ा सैनिक हवाई अड्डा) डावान ओड कैम्प, पालावान, तारलाओ और तारलाक आदि स्थानों पर जापानी विमानों ने बम्ब गिराये और आग लगा दी। लूजन में जापानी सेना छतरी द्वारा ९ दिसम्बर को उतार दी गई। १२ दिसम्बर को लूजन में फिर नई जापानी सेना उतारी गई और कई स्थानों पर युद्ध होने लगा।

लूजन और दूसरे स्थानों पर सेनाएँ उतारने के पश्चात् जपानी सेनाएँ मनिल्ला नगर की ओर बढ़ीं। २४ दिसम्बर को भीषण संग्राम के पश्चात् मनिल्ला की स्थिति जटिल हो गई। मनिल्ला की रक्षा करना असम्भव था। इसलिये २५ दिसम्बर को अमरीका की सरकार ने मनिल्ला को खुला हुआ अरक्षित नगर घोषित कर दिया। २७ दिसम्बर को खुला घोषित होने पर भी नगर पर तीन घन्टे तक बम्ब-वर्षा हुई और नगर नष्ट कर दिया गया। लूजेन प्रान्त में जापानी सेनाएँ आगे बढ़ीं। ३१ दिसम्बर को जापानी सेना ने मनिल्ला नगर घेर लिया। पहली जनवरी को मनिल्ला नगर का भीषण संग्राम हुआ, जापानी सेना की विजय हुई और २ जनवरी को नगर पर जापानी सेना का अधिकार हो गया। ६ जनवरी

७०

को जापानी सेना ने कारीडर के क़िले का घेरा डाल दिया। अमरीकन सेना उसकी रक्षा का युद्ध बहादुरी

के साथ करती रही। ७,८ जनवरी को लूजन द्वीप के प्रत्येक युद्धक्षेत्र में घमासान युद्ध होता रहा और जनरल मकार्थर की सेना ने शत्रु सेना को भीषण हानि पहुँचाई। २४ जनवरी को जापानी सेना ने लूजन के कई स्थानों पर अधिकार कर लिया और बटान प्रायद्वीप में भी कई स्थानों पर अधिकार कर लिया। पहली फरवरी को मनिल्ला की खाड़ी में कुछ जापानी जहाज डुबा दिये गये। दूसरी फरवरी को बटान में जापानी सेना ने मकार्थर-सेना के विरुद्ध आक्रमण किया। ३ फरवरी को बटाम के पश्चिमी भाग में जापानी सेना ने उसे मार भगाया। ६ फरवरी को लूजन में नई जापानी सेना उतारी गई। बटान की फिलीपिनो सेना का सेनापति जनरल वेन राइट और लूजन का जनरल मकार्थर था। तीन महीने तक भीषण संग्राम करने के पश्चात् ९ अप्रैल १९४२ ई० को बटान की सेना ने जापानी सेना के सामने हथियार डाल दिये। बटान में ३६,८५३ सैनिक थे। यह सभी युद्ध में मारे गये, घायल हुये या पकड़ लिये गये। बटान में अमरीका की बड़ी हानि हुई। बटान से ही फिलीपाइन के युद्ध का अंत हो गया। अमरीकन पराजय का मुख्य कारण शत्रु सेना की अधिकता तथा अमरीकन हवाई सेना में विमानों की न्यूनता थी। जापान ने समस्त फिलीपाइन द्वीप समूह पर अधिकार जमा लिया।

७१
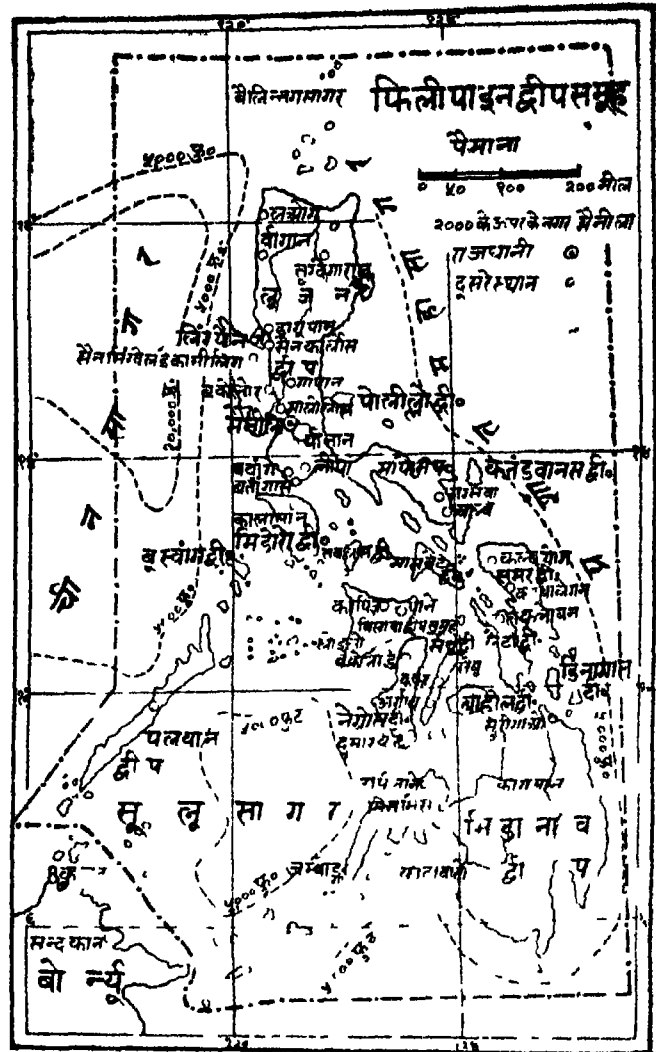
पर्ल बन्दरगाह-हवाई द्वीप का विध्वंस

सात दिसम्बर सन् १९४१ ई० को जापान ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका पर युद्ध घोषणा की और हवाई द्वीप समूह, पर्ल बन्दरगाह, होनोलूलू ओआहू, जान्सन द्वीप आदि स्थानों पर जापानी लड़ाका समुद्री जहाजों तथा विमानों ने आक्रमण कर दिया।

हिरवाम फील्ड (हवाई) ओआहू द्वीप और पर्ल बन्दरगाह पर भीषण हवाई आक्रमण हुआ। जापानी बम्ब वर्षकों ने बम्ब वर्षा कर संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सेना को बड़ी हानि पहुँचाई। समस्त तेल के अड्डों पर बम्ब गिरा कर आग लगा दी गई। होनोलूलू के समीप समुद्री लड़ाई हुई जिसमें जापान का एक

७२

७३
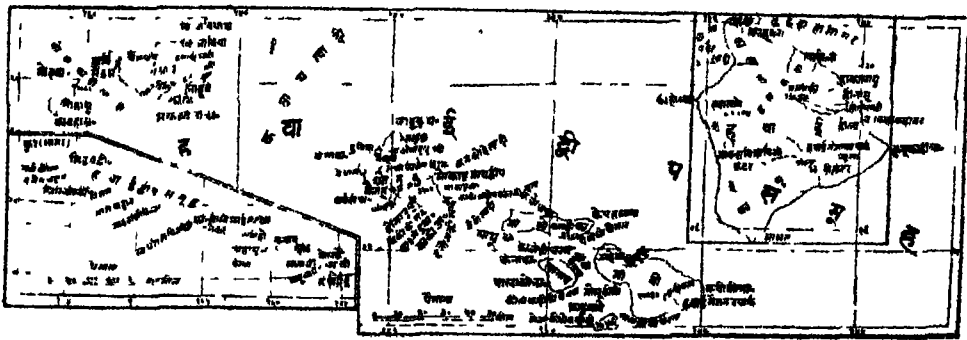
वेक द्वीप पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया और ग्वाम पर बम्ब वर्षा की। हवाई द्वीप का अमरीकन प्रधान सेनापति सी० सी० बोच था।

जहाज डूबा और अमरीका के कई जहाज डूबे तथा नष्ट हुये। पर्ल बन्दरगाह पर ओक्लाहोमा नामक २५ हजार टन के अमरीकन जहाजों में आग लगा

कर नष्ट कर दिया। होनोलूलू नगर में कई स्थानों पर बम्ब द्वारा भीषण आग लगाई गई और हजारों की संख्या में जानें मारी गई। होनोलूलू और सैन-फ्रांसिस्को के मध्य एक बड़ा और कई छोटे अमरीकन जहाज डुबा दिये गये।

जापान ने इतना भीषण आक्रमण किया था कि उसका सामना न हो सका और अमरीका की बहुत सेना मारी गई। पेट्रोल के भण्डार जल कर नष्ट हो गये। कई जहाज जले तथा डूब गये। आकाश में दोनों ओर के विमान एक दूसरे पर ऐसे झपटते थे जैसे कुत्ते झपटते हैं। विकट संग्राम में ६ जापानी विमान नष्ट हुये और बहुत से अमरीकन विमान विध्वंस कर दिये गये। बन्दरगाहों के जहाजी घाटों और हवाई मैदानों में जापानी विमानों ने बम्ब गिरा कर उन्हें नष्ट कर दिया। सचमुच ही जापान के इस भीषण हमले ने पर्ल बन्दरगाह तथा हवाई द्वीपसमूह को विध्वंस कर डाला।

★ ★ ★

बरमा रोड से चीन पर जापान का धावा

चीन और बरमा की सीमा के मध्य चार मार्ग है। पहला मार्ग रेलवे का है जो रंगून से लाशियो को जाता है। लाशियो से बरमा सड़क चुंकिङ्ग को है। दूसरा रंगून से सड़क मार्ग चुंकिङ्ग को है। तीसरा इरावदी नदी होकर भामो को मार्ग जाता है। भामो से सड़क लाशियो में जाकर बरमा सड़क से मिलती है। चौथा रंगून से मांडले तक रेलवे मार्ग जाता है। मांडले से भामो तक नदी होकर और फिर सड़क से चुंकिङ्ग पहुँचते हैं।

एक नया सड़क मार्ग सदिया आसाम से चुंकिङ्ग को बनाया गया है। यह दुर्गम मार्ग शूक्यांग, मेकोंग और विक्यांग नदियों को पार करता हुआ तावांग, चेंग्टू और हांचाव नगरों होता हुआ चुंकिङ्ग जाने के लिये बनाया गया इसके तयार होने के पूर्व ही रंगून वाला मार्ग बन्द हो गया।

बरमा के पतन होने से यह सभी मार्ग संकटमय हो गये हैं। जापानी सेनाओं ने उपर्युक्त सड़कों तथा मार्गों से होकर ही चीन पर धावा मारा है। यूनन प्रान्त होकर जापानी सेनायें किन्हें की ओर बढ़ीं, किन्हें में भीषण युद्ध हुआ। जापानी सेना ने घेरा डाल दिया।
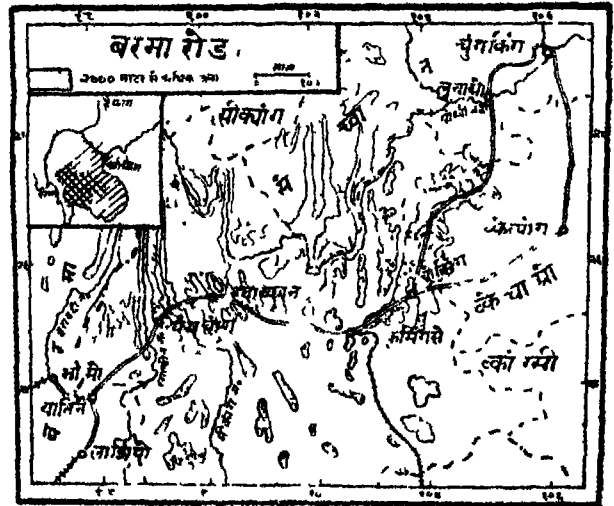
७४

जापानी सेनायें आगे बढ़ रही हैं। इस प्रकार चीन देश समुद्र और बरमा की ओर से घिर गया है।

रंगून पर गोलाबारी

बाईस दिसम्बर सन् १९४१ ई० को रंगून पर प्रथम जापानी हवाई आक्रमण हुआ जिसमें ६०० नागरिक मारे गये। १० शत्रु और ३ ब्रिटिश विमान नष्ट हुये चौथी और पांचवीं जनवरी को उजाली रात में जापानी विमानों ने रंगून नगर पर आक्रमण किया। रंगून नगर के ऊपर चार हवाई युद्ध हुये जिसमें मित्र सेना की ओर से अमरीकन, चीना और ब्रिटिश लड़ाकों ने भाग लिया। हवाई युद्ध में ६० शत्रु तथा चार मित्र विमान नष्ट हुये। ६ जनवरी को प्रातः काल ४ बजे रंगून पर जापानी वायुयानों ने आक्रमण किया। नगर के उत्तर की ओर हवाई स्टेशन पर बम्ब गिराये गये। ९ जनवरी को नगर के उत्तर की ओर हवाई अड्डे पर प्रातः काल ४ बजकर ४५ मिनट पर शत्रु विमानों का आक्रमण हुआ एक घंटे तक जापानी विमान उड़ते रहे। वायुयान संहारिणी तोपों ने जापानी विमानों को मार भगाया। १३ जनवरी को रंगून नगर के उत्तर की ओर एक हवाई स्टेशन पर जापानी विमानों ने प्रातः काल ४ बजकर ४५ मिनट पर आक्रमण किया और बम्ब गिराये परन्तु विमान संहारिणी तोपों ने उन्हें मार भगाया।

टाकियो रेडियो द्वारा रंगून के निवासियों को कहा गया था कि जापानी आक्रमण द्वारा रंगून नगर धरती पर गिराकर समतल कर दिया जावेगा। इससे नगर मे बड़ी सनसनी फैल गई थी। कुछ डाकुओं ने लूट मार आरम्भ कर दी परन्तु डाकुओं का जत्था पकड़ लिया गया और उनका नेता गोली से मार डाला गया। नगर पर कोई जापानी आक्रमण नहीं हुआ। २३ जनवरी को रंगून नगर पर फिर शत्रु हवाई आक्रमण दो बार हुआ। ब्रिटिश लड़ाका विमानों ने पहला बार ४ और दूसरी बार १४ शत्रु विमान मार गिराये। २६ जनवरी को नगर पर जापानी विमानों ने बड़ा वेग पूर्ण आक्रमण किया परन्तु ब्रिटिश विमानों ने २१ शत्रु हवाई जहाज मार गिराये। जब जापानी तथा थाई सेनायें मौल्मीन नगर की ओर बढ़ रही थीं। रंगून पर लगातार हवाई आक्रमण हो रहे थे। रंगून नगर पर ७ फरवरी को ३ बजे प्रातः काल भीषण हवाई आक्रमण हुआ। आक्रमण ४ घंटे तक होता रहा। वह सबसे बड़ा आक्रमण था। नगर का बहुत सा भाग इससे नष्ट हुआ और बड़ी हानि हुई। शत्रु के विमानों के ६ जत्थे आक्रमण कर रहे थे। १० विमान मार गिराये गये।

२७ फरवरी को जापानी वायुयानों की एक बड़ी सेना रंगून पहुँची और नगर पर बम्ब वर्षा आरम्भ कर दी। परन्तु उसे सफलता नहीं हुई और ब्रिटिश विमानों तथा तोप संहारिणी तोपों ने मार भगाया। २७ शत्रु वायुयान मार गिराये गये।

रंगून की ओर बिलिन नदी से शत्रु सेना बढ़ती हुई रंगून के समीप पहुँच गई। पीगू के ऊपर रेलवे लाइन काट दी गई और लोअर बरमा सड़क पर भीषण हवाई आक्रमण किये। बम्ब वर्षा के कारण समस्त टौंगू नगर में भीषण अग्नि लगा दी गई।

६ मार्च को रंगून में जापानी सेना उतार दी गई और नगर पर चारों ओर से जापानी सेनाओं ने स्थल तथा हवाई मार्ग से आक्रमण किया। ७ मार्च को रंगून के सैनिक तथा सामरिक स्थान और युद्ध सामग्री नष्ट कर दी गई। सीरियन रेल के कारखाने में आग लगा कर नष्ट कर दिया गया और तेल के नलों की लाइन काट दी गई। सैनिक योजना के अनुसार जहाज, घाट, गोदाम, बड़ी दूकानें, टेलीफोन, टेलीग्राफ, बेतार के तार घर, बिजली घर तथा बिजली के खम्भे आदि सभी जला कर नष्ट कर दिये गये या बारूद और गोले से उड़ा दिये गये। बहां पेट्रोल जमा था। जब ब्रिटिश सेना ने पेट्रोल की टंकियों में आग लगाई तो अग्नि ज्वालायें ४० मील तक दिखाई पड़ रही थीं। सभी आवश्यक स्थान तथा वस्तुओं को नष्ट करने के पश्चात् ब्रिटिश सेनायें रंगून से हटा दी गईं। ८ मार्च को रंगून पर जापानी अधिकार हो गया।

बिलिन नदी पार करने के पश्चात् ही शत्रु सेना ने रंगून का घेरा डालना आरम्भ कर दिया था। सिंगापुर के पतन के कारण बंगाल की खाड़ी में जापानी जहाज आये और रंगून में सेना उतारी गई।

७५

रंगून की स्थिति बड़ी भयानक हो गई। नगर तथा समीपवर्ती स्थानों में लूट मार होने लगी नागरिक जीवन संकट में पड़ गया। ब्रिटिश तथा जापानी तोपें तीन दिन लगातार गोलेबारी करती रहीं। नगर पर लगातार बम्ब वर्षा होती रही। लगातार बम्ब तथा गोलों की वर्षा के कारण समस्त नगर नष्ट हो गया जो कुछ बचा था उसे ब्रिटिश सेना ने चलते समय नष्ट कर दिया। बरमा में जापान की पञ्चम सेना काम कर रही थी। यह जापानी लोग बरमी भेष में वहां पहले पहुँच गये थे ब्रिटिश सेना ने सभी उपयोगी सामान स्थान, मनुष्य आदि को आग लगा लगा कर नष्ट कर दिया जिससे जापानी उससे लाभ न उठा सकें।

रंगून में रहने वाले भारतीय लोगों को लौटने में बड़ी असुविधा हुई और केवल भाग्यवान व्यक्ति ही भीषण संकटों का सामना करते लौट सके। पानी-भोजन और धन का तो कहना ही क्या उनके जान के लाले पड़ गये थे। मार्ग में लुटेरों ने माल छीन लिया और लोगों को मार डाला।

रंगून नगर की जन-संख्या ६ लाख थी। जिस समय ब्रिटिश सेना वहां से हटाई गई और जापानी सेना का अधिकार हुआ नगर में केवल कुछ हजार व्यक्ति शेष रह गये थे। रंगून में राख और कोयले के अतिरिक्त जापानियों के लिये कुछ न बचा था। जापानी सेना उजाड़, ढाई हुई गलियों और सड़कों में होकर नगर में घुसी और नगर को उजाड़ खंडहर का एक ढेर पाया।

बरमा युद्ध—१

(दक्षिणी बरमा और रंगून का पतन)

पूर्व की ओर महासागरीय युद्ध आरम्भ होने के दो दिन पश्चात् ९ दिसम्बर को जापानी विमानों ने टेनासिरीम कमिश्नरी की भूमि में हवाई आक्रमण किया। आक्रमण में ७ आदमी मारे गये। १४ दिसम्बर को जापानी वायुयानों ने टेनासिरीम में दो बार हवाई हमला किया। शत्रु विमान मेर्गुई मार्ग से रंगून की ओर बढ़े परन्तु ब्रिटिश विमानों के उड़ने पर वापस चले गये। १४ जनवरी को थाईलैंड से जापानी सेना विक्टोरिया प्रदेश (दक्षिणी बरमा) में घुस पड़ी। टेनासिरीम पर पुनः शत्रु विमानों ने आक्रमण किया। बरमा भूमि पर शत्रु सेना के प्रवेश होने के कारण अधिक भारतीय सेना बरमा पहुँचाई गई। रंगून पर प्रथम जापानी हवाई आक्रमण २३ दिसम्बर १९४१ को हुआ। आक्रमण में ६०० नागरिक मारे गये। १० शत्रु विमान तथा ३ ब्रिटिश विमान नष्ट हुये।

पहली जनवरी को मेर्गुई में विक्टोरिया के समीप जापानी सैनिकों के आगे बढ़ने पर ब्रिटिश सेना पहुँची और उन्हें पीछे हटा दिया। मौल्मीन में जापानी तथा मित्र विमानों में युद्ध हुआ। ४ शत्रु विमान गिराये गये। मौल्मीन में जापानी वायुयानों ने मशीनगन द्वारा गोलेबारी किया। रंगून पर रात में हवाई आक्रमण तथा नगर के ऊपर हवाई युद्ध हुआ। ६ जनवरी को रंगून तथा मौल्मीन पर हवाई आक्रमण हुआ। ९ जनवरी को मेर्गुई और मौल्मीन पर जापानी हवाई आक्रमण हुआ जिससे कुछ नागरिक मारे गये। १० जनवरी को मौल्मीन, मर्तबान और दक्षिणी बरमा के दूसरे नगरों पर शत्रु के हवाई हमले हुये। १४ जनवरी को बरमा का युद्ध लड़ने के लिये चीनी सेना पहुँच गई। जापानी सेना के विरुद्ध प्रत्याक्रमण करने के लिये मित्र सेना ने परामर्श किया।

१६ जनवरी को दक्षिणी बरमा में मेकूटा स्थान पर मित्र तथा जापानी सेना में मुठभेड़ हुई। दक्षिणी बरमा में मित्र तथा शत्रु सेना में युद्ध हुआ। टेशाय नगर पर जापानी सेना का अधिकार हो गया और वहाँ से ब्रिटिश सेना हटा दी गई। २१ जनवरी को मेरावादी के पूर्व बरमा सीमा को पार करके थाई सेना ने बरमा में प्रवेश किया। मेरावादी नगर के उत्तर घमासान युद्ध हुआ और नगर पर हवाई आक्रमण हुआ। शत्रु सेनायें मौल्मीन नगर तथा हवाई अड्डे की ओर बढ़ीं। मेरावादी के उत्तर की ओर मित्र
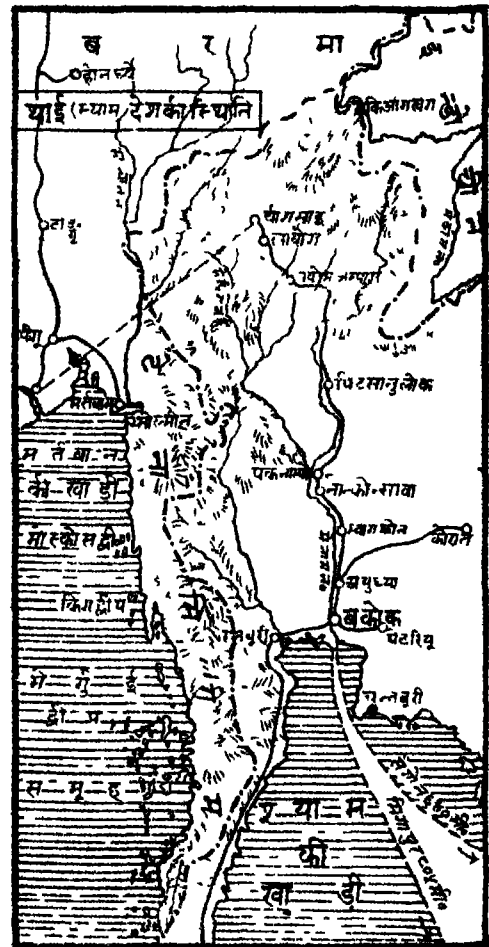
७६

सेना ने थाई-जापानी सेना को मौल्मीन की ओर बढ़ने से रोक दिया। यह स्थान मौल्मीन से ७९ मील पूर्व की ओर है। शत्रु सेनायें तीवाकोल से पाल्हू तक ३० या ४० मील लम्बे क्षेत्र में बढ़ रही थीं।

दक्षिण की ओर से जो जापानी सेनायें मौल्मीन की ओर बढ़ रही थीं उनसे और ब्रिटिश सेना से मौल्मीन नगर से ४५ मील की दूरी पर कावकारीक स्थान पर भीषण संग्राम हुआ। ब्रिटिश सेनायें पीछे हट गईं। कावकारीक पहाड़ियों होकर शत्रु सेनायें आगे बढ़ती गईं। कावकारीक से हट कर ब्रिटिश सेनायें मौल्मीन के पश्चिम की ओर चली गईं। मौल्मीन नगर साल्विन नदी के पूर्व की ओर स्थित है। इसलिये साल्विन नदी तथा कावकारीक पहाड़ियों के कारण शत्रु सेना को नगर की ओर बढ़ने में कठिनाई हुई। पूर्व की ओर मित्र सेना को प्रबल शत्रु सेना के कारण पीछे हटना पड़ा। शत्रु सेना को थांगइन और साल्विन घाटी होकर बढ़ने में कठिनाई हुई। अधिक कठिनाई पड़ने के कारण मौल्मीन नगर पर मित्र सेना ने अधिकार कर लिया और मेगुई के क़िले से सेना हटा ली गई। उसके पश्चात् ब्रिटिश सेनायें पीछे हटती गईं और जापानी सेनायें चारों ओर से मौल्मीन नगर की ओर बढ़ती गईं। ३८ फरवरी को मौल्मीन नगर पर चारों ओर से जापानी सेना ने धावा मारा। प्रातः काल के आक्रमण का सामना किया गया। दोपहर को मित्र सेना ने प्रत्याक्रमण किया परन्तु भारी शत्रु सेना के आक्रमण के सामने उसके पैर न टिक सके। समस्त दिन लगातार युद्ध होता रहा और ब्रिटिश सेना साल्विन नदी पर हटा दी गई। ब्रिटिश सेना ने साल्विन नदी के दूसरे तट पर डेरा डाला। जापानी सेना आगे बढ़ी और साल्विन नदी को पार करना चाहा। मर्तबान पर भी शत्रु ने गोलेबारी की। साल्विन नदी मर्तबान के लिये प्राकृतिक रक्षक है। दूसरी फरवरी को शत्रु सेना ने कुछ स्थानों पर साल्विन नदी पार किया। जापानी विमान भी आगे बढ़े और उन्होंने रंगून तथा मध्य बरमा के नगरों पर बम्ब वर्षा की। साल्विन नदी का युद्ध लड़ने के लिये और अधिक सेना भेजी गई। इसी बीच रंगून पर ७ फरवरी को भीषण हवाई आक्रमण हुआ जो ४ घंटे तक लगातार जारी रहा। साल्विन तट के पाआन नगर पर ५ फरवरी को जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। ११ फरवरी को मर्तबान के उत्तर-पश्चिम एक बड़ी जापानी सेना उतार दी गई और मर्तबान पर शत्रु का अधिकार हो गया। बरमा में जो चीनी सेना जापानी सेना के साथ युद्ध कर रही थी वह पीछे हटने की अपेक्षा अपने सिर निछावर करती रही। पा-आन तथा मर्तबान सीमा पर भारतीय सेना ने अपनी वीरता का परिचय दिया और शत्रु सेना की बाढ़ को केवल रोका ही नहीं वरन् उसे एक बार पीछे मार भगाया।

१५ फरवरी को जापानी सेना ने साल्विन नदी पार किया और थाटन की ओर अग्रसर हुई। जापानी सेना का रुख देख कर श्वेगन थाटन-पुल से ब्रिटिश सेना हटा कर बिलिन नदी पर पहुँचाई गई। यह स्थान मौल्मीन से ४० मील उत्तर है। बिलिन नदी मर्तबान खाड़ी में गिरती है। थाटन रेलों और सड़कों का केन्द्र है। थाटन नगर को घेरने के लिये डान-थामी नदी के पार थाटन के दक्षिण एक जापानी सेना भेजी गई। १६ फरवरी को जापानी सेना रंगून से १०५ मील की दूरी पर पहुँच गई। १८ फरवरी को जापानी सेना और ब्रिटिश सेना में बिलिन नदी के तट पर भीषण संग्राम हुआ। शत्रु सेना ने कई स्थानों पर बिलिन नदी पार किया। पा-आन क्षेत्र में भी युद्ध जारी रहा। जापानी विमान आगे बढ़े और बेर्मान नगर पर बम्ब वर्षा किया। बिलिन नदी पर और सीटांग तथा बिलिन नदी के मध्यवर्ती मैदान में मित्र तथा जापानी सेना में भीषण हवाई तथा स्थली युद्ध हुआ। सिंगापुर के पतन हो जाने से नवीन जापानी सेना पहुँच गई थी अतः ब्रिटिश सेना सीटांग के दूसरे तट पर हट गई। पीगू पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया।

रंगून के भावी युद्ध की तयारी के लिये जापान ने डेढ़ लाख नई सेना का प्रबंध किया। नवीन ब्रिटिश, चीनी, भारतीय सेनाएँ भी बरमा पहुँच गईं। उत्तर की ओर थाई-बरमा सीमा पर अधिक जापानी सेना के एकत्रित होने से उत्तरी बरमा के लिये भय उत्पन्न हो गया।

७ मार्च को रंगून नगर पर चारों ओर से जापानी सेनायें बढ़ती रहीं। स्थल तथा हवाई मार्ग से शत्रु आक्रमण हुये। ब्रिटिश सेना ने युद्ध-सामग्री आदि में आग लगा दी और सब सामान नष्ट कर दिया। फिर वहां से मित्र सेना हटा ली गई। ८ मार्च को रंगून पर जापानी अधिकार हो गया।

★ ★ ★

बरमा युद्ध—२

(पीगू, टौंगू और प्रोम का पतन)

रंगून के पतन होने के के पश्चात् जापानी सेनाएँ उत्तर तथा पश्चिम की ओर बढ़ीं। १० मार्च को रंगून नगर के उत्तर की ओर भीषण संग्राम हुआ। थारावादी पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। यह नगर रंगून प्रोम के बीच में है। इससे रंगून-प्रोम सड़क काट दी गई। जब मावबी के समीप रंगून-प्रोम सड़क काटने के लिये जापानी सेना बढ़ी तो ब्रिटिश टैंक तथा सेना उसकी रक्षा को भेजी गई परन्तु जापानी गोताखोर विमानों ने बम्ब वर्षा करके ब्रिटिश सेना को असहाय बना दिया।

पीगू के समीप जनरल अलिक्जंडर की सेना से चीनी सेना भी आ मिली। पीगू के उत्तर की ओर जाकर जापानी सेना ने खाइयां खोद कर डेरा डाल दिया।

रंगून के पतन के पश्चात् बरमा में दो युद्ध क्षेत्र बन गये। इरावदी डेल्टा का दक्षिणी भाग जापानी अधिकार में हो चुका था। इस लिये उत्तर की ओर जापानी सेनाएँ दो मार्ग से बढ़ीं। पीगू से सालिवन नदी होकर और हेंजादा तथा थारावादी से इरावदी नदी हो कर। इस प्रकार इरावदी नदी और सालिवन नदी के युद्ध-क्षेत्र बने।

सालिवन नदी-युद्ध-क्षेत्र में पहला युद्ध श्वेगविन में हुआ। यह नगर जापान के अधिकार में जा चुका था। एक दिन एक भारतीय हवलदार कुली के भेष में जापानी सेना के बीच खाई खोदने गया और गुप्त रूप से उसका समस्त भेद ले आया। दूसरे दिन ब्रिटिश सेना ने अचानक धावा मारा परन्तु बरमी (जो जापानियों से मिले थे) लोगों ने नगाड़ा बजा कर जापानियों को सचेत कर दिया फिर भी श्वेगविन पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार कर लिया। बाद में भीषण संग्राम हुआ और वहां जापानी सेना का अधिकार होगया।

जापानी सेनाएं इस क्षेत्र में मांडले की ओर बढ़ रही थीं। थाई देश की ओर से थाई तथा जापानी सेनाएँ बढ़ीं पापून, ल्यू, पाऔंग आदि स्थानों पर अधिकार करती जापानी सेनाएँ आगे बढ़ती गईं। इस क्षेत्र में टौंगू स्थान पर मित्र तथा शत्रु सेना में भीषण संग्राम हुआ। जनरलासिमो (च्यांग काई शेक) की पांचवीं और छठीं सेना इस नगर की रक्षा को पहुँची। कई दिन तक भीषण संग्राम जारी रहा अंत में जापानी सेना ने इसके पश्चिमी भाग पर अधिकार कर लिया। पूर्व की ओर युद्ध होता रहा। चीनी सेना को जापानी सेना ने चारों ओर से घेर लिया परन्तु फिर भी लड़ती हुई चीनी सेना टौंगू से पहली अप्रैल को हट गई। जापानी सेना की सहायता बरमा की जापानी पञ्चम (जासूसी) सेना कर रही थी इसलिये उससे जंगली पहाड़ी भाग में शीघ्रता पूर्वक बढ़ने में बड़ी सहायता मिलती थी। टौंगू मांडले से १५० मील दक्षिण की ओर बरमा सड़क पर है।

इरावदी क्षेत्र में इरावदी नदी होकर बोटों (नावों) द्वारा जापानी सेना आगे बढ़ती गई। पञ्चम सेना ने इस क्षेत्र में शत्रु की बड़ी सहायता की। उन्हें रात में सरलता पूर्वक नावें मिल जाती थीं और वे आगे बढ़ती थीं। दिन में वह वनों में छिप जाती थीं। इस क्षेत्र में एक बड़ी जापानी सेना प्रोम नगर की ओर बढ़ रही थी। एक दूसरी सेना लेट पाडान से इरावदी-तेल क्षेत्र की ओर वन होकर बढ़ी। एक तीसरी

सेना ने पश्चिम की ओर से जाकर बेसीन पर अधिकार कार किया और एक ओर सेना अक्याब की ओर बढ़ी।

२९ मार्च को लगभग ५००० बर्मी और जापानी सेना ने इरावदी नदी को पार किया और क्यागिन की ओर बढ़ीं। ३१ मार्च को इरावदी क्षेत्र में भीषण संग्राम हुआ। पहले तो ब्रिटिश सेना प्रोम की ओर पीछे हटी परन्तु टैंकों के आ जाने से जापानी सेना पीछे हटा दी गई। पौंडगे नगर पर छापा मारती हुई जापानी सेना श्वेडौंग पहुँची। यह स्थान प्रोम के दक्षिण लगभग १५ मील पर स्थित है। यहां से तेल के कुओं को रेल तथा सड़क जाती है। पहली अप्रैल को प्रोम से ब्रिटिश सेना हटा ली गई। जापानी सेना ने इरावदी के पश्चिमी तट पर अपना डेरा डाल दिया और ब्रिटिश सेना पर गोताखोर और मशीनगन वाले विमान लगातार गोलेबारी करते रहे।

सीटांग क्षेत्र में जापानी सेना चींगमायी के उत्तर पश्चिम की ओर से बढ़ने लगी और मांडले तथा लाशियो के मध्य रेलवे और सड़क को काट देने का प्रबन्ध किया।

टौंगू और प्रोम के युद्ध समाप्त होने पर मार्शल तथा मैडम च्यांग काई शेक बर्मा आये और मांडले, लाशियो और मयामों नगर तथा चीनी सेना का निरीक्षण किया। उन्होंने चीनी, ब्रिटिश तथा अमरीकन सेनापतियों से बातचीत की। संयुक्त सेनापतित्व तथा संयुक्त रूप से बरमा का युद्ध लड़ने के लिये निश्चय किया गया।

* * *

बरमा युद्ध—३

मांडले-लाशियो पतन तथा तेल प्रदेश पर जापानी अधिकार

टौंगू के भीषण संग्राम के पश्चात् चीनी सेना टौंगू नगर के उत्तर की ओर हट गई। मार्शल तथा मैडम च्यांग काई शेक के आगमन से चीनी सेना में नई जान आ गई थी अतः उसने भीषण संग्राम आरम्भ किया।

इरावदी क्षेत्र में जापानी सेनायें यनांजाऊ तेल प्रदेश की ओर बढ़ रही थीं। १४ अप्रैल को मिगयांग नामक गांव में भीषण संग्राम हुआ। रंगून युद्ध के पश्चात् जापानी सेना में टैंक आ गये थे। अतः जापानी सेना ने ब्रिटिश सेना को हरा दिया और मिगयांगे पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश सेनायें पीछे हट गईं। जापानी सेनायें आगे बढ़ती गईं और तेल के कारखानों पर गोलों की बौछार आरम्भ हो गई। १६ अप्रैल को ब्रिटिश सेना ने यनांजाऊ के तेल के कलों और कारखानों को नष्ट कर दिया और उत्तर की ओर हट गई। यानौंजाऊ माग्वे से २२ माल उत्तर इरावदी तट पर है। यहां के तेल के कुएँ बड़े उपयोगी हैं। इससे प्रति मास १० लाख गैलन तेल निकाला जाता था। मिन्हला और म्योहल के संग्राम के बाद यनौंजाऊ पर जापानी अधिकार हो गया। म्योहैंग की ओर से जापानी सेनाएँ ब्रिटिश सेना को घेरने के लिये बढ़ीं परन्तु इसी बीच चीनी सेना सहायता को पहुँच गई और १८ अप्रैल को उसने यनांजाऊ पर भीषण संग्राम के पश्चात् फिर अधिकार प्राप्त कर लिया। कुछ दिनों बाद जब ब्रिटिश सेनायें हट गईं तो चीनी सेनाएँ नगर छोड़ पूर्व की ओर चली गईं। जापानी सेनाएँ ब्रिटिश सेना को पीछे हटाती हुई मांडले की ओर बढ़ीं और धीरे धीरे पगान, पाकोकू आदि नगरों पर जापानी अधिकार कर लिया।

साल्विन नदी के क्षेत्र में थी-स्वा नदी के तट पर चीनी-जापानी भीषण युद्ध हुआ उसके बाद क्यूँगान एडाशी, अलान्मया, थावट, लैकाव, यमेदिन इत्यादि नगरों पर अधिकार करती जापानी सेनाएँ इहाजा के समीप पहुँचीं।

पिनमाना के संग्राम के बाद जापानी सेना ने मींटिंग क्षेत्र में चीनी सेना को घेरने का प्रयत्न किया टौंगगिंगई से ब्रिटिश सेना भय के कारण हट गई और लैकोव पर जापानी अधिकार हो गया। शत्रु सेनाएँ मांडले की ओर अग्रसर हो रही थीं।

इसी बीच थाई सीमा से शत्रु सेनाएँ शान राज्यों की ओर बढ़ीं और टाक्टोन में भीषण संग्राम हुआ जिसमें जापानी सेना की विजय हुई। थमैदिन, और होपोंग पर जापानी अधिकार हो गया।

२५ अप्रैल को जापानी सेना ने मैनमन नगर पर पर अधिकार किया। यह लाशियो से ११० मील दक्षिण की ओर स्थित है। यहां से जापानी विमानों का एक बड़ा जत्था उड़ा और लाशियो नगर पर भीषण बम्ब वर्षा करके उसने समस्त नगर में आग लगा दी। लोयलेम और सिपाव के मध्य सड़क पर जापानी सेना पहुँच चुकी थी उसने मांडले-लाशियो सड़क तथा रेल काट दी।

२८ अप्रैल का सिपाव, मान गांग और न्यू-लाशियो पर जापानी अधिकार हुआ। २९ अप्रैल को लाशियो का भीषण संग्राम हुआ जिसमें शत्रु के १२ टैंक नष्ट हुये। लाशियो पर जापानी अधिकार हो गया और चीनी सेना उत्तर की ओर हट गई।

लाशियो के पतन होने के बाद सालविन और इरावदी के मध्य ब्रिटिश सेना फँस गई और उसकी स्थिति संकट मय हो गई परन्तु इसी बीच २८ अप्रैल को टैंग विंगई पर चीनी सेना ने फिर अधिकार कर लिया। इस गड़बड़ी से ब्रिटिश सेनायें मांडले की ओर हट गई। लाशियो से एक जापानी सेना चीन-बरमा सड़क होकर उत्तर की ओर बढ़ी और दूसरी सेना दक्षिण मांडले की ओर अग्रसर हुई। जापानी सेना मांडले के साथ ही साथ मित्र सेना को घेर लेना चाहती था।

मांडले-रंगून सड़क होकर जो जापानी सेना मांडले की ओर बढ़ रही थी उसने ३० अप्रैल को क्योक्से पर अधिकार कर लिया। यह स्थान मांडले नगर से २० मील दक्षिण की ओर स्थित है। ब्रिटिश सेना ने मांडले को भयंकर संकट में देख अपने को बचाना चाहा। मांडले नगर पर पश्चिम दक्षिण और पूर्व से जापानी सेनायें बढ़ रही थीं। ब्रिटिश सेना के घिर जाने का भय था। २९, ३० अप्रैल और पहली मई को मांडले नगर के लिये लगातार युद्ध होता रहा। पहली मई को जापानी सेना ने मांडले नगर पर भी अधिकार कर लिया। उसके बाद ब्रिटिश सेनायें धीरे धीरे भारतीय सीमा की ओर हट गईं। समस्त बरमा पर जापान का अधिकार हो गया।

★ ★ ★

डच पूर्वी द्वीप समूह

जर्मन-जापान संधि और फ्रान्सीसी इण्डोचीन पर जापानी आक्रमण होते ही पूर्वी डच द्वीप समूह का प्रश्न खड़ा हुआ। यह द्वीप समूह हालैंड साम्राज्य के अंग थे और वह आर्थिक दृष्टि से बड़े उपयोगी हैं। यह पश्चिम से पूर्व की ओर लगभग ३००० मील में फैले हैं और रबर तथा मिट्टी के तेल की उपज के कारण पिछले कुछ वर्षों में बड़े महत्व पूर्ण हो गये हैं। सामरिक दृष्टि से

वाइस एडमिरल ई० ई० एल० हेल्फ्रिच पूर्वी द्वीप समूह के डच जल तथा हवाई सेना के प्रधान।

यह ब्रिटेन के बड़े जहाजी अड्डे सिंगापुर, मनिल्ला के अमरीकन अड्डे और पोर्ट डार्विन के आस्ट्रेलियन अड्डे पर निर्भर थे। जापान ने थाई देश और इण्डोचीन के सीमावर्ती झगड़ों को उभाड़ दिया और फिर इन्हें निपटाने के लिये स्वयं मध्यस्त बन बैठा। इस प्रकार इण्डोचीन और थाई देश पर प्रभाव जमाने के पश्चात् वह मलय सिंगापुर की ओर बढ़ा। फिलीपाइन में भी युद्ध होता रहा। डार्विन पर भी जापानी आक्रमण आरम्भ हुआ। धीरे धीरे डच-द्वीप समूहों पर जापानी आक्रमण आरम्भ हुआ और आज जापान ने समस्त पूर्वी द्वीप समूहों, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि पर अधिकार प्राप्त कर लिया है।

जापान, बरमा सड़क और इण्डोचीन

जुलाई १९४० ई० में जापान से एक संधि के अनुसार ३ महीने तक बरमा सड़क बन्द रही और बरमा सड़क तथा हाँगकाँग होकर कोई युद्ध सामग्री कुनमिंग और चुङ्किङ्ग (चीन) नहीं गई। सितम्बर १९४० ई० में जापान ने धुरी राष्ट्रों का साथ पकड़ा और जर्मनी-इटली, तथा जापान में १० वर्ष के लिये एक संधि हुई। यह संधि बर्लिन में की गई। अतः ८ अक्तूबर के बाद बरमा सड़क फिर चीन के लिये खुल गई।

इसी मध्य जापान ने इण्डोचीन पर प्रभाव डाला। जापानी लड़ाका जहाज हैफोंग के समीप एकत्रित हुये और जापानी सेना ने हनोई पर अधिकार कर लिया। उत्तरी इण्डोचीन में पहुँच जाने के कारण जापानी सेना ने सड़क खुलने पर बम्ब वर्षा की और इण्डोचीन और दक्षिणी चीन के मध्य रेलवे को रोक दिया। बरमा सड़क द्वारा फिर भी सामान जाता रहा। प्रशान्त महासागर का युद्ध आरम्भ होते ही इण्डोचीन पर जापान ने अधिकार किया और वहाँ के हवाई अड्डे ले लिये। मलय, सिंगापुर और बरमा के पतन होने तथा रंगून शत्रु हाथ में जाने से बरमा सड़क बन्द हो गई है। मलय और सिंगापुर के पतन होने से सदिया आसाम से एक नई बरमा सड़क बनाई गई परन्तु जब समस्त बरमा पर जापान ने अधिकार कर लिया तो वह भी बन्द हो गई! उसके पश्चात् ईरान तथा रूसी तुर्किस्तान होकर सामान पहुँचाने का प्रस्ताव किया गया। हाँग काँग पहले ही शत्रु हाथों में जा चुका है। इस प्रकार अब चीन में जल तथा स्थल मार्ग से सामग्री का जाना प्रायः बन्द है।

★ ★ ★

डच द्वीप समूह का आक्रमण

९ जनवरी को जापान का जहाजी बेड़ा मिंडनाओ द्वीप के डवाव स्थान से चला। जहाजी बेड़े में सुसज्जित सेना तथा वायुयान भी थे। इस जहाजी बेड़े ने तेल के केन्द्र ताराकान नगर (उत्तरी-पूर्वी बोर्नियो) और मिनाहासा (मेलेबीस) के तीन स्थानों पर आक्रमण किया। रात में ही जापानी सेना ताराकान में उतार दी गई थी। जापानी पनडुब्बी नावों ने कुछ मित्र जहाज डुबो दिये। स्याम की खाड़ी में दो जापानी जहाजों को डच सबमेरीनों ने डुबा दिया।

१४ जनवरी को जापानी विमानों ने अम्बायना के हवाई अड्डे पर बम्ब वर्षा की। उसके बाद उस पर जापानी अधिकार हो गया। १८ जनवरी को मेदान (सुमात्रा) के डच हवाई अड्डे पर जापानी हमला हुआ। २० जनवरी को मेदान के बन्दरगाह बेलावान पर जापानी वायुयानों का जहाजों पर आक्रमण हुआ और कुछ जहाज डूबे तथा जल गये। मिनाहासा पर जापानी सेना ने अधिकार जमा लिया और केंडारी पर आक्रमण हुआ।

जनरल वैवल ने बटाविया को अपना फौजी केन्द्र बना कर युद्ध संचलन किया। मकासर प्रणाली होकर जापानी जहाजी बेड़ा निकलना चाहता था परन्तु पहले तो वह मित्र सेना के जहाजी बेड़े द्वारा बालिकपापन में रोक दिया गया। जापानी तथा मित्र जहाजों में भीषण संग्राम हुआ। कुछ जापानी और कुछ ब्रिटिश जहाज डूबे। अन्त में ८ फरवरी को बालिकपापन पर जापानी सेना ने अधिकार कर लिया और मकासर की ओर बढ़ी। १० फरवरी को मकासर पर भी अधिकार हो गया। ३ फरवरी को सुर्बाया (जावा) के डच हवाई तथा जहाजी अड्डे पर जापानी आक्रमण हुआ। ५ फरवरी को सुर्बाया पर फिर जापानी विमानों ने बम्ब वर्षा की और बहुत हानि पहुँचाई। ११ फरवरी को ऐडमिरल हार्ट (अमरीका)

वंस्टन चर्चिल इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री। आपने धुरी राष्ट्रों के विरुद्ध अन्त तक युद्ध जारी रखने का प्रण किया है।

प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट संयुक्तराष्ट्र अमरीका के सभापति।
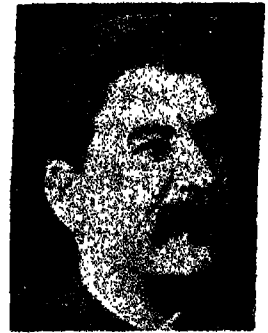
मिस्टर स्टैलिन रूस के प्रधान मन्त्री जिन्होंने जर्मन विद्युत युद्ध की अजेय गाड़ी को रूसी दलदल में फंसा दिया है।

एम० ए० लोजोवस्की रूस के प्रधान प्रचारक।

नवीन इटली का निर्माता तथा धुरी राष्ट्रों का जन्मदाता मसोलनी।

जर्मनी का तानाशाह अडोल्फ हिटलर जिसने संसार को ज़बरदस्ती आधुनिक महासमर की प्रचंड अग्नि में ढकेल दिया है।

जनरल टोजो जापान के प्रधान मन्त्री जिन्होंने मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध प्रशान्त महासागर में युद्ध घोषणा की और एशिया की भूमि को रणस्थल बना दिया।
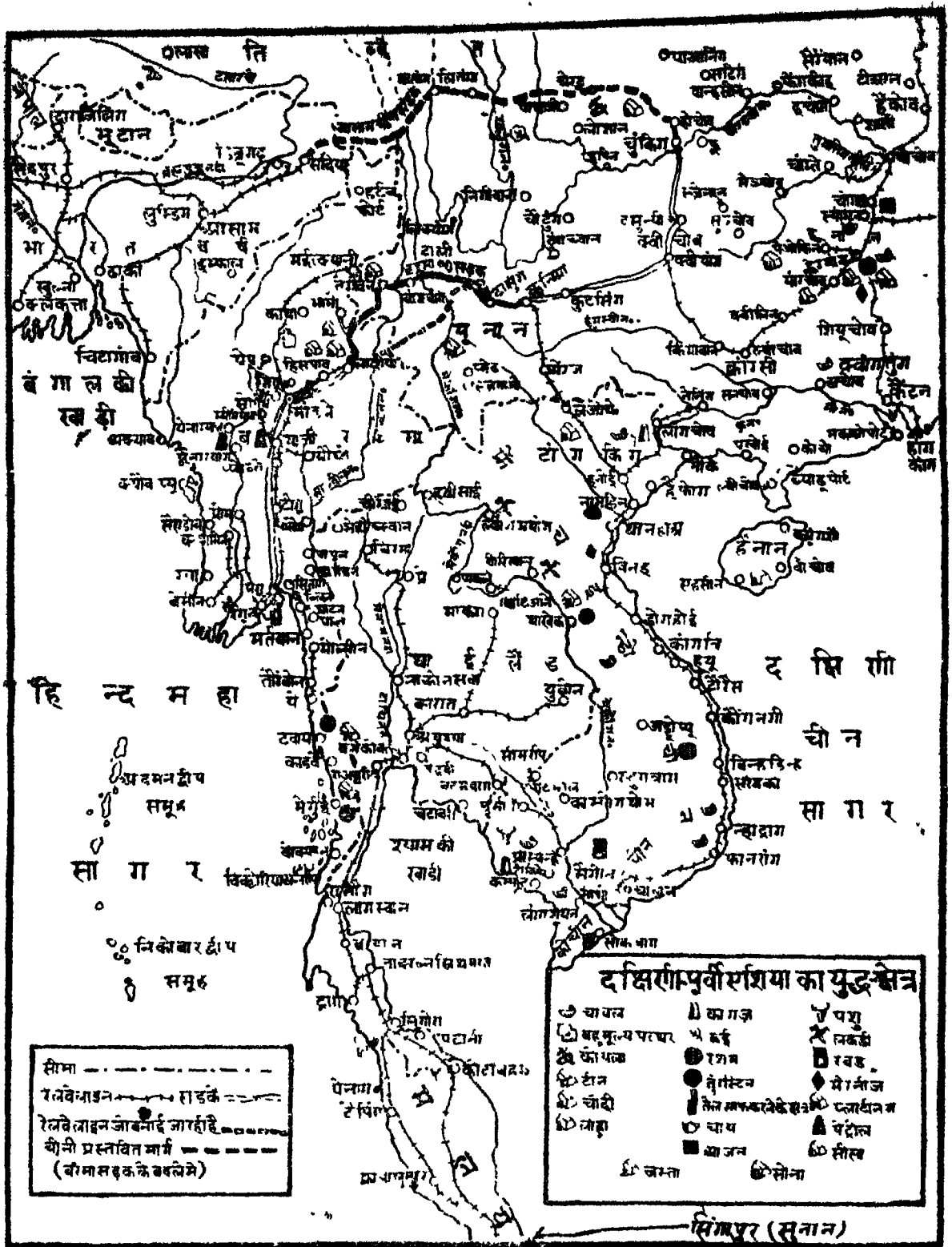
पश्चिमी प्रशान्त महासागर का प्रधान सेनापति नियुक्त किया गया।

१४ फरवरी को सुमात्रा पालेम्बर्ग (मिट्टी के तेल के केन्द्र) में जापानी छतरी सेना के सैनिक उतार दिये गये। पालेम्बर्ग हवाई अड्डा भी है। हवाई अड्डे पर पहले अधिकार जमाया गया उसके पश्चात् डच सेना ने तेल के कारखानों को नष्ट कर डाला जिससे जापानी लोग उसका उपयोग न कर सकें। जापानी सेना ने १८ फरवरी को पालेम्बर्ग पर अधिकार कर लिया। १५ फरवरी को सिंगापुर का पतन हुआ। जिससे मित्र सेना के पैर उखड़ गये और वह हताश सी हो गई।

२ मार्च के बटाविया के पश्चिम बटान प्रान्त में तीन स्थानों पर जापानी सेना उतार दी गई। यह स्थान सुर्बाया और सेमरांग के बीच में स्थित है।

२७ फरवरी को जावा सागर का जहाजी युद्ध हुआ। इस युद्ध में चालीस शत्रु जहाज थे। जो जावा के उत्तरी तट पर सेना उतारना चाहते थे। शत्रु जहाजों का सामना ब्रिटिश, डच, आस्ट्रेलिया और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जहाजों ने किया। शत्रु का मोगामी क्रूशियर जहाज और तीन विध्वंस कारक जहाज नष्ट किये गये और १७ सैनिक ले जाने वाले जहाजों को चोट पहुँचाई गई।

२ मार्च को जापानी सेना ने सोयबांग पर अधिकार कर लिया और रावांग के मैदान के एक बड़े भाग पर अधिकार जमा लिया। जापानी विमान बटाविया और सुर्बाया के आने जाने तथा समाचार पहुँचाने वाले साधनों को काटने में लगे रहे। मित्र-सेना ने जापानी सेना को जावा से निकाल बाहर करने का भरसक प्रयत्न किया। परन्तु शत्रु सेना की हवाई शक्ति अधिक होने के कारण सफलता नहीं हुई। जापानी सेनायें बटाविया (डच द्वीप समूह की राजधानी) और बंदोइंग नगरों को लक्ष बना कर आक्रमण कर रही थीं। ६ फरवरी को जापानी सेना ने बटाविया तथा समस्त पश्चिमी जावा पर अधिकार कर लिया। मित्र सेना बटाविया से हटा दी गई। धीरे धीरे मलक्का द्वीप समूह, आरू, टाइमर, बाली फ्लोरेस, न्यूगिनी और राबौल में भी जापानी सेना ने अधिकार कर लिया। बटाविया के पश्चात् बंदोइंग पर भी जापानी सेना का अधिकार हो गया। जावा के बाद सुमात्रा भी शत्रु हाथों में चला गया।

मित्र सेना ने डच द्वीप समूह की रक्षा के लिये भीषण संग्राम किया परन्तु अंत में वह जापान के अधिकार में चला गया। डच द्वीप समूह के तेल तथा दूसरे उपयोगी कारखाने नष्ट कर दिये गये। जापानी विजय का मुख्य कारण सैनिक, विमान और जहाजों की अधिकता है। लेकिन यहाँ के प्रधान मूल निवासी भी गोरों से असन्तुष्ट थे।

★ ★ ★

ब्रिटिश बोर्निओ पर चढ़ाई तथा पतन

प्रशान्त महासागरीय युद्ध आरम्भ होने के कुछ दिनों के पश्चात् जापान का एक जहाजी बेड़ा जो दक्षिणी चीन सागर में दक्षिण की ओर बढ़ रहा था वह सरावक तट पर पहुँचा। जापानी सेना सरावक में उतार दी गई। तटीय छोटे छोटे नगरों पर जापानी हवाई हमले हुये। जापानी सेना का सामना ब्रिटिश तथा सरावक के राजा की सेना ने किया। परन्तु जापानी सेना की प्रबल बाढ़ तथा शक्ति के सामने ब्रिटिश सेना न ठहर सकी। ३१ दिसम्बर को जापानी सेना ने थूने पर अधिकार करने के बाद समस्त सरावक पर अधिकार कर लिया। सरावक के राजा आस्ट्रेलिया चले गये। १ जनवरी तक सरावक से ब्रिटिश सेनायें हटा ली गईं।

सरावक पतन होने के पश्चात् जापानी सेनायें ब्रिटिश उत्तरी बोर्निओ की ओर बढ़ीं और ४ जनवरी को जापानी सेनायें उतर गईं। लाब्वान के ब्रिटिश जहाजी तथा हवाई अड्डे पर जापानी विमानों ने बम्ब वर्षा की। जो कुछ ब्रिटिश सेना थी वह शत्रु का सामना करती रही। जापानी सेना ने अन्त में लाब्वान पर अधिकार कर लिया। इसी बीच इंगलैंड संयुक्त राष्ट्र अमरीका, डच पूर्वी द्वीप समूह की सरकारों ने प्रशान्त महासागर का युद्ध मिल कर

लड़ने का निश्चय किया। जनरल वैवल संयुक्त सेना के प्रधान सेनापतिबनाये गये। १४ जनवरी को वैवल साहब पूर्वी द्वीप समूह पहुँच कर अपना सैनिक केन्द्र बनाने की खोज करने लगे। उसी दिन पश्चिमी (डच) बोर्निओ पर जापानी सेना उतार दी गई और सरावक की ओर से जापानी सेनायें बढ़ीं। ब्रिटिश बोर्निओ पर जापान का अधिकार हो गया और वहाँ से ब्रिटिश सेनायें हट गईं।

★ ★ ★

न्यूगिनी की चढ़ाई

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रशान्त महासागरीय समुद्रों तथा हवाई अड्डों पर बम्ब वर्षा करने और कुछ द्वीपों तथा बन्दरगाहों पर अधिकार करने के बाद जापानी जहाजी बेड़ा दक्षिण की ओर पहुँचा। राबौल पर पहले जापान के हवाई हमले हुये

७७

उसके बाद २३ जनवरी को जापानी जहाजी बेड़ा राबौल के तट पर पहुँच गया। २३ जनवरी को न्यू-गिनी पर जापानी आक्रमण आरम्भ हो गया। सालोमन द्वीप में जापानी सेना उतार दी गई। राबौल में जापानी तथा आस्ट्रेलियन जल, स्थल और हवाई सेना में युद्ध हुआ। राबौल पर २६ जनवरी को जापानी अधिकार हो गया। राबौल से ली नगर पर जापानी आक्रमण आरम्भ हुआ। कुछ आस्ट्रेलियन स्थल सेना जापानी सेना का सामना करती रही परन्तु फिर ली पर भी जापान का अधिकार हो गया। इसी बीच जापान ने टाइमर द्वीप पर भी अधिकार जमा लिया। न्यूगिनी में जापान ने तीन बार सेनायें उतारीं और स्थल तथा जल मार्ग से समस्त न्यूगिनी पर अधिकार प्राप्त करना चाहा।

मोरेस्बी बन्दरगाह पर जापान ने लगभग ५० हवाई आक्रमण किये। मोरेस्बी की ओर मर्खान नदी की वनाच्छादित घाटी होकर जापानी सेना बढ़ती रही

इसका सामना आस्ट्रेलियन तथा न्यूगिनी की सेना करती रही। धीरे धीरे जापानी सेना ने सालामायु गस्माता और कोपेंग आदि हवाई अड्डों पर भी अधिकार कर लिया। एक भीषण संग्राम के पश्चात् याम्देना पर भी जापानी अधिकार हो गया।

न्यूगिनी पर अधिकार जमा कर जापान आस्ट्रेलिया पर आक्रमण की तयारी करना चाहता है। न्यूगिनी सागर में जापानी तथा मित्र राष्ट्र के मध्य भीषण हवाई और समुद्री संग्राम हुये। न्यूगिनी की लड़ाई में जापान के १३ सेना ले जाने वाले और ५ क्रूशियर जहाज डूबे।

आस्ट्रेलिया पर भय उत्पन्न होने के कारण ब्रिटिश, अमरीकन और आस्ट्रेलियान बम्ब वर्षकों ने राबौल, ली, याम्देना, गस्माता और कोपेंग आदि जापानी अड्डों पर लगातार हवाई आक्रमण कर के शत्रु को अधिक से अधिक हानि पहुँचाया। मित्र राष्ट्र न्यूगिनी तथा मोरेस्बी बन्दरगाह को प्रशान्त महासागरीय तोमुक बनाना चाहते हैं।

★ ★ ★

लंका पर जापानी हवाई हमले

सिंगापुर पर अधिकार प्राप्त करने से जापानी जहाजों के लिये हिन्द महासागर का द्वार खुल गया। अतः एक बड़ा जापानी जहाजी बेड़ा हिन्द महासागर में बंगाल की खाड़ी होकर आया। इसमें तीन बड़े युद्ध पोत (जिसमें से एक में १६ इन्च की आधुनिक तोपें थीं) ५ विमान वाहक जहाज तथा कई एक भारी तथा छोटे क्रूजर और विध्वंसकारक जहाज थे। यह शत्रु जहाजी बेड़ा कोलम्बो की ओर जा रहा था। जापानी विमानों ने लंका की राजधानी कोलम्बो नगर पर ६ अप्रैल को हमला किया। बन्दरगाह पर बम्ब गिराये गये। ब्रिटिश लड़ाका विमानों तथा वायुयान संहारिणी तोपों ने उनका सामना किया और ३० जहाज मार गिराये। ९ अप्रैल को ट्रिंकोमाली बन्दरगाह पर जापानी विमानों ने हवाई आक्रमण किया। यह ट्रिंकोमाली की खाड़ी पर बन्दरगाह है। यह संसार के पांच बड़े प्राकृतिक बन्दरगाहों में से है। वहाँ भी १२ जापानी विमान गिराये गये। बन्दरगाह पर हानि तो हुई लेकिन कोई नागरिक नहीं मरा।
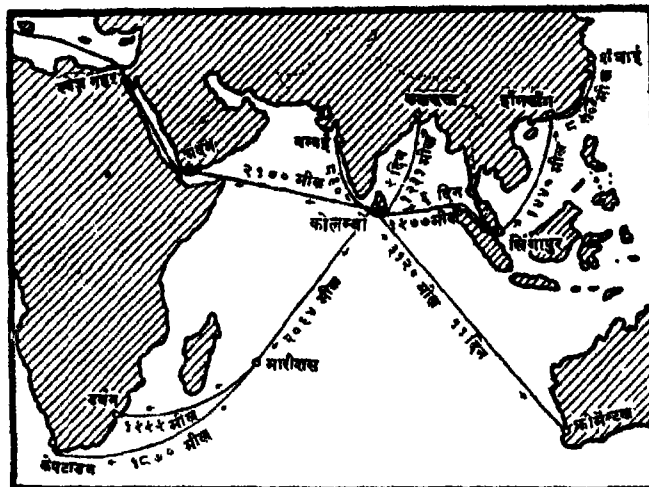
संसार के मार्गों के लिये कोलम्बो की महत्वपूर्ण और केन्द्रवर्ती स्थिति

७८

लङ्का के तट के समीप शत्रु जहाजों ने डोर्सेट-

शायर और कार्नवाल (क्रूजर) तथा हर्मीस विमान वाहक ब्रिटिश जहाजों को डुबो दिया। इसके अतिरिक्त बङ्गाल की खाड़ी में कई एक व्यापारिक जहाज डुबाये गये।

७९

★ ★ ★
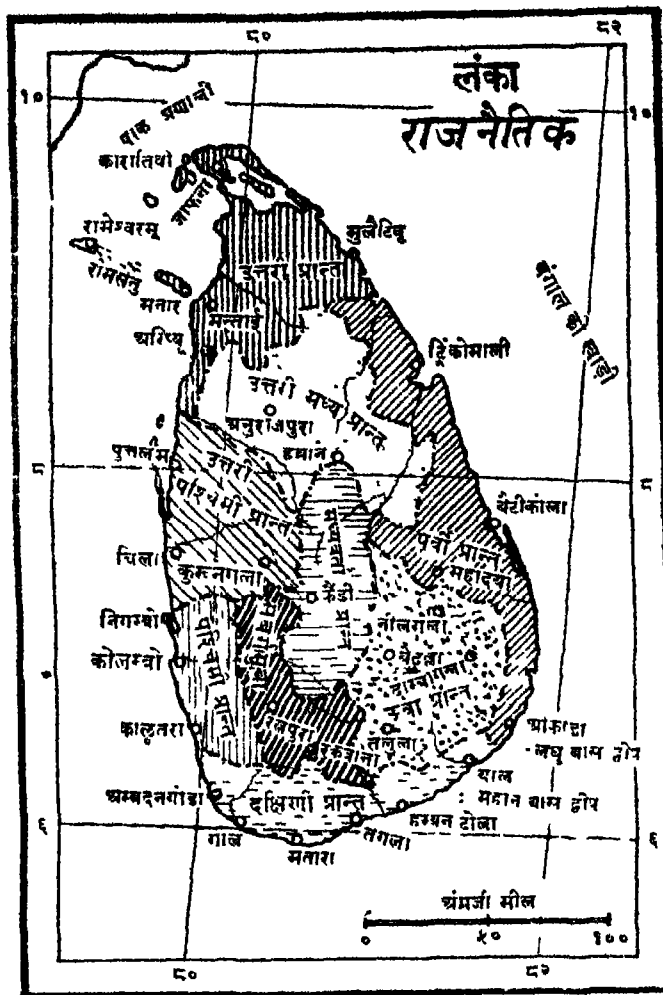
भारतीय तट पर जापान का भय

सिंगापुर, बरमा, रंगून, अंडमान, निकोबार आदि स्थानों पर जापानी अधिकार हो जाने से हिन्द महासागर और बङ्गाल की खाड़ी के द्वार शत्रु के लिये खुल गये। शत्रु के आक्रमण व्यापारिक जहाजों पर होने लगे। ४ अप्रैल को एक बड़ा जापानी जहाजी बेड़ा जिसमें युद्धपोत, क्रूजर, विध्वंसकारक और विमान ले जाने वाले जहाज थे हिन्द महासागर में पहुँचा।

अपने जहाजी बेड़े की सहायता से जापानी वायुयानों ने बंगाल की खाड़ी में कई एक व्यापारिक जहाज डुबा दिये। जिनके बचे हुये लगभग ५०० मनुष्य उड़ीसा तट के भिन्न भिन्न स्थानों पर आ लगे।

जापानी विमानों ने डोर्सेट शायर, कार्नवाल और हर्मेस ब्रिटिश युद्ध-पोतों को भी कोलम्बो तट के समीप डुबा दिया। ६ अप्रैल को ५ व्यापारिक जहाज बङ्गाल की खाड़ी में डुबाये गये जिनमें से एक अमरीकन जहाज भी था।

को भय उत्पन्न हो गया है। आसाम और बङ्गाल को सबसे अधिक भय है। जापान ने अन्दमान में अपना हवाई अड्डा बनाया है। इस अड्डे से जापानी विमान समस्त भारत के नगरों पर बम्ब वर्षा कर सकते हैं। लेकिन जापान की सैनिक शक्ति दूर दूर के युद्ध क्षेत्रों
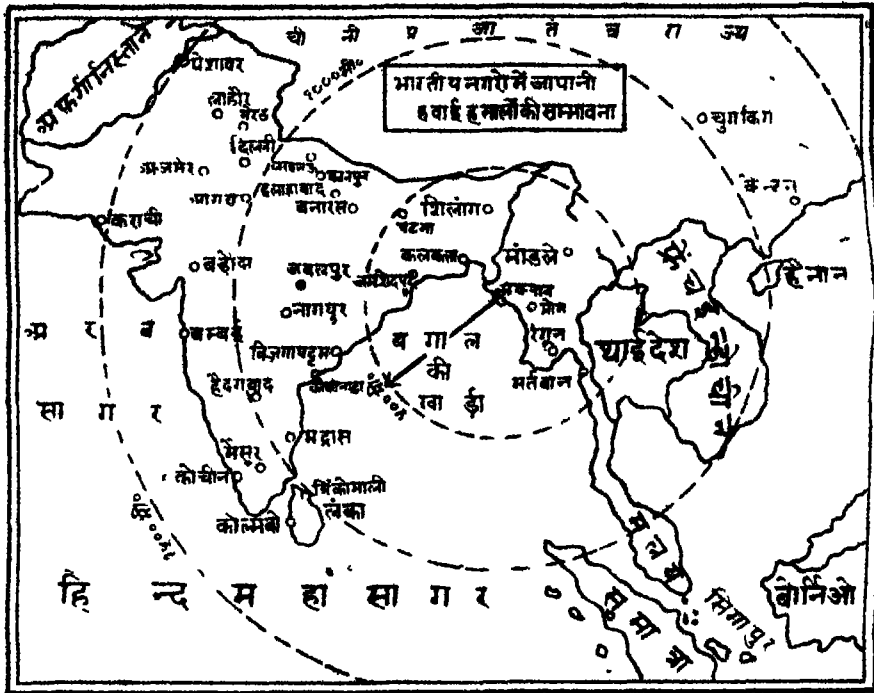
८०

अपने विमान वाहक जहाजों से उड़ कर शत्रु विमानों ने कोकोनाडा और विज़िगापट्टम बन्दरगाहों पर हवाई आक्रमण किया जिससे बन्दरगाहों को हानि हुई और कुछ लोग मर गये। हवाई हमले के कारण भारतीय बन्दरगाह संकट में पड़ गये हैं। इन बन्दरगाहोंपर आक्रमण होने और बङ्गाल की खाड़ी मे व्यापारिक जहाजों के डुबाये जाने से समस्त भारतीय तट

में बिखर गई है। इधर भारतवर्ष में बड़े वेग से सैनिक तयारी हो रही है। भारतीय राजनैतिक दल, महात्मा गांधी और पं० जवाहरलाल इत्यादि बड़े भारतीय नेता जापान का विरोध ज़ोरों से कर रहे हैं। इसलिये बिना अनुकूल वायुमंडल देखे जापान सहसा भारत पर आक्रमण करने का साहस नहीं कर सकता।

आस्ट्रेलिया पर जापानी हवाई हमले

न्यूगिनी के हवाई अड्डों तथा बन्दरगाहों पर अधिकार करने और न्यूगिनी में आस्ट्रेलिया के आक्रमण के लिये सेना उतार देने के पश्चात् जापानी सेना ने आस्ट्रेलिया के डार्विन बन्दरगाह पर हवाई आक्रमण आरम्भ किया। आस्ट्रेलिया की सरकार ने बन्दरगाह खाली करा दिया। डार्विन पर जापान ने अबतक अनेक हवाई आक्रमण किये हैं परन्तु उसकी सेना वहां उतर नहीं सकी है।

मलय तथा सिंगापुर के पतन हो जाने के पश्चात् आस्ट्रेलिया की स्थिति बड़ी संकटमय हो गई। आस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्री मिस्टर कर्टेन ने अमरीका और ब्रिटेन से सहायता मांगी। प्रशान्त महासागर में मित्रसेना की पराजय देख ९ फरवरी को लन्दन में पैस्फिक कौंसिल बनाई गई। जिससे इंगलैण्ड, आस्ट्रेलिया, नेदरलैण्ड और न्यूज़ीलैण्ड सदस्य बनाये गये बाद में अमरीका भी सम्मिलित हो गया।

२८ फरवरी को वाशिंगटन के आस्ट्रेलियन मंत्रि-मिस्टर आर० जी० कैसी ने सहायता मांगते हुये कहा यदि हमको सहायता नहीं मिलती तो हम सामना न कर सकेंगे। उसी दिन आस्ट्रेलिया के युद्ध मंत्री मंडल और पैसिफक कौंसिल में युद्ध लड़ने के सम्बन्ध में समझौता हुआ।

आस्ट्रेलियन सरकार की प्रार्थना पर जनरल डगलस मकार्थर १७ मार्च को आस्ट्रेलिया गये। आस्ट्रेलिया की सरकार की प्रार्थनानुसार वह आस्ट्रेलिया के सबसे बड़े प्रधान सेनापति बनाये गये। २२ फरवरी को राष्ट्रपति मिस्टर रूजवेल्ट ने जनरल मकार्थर को आज्ञा दी कि वे शीघ्र अपना सैनिक केन्द्र फिलीपाइन से आस्ट्रेलिया उठा ले जावें। अमरीका से युद्ध सामग्री तथा अमरीकन सेना भी आस्ट्रेलिया भेजी गई। २३ मार्च को जनरल मकार्थर और आस्ट्रेलिया के युद्ध मन्त्री मिस्टर फोर्ड तथा मेजर जनरल बी० ए० एच० स्टर्डी में युद्ध सम्बन्धी परामर्श हुआ। आस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्रि-मंडल और मकार्थर में सम्बन्ध स्थापित करने के लिये मिस्टर कर्टेन रक्षक मन्त्री बने।

थर्सडे द्वीप पर जापानी हवाई आक्रमण होने से उत्तरी तट तथा क्वीन्सलैण्ड को भय उत्पन्न हो गया जापानी लोग बम्ब गिराने के बाद सेना उतारते हैं। अतः क्वीन्स लैंड के उत्तरी तट होकर आस्ट्रेलिया पर आक्रमण होने की सम्भावना है।

डार्विन बन्दरगाह तथा जहाजों और हवाई अड्डे के साथ ही साथ जापानी वायुयान ब्रूम और विण्ढम पर भी हवाई आक्रमण कर रहे हैं। विण्ढम पशु पालने का केन्द्र है। ब्रूम में मोती निकालने का काम होता है। जापानी समुद्री मल्लाह होते हुये मोती निकालने में बड़े चतुर हैं। उन्हें ब्रूम के तट के सम्बन्ध में अच्छी जानकारी है। आस्ट्रेलिया का उत्तरी-पश्चिमी तट अधिक बसा नहीं है। इसलिये वहां शत्रु को उतरने में सरलता होगी। वह उसे अपना अड्डा बनाकर पूर्वी ओर अधिक बसे हुये भाग पर सरलता से आक्रमण कर सकेगा।

डार्विन पर होने वाले हवाई आक्रमणों ने आस्ट्रेलिया की जनता के हृदय में चिन्गारी सी लगा दी है। वहां का प्रत्येक गोरा आस्ट्रेलिया देश के लिये प्राण देने को तयार हो गया है।

आस्ट्रेलिया के हवाई अड्डों से ब्रिटिश अमरीकन और आस्ट्रेलियन बिमान उड़कर शत्रु के जहाजों तथा अधिकृत हवाई अड्डों पर बम्बवर्षा करते हैं।

चांगशा में चीन की विजय

चांगशा नगर हुनान प्रान्त (चीन) के पूर्वी भाग में हैङ्काओ-कैंटन रेलवे लाइन पर स्थित है। इस नगर पर अधिकार हो जाने से हैंकाव-कैंटन रेलवे लाइन पर जापानी अधिकार हो जाता है। इस नगर को चीनी तथा जापानी दोनों बड़ा महत्व दे रहे हैं। इस नगर की विजय के लिये जापानी सेना ने तीन बार प्रयत्न किया परन्तु वीर चीनी सेना ने तीनों बार जापानियों को मार भगाया। चांगशा के युद्ध में जापान की एक बहुत बड़ी सेना मारी गई। इसलिये जापान ने चाँगशा नगर को छोड़ कर हैङ्काओ-नानचांग रेलवे लाइन की ओर अपनी सेना लगा दी है। इस लाइन पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् वह चांगशा की ओर फिर बढ़ेगा और उस पर हैङ्काओ, नानचाँग और कैंटन तीन ओर से आक्रमण करेगा। इस नगर का महत्व इसलिये अधिक है कि इसके अधिकार में आ जाने से मंचूरिया से सिंगापुर तक के लिये जापान को स्थल मार्ग खुल जाता है।

★ ★ ★

किन्हें में जापानी घेरा

सत्ताइस मई सन् १९४२ ई० को १० हजार जापानी सेना ने किन्हें नगर (चेक्याँग प्रान्त चीन की राजधानी) पर उत्तर-पूर्व और दक्षिण से आक्रमण किया। लौंची के पूर्व और किन्हें के उत्तर-पश्चिम भीषण संग्राम हुये।

शिनान नदी पर चीनी सेना ने जापानी सेना का डट कर सामना किया और कहते हैं कि यहां शत्रु सेना ने गैस का प्रयोग किया। जिसके कारण वह नदी पार करने में सफल हुई और लुङ्गीयु की ओर बढ़ी। किन्हें के दक्षिण-पश्चिम युद्ध में ४३०० जापानी सैनिक मारे गये उसके बाद जापानियों ने गैस के बम्बों का प्रयोग किया जिसके फलस्वरूप चीनी सेना ने विवश होकर नगर खाली कर दिया। नगर पर चारों ओर सेआक्रमण हो रहा था।

२८ मई को ११ दिन के भीषण संग्राम के बाद चीन की प्रधान सेना किन्हें से हटा ली गई। नगर से निकलने पर जापान के पश्चिमी सैनिक जत्थे से मुठभेड़ हुई। इसी बीच किन्हें नगर में उत्तरी द्वार से एक जापानी सेना घुस पड़ी। ११ बजे दिन को नगर पर चारों ओर से जापानी सेना ने धावा मारा और ऊपर से बम्ब वर्षक विमान बम्ब वर्षा करते रहे। नगर के नष्ट हो जाने पर चीनी सेना पश्चिम की ओर हट गई।

२८ मई को जापानी सेना लौंची में घुसी जिससे नगर की गलियों में संग्राम होता रहा।

इस प्रकार ११ दिन के भीषण संग्राम और ६००० जापानी सेना कटाने और किन्हें नगर को बम्ब द्वारा नष्ट करने के बाद जापान ने उस पर अपना अधिकार कर लिया। इस प्रकार चेक्याँग प्रान्त पर जापान का अधिकार हो गया।

चीन में विदेशी रसद पहुँचाने की कठिनाई

अभी हाल ही में चुंकिंग की चीनी सरकार की विज्ञप्ति द्वारा पता चला है कि चीन को चारों ओर से जापान ने घेर लिया है। हांगकांग इण्डोचीन, थाईलैंड, मलय, बरमा, आदि पर जापान का अधिकार हो जाने के कारण चीन को रसद पहुँचाने वाले सभी मार्ग बन्द हो गये हैं और अब वहाँ सामान पहुँचाने में बड़ी कठिनाई हो रही है।

इधर कुछ समय से चेक्यॉग, क्वॉग्सी और क्वांगतुंग में भीषण संग्राम हो रहे हैं। जापानी सेनायें, टैंक और वायुयान अधिक से अधिक संख्या में रण-स्थल में पहुँचाये जा रहे हैं। जापानियों का मुख्य ध्येय हैङ्काओ-नानचङ्ग रेलवे पर अधिकार जमाने का है। इस ध्येय की पूर्ति के पश्चात् चाँगशा पर तीन ओर से जापानी आक्रमण होगा। चांगशा पर उत्तर की ओर हैङ्काओ से, पूर्व की ओर नानचङ्ग से और दक्षिण की ओर कैण्टन से जापानी सेनाएँ बढ़ेंगी। चांगशा पर अधिकार हो जाने से हैङ्काओ-कैंटन रेलवे लाइन पर जापानी अधिकार हो जावेगा। हेंग्यांग से क्वांग्सी होते हुये इण्डोचीन मार्ग जाता है। इस प्रकार सिंगापुर से मञ्चूरिया तक की रेलवे लाइनों का प्रयोग जापानी लोग कर सकेंगे।

जापानी लोग स्थलमार्ग का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहते हैं। अब तक वे समुद्री मार्ग का प्रयोग कर रहे थे जिसमें मित्र राष्ट्रों का पनडुब्बी नावों तथा बम्ब वर्षकों का भय था और जापान को बड़ी हानि उठानी पड़ती थी। चीन की विजय से वह समुद्री मार्ग छोड़ कर स्थलमार्ग से सामान लावेगा और भारतवर्ष पर आक्रमण करने में उसे बड़ी आसानी होगी।

चीन को युद्ध सामग्री पहुँचाने में कठिनाई तो अवश्य है परन्तु यदि मित्र राष्ट्र चाहें तो इस कठिनाई को पार कर सकते हैं। हवाई मार्ग से युद्ध-सामग्री उतनी सरलता और अधिक मात्रा में नहीं पहुँच सकती जितनी कि स्थल मार्ग से। इसलिये वर्षा ऋतु के समाप्त होते ही बरमा को पुनः शत्रु हाथ से छीनने का प्रयत्न किया जा सकता है।

इस समय जब कि चीन जाने के लिये कोई मार्ग नहीं है अबादान से आरम्भ होने वाले स्थल मार्ग का प्रयोग करने का यत्न करना चाहिये। इस मार्ग के प्रयोग के लिये डाक्टर सुन फो चीनी लेजिस्लेटिव कौंसिल के अध्यक्ष ने भी प्रस्ताव किया है। अबादान फारस की खाड़ी पर स्थित है। अबादान से ईरान और सोवियट सेन्ट्रल एशियाई रेलवे होकर सामान ऐमा-आता पहुँच सकता है। ऐमा-आता से ट्रंक और लारियों द्वारा उरमची (चीनी तुर्किस्तान) सामान जा सकता है और फिर वहां से लैंङ्काओ और सिआन सामान पहुँच सकता है। ईरान होकर रूस को अमरीका और इङ्गलैंड से टैंक, तोपें और वायुयान जा रहे हैं। यही बात चीन के के लिये भी की जा सकती है चीन को टैंकों और तोपों की आवश्यकता है। चीन को सबसे अधिक विमानों की आवश्यकता है। वहां विमान बहुत कम हैं। विमानों के पहुँचने में किसी प्रकार की भी कठिनाई नहीं है। वह तो उड़ कर सीधे चीनी भूमि में भारतवर्ष अथवा ईरान से पहुँच सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन अवश्य ही कुछ हवाई जत्थे चीन के लिये निकाल सकते हैं और उनके लिये हवाई सैनिक तयार कर सकते हैं।

रूस-जापान युद्ध की सम्भावना

गत वर्ष जर्मनी को और दूसरे देशों की भांति समस्त रूस पर अधिकार प्राप्त करने में सफलता नहीं हुई। जर्मन सेनायें मास्को, लेनिनग्राड और काकेशिया पर अधिकार प्राप्त न कर सकीं। शीतकाल के आरम्भ हो जाने पर जर्मनी ने अपने मित्र जापान को प्रशान्त महासागर में युद्ध छेड़ने के लिये प्रेरित किया। युद्ध आरम्भ करने के पूर्व जापान ने रूस के साथ १० वर्ष के लिये अनाक्रमण संधि कर ली जिससे रूस होकर उस पर आक्रमण न हो सके। रूस ने भी पूर्व की ओर से जापानी आक्रमण बचाने के लिये संधि करना ही उचित समझा पर मंचूरिया के उत्तर साइबेरिया सीमा पर ऐसे कारण वर्तमान हैं जो किसी समय भी रूस-जापान युद्ध के कारण बन सकते हैं।

चीन को मित्र राष्ट्रों की युद्ध सामग्री पहुँचनी असम्भव हो रही है। रूस होकर चीन सामान पहुँचाने के प्रश्न पर मित्र राष्ट्र विचार कर रहे हैं क्योंकि इसके अतिरिक्त चीन सामान जाने के लिये दूसरा कोई मार्ग ही नहीं है। अब यदि रूस होकर चीन सामान जाता है तो रूसी जापानी संधि का खून होता है। ऐसी दशा में जापान अवश्य ही रूस पर आक्रमण कर बैठेगा।

जर्मनी को यदि रूस में पराजय होती है तो वह अपने मित्र जापान को रूस पर आक्रमण करने के लिये कहेगा ही। इस समय भी जर्मनी जापान पर जोर डाल रहा है। जिससे साइबेरिया की ओर से रूसी फौजें पश्चिम की ओर न आ सकें। जापान और रूस से पुरानी शत्रुता है और साइबेरिया सीमा तथा व्लाडीवोस्टक की ओर कई प्रकार के झगड़े हैं। लेकिन जापान अपना लाभ देख कर ही युद्ध में कूदेगा।

साइबेरिया में रूस की काफी सेना है। रूस ने साइबेरिया की सेना को पश्चिम की ओर नहीं बुलाया। इसका मुख्य कारण जापानी आक्रमण का भय ही है। व्लाडीवोस्टक में रूस की एक बड़ी जल सेना भी रहती है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका अलास्का की ओर से मार्ग बना कर सहायता पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। इससे भी जापान क्रुद्ध हो सकता है और किसी समय भी रूस पर धावा मार सकता है। लेकिन व्लाडीवोस्टक से जापान के कारबारी नगरों पर हवाई हमले भी हो सकते हैं।
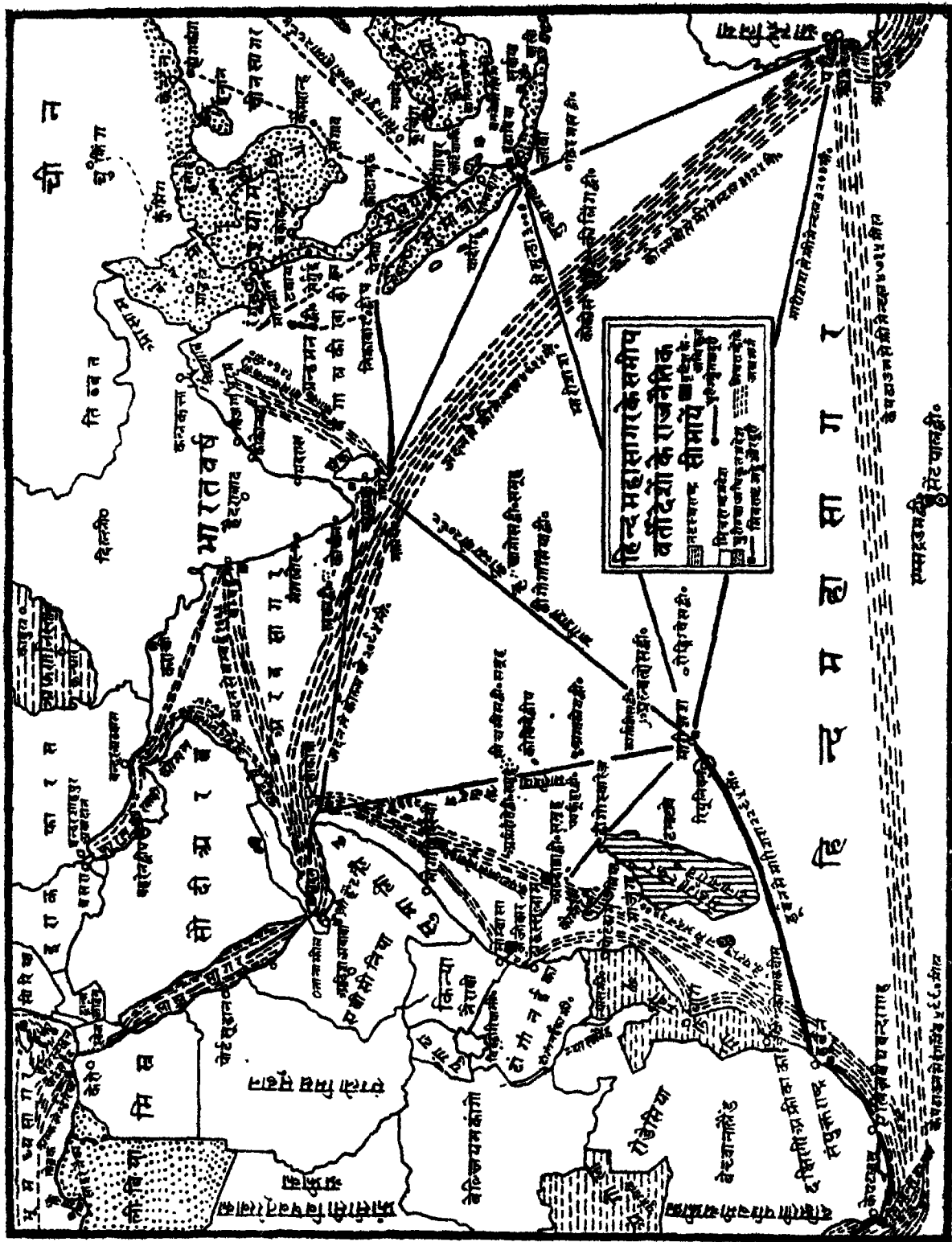
एल्यूशियन द्वीपसमूह पर जापानी हमला

तीन जून सन् १९४२ को ६ बजे प्रातःकाल डच हार्बर और फोर्ट मियर्स पर जापानी आक्रमण हुआ। इसके पहले जापानी वायुयान ले जाने वाले (एअर क्रैफ्ट कैरियर) जहाज से ३४ शत्रु विमान उड़े और उन्होंने तीन तीन हवाई जहाजों को पांच टुकड़ियाँ बना कर आक्रमण किया। जापानी एअर क्रैफ्ट कैरियर जहाज डच बन्दरगाह के दक्षिण ठहरा था। उस समय डच बन्दरगाह पर ३ अमरीकन विध्वंस कारक, एक सेना वाहक, एक सुरंग निकालने वाला एक तटरक्षक जहाज और कुछ दूसरे छोटे जहाज थे।

डच बन्दरगाह और फोर्ट मियर्स के गोदामों तथा बैरकों पर बम्ब गिराये गये जिससे आग लग गई। एक अमरीकन विमान जो उड़ने को था वह भी जल गया। आक्रमण आरम्भ होने के ५ मिनट पहले ही अमरीकन वायुयान संहारिणी तोपें गोले फेंकने लगीं। नार्थ वेस्टर्न नामक स्टेशन जहाज पर बम्ब गिरा और वह जल गया। उस जहाज में ४५ आदमी मरे और ४९ घायल हुये।

रात द्वीप समूह के किस्का बन्दरगाह पर जापानी लड़ाका जहाजों ने अधिकार कर लिया और आतू द्वीप में सेना उतार दी। मिडवे द्वीप के युद्ध में ४ विमान वाहक जापानी जहाज और १० हजार सैनिक मारे गये। कोरल सागर के युद्ध में १५ जापानी युद्ध पोत डुबाये गये और शोकाक नामक विमान वाहक जहाज जला दिया गया। इस युद्ध मे ३ अमरीकन युद्ध पोत और लेक्सिंगटन तथा सर्तोगा नामक विमान वाहक बड़े जहाज नष्ट हुये।

* * *

मिस्र और भारत में निराशा

यूँ तो भारतवर्ष और मिस्र को सदैव निराशाओं का सामना करना पड़ता है परन्तु आधुनिक महासमर में दो समय ऐसे उपस्थित हुये जब कि सचमुच ही दोनों देशो पर निराशा की घनघोर घटाएँ छा गईं।

पहली निराशा का समय वह था जब कि लीबिया में इटली की विजय हुई और ब्रिटिश सुमालीलैण्ड पर इटली ने अधिकार जमा लिया। इराक़ और ईरान में शत्रु का प्रभुत्व बढ़ गया। मिस्र और भारत को उस समय भीषण भय उत्पन्न हुआ कि शीघ्र ही उन पर शत्रु सेनाओं का आक्रमण होगा। उसके पश्चात् इङ्गलैण्ड ने स्थिति सुधारी लीबिया में ब्रिटिश विजय हुई, समस्त उत्तरी अफ्रीका से इटली की सेना मार भगाई गई। इराक़ सीरिया और ईरान पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया।

पूर्व में जापान की विजय तथा पश्चिम (लीबिया) में जनरल रोमेल की विजय होने से भारत तथा मिस्र पर पुनः भय के बादल उमड़ आये हैं। भारत की राजनैतिक समस्या भी बड़ी जटिल होती जा रही। भारत के बड़े नेता भारतीय शासन की बागडोर अपने हाथ में लेकर शत्रु राष्ट्रों से अपनी रक्षा करना चाहते हैं पर ब्रिटिश सरकार उनसे सहमत नहीं है अतः क्रान्ति का भी भय है।

प्रशान्त युद्ध क्षेत्र में-
एल्यूशियन द्वीप समूह
की स्थिति
सोवियत रूस
आर्कटिक सागर
अलास्का
अनाडीर की खाड़ी
बेरिंग सागर
प्रशान्त महासागर
अलास्का की खाड़ी
ब्रिस्टल की खाड़ी
कुक खाड़ी
कोडियक द्वीप
सेंट लारेन्स द्वीप
नुनिवाक द्वीप
किस्क द्वीप
अट्टू द्वीप
उनालास्का द्वीप
कोमन्डोर्स्की द्वीप समूह
पारामोसीरो जापानी अड्डे से ७०० मील की दूरी पर
टिमसन अन्त०
फेयरबैंक्स
मैकिन्ले पर्वत २०,३०० फुट
बहती हुई बरफ की दक्षिणी सीमा
जमी हुई बरफ की दक्षिणी सीमा
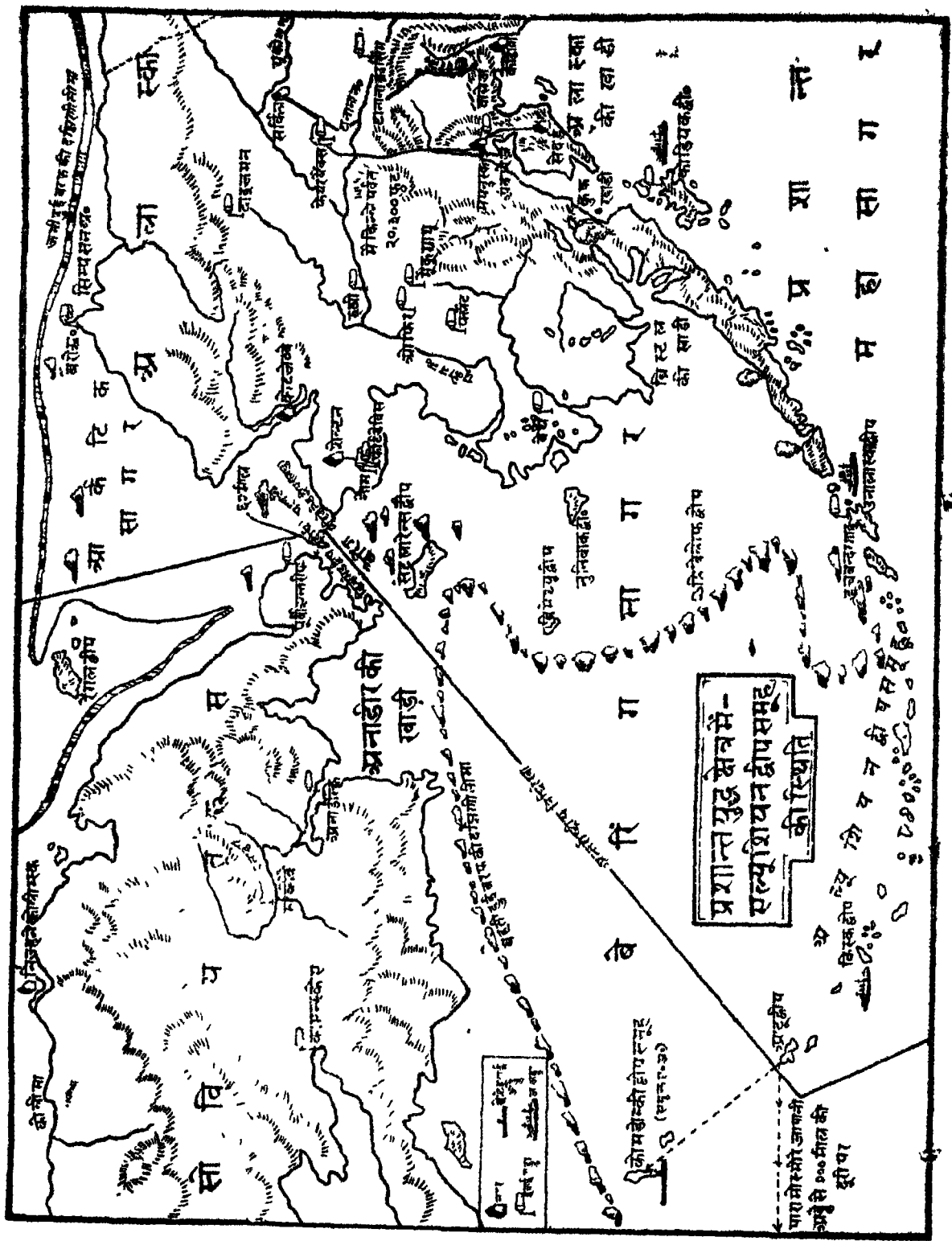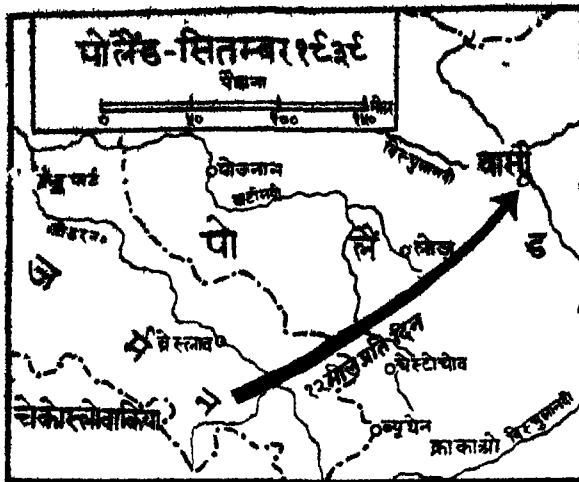
१—पोलैण्ड में जर्मन विद्युत-युद्ध की प्रगति।
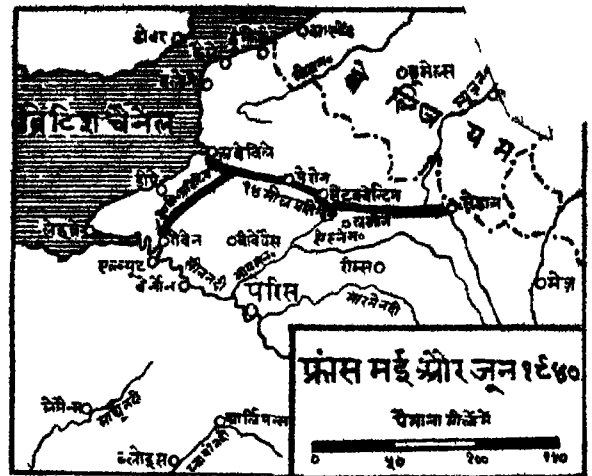
२—फ्रान्स में जर्मन विद्युत-युद्ध की प्रगति।
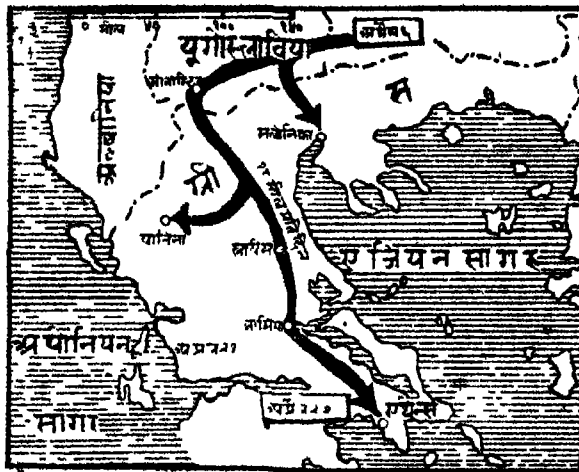
३—यूनान में जर्मन विद्युत-युद्ध की प्रगति।
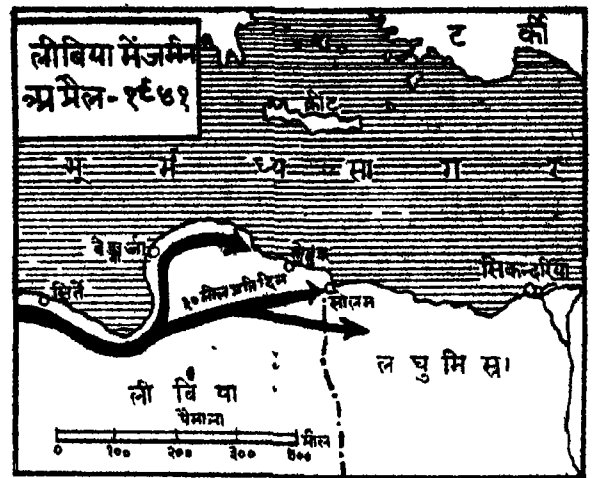
४—लीबिया में जर्मन विद्युत-युद्ध की प्रगति।
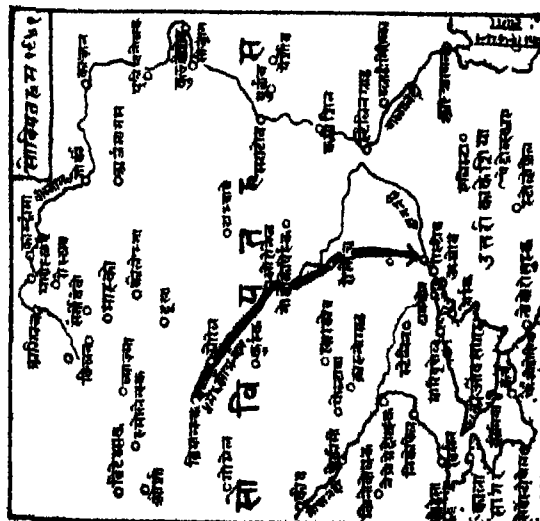
५—रूस में जर्मन विद्युत-युद्ध की प्रगति।

नोट:—विद्युत-युद्ध सम्बन्धी लेख ४१ पृष्ठ पर देखिये।

सम्पादकीय

'भूगोल' अपने जीवन के १८ वर्ष समाप्त करके इस विशेषांक के साथ उन्नीसवें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। इस अवसर पर हम भूगोल के सभी ग्राहकों और सहायकों को धन्यवाद और बधाई देते हैं। जिनकी सहायता से 'भूगोल' अपना अठारहवाँ वर्ष समाप्त कर सका है। यों तो 'भूगोल' को आरम्भ से ही अपनी कठिनाइयों के साथ संग्राम करना पड़ा है। पर वर्तमान वर्ष में विशेष कठिनाई प्रतीत हो रही है।

'भूगोल' ने १९४० में महासमर अङ्क और उसके बाद गत वर्ष में महासमर एटलस प्रकाशित किया। इनके प्रकाशित करने पर रूसी जर्मन युद्ध आरम्भ हुआ। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका युद्ध में सम्मिलित हुआ और अन्त में जापान युद्ध क्षेत्र में उतरा। इन घटनाओं से वर्तमान युद्ध सचमुच विश्वव्यापी युद्ध बन गया। यह युद्ध संसार के सभी लोगों से सम्बन्ध रखता है। समाचार पढ़ने वाले सभी लोग इसमें रुचि रखते हैं। लेकिन इस युद्ध स्थलों के भौगोलिक महत्व को समझने में बहुत कम लोग समर्थ होते हैं। कुछ स्थानों का तो साधारण एटलसों में पता भी नहीं लगता है। महासमर अंक और महासमर एटलस आधुनिक या अप टु डेट न रह सके। इसी से 'भूगोल' ने अपने पाठकों के लिये द्वितीय महासमर परिचय का प्रकाशित करना आवश्यक समझा। इस परिचय में आरम्भ से लेकर जून (१९४२) के अन्त तक युद्ध सम्बन्धी सभी महत्वपूर्ण घटनायें सम्मिलित की गई हैं। युद्ध के कई क्षेत्र हैं। इसीलिये द्वितीय महासमर परिचय में पश्चिमी योरुप, रूसी युद्ध क्षेत्र, अफ्रीका का युद्ध क्षेत्र, प्रशान्त महासागरीय युद्ध क्षेत्र, चीनी युद्ध क्षेत्र आदि कई खंड रखने पड़े। युद्ध निरंतर चल रहा है। इसलिये युद्ध सम्बन्धी लेख 'भूगोल' के भावी अंकों में भी रहेंगे।

द्वितीय महासमर परिचय आप के सामने है। इस के सम्बन्ध में हम अधिक नहीं कहना चाहते पर इतनी प्रार्थना अवश्य है कि यदि आप हमारे प्रयत्न से संतुष्ट हैं तो विलम्ब आदि हमारी त्रुटियों को (जो वास्तव में वे हमारी आर्थिक और दूसरी कठिनाइयों का परिणाम हैं) आप भूल जाइये और इस वर्ष ग्राहक संख्या बढ़ा कर ऐसी सहायता कीजिये कि भविष्य में हम और भी अधिक सामयिक और उपयोगी भौगोलिक साहित्य आप की सेवा में समर्पित कर सकें।

आरम्भ में कागज न मिलने से किसी बड़े अंक का आयोजन करना सम्भव न था। कागज मिलने पर पूरी शक्ति भर प्रयत्न किया गया कि अंक जुलाई के अन्त तक प्रकाशित हो जावे। लेकिन कभी नक्शे के बनने और कभी ब्लाक के समय पर न मिलने से देरी होती गई। फिर भी निश्चय था कि अगस्त के दूसरे सप्ताह में अंक पाठकों की सेवा में पहुँच जायगा। लेकिन गत दो सप्ताह में इलाहाबाद में जो हलचल हुई उससे अंक की जिल्द बंधने में विलम्ब के लिये बड़ा खेद है। लेकिन आशा है कि भविष्य में साधारण अंक समय से आपकी सेवा में पहुँचेंगे।

[देखिये पृष्ठ ८२]

ईरान में विदेशी जमघट। [देखिये पृष्ठ ८८]

चतुर्थ खण्ड

पञ्चम खण्ड